225
संजीवनी सीरीज
सुरेन्द्रनाथ गुप्ता
हस्तरेखा और भाग्यफल
शनि
सूर्य
बुध
विवाह
मंगल
चंद्र
हस्तरेखाओं और अन्य हस्तचिन्हों द्वारा भाग्यफलों की लाभदायक जानकारी प्रस्तुत करती संग्रहणीय पुस्तक

हस्तरेखा और भाग्यफल
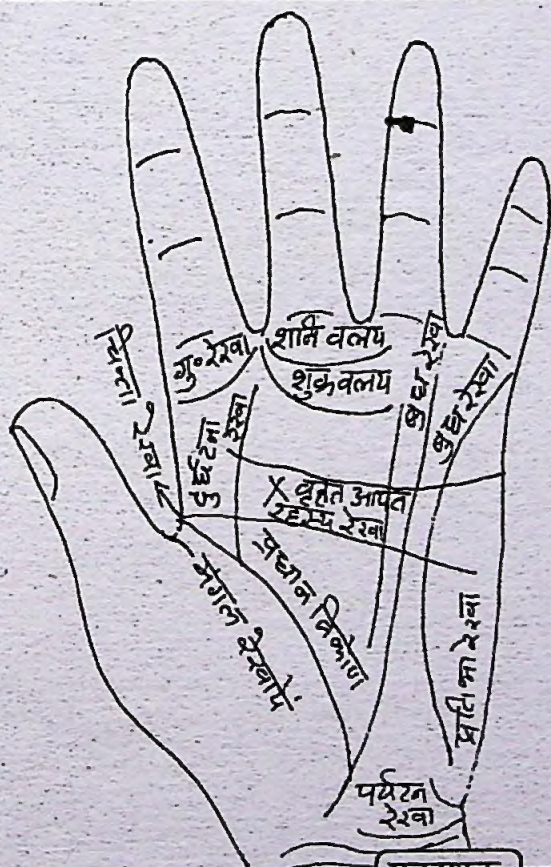
हाथ, हथेली हस्तरेखाएं, हस्तचिन्ह, तिल, शरीर के अन्य समस्त भागों के लक्षण समेटे हुए एक अत्यन्त लाभकारी संग्रहणीय पुस्तक।

प्रकाशक

राधा पॉकेट बुक्स

33, हरी नगर, मेरठ-250 002

■ *पुस्तक* : हस्तरेखा और भाग्यफल
■ *प्रस्तुति* : सुरेन्द्र नाथ गुप्ता
■ *प्रकाशक* : राधा पॉकेट बुक्स,
33, हरी नगर, मेरठ-2
© (0121) 2518734, 2525386
■ *कम्प्यूटरीकृत पृष्ठसज्जा : सैन्ट्रो ग्राफिक्स, मेरठ।*
■ *मुद्रक : संजय प्रिन्टर्स, दिल्ली।*

प्रस्तावना

ज्योतिष विज्ञान के तीन अंग हैं, जिन्हें स्कंध कहा जाता है। पहला स्कंध है सिद्धान्त; अर्थात् गणित अथवा खगोल। यह पूर्णतः एक विज्ञान है जिसमें ग्रहों और नक्षत्रों की स्थिति एवं गति की जानकारी का अध्ययन किया गया जाता है। दूसरा स्कंध है होरा; अर्थात् फलित, जिसमें राशिफल, जन्मपत्री और हस्तरेखाओं को देखकर फलादेश निकाले जाते हैं। तीसरा स्कंध भी कम महत्वपूर्ण नहीं है, और वह है संहिता, जिसमें समिश्र विद्यायें और जीवनोपयोगी जानकारी सम्मिलित की गयी है। वास्तुशास्त्र भी इसी संहिता का एक अंग है। वर-वधू की जन्मपत्री मिलाना, अंक ज्योतिष, रत्न धारण, चोरी गई वस्तु या गुम हुई चीज मिलेगी या नहीं, नौकरी, मुकदमे का परिणाम इत्यादि इसी स्कंध संहिता के अंतर्गत आते हैं।

मुख्य रूप से ज्योतिष विज्ञान, जिसे सामुद्रिक शास्त्र भी कहा जाता है, के दो भेद हैं—पहला गणित ज्योतिष एवं दूसरा फलित ज्योतिष। गणित ज्योतिष; अर्थात् एस्ट्रोनोमी में नक्षत्रों व ग्रहों की स्थिति, उनका स्वरूप, संरचना तथा गतिविधियां और पृथ्वी पर उनके प्रभाव का अध्ययन किया जाता है। फलित ज्योतिष; अर्थात् एस्ट्रोलोजी में व्यक्ति की हस्तरेखाओं, मस्तक रेखाओं, पाद रेखाओं तथा शरीर पर चिन्हों एवं जन्मकुण्डली देखकर मनुष्य के भाग्य का फलादेश बताया जाता है।

इस पुस्तक में हम मुख्य रूप से फलित ज्योतिष में हस्तरेखाओं, पाद रेखाओं एवं शरीर पर विभिन्न चिन्हों का अध्ययन करेंगे तथा संहिता के अंतर्गत अंक विचार और कुण्डली मिलान का उल्लेख करेंगे।

उपरोक्त तथ्यों पर पहुंचने से पूर्व हमें कर्म और भाग्य की परिभाषा जान लेनी चाहिए, क्योंकि प्राणी के शरीर की संरचना कर्मों के अनुसार ही होती है।

कर्म—कर्म तीन प्रकार के बताये गये हैं—संचित, प्रारब्धिक एवं क्रियमाण। व्यक्ति द्वारा गणना के क्षण तक किया गया कार्य, चाहे वह इस जन्म में किया गया हो अथवा पूर्व जन्म या जन्मों में, संचित कर्म कहलाता है। संचित कर्म के जिस भाग को मनुष्य फलरूप-क्रम से भोगना प्रारम्भ करता है उसे प्रारब्धिक कर्म एवं जो नया कार्य मनुष्य के द्वारा अब किया जा रहा है उसे क्रियमाण कहते हैं।

यह भी निश्चित है कि जब तक आत्मा या जीव कर्मों का सम्पूर्ण फल न भोग ले तब तक कर्म क्षीण नहीं होता और इसीलिए जीवात्मा को बार-बार पृथ्वी पर जन्म एवं मृत्यु के चक्र से गुजरना पड़ता है और कर्मों के अपने फल भोगने पड़ते हैं।

भाग्य—कर्मों के फलों का संकलन ही भाग्य है। मस्तक, हस्त एवं पाद रेखायें कर्मों और भाग्य के इसी फल-क्रम को परिलक्षित करती हैं।

☐☐☐

लेखकीय...

शास्त्रों में ज्ञानार्जन के चार साधन बताये गये हैं—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान एवं शब्द। विद्वान मनीषियों ने इन साधनों की साधना करके अनेक सिद्धान्त और तथ्यों की स्थापना की। उनकी सतत् लगन तथा प्रयासों के परिणामस्वरूप आज मनुष्य अणु युग और अन्तरिक्ष में सेंध लगा सका है। अनेक विद्याओं की खोज में से ज्योतिष भी उसका एक अंश है।

विश्व में प्रत्येक वस्तु का अपना एक विशिष्ट स्थान होता है। एक प्रयोजन होता है ज्योतिष भी सकारण है, सार्थक है और अत्यन्त महत्वपूर्ण भी है।

यद्यपि मनुष्ययोनि कर्मयोनि है और मनुष्य को कार्य अथवा कर्म करने की पूरी स्वतन्त्रता है परन्तु मनुष्य अपने स्वभाव, प्रकृति, प्रवृत्ति आदि को परिस्थितिवश, मनोदशावश अथवा प्रारब्धवश बदल नहीं पाता और भाग्य उस पर हावी हो जाता है। यही कारण है कि मनुष्य भाग्य की प्रबलता के आगे विवश होकर कर्मयोनि को भोगयोनि मानकर संतोष कर लेता है।

ज्योतिष यह स्थापित नहीं करती कि भाग्य ही सब कुछ है परन्तु मनुष्य का भाग्य प्रबल अवश्य है, उसे बदलने के लिए उपाय अत्यन्त दुसाध्य हैं। मनुष्य की हस्तरेखायें भाग्य को ही रेखांकित करती हैं। नवजात शिशु के हाथ पर बनी कुछ रेखायें संसार में आने पर उम्र के साथ बढ़ती जाती हैं। उसके आचार-विचार, मस्तिष्क के विभिन्न भावों एवं कार्यलक्षणों का प्रतिबिम्ब हाथ पर तुरन्त अंकित होता है। इन अनुसंधानों के परिणामों के आंकलन से पाश्चात्य ज्योतिषशास्त्री भी सहमत हुए हैं।

यद्यपि ज्योतिषशास्त्र की वह शाखा दूषित सामुद्रिक विज्ञान अत्यन्त श्रमशील और सर्वाधिक कठिन मानी जाती है क्योंकि विषय अत्यन्त गूढ़, विस्तृत और समय साध्य है फिर भी इस पुस्तक में हर अध्याय का सरलतम् ढंग से अपनी पूर्णता में उल्लेख किया गया है। प्रत्येक समाधान का ध्यान रखते हुए वस्तु पर विवेचन इसकी विशेषता बन गयी है।

प्रस्तुत पुस्तक एक शोधात्मक ग्रन्थ के रूप में अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी, ऐसी मेरी कामना रही है, क्योंकि यह मेरी बीस वर्षों की मेहनत का प्रतीक है। एक ही पुस्तक में अत्यन्त विस्तृत ढंग से प्रत्येक हस्त और शरीर के अवयवों के आकार, प्रकार एवं चिन्हों के अतिरिक्त हाथ पर परिलक्षित विभिन्न योगों के लक्षण एवं फल समाहित किया जाना तथा कुण्डली मिलान, राशियों के ग्रहों से सामंजस्य एवं रत्नों के संसार का सरलता और सहायता से विस्तृत विवेचन पुस्तक की उपयोगिता को और बढ़ा देता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि उचित मूल्य में हस्त ज्योतिष का अधिकाधिक ज्ञान देने में यह पुस्तक सहायक सिद्ध होगी।

लेखक
सुरेन्द्र नाथ गुप्ता
पवनपुरी, बीकानेर (राजस्थान)

विषयानुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं०
1.	**हस्तरेखा विज्ञान : हर्षल** *हाथ, हथेली, हथेली के ग्रहक्षेत्र, बृहस्पति पर्वत, शनि पर्वत, सूर्य पर्वत, बुध पर्वत, चन्द्र पर्वत, शुक्र पर्वत, मंगल पर्वत, हर्षल पर्वत, नेपच्यून ग्रह पर्वत, प्लूटो पर्वत, राहु पर्वत, केतु पर्वत।*	9
2.	**हाथ पर युग्म पर्वत (दो पर्वतों का) फल :** *गुरु (बृहस्पति) एवं अन्य, शनि एवं अन्य, सूर्य एवं अन्य, बुध एवं अन्य, चन्द्र एवं अन्य, राहु एवं अन्य, केतु एवं अन्य, शुक्र एवं अन्य, हर्षल एवं अन्य, प्लूटो एवं अन्य; अंगूठा—अंगूठे के आकार के अनुसार फल विचार, अंगूठे के भाग; उंगलियां, अलग-अलग उंगलियों के फल, उंगलियों की रेखायें, उंगलियों के पोर, उंगलियों के जोड़ों की स्थिति का फल, नाखून—नाखूनों का समग्र फल, नाखूनों पर धब्बे या दाग, हस्तरेखायें, हस्तरेखाओं का वर्गीकरण, आयु अर्थात् जीवन रेखा, मस्तिष्क रेखा, हृदय रेखा, भाग्य रेखा, सूर्य रेखा, स्वास्थ्य रेखा, विवाह रेखा, संतान रेखायें।*	52
3.	**गोण रेखायें :** *मंगल रेखा, मणिबंध रेखा, चन्द्र रेखा, शुक्र रेखा, यात्रा रेखा, गुरु वलय, शनि वलय, सूर्य वलय, शुक्र वलय, बुध वलय, शत्रु-मित्र रेखायें।*	139
4.	**हस्त चित्र :** *बृहत् चतुष्कोण, बृहत् त्रिभुज या त्रिकोण, सामान्य त्रिभुज, गुणन चिन्ह या क्रॉस, तारा एवं नक्षत्र, बिन्दु या तिल, जाल, वृत्त, वर्ग या चतुष्कोण, द्वीप, हाथों का वर्गीकरण, हथेली पर ग्रहक्षेत्र, हथेली पर स्थित चिन्ह, हथेली पर रेखाओं की स्थिति।*	148
5.	**मनुष्य शरीर पर तिलों का समग्र प्रभाव**	162
6.	**प्रमुख योग एवं फल**	165

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ सं०
7.	**शरीर के अन्य भागों के लक्षण**	173
8.	**हस्त-चित्र उतारना**	176
9.	**काल-निर्धारण एवं काल-गणना**	178
10.	**कुण्डली मिलान :** *लग्न, चन्द्र, मांगलिक दोष, राशियों का मेल, अंक विचार।*	180
11.	**राशियां और ग्रह :** *बारहों राशियों की संरचना, स्वभाव और प्रभाव, राशियां और उनसे सम्बन्धित शरीर के अंग, जन्मराशि के अनुसार नाम के प्रथम अक्षर का निर्धारण, जन्मदिन के अनुसार राशि का निर्धारण, ग्रह और उनके प्रभाव, ग्रहों के संकेत चिन्ह तथा नाम, ग्रहों का विवरण, ग्रहों के स्वरूप, ग्रहों के परस्पर सम्बन्ध, शुभाशुभ ग्रह, वे विपरीत परिस्थितियां जब उच्च ग्रह अपना श्रेष्ठ प्रभाव नहीं देते, नवग्रहों के तन्त्रोक्त बीजमंत्र।*	183
12.	**रत्न ज्योतिष :** *रत्नों का उपयोग, रत्नों की आपसी शत्रुता, राशि एवं ग्रह के अनुसार रत्न, जन्माङ्क के अनुसार रत्न, जन्म-माह के अनुसार रत्न।*	205
13.	**विविध ज्योतिष ज्ञान :** *स्वयं सिद्ध मुहूर्त, अभिजित मुहूर्त, गोधूलि काल, गुरु-शुक्रास्त में वर्जित कर्म, राहुकाल, पितृपक्ष, गण्डमूल नक्षत्र, दिशाशूल, देव-पूजन में कुछ उपयोगी जानकारी।*	212
14.	**वास्तु का ज्योतिषीय प्रभाव :** *वास्तुशास्त्र के अनुसार स्थान एवं दिशाओं का निर्धारण, "प्रथम भाग" वास्तुशास्त्र के उपयोगी सिद्धान्त, "द्वितीय भाग" रेमेडियल वास्तुशास्त्र, "*	217

अध्याय-1

हस्तरेखा विज्ञान
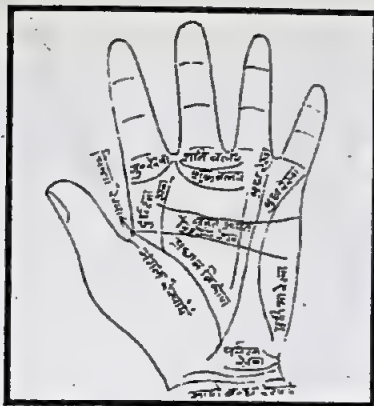
ज्योतिष बहुत गहन विषय है और इसी ज्योतिष विज्ञान की एक शाखा है हस्तरेखा अथवा सामुद्रिक शास्त्र। मनुष्य के कर्मफलों तथा जीवन की उथल-पुथल का प्रभाव हाथ की रेखाओं पर भी पड़ता है। मनुष्य के तीन प्रवर्तक अंगों हाथ, पैर और मस्तक पर रेखाओं का बाहुल्य होता है। इन रेखाओं को देख और पहचानकर भूत तथा भविष्य के बारे में बताया जा सकता है। मस्तिष्क का क्रियात्मक भाव सांकेतिक रेखांकन के रूप में हथेली पर रेखाओं से परिलक्षित होता है। मस्तिष्क में प्रवृत्तियों के अनुसार हस्तरेखाओं के रूप में भी परिवर्तन आ जाता है।

ज्योतिष, हस्तरेखा शास्त्र जिसका एक अंग है, का यही तो लाभ है कि इसके द्वारा मनुष्य अपने भविष्य के बारे में जानकर उसके लिये प्रयत्न और प्रयास का कष्टकर निराकरण अथवा समय का सदुपयोग कर सकता है।

यूनान में हस्तरेखा विज्ञान को कीरोमेन्सी कहा जाता है। यूनानी शब्द कीरो का अर्थ है हाथ। चूंकि मन के प्रबल भावावेगों का अंकन हस्तरेखाओं में होता रहता है अतः इन रेखाओं के अध्ययन से सारगर्भित फल निकाले जा सकते हैं। पाश्चात्य विद्वानों में प्रख्यात हस्तरेखा विशेषज्ञ काउन्ट लोपस हैमन, जिन्होंने अपना उपनाम ही कीरो रख लिया था, ने हस्तरेखा के कई ग्रंथों की रचना अपने परीक्षता और अध्ययन के आधार पर ही की थी।

पुस्तकों के अध्ययन से ज्ञान प्राप्त कर प्रत्यक्ष व्यावहारिक प्रयोग द्वारा अभ्यास के फलस्वरूप व्यक्ति अच्छा और विश्वसनीय फलादेश तक पहुंच सकता है। इस पुस्तक की सारगर्भिता पाठकों को अपने उद्देश्य की प्राप्ति में अत्यन्त सहायक होगी।

अरबी में रमन एवं अंग्रेजी में पामिस्ट्री कही जाने वाली हस्त सामुद्रिक विद्या का लक्ष्य फलित ज्ञान प्रदान करता है। इसके दो भाग हैं–1. हस्त विज्ञान; 2. हस्तरेखा विज्ञान।

हस्त विज्ञान में हथेली की बनावट, आकार, रंग, परिमाप, अंगूठे और उंगलियों की बनावट, आकार, रंग, परिमाप आदि देखकर तथा हस्तरेखा विज्ञान में हथेली पर बनी रेखाओं तथा चिन्हों एवं उंगलियों, अंगूठे और मणिबंधों की रेखाओं एवं चिन्हों तथा नाखूनों के रंग इत्यादि को देखकर फलादेश निर्धारित किये जाते हैं।

हाथ

कलाई से आगे के भाग को हाथ कहते हैं। हस्तरेखा अध्ययन के लिये हाथ में हथेली, अंगूठा और चार उंगलियों को सम्मलित किया जाता है।

चारों उंगलियों और पांचवें अंगूठे में तीन–तीन लाइनें होती हैं। इन तीनों लाइनों को सार्गिक रेखा कहा जाता है, जो अंगूठे और उंगलियों को तीन पर्वों में विभाजित करती हैं। यह पर्व ऊपर से नीचे की ओर प्रथम, मध्यम और तृतीय पर्व कहलाते हैं।

हथेली, अंगूठे और चारों उंगलियों का केन्द्र स्थल है। पूरी हथेली पर तीन रेखाएं ऐसी हैं जो अपरिवर्तित रहती हैं। मनुष्य में कुछ गुण जन्मजात और वंशानुक्रम के पैतृक होने के कारण हृदय, मस्तिष्क एवं जीवन रेखा पर कोई परिवर्तन परिलक्षित नहीं होता। यद्यपि इन रेखाओं को प्रभावित करने वाली सहायक रेखाएं बनती, बिगड़ती तथा बदलती रहती हैं।

ध्यान देने की बात है कि पुरुष का सीधा अर्थात् दायां एवं स्त्री का बायां हाथ देखकर फलादेश बताया जाता है। स्त्री स्वभाव वाले पुरुष का बायां हाथ और पुरुष स्वभाव वाली स्त्री का दाहिना हाथ देखना चाहिये। चौदह वर्ष तक बालक का स्वभाव एवं प्रकृति स्त्री के अनुरूप रहती है अतः उसका भी बायां हाथ देखकर फलाफल बताना उचित रहता है।

कोमल हथेली वाले लोगों की रुचि प्रायः कलात्मक कार्यों में रहती है। वे कर्त्तव्यनिष्ठ और अपने उत्तरदायित्वों को गम्भीरता से निबाहने वाले होते हैं। भारी और कर्कश हथेली वाले पाशविक वृत्तियों से प्रभावित रहते हैं। कड़ी और कठोर हथेली बौद्धिकता की कमी परिलक्षित करती है।

जिन लोगों की हथेलियां उनके शरीर के आकार की तुलना में छोटी होती हैं वे काल्पनिक संसार में बड़ी–बड़ी योजनाएं बनाते रहते हैं। यदि

हथेली पर अन्य योग अनुकूल है तो ऐसे लोगों की बुद्धि तीव्र होगी, और वे त्वरित गति से सही निर्णय लेने में सक्षम होते हैं। ऐसे लोग भावुक रहते हैं। शरीर रचना की तुलना में लम्बी हथेली वाले लोग प्रत्येक मामले में बारीकी और गहराई तक जाते हैं। काम को सुघड़ता से करना पसंद करते हैं। चौड़ी हथेली वालों की इच्छाएं और योजनाएं मध्यम स्तर की होती हैं तथा ऐसे लोग सोच-समझकर काम करते हैं। बाल की खाल निकालना और बातें कम, काम ज्यादा इनका स्वभाव बन जाता है।

सफेद रंग की हथेली वाले लोगों में रक्त की कमी होने के करण उनका उत्साह और शक्ति भी क्षीण हो जाती है। वे अनिश्चय की स्थिति में कल्पनाओं में जीते रहते हैं। शारीरिक परिश्रम में अरुचि, स्वार्थी और भावुक हो जाते हैं। ऐसे लोगों में हृदय रोगों की सम्भावना भी बढ़ जाती है।

जिन लोगों की हथेली नर्म, लचीली और लालिमा लिये हुये होती है वे व्यक्ति आत्मकेन्द्रित, ऐश्वर्य चाहने वाले तथा उन्नत अभिरुचि के होते हैं। संघर्षों से घबरा जाने वाले ऐसे लोग कठोर परिश्रम भी नहीं कर सकते, लालिमारहित हथेली रहस्यमय व्यक्तित्व, शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता की द्योतक होती है।

गुलाबी रंग लिये हुये हथेली स्वस्थ और नीरोग शरीर, मानसिक संतुलन तथा अच्छे गुणों की परिमापक है। ऐसे लोगों में सहयोग, सहानुभूति, क्षमा, दया, स्नेह, धैर्य और ममता की भावना भरी होती है। जीवन के प्रति उत्साह और उमंग स्वभाव से हँसमुख और मिलनसार होना इनका स्वभाव होता है।

अत्यधिक गुलाबी तथा लाल हथेलियां सामान्य से कम स्तर का स्वास्थ्य, उतावलापन एवं येन-केन सफलता प्राप्त करने की परिचायक होती हैं।

जिस व्यक्ति की हथेली का रंग गाढ़ा लाल हो वह काम को शीघ्रता से निबटाने वाला, काम में सफलता पाने वाला और क्षमाशील होता है।

नीली, बैंगनी या हल्का जामुनी रंग वाली हथेलियां रोगग्रस्त अथवा अस्वस्थ शरीर को परिलक्षित करती हैं। ऐसे व्यक्ति आत्मकेन्द्रित, निराशावादी और चिड़चिड़े स्वभाव के होते हैं।

जिन व्यक्तियों की हथेलियां पीले रंग की हों उनके शरीर में पित्त की अधिकता होती है। इन्हें अक्सर जुकाम की शिकायत रहती है। उत्साहहीन और निराशावादी ऐसे व्यक्ति उदास और प्रयास से परे रहना चाहते हैं। यदि हाथ-पैर हथेली की हड्डियों के जोड़ तथा अंगुलियों के जोड़ अधिक लचकदार हों तो ऐसा व्यक्ति संतुलित दिमाग का तथा अपने आपको परिस्थितियों के

अनुरूप ढालने की क्षमता वाला होता है।

यदि हाथ, हथेली और अंगुलियों के जोड़ सख्त और कठोर हों तो व्यक्ति का स्वभाव भी कठोर और हठी होता है। शीघ्र किसी का अनुसरण नहीं करता, प्रण का पक्का होता है।

मनुष्य के हाथ के आकार और संरचना से उसके स्वभाव, चरित्र आदि की एवं उस मनुष्य की विभिन्न क्षमताओं की जानकारी मिलती है। प्रत्येक व्यक्ति का हाथ यद्यपि समान नहीं होता परन्तु स्थूल अध्ययन के लिये हाथों का वर्गीकरण सात मुख्य श्रेणियों में किया गया है–

1. प्रारम्भिक अर्थात् अविकसित निकृष्ट हाथ।
2. समकोणीय अर्थात् वर्गाकार व्यावसायिक हाथ।
3. चमचाकार कर्मठ हाथ।
4. नुकीला कलात्मक हाथ।
5. गठीला दार्शनिक हाथ।
6. आदर्शवादी बौद्धिक हाथ।
7. मिश्रित हाथ।

वास्तविक रूप से देखा जाये तो प्रकृति के त्रिगुणात्मक होने के कारण हाथ भी तीन प्रकार के सात्विक राजस और तामस होने चाहियें, परन्तु इस व्यवस्था को विस्तार देते हुये हाथों के अध्ययन को सात वर्गों में बांट दिया गया है–

1. सात्विक, 2. राजस, 3. तामस, 4. सात्विक–राजस, 5. राजस–तामस, 6. सात्विक–तामस, 7. सात्विक–राजस–तामस।

1. प्रारम्भिक अर्थात् अविकसित निकृष्ट हाथ–यह हाथ भद्दे आकार वाला, भारी, खुरदरा, अपेक्षाकृत अधिक मोटा और छोटा होता है। अंगूठा लगभग चौकोर, छोटा, मोटा, अंगुलियां छोटी, मोटी, कठोर और कभी–कभी घने बालों से ढकी होती हैं, अंगूठा तर्जनी उंगली के मूल तक भी कठिनाई से ही पहुंच पाता है। अंगूठे का ऊपरी हिस्सा मोटा और नीले नाखून की ओर का हिस्सा कुछ पतला होता है।

ऐसे हाथ की हथेली पर रेखायें संख्या में कम परन्तु चौड़ी और भद्दी होती हैं। ऐसे व्यक्ति में विचार और तर्कशक्ति नहीं होती। वे मानसिक भ्रम बहुत कम परन्तु शारीरिक परिश्रम अधिक करते हैं। न तो इनकी कोई महत्वाकांक्षा होती है और न ये किसी धार्मिक अथवा सामाजिक गतिविधि में रुचि ही रखते हैं। इनकी दिनचर्या रोटी, कपड़ा और मकान तक ही सीमित रहती है। सामान्यतः शांत प्रकृति के दिखने वाले ऐसे लोग कभी-कभी अपराध की राह पर भी चल पड़ते हैं; क्योंकि विवेक-बुद्धि और दूरदर्शिता का इनमें अभाव ही रहता है। मंद बुद्धि के ऐसे लोग वासनाओं के वशीभूत रहते हैं। परिश्रम से भी चुराना और मुफ्त का धन पा लेने की उम्मीद इनका स्वभाव बन जाता है। कभी-कभी ये लोग निर्दयी भी बन जाते हैं।

2. समकोणीय अर्थात् वर्गाकार व्यावसायिक हाथ—इस प्रकार के हाथ में हाथ की लम्बाई और चौड़ाई लगभग समान तथा कलाई एवं अंगुलियों के बीच हथेली तथा उंगलियां अलग-अलग नाप में समकोण की तरह होती हैं। उंगलियों की बनावट वर्गाकार तथा ये सिरों पर चौड़ी होती हैं। हथेली समतल और अंगूठा लम्बा, सुडोल तथा हथेली के बाहर की ओर निकला होता है। ऐसा हाथ श्रेष्ठ माना जाता है।

वर्गाकार हाथ वाले लोग व्यावहारिक पूर्णतः भौतिकवादी, अनुशासनप्रिय, मिलनसार, उत्साही, सभ्य, निष्ठावान तथा कार्यों को सलीके से करने वाले होते हैं। क्रियाशील, समझौतावादी और एकाग्र होने के कारण ऐसे लोग सभी कार्यों में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। ऐसे लोग सभी कार्यों में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। मित्रता निभाने वाले इरादों के पक्के ये लोग व्यापार में भी नीति पर चलने वाले और सच्चे होते हैं। धैर्य, लगन तथा श्रम से सम्पत्ति अर्जित करते हैं। धन और वैभव इनका लक्ष्य होता है।

इस श्रेणी के लोग डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, उद्योगपति और सफल व्यापारी बनते हैं। समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ, गणितज्ञ आदि भी इसी वर्ग

में आते हैं। सहनशील और सुन्दरता प्रेमी ऐसे व्यक्ति काम-वासना से ग्रस्त भी रहते हैं। ऐसे हाथ वालों की हथेली यदि कठोर हो तो इनकी व्यावसायिक सफलता लगभग निश्चित हो जाती है। यदि हथेली कोमल हो तो ये बुद्धिजीवी होते हैं और धन की अपेक्षा यश और प्रतिष्ठा को अधिक महत्व देते हैं। वे समाज सेवा में जुटे रहते हैं। उंगलियां यदि गठीली और समकोण के आकार की हों तो सत्यवादी और शांत प्रकृति के, यदि चिकनी और मस्तक रेखा झुकी हुई हो तो सुन्दर वस्त्रों के शौकीन होते हैं तथा इनकी तर्कशक्ति तेज होती है। यदि कनिष्ठिका-उंगली टेढ़ी हो तो व्यक्ति में कुछ दोष आ सकते हैं। चपटी उंगलियों वाला व्यक्ति बुद्धिमान और आविष्कारक होता है। वर्गाकार हाथ में लम्बी चौरस उंगलियों वाले लोग अधिक बुद्धिमान और विचारशील होते हैं, उंगलियां ऊपर से मोटी एवं नाखून की तरफ पतली हो तो ऐसा पुरुष दर्शन शास्त्र का पंडित अथवा महान कवि, विचारक, संगीतज्ञ और ललित कलाओं का मर्मज्ञ होता है। नुकीली उंगली वाले कुशाग्र बुद्धि परन्तु चंचल स्वभाव के होते हैं। शांत विलासिताप्रिय तथा एकान्तवासी होते हैं। यदि मस्तिष्क रेखा चन्द्र पर्वत पर समाप्त नहीं होती या दो शाखाओं में नहीं बंटती तो वह व्यक्ति ईमानदार होगा।

वर्गाकार हाथ वाली औरतें पुरुषों से घिरी रहना पसंद करती हैं और सुन्दर मकान, वस्त्र, आभूषण, आदि की शौकीन होती हैं।

3. चमचाकार कर्मठ हाथ—इसके नाम के अनुरूप ऐसा हाथ चौड़ाई की अपेक्षा कुछ ज्यादा लम्बा होता है। हथेली चौड़ी और प्रायः कठोर एवं खुरदुरी होती है। एक हाथ में हथेली कलाई के पास अधिक तथा उंगलियों के पास कम चौड़ी तो दूसरे हाथ में उंगलियों के पास अधिक और कलाई के पास कम चौड़ी होती है। मणिबंध के पास वाला भाग कुछ भारी और आगे का भाग अपेक्षाकृत हल्का होता है। चन्द्र एवं शुक्र पर्वत उभरे हुये होते हैं। उंगलियां भी चपटी और टेढ़ी-मेढ़ी तथा सिरे कुछ बड़े और फैले हुये होते हैं। ऐसा हाथ वाला व्यक्ति सक्रिय, परिश्रमी और कर्मठ होता है तथा उसमें विचारों एवं
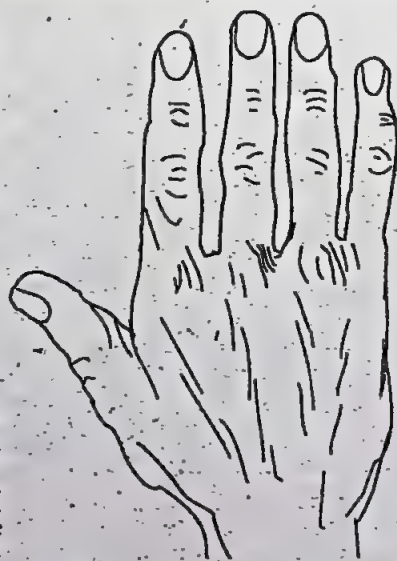
व्यावहारिकता का समावेश रहता है। ऐसे व्यक्ति भावनात्मक नहीं होकर पूर्णतः व्यावहारिक होते हैं और नये-नये कार्य करने की लगन उनमें रहती है। प्रगतिशीलता और भौतिकता के साथ-साथ अत्यधिक कार्यक्षमता इनका विशिष्ट गुण बन जाता है। मणिवंध के पास वाले भाग की अपेक्षा यदि उंगलियों के जोड़ों वाला भाग यदि अधिक चौड़ा हो तो व्यक्ति यंत्रों का आविष्कारक होता है। शिक्षा, संगीत और ललित कला में रुचि कम होती है। चपटे हाथ के साथ यदि अंगूठा लम्बा हो तो व्यक्ति अपना प्रभुत्व और स्वामित्व जगाने की इच्छा रखने वाला परन्तु दूसरे का अधिकार न सहन करने वाला होगा। काम की लगन इसमें भरी रहती है। चपटे हाथ में छोटा अंगूठा व्यक्ति को बड़े कार्य में सफलता देने वाला, अधीनस्थ कार्य कराने वाला, भ्रमणशील और स्त्री रमण का शौकीन बनाता है। मजबूत और लचीले हाथ व्यक्ति को न्याय और सत्यप्रिय बनाते हैं। ऐसे व्यक्ति सेना या पुलिस की नौकरी में जाना पसंद करते हैं।

चपटे हाथ में उंगलियों के मोटे जोड़ वाले पुरुषों की बुद्धि कुशाग्र होती है। बहु स्त्री सम्बंध वाला होता है और राजनीति में सक्रिय रहता है।

उंगलियां गांठदार हों तो व्यक्ति स्वभाव से सरल, कम क्रोधी और नम्र तथा परिश्रमी होता है। ऐसे व्यक्ति का शरीर फुर्तीला और वह घुड़सवारी, शिकार करना या निशानेबाजी का शौकीन होता है।

गांठदार उंगलियां यदि चिकनी हों तो ऐसे मनुष्य दस्तकारी को पसंद करते हैं परन्तु कुशल कलाकार नहीं होते। यदि चिकनी उंगलियां लम्बी भी हों तो व्यक्ति की रुचि पेड़-पौधों और खेती के कार्य में अधिक होती है।

4. नुकीला कलात्मक हाथ—इस वर्ग के हाथ सुन्दर और कोमल होते हैं। इस हाथ की उंगलियां नुकीली, खूबसूरत, पतली और नरम होती हैं। इस हाथ की उंगलियां लम्बी और बीच वाले जोड़ से एक शुंक बनाती हुई जाती हैं तथा ऊपर सिरे पर पतली एवं मूल में भरी हुई मोटी होती हैं। किसी हाथ में उंगलियां प्रायः समान लम्बी और मोटी भी पाई जाती हैं। अंगूठा जोड़ में कुछ मोटा और आगे पतला होता है। मणिबंध के पास हथेली चौड़ी होती है।

कलात्मक हाथ वाले व्यक्तियों की रुचि सौंदर्य तथा प्रेम की ओर रहती है। ऐसे लोग मुख्यत: कलाकार अथवा कलापारखी, कलाप्रेमी या कला क्षेत्र के पारंगत होते हैं। वे अत्यन्त संवेदनशील होने के साथ-साथ परिश्रम से भागने वाले और उत्तरदायित्वों से मुंह मोड़ने वाले होते हैं। स्वभाव में लापरवाही होने के कारण ऐसे लोग व्यावहारिक रूप से सफल नहीं हो पाते और भावना के वशीभूत होकर कल्पनाओं में खोये रहते हैं। आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है।

यदि इस हाथ की हथेली कठोर हो तो ये अपनी कला या संगीत द्वारा धन भी कमा लेते हैं, परन्तु नरम हथेली वाले लोग सफलता प्राप्त नहीं कर पाते।

गांठदार हाथ वाले सुन्दरता के प्रेमी और धन की लालसा वाले होते हैं, परन्तु सफलता प्राप्त नहीं कर पाते। ऐसे हाथ वाली स्त्रियां प्रेम के लिये उतावली रहती हैं और बिना समझे-सोचे प्रेमजाल में फंस जाती हैं।

चौरस उंगलियां निरन्तर प्रयास करने की द्योतक हैं और सफलता भी दिलाती हैं। ऐसे व्यक्ति का सम्पर्क अच्छे लोगों से रहता है और ये सुन्दर वस्तुओं का संग्रह भी करते हैं।

चपटी उंगलियों वाले व्यक्ति चतुर और कविता अथवा चित्रकला में अभिरुचि रखने वाले होते हैं। यद्यपि कामुक होगा, परन्तु अधिक सम्भोग और अधिक संतान की इच्छा नहीं करेगा।

लम्बे अंगूठे वाला मनुष्य कला से धन और कीर्ति दोनों अर्जित करेगा परन्तु निराशाओं से घिरा रहेगा। पारिवारिक जीवन इसको बोझ-सा लगेगा। वासना के कल्पना लोक में विचरता रहेगा।

छोटा अंगूठा व्यक्ति की काव्य कला, संगीत, प्रेम, चित्रकला, मूर्तिकारिता एवं भवन-निर्माण कला में रुचि रखने का परिचायक है।

लम्बी हथेली, कोमल उंगलियां और अंगूठा लचीला तथा छोटा हो तो व्यक्ति भावुक और खर्चीला होगा।

हथेली लम्बी और कठोर तथा शुक्र पर्वत बहुत उठा हुआ हो तो वह व्यक्ति व्यसनी, व्यभिचारी और बदमाश होगा। दुर्बल इच्छाशक्ति वाला ऐसा व्यक्ति संगत के अनुसार अच्छे-बुरे दोनों तरह के काम करेगा।

5. गठीला दार्शनिक हाथ—दार्शनिक हाथ गठीला, लम्बा, पतला, अस्थि-प्रधान, कोणाकार और बीच में झुका हुआ होता है तथा इसकी उंगलियां जोड़ों पर कुछ गठीली होती हैं। इस हाथ की बनावट सुडौल तो नहीं परन्तु लचकदार और उंगलियों के जोड़ों में स्पष्टता लिये हुये होती है। हथेली

की लम्बाई तथा उंगलियों की लम्बाई लगभग बराबर होती है और बीच में दबी होती है। उंगलियां कुछ टेढ़ी और लम्बी तथा सुन्दर जोड़ों वाली होती हैं।

इस प्रकार के हाथ वाले मनुष्य चिंतक, दार्शनिक, कलाकार, साहित्यकार, धार्मिक नेता और प्रतिभावान होते हैं। ये लोग धन की अपेक्षा सम्मान और आदर्श को अधिक महत्व देते हैं।

यदि हथेली पर दार्शनिक वर्ग की उंगलियां वर्गाकार हाथ पर पाई जायें तो वह व्यक्ति पूर्णतः सफल होता है।

दार्शनिक हाथ वाले व्यक्ति यद्यपि धन अर्जित नहीं कर पाते, परन्तु फिर भी ये उदार और परोपकारी होते हैं।

6. आदर्शवादी बौद्धिक हाथ–ऐसे हाथ विकसित और कल्पनाशील मस्तिष्क को परिलक्षित करते हैं। ऐसा हाथ सुडोल, कम चौड़ा, लम्बा, सुन्दर, पतला, कोमल और गुलाबी रंग की त्वचा वाला तथा समानुपातिक उंगलियों वाला होता है। उंगलियां पतली, लम्बी, नुकीली, ऊपर से पतली और लम्बी होकर नीचे की ओर जोड़ों की तरफ मोटी होती जाती हैं। अंगूठे प्रायः छोटे, पतले और अंगुलियों की ओर झुके होते हैं।

इन हाथों वाले व्यक्ति उन्नत और परिपक्व मस्तिष्क वाले पूजा, अर्चना, संगीत आदि से प्रभावित होने वाले होते हैं, परन्तु धन, ऐश्वर्य एवं सम्पन्नता

कलात्मक हाथ वाले व्यक्तियों की रुचि सौंदर्य तथा प्रेम की ओर रहती है। ऐसे लोग मुख्यत: कलाकार अथवा कलापारखी, कलाप्रेमी या कला क्षेत्र के पारंगत होते हैं। वे अत्यन्त संवेदनशील होने के साथ-साथ परिश्रम से भागने वाले और उत्तरदायित्वों से मुंह मोड़ने वाले होते हैं। स्वभाव में लापरवाही होने के कारण ऐसे लोग व्यावहारिक रूप से सफल नहीं हो पाते और भावना के वशीभूत होकर कल्पनाओं में खोये रहते हैं। आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ता है।

यदि इस हाथ की हथेली कठोर हो तो ये अपनी कला या संगीत द्वारा धन भी कमा लेते हैं, परन्तु नरम हथेली वाले लोग सफलता प्राप्त नहीं कर पाते।

गांठदार हाथ वाले सुन्दरता के प्रेमी और धन की लालसा वाले होते हैं, परन्तु सफलता प्राप्त नहीं कर पाते। ऐसे हाथ वाली स्त्रियां प्रेम के लिये उतावली रहती हैं और बिना समझे-सोचे प्रेमजाल में फंस जाती हैं।

चौरस उंगलियां निरन्तर प्रयास करने की द्योतक हैं और सफलता भी दिलाती हैं। ऐसे व्यक्ति का सम्पर्क अच्छे लोगों से रहता है और ये सुन्दर वस्तुओं का संग्रह भी करते हैं।

चपटी उंगलियों वाले व्यक्ति चतुर और कविता अथवा चित्रकला में अभिरुचि रखने वाले होते हैं। यद्यपि कामुक होगा, परन्तु अधिक सम्भोग और अधिक संतान की इच्छा नहीं करेगा।

लम्बे अंगूठे वाला मनुष्य कला से धन और कीर्ति दोनों अर्जित करेगा परन्तु निराशाओं से घिरा रहेगा। पारिवारिक जीवन इसको बोझ-सा लगेगा। वासना के कल्पना लोक में विचरता रहेगा।

छोटा अंगूठा व्यक्ति की काव्य कला, संगीत, प्रेम, चित्रकला, मूर्तिकारिता एवं भवन-निर्माण कला में रुचि रखने का परिचायक है।

लम्बी हथेली, कोमल उंगलियां और अंगूठा लचीला तथा छोटा हो तो व्यक्ति भावुक और खर्चीला होगा।

हथेली लम्बी और कठोर तथा शुक्र पर्वत बहुत उठा हुआ हो तो वह व्यक्ति व्यसनी, व्यभिचारी और बदमाश होगा। दुर्बल इच्छाशक्ति वाला ऐसा व्यक्ति संगत के अनुसार अच्छे-बुरे दोनों तरह के काम करेगा।

5. गठीला दार्शनिक हाथ—दार्शनिक हाथ गठीला, लम्बा, पतला, अस्थि-प्रधान, कोणाकार और बीच में झुका हुआ होता है तथा इसकी उंगलियां जोड़ों पर कुछ गठीली होती हैं। इस हाथ की बनावट सुडौल तो नहीं परन्तु लचकदार और उंगलियों के जोड़ों में स्पष्टता लिये हुये होती है। हथेली

की लम्बाई तथा उंगलियों की लम्बाई लगभग बराबर होती है और बीच में दबी होती है। उंगलियां कुछ टेढ़ी और लम्बी तथा सुन्दर जोड़ों वाली होती हैं।

इस प्रकार के हाथ वाले मनुष्य चिंतक, दार्शनिक, कलाकार, साहित्यकार, धार्मिक नेता और प्रतिभावान होते हैं। ये लोग धन की अपेक्षा सम्मान और आदर्श को अधिक महत्व देते हैं।

यदि हथेली पर दार्शनिक वर्ग की उंगलियां वर्गाकार हाथ पर पाई जायें तो वह व्यक्ति पूर्णतः सफल होता है।

दार्शनिक हाथ वाले व्यक्ति यद्यपि धन अर्जित नहीं कर पाते, परन्तु फिर भी ये उदार और परोपकारी होते हैं।

6. आदर्शवादी बौद्धिक हाथ–ऐसे हाथ विकसित और कल्पनाशील मस्तिष्क को परिलक्षित करते हैं। ऐसा हाथ सुडोल, कम चौड़ा, लम्बा, सुन्दर, पतला, कोमल और गुलाबी रंग की त्वचा वाला तथा समानुपातिक उंगलियों वाला होता है। उंगलियां पतली, लम्बी, नुकीली, ऊपर से पतली और लम्बी होकर नीचे की ओर जोड़ों की तरफ मोटी होती जाती हैं। अंगूठे प्रायः छोटे, पतले और अंगुलियों की ओर झुके होते हैं।

इन हाथों वाले व्यक्ति उन्नत और परिपक्व मस्तिष्क वाले पूजा, अर्चना, संगीत आदि से प्रभावित होने वाले होते हैं, परन्तु धन, ऐश्वर्य एवं सम्पन्नता

उन्हीं को प्राप्त हो पाती है। जिनके हाथ कठोर अथवा अंगूठा सुडौल और लम्बा हो, जिन हाथों पर छोटी-छोटी बहुत-सी रेखायें इधर-उधर बिखरी हों उनका चित्त अस्थिर और स्वभाव में उत्तेजना रहती है।

आदर्श हाथ वाला व्यक्ति नम्र परन्तु दृढ़निश्चयी नहीं होता और अच्छी से अच्छी भाग्य या सूर्य रेखा भी इन्हें वांछित सफलता नहीं दे पाती। जीवन के अंतिम वर्षों से इन्हें सफलताओं का सामना करना पड़ता है। न तो ये व्यावहारिक होते हैं न तर्कशील। नारी के प्रति आशक्त होते हुये भी गृहस्थी को पचड़ा समझते हैं। कल्पनालोक में डूबे ऐसे लोग प्रायः मित्रों आदि से ठगे जाते हैं।

इस प्रकार के हाथ में यदि उत्तम रेखायें हों तो वह व्यक्ति रहस्यवाद, आध्यात्मिकवाद, मनोविज्ञान, ज्योतिष, कामविज्ञान आदि का विद्वान् बनता है। ऐसे लोगों को विदेश यात्राओं और विदेशों में ख्याति तो मिलती है लेकिन स्त्री-सुख बहुत कम मिल पाता है।

यदि उंगलियों के प्रथम जोड़ उतरे हों तो व्यक्ति शीघ्र क्रोधित होने वाला और शीघ्र शांत होने वाला होता है। बुद्धि की स्मरण शक्ति तेज होती है।

यदि उंगलियों के दोनों जोड़ उभरे हों तो वह व्यक्ति शराबी, दुष्ट और अवनति के मार्ग पर चलने वाला होता है।

यदि अंगूठा छोटा हो तो व्यक्ति चिन्ता, तनाव, भय शंकाओं आदि से घिरा रहता है।

7. मिश्रित हाथ—इस प्रकार के हाथ में एक से अधिक वर्गों का सम्मिश्रण होता है जिससे ऐसे व्यक्ति विभिन्न और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने आपको ढाल लेते हैं। इन लोगों का व्यक्तित्व, प्रभावहीन होता है और सफलता मुश्किल से ही मिल पाती है। परिणामस्वरूप जीवन में निराशा घर कर जाती है।

मिश्रित हाथ की कोई उंगली टेढ़ी, कोई नोकदार और कोई चपटी होती है। हथेली उंगलियों के निवास स्थान पर उभरी हुई होती है। मणिबंध के पास हाथ पतला हो जाता है।

मिश्रित हाथ वाला व्यक्ति अस्थिर मन

वाला, वाचाल, चतुर और गलतियां करने वाला होगा। इनकी रुचि यंत्रों, कृषि, दस्तकारी, विज्ञान आदि में होती है।

मिश्रित हाथ में मस्तक रेखा अच्छी हो तो व्यक्ति अपनी योग्यता का सदुपयोग कर लेता है। मुसीबतों से घबराता नहीं। बुद्धि तीव्र होती है परन्तु वह उसका उपयोग कम ही करता है। ऐसा व्यक्ति एक ही स्त्री से संतुष्ट और अधिक संतान वाला होता है।

असाधारण रूप से लम्बे-चौड़े हाथ में रेखाओं की बहुलता वाला व्यक्ति संसार में क्रांतिकारी और नयी खोजों का कार्य करता है। वह प्रसिद्ध या कुख्यात व्यक्ति चतुर और झांसेबाज हो सकता है। ऐसे व्यक्ति अनेक स्त्रियों से सम्बंध बनाते हैं और उन्हें छुपाकर रखने में सफल भी रहते हैं।

हथेली

सामान्य लम्बाई, चौड़ाई और उठान वाली हथेली उत्तम होती है। यह न तो बहुत चौड़ी और न बहुत संकुचित होनी चाहिये।

हथेली अधिक मोटी, थुलथुल और बेडौल हो तो व्यक्ति व्यसनी, विषय-भोगी और स्वार्थी होता है।

हथेली, अधिक संकुचित, कठोर और शुष्क तथा पतली हो तो मनुष्य अविवेकी, कमजोर, डरपोक, अस्थिर स्वभाव वाला, चरित्रहीन और उत्साहहीन होता है।

नरम और ढीली हथेली मनुष्य को आलसी, आरामतलब और कल्पनालोक में विचरने वाला बना देती है।

लम्बी और नरम हथेली भी आलसी होने की ही द्योतक है।

सामान्य से छोटा हाथ वाला पुरुष वाचाल होता है, जबकि दृढ़ हथेली वाला अच्छे और चंचल स्वभाव का होता है।

गहरी हथेली दुर्भाग्य की सूचक है, यदि गहराई हृदय रेखा की ओर हो तो मित्रों से निराशा ही हाथ लगती है। यदि गहराई भाग्य रेखा के नीचे आती हो तो सामान्य व्यवहार, व्यापार और धन के लेन-देन में अशुभ फल-दायक है। लिया हुआ उधार चुकाना और दिया हुआ वापस प्राप्त करना कठिन हो जाता है। यदि हथेली की गहराई पितृ रेखा की ओर लुढ़कती हो तो गृहस्थ कार्यों में बाधायें और निराशायें हाथ लगती हैं।

हथेली की गहराई में स्थित रोग की रेखायें भयानक रोग को परिलक्षित करती हैं।

मजबूत और नरम हथेली वाला व्यक्ति प्रबल इच्छाशक्ति वाला और साहसी होता है। सफेद हथेली व्यक्ति को स्वार्थी संवेदनाहीन और आत्म-प्रशंसी बना देती है। काली हथेली दुःख, मलिनता और ठंडे स्वभाव की सूचक है। पीली हथेली वाले लोग साधु प्रकृति के होते हैं। भूरी हथेली नपुंसकता एवं निस्तेज होने की परिचायक होती है। गुलाबी आभा की हथेली उत्तम मानी जाती है। यह मनुष्य को तेजस्वी और न्यायप्रिय बनाती है। कोमल और झुर्रीदार हथेली मूर्खता, मानसिक तथा शारीरिक दुर्बलता, आलस्य और प्रमाद की द्योतक होती है।

सफेद आभा लिये हुये मोटी तथा दृढ़ हथेली वाला व्यक्ति स्वार्थी और उद्दंड होता है।

पतली, संकुचित एवं झुर्रीदार हथेली कायरता की सूचक होती है। ऐसे व्यक्तियों में नैतिकता और उत्साह की कमी रहती है। ऐसी हथेली वाले की उंगलियां लम्बी और पतली हों तो वह व्यक्ति विद्रोह भावना से भरा रहता है। कठोर हथेली और ज्यादा लम्बी उंगलियों वाला व्यक्ति क्रूर और पशु प्रकृति का होता है।

यदि कोई रेखा दोनों हाथों में हो तो वह पूरा फल देती है। यदि कोई रेखा केवल दाहिने हाथ में पाई जाती है तो उसका फल आधे से अधिक और यदि केवल बाएं हाथ में हो तो फल आधे से कम होता है।

हाथ में बहुत-सी रेखायें चिड़चिड़ापन, बेचैनी, चिंता और अस्वस्थता की प्रतीक होती है।

हाथ में गड्ढे होना दुर्भाग्य और असफलताओं के द्योतक हैं।

हथेली का रंग लाल हो तो व्यक्ति धनी, नीला हो तो शराबी, पीला हो तो कामुक और सफेद या काला हो तो निर्धन होता है।

लम्बे हाथ वाला कर्मठ व छोटे हाथ वाला व्यक्ति योजनायें बनाते रहने वाला होता है।

हथेली ऊंची हो तो दानी, गोल हो तो सम्पन्न और यदि ऊंची-नीची हो तो गरीब होता है।

यदि ऐसे हाथ का रंग लाल हो, उंगलियां आपस में सटी हों, हथेली चिकनी और भरी-भरी हो तथा उंगलियां बड़ी-बड़ी और चमकीले लाल रंग की नसों वाली हों तो हाथ उत्तम फल वाला होता है।

यदि हथेली के बीच का हिस्सा गहरा हो और उस पर भाग्य रेखा आड़ी-तिरछी चल रही हो तो व्यक्ति निर्धन और भिखारी हो जाता है। जिस व्यक्ति

का हाथ लम्बा तथा भद्दा होता है वह निर्धन होता है। लम्बे और गठीले हाथ वाला व्यक्ति आलसी होता है परन्तु निर्धन नहीं होता। लम्बे, सुडौल और सुन्दर हाथ वाला व्यक्ति भाग्यशाली होता है।

पान के आकार वाले हाथ का व्यक्ति यश और समृद्धि प्राप्त करता है। चौकोर हाथ का व्यक्ति डाकू बनता है। टेढ़ा-मेढ़ा हाथ अर्थात् आकारहीन नीच प्रकृति का सूचक होता है। गोल हाथ व्योपार दर्शाता है।

गहरी हथेली वाले व्यक्ति धनलोलुप होते हैं। लम्बी उंगलियां तथा लम्बी व संकुचित हथेली वाला व्यक्ति मूर्ख होता है। लम्बी उंगलियां और बड़ी हथेली बुद्धिमत्ता की प्रतीक होती है। समान आकार और माप की उंगलियां तथा हथेली वाले मनुष्य कुशल व्यवसायी और धनवान् होते हैं।

हथेली के ग्रहक्षेत्र

हथेली पर अंगुली के मूल के नीचे एक उभरी हुई मांसल गद्दी होती है जिसे ग्रह क्षेत्र या ग्रह पर्वत कहते हैं। ये क्षेत्र व्यक्ति के स्वभाव, रुचि, चरित्र, और जीवन प्रणाली को परिलक्षित करते हैं। यद्यपि इन क्षेत्रों के नाम और मंडल के नवग्रहों के नाम पर रखे गये हैं परन्तु उनका हाथ के ग्रह क्षेत्रों से कोई भी प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्बंध नहीं है।

विकसित और उन्नत ग्रह क्षेत्र अपना विशेष और अनुकूल प्रभाव डालते हैं, समतल ग्रह क्षेत्र सुषुप्त और प्रभावहीन होते हैं तथा अवनत एवं धंसे हुये ग्रह क्षेत्र प्रतिकूल और अशुभ फलकारी होते हैं।

हथेली पर स्थिति के क्रमानुसार इन क्षेत्रों अथवा पर्वतों की व्याख्या निम्न प्रकार से है-
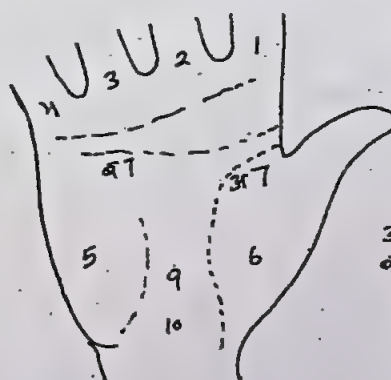
1. बृहस्पति पर्वत

इसका क्षेत्र तर्जनी अर्थात् प्रथम अंगुली के मूल एवं निम्न मंगल के ऊपर स्थित होता है जो कभी-कभी जीवन रेखा तक दिखाई देता है। सुविकसित और उभरे हुये गुरु पर्वत वाले व्यक्ति महत्वाकांक्षी, उत्साही, दृढ़, आदर्शवादी, उन्नतशील तथा कर्त्तव्यों के प्रति निष्ठावान् होते हैं। ये लोग आत्मसम्मान और विवेकशील तथा परोपकारी स्वभाव के होते हैं। धार्मिक विचारों वाले ऐसे व्यक्तियों में संगठन की नेतृत्व क्षमता भी पर्याप्त होती

है। यदि यह क्षेत्र अत्यधिक उभरा हुआ हो तो व्यक्ति दम्भी, स्वार्थी, जिद्दी और डींगे हांकने वाला तथा ईर्ष्यालु होता है जिससे समाज में सम्मान नहीं मिल पाता।

यदि यह क्षेत्र दबा हुआ हो तो व्यक्ति कर्त्तव्यविमुख होकर नीच कर्म में प्रवृत्त हो जाता है तथा उसमें आत्मसम्मान की भावना नहीं रह पाती। व्यक्ति नास्तिक एवं एकान्तप्रिय हो जाता है।

विकसित बृहस्पति पर्वत के साथ यदि मस्तक, भाग्य व हृदय रेखायें सुन्दर और स्पष्ट हों तो व्यक्ति अपने कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

यदि बृहस्पति पर्वत क्षेत्र विकसित हो परन्तु भाग्य, आयु, मस्तक और हृदय रेखायें कटी-फटी हों तो पराजय और असफलता का कारण बनती हैं। व्यक्ति अविश्वसनीय एवं षड्यन्त्रकारी तथा अपनी भूलें दूसरों पर थोपने वाला होता है।

गुरु पर्वत प्रधान व्यक्ति कलाकार, वैज्ञानिक, न्यायाधीश, नेता अथवा प्रोफेसर बनते हैं। शारीरिक दृष्टि से ऐसे व्यक्ति स्वस्थ, सामान्य शरीर परन्तु सुडौल और हँसमुख होते हैं। भाषणकला में प्रवीण, दयालु और स्वतंत्र विचार इनके अन्य गुण हैं।

स्त्रियों के हाथों में उन्नत गुरु पर्वत उनमें समर्पण की भावना भर देते हैं। ऐसी स्त्री पुरुष पर शासन करने वाली होती है और पति की वृद्धावस्था में सेवा करने वाली होती है।

यदि गुरु पर्वत शनि की ओर झुका हुआ हो तो व्यक्ति चिन्तनशील होने के साथ-साथ निराशावादी हो जाता है और उसके स्वभाव में नास्तिकता, बेरूखी तथा गम्भीरता आ जाती है।

यदि गुरु पर्वत के साथ-साथ मानसिक विश्व भी विकसित हो तो व्यक्ति लेखन और साहित्य के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

यदि गुरु पर्वत सूर्य पर्वत के समान उन्नत हो तो व्यक्ति साहित्य-लेखन क्षेत्र में धन और यश प्राप्त करता है।

पर्वत का शिखर

यदि गुरु पर्वत का शिखर शनि पर्वत के पास हो तो व्यक्ति सत्यभाषी तथा आत्मचिन्तन करने वाला होगा। शिखर यदि गुरु पर्वत के ठीक मध्य में होगा। तो व्यक्ति कुशाग्र बुद्धि वाला, दार्शनिक अथवा वैज्ञानिक होगा। गुरु पर्वत का शिखर यदि तर्जनी के ठीक नीचे हो तो व्यक्ति अभिमानी, बड़बोला और आडम्बर करने वाला होता है। शिखर यदि हृदय रेखा के

पास हो तो व्यक्ति अपनी प्रेमिकाओं में लिप्त और उनके प्रसंगों को सुनाने का शौकीन होगा। यदि गुरु पर्वत का शिखर मस्तिष्क रेखा के पास होगा तो व्यक्ति आत्म-प्रशंसक और अपने ज्ञान को बढ़ा-चढ़ाकर सुनाने वाला होगा। साफ, स्पष्ट विकसित शिखर पर यदि कोई रेखा और चिन्ह न हो तो व्यक्ति का जीवन सामान्य होगा। उतार-चढ़ावरहित जीवन में न अधिक धन अर्जित हो सकेगा और न किसी विपत्ति का ही सामना करना पड़ेगा।

पर्वत पर रेखायें

गुरु अर्थात् बृहस्पति पर्वत पर एक आड़ी रेखा कार्यों में सफलता की द्योतक है लेकिन यह रेखा कटी-फटी नहीं होनी चाहिये। दो स्पष्ट रेखायें मन में दुविधा का संकेत देती हैं जिससे कभी-कभी सफलता प्राप्त करने का अवसर चूक जाता है। रेखाओं का जाल बना हो तो व्यक्ति सामाजिक और पारिवारिक जीवन की बाधाओं से घिरा रहता है। अपनी बात को मनवाने पर अड़ा रहता है। दूसरों की नहीं सुनना चाहेगा। आपस में कटती हुई रेखायें निम्न कोटि के विचार और फूहड़ लेखक होने की परिचायक हैं। कई खड़ी रेखायें स्पष्ट हों तो व्यक्ति भाग्यवान और अच्छा लेखक होगा। कई आंड़ी या पड़ी रेखायें गुणों में कमी और अवगुणों में वृद्धि करती हैं।

यदि एक रेखा बृहस्पति पर्वत से चलकर सूर्य रेखा को काटती हुई हो तो उस व्यक्ति को शत्रु परेशान करेंगे। वह अपनी नौकरी या व्यापार भी गंवा सकता है।

जिस व्यक्ति के बृहस्पति पर्वत शिखर पर एक रेखा भाग्य से निकलकर आती हो और दूसरी सूर्य रेखा से, तो उसका दाम्पत्य जीवन प्रेमपूर्ण और काम-क्रीड़ाओं से भरा होगा।

बृहस्पति पर्वत पर द्वीप का चिन्ह अपयशकारी होता है। ऐसा व्यक्ति झगड़ालू प्रवृत्ति का होता है।

पर्वत पर चिन्ह

बृहस्पति पर्वत पर गुणन चिन्ह शुभ होता है। यह सौभाग्यवर्द्धक, सुखद प्रेम या विवाह उच्च पद की प्राप्ति तथा महत्त्वाकांक्षा पूरी होने का द्योतक है। शिखर के सबसे ऊंचे भाग पर क्रॉस का चिन्ह वाला व्यक्ति यौवनावस्था के प्रारम्भ में ही प्रेम का अनुभव और सुन्दरियों का सामीप्य प्राप्त करेगा। यदि क्रॉस का चिन्ह शिखर के नीचे होगा, तो ऐसे व्यक्ति का विवाह तीस वर्ष की आयु के पश्चात् ही हो सकेगा।

बृहस्पति पर्वत पर वर्ग का चिन्ह कल्पना और यथार्थ के सुखद सामंजस्य

का प्रतीक तो है परन्तु पर्वत के स्वाभाविक गुणों को कम कर देता है। मनुष्य पर कष्टों का आगमन होता है परन्तु वर्ग का ही चिन्ह उनसे रक्षा भी करता है। ऐसे लोगों को सफलता बहुत प्रयास करने पर ही मिल पाती है।

गुरु पर्वत पर नक्षत्र का चिन्ह ऊंची महत्वाकांक्षाओं और उनकी प्राप्ति का परिचायक है एवं वृत्त का चिन्ह सफलता का सूचक है।

पर्वत शिखर पर एक तारा हो और वह किसी रेखा से कटा हुआ न हो तो व्यक्ति शासन जमाने वाला, प्रशंसा चाहने वाला, धन, साधन और सम्पन्न और महत्वाकांक्षी होगा। ऐसा व्यक्ति स्त्रियों से प्रेम सम्बंधों का शौकीन होगा परन्तु कम संतान पैदा करेगा। संतानों के प्रति भी उदार रहेगा, यौन सम्बंधों से बचेगा।

गुरु पर्वत पर बिन्दु सामाजिक प्रतिष्ठा में कमी होने का प्रतीक है। तिल या धब्बे यदि श्वेत हों तो शुभ, लाल हों तो अल्प शुभ और काले हों तो अशुभ फलदायक होते हैं। शिखर पर काला धव्वा व्यक्ति को अधिकार एवं यश तो दिलायेगा परन्तु शक्ति और यश नष्ट भी कर देता है। यदि दोनों हाथों के बृहस्पति पर्वत शिखरों पर एक-एक काला धब्बा हो तो शक्ति और यश शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। काला दाग अपयश तथा धनहानि का प्रतीक है।

बृहस्पति पर्वत पर त्रिभुज अथवा त्रिकोण शुभ होते हैं। ये धार्मिक तथा राजनीतिक कार्यों में सफलता प्रदान करते हैं। यदि त्रिकोण के साथ तारा भी हो तो व्यक्ति में संगठन प्रतिभा होगी। वह अपने आदेश मनवाने के प्रति सचेष्ट रहता है।

इस पर्वत पर तारा और क्रॉस एकसाथ हों तो उस व्यक्ति को अचानक धन-प्राप्ति के साथ-साथ शादी में प्रचुर धन तथा ससुराल की सम्पत्ति मिलती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में गुरु पर्वत शिखर के ऊपर क्रॉस या त्रिकोण का चिन्ह हो तो वह पति की सहायक होगी। उसका पति नेता या राजदूत जैसे पद पर कार्य करेगा।

जिस स्त्री के हाथ में पर्वत शिखर के ऊपर क्रॉस कई अन्य रेखाओं द्वारा कट रहा हो वह स्त्री पर-पुरुषों से गुप्त सम्बंध बनाने में चतुर होगी और कार्यसिद्धि के लिये देशी-विदेशी पुरुषों से सम्भोग कराने को तत्पर रहेगी।

यदि बृहस्पति और शुक्र पर्वत समान रूप से विकसित हों तथा शेष

पर्वत इन दोनों से कम उभरे हैं तो बृहस्पति का प्रभाव मंद पड़ जाता है।

यदि बृहस्पति और बुध पर्वतों का विकास समान हो तो व्यक्ति बड़ी-बड़ी सफलतायें प्राप्त करता है।

यदि बृहस्पति क्षेत्र की उंगली अर्थात् तर्जनी बहुत छोटी होगी तो पर्वत के गुण क्षीण हो जाते हैं तथा टेढ़ी-मेढ़ी तर्जनी उंगली पर्वत के विकसित होते हुये भी व्यक्ति को नीच व धूर्त बना देती है। तर्जनी के अग्रभाग का वर्गाकार होना व्यक्ति के व्यवहारकुशल होने का द्योतक है। तर्जनी का दूसरा पोर लम्बा और पुष्ट हो तो व्यक्ति धन के लिये सचेत और सचेष्ट रहता है। तर्जनी का तीसरा पोर यदि सुडोल और पुष्ट हो तो वह व्यक्ति हर काम में सफलता और धन अर्जित करता है।

बृहस्पति पर्वत-प्रधान व्यक्ति यदि व्यसनों में पड़कर रोगग्रस्त हो जाता है तो उसका स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर पाना कठिन हो जाता है।

2. शनि पर्वत

मध्यमा अंगुली के मूल से हृदय रेखा तक शनि पर्वत का क्षेत्र है। यूनानी शास्त्रों में शनि को कुटिल और क्रूर देवता कहा गया है। इस पर्वत की हाथ पर विकसित स्थिति व्यक्ति को असाधारण और पर्वत की अनुपस्थिति अत्यन्त सामान्य जीवन बिताने वाला बनाती है। यह पर्वत मनुष्य की अध्यात्मिकता, गाम्भीर्य और भाग्यवादी होने का सूचक है।

जिन लोगों के हाथों में शनि विशेष स्थान रखता है वे प्रबल भाग्यवादी, एकान्तप्रिय, शंकालु और उदास हो जाते हैं। अत्यधिक विकसित पर्वत वाले व्यक्ति इंजीनियर, वैज्ञानिक, साहित्यकार या जादूगर बन जाते हैं। उन्हें जीवन वेदनापूर्ण बना देता है। धर्मान्धता और अंधविश्वास इन्हें आत्मद्राही भी बना देता है। ऐसे व्यक्ति आत्महत्या भी कर लेते हैं। ठगों और लुटेरों का शनि पर्वत काफी विकसित होता है।

दबा हुआ शनि पर्वत कठोर हृदय का प्रतीक है और व्यक्ति संवेदनाहीन तथा परपीड़क बन जाता है। व्यक्ति निर्धन एवं जीवन भर संघर्षरत रहता है परन्तु साहस नहीं खोता। ऐसे व्यक्ति या तो घोर आस्तिक होते हैं या घोर नास्तिक।

अत्यधिक उभरे शनि पर्वत के साथ यदि भाग्य रेखा स्पष्ट हो और कटी-फटी न हो तो व्यक्ति दयालु और संवेदनशील होता है। यह गुण उसे

लोकप्रियता भी दिला देते हैं।

शनि पर्वत के शिखर पर अनेक रेखायें व्यक्ति को डरपोक और कामुक बना देती हैं।

यदि शनि पर्वत बृहस्पति क्षेत्र की ओर झुका हुआ हो तो शुभ है और उन्नति का प्रतीक है। यदि शनि पर्वत सूर्य पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो व्यक्ति को हतभागी और निष्क्रिय वना देता है। पिता से अनबन, व्यापार में हानि तथा निराशा घर कर जाती है। स्वभाव में चिड़चिड़ापन और रूखापन आ जाता है। शनि पर्वत यदि च्युत होकर सूर्य पर्वत से मिल जाये तो व्यक्ति निश्चित रूप से आत्महत्या करेगा।

विकसित शनि पर्वत वाला व्यक्ति दुवला तथा लम्बे कद का ईर्ष्या द्वेष और घृणा की मूर्ति होता है। उसका शरीर आकर्षक नहीं होता। वह व्यापार की बजाय नौकरी करता है।

हाथ पर अन्य सभी पर्वतों के उभारों से यदि शनि पर्वत का उभार सर्वाधिक है तो ऐसे शनि-प्रधान व्यक्ति का रंग पीला और मुख कांतिहीन होता है, उसे पित्ताशय या गुर्दे का कष्ट रहता है।

अत्यधिक विकसित शनि पर्वत के साथ उस पर व्यूह वना हो और मध्यमा उंगली टेढ़ी-मेढ़ी और भद्दी हो तो व्यक्ति का स्वभाव कठोर और क्रूर होता है तथा उसमें बुरी आदतें पड़ जाती हैं।

चपटे शनि पर्वत वाले व्यक्ति सारा जीवन कठिनाई में बिताते हैं। उन्हें किसी की सहायता हासिल नहीं हो पाती। नौकरी या तो छूट जायेगी या पदावनति हो जायेगी तथा व्यापार की व्यवस्था हो नहीं पाती।

शनि पर्वत का कोई भाग नुकीला हो या पर्वत के स्थान पर गड्ढा हो तो व्यक्ति का जीवन निराशा, संताप और गरीवी से भरा रहता है। स्वभाव चिड़चिड़ा और प्रेम की भावना से रहित हो जाता है।

विकसित शनि पर्वत के साथ यदि मध्यमा उंगली का अग्रभाग नुकीला हो तो व्यक्ति में व्यावहारिकता न्यून होती है और भावनाओं में डूबा रहता है।

विकसित शनि पर्वत पर त्रिकोण त्रिशूल, वर्ग, व्यूहवृत्त अथवा पड़ी रेखाओं के चिन्ह हों तो व्यक्ति में विशेष गुण आ जाते हैं और उसके प्रयास सफल होते हैं।

विकसित शनि पर्वत के साथ अंगूठा पुष्ट और शुभ लक्षणों से युक्त हो तो व्यक्ति विवेक वुद्धि से परिपूर्ण होता है।

विकसित शनि पर्वत के साथ उंगलियां गठीली हों तो व्यक्ति स्वस्थ और तर्कशील होता है।

अत्यधिक विकसित शनि पर्वत के साथ स्पष्ट भाग्य रेखा व पुष्ट अंगूठा व्यक्ति को सिद्धांतवादी, न्यायप्रिय और परिश्रमी बना देते हैं। व्यक्ति घोर आदर्शवादी बन जाता है।

पर्वत का शिखर

यदि शनि पर्वत का शिखर गुरु पर्वत के समीप हो तो व्यक्ति सत्यप्रिय होता है, यदि हृदय रेखा के पास हो तो व्यक्ति शंकालु हो जाता है।

शनि पर्वत का मध्यमा उंगली के ठीक नीचे होना व्यक्ति को एकान्त और शान्त स्थानों का चाहने वाला बना देता है।

यदि शनि पर्वत का शिखर शनि और सूर्य पर्वतों के बीच में हो तो व्यक्ति कलात्मक अथवा साहित्य प्रवृत्ति का होता है, परन्तु उसे इन क्षेत्रों में पर्याप्त सफलता नहीं मिलती। ऐसा व्यक्ति जीवन भर पूर्ण स्वस्थ नहीं रह पाता।

पर्वत पर रेखायें

शनि पर्वत पर एक ही रेखा हो परन्तु वह कटी-फटी न हो तो वह सौभाग्य में वृद्धि करती है। कई रेखायें जीवन में व्यावहारिक बाधाओं और आपस में कटती हुई रेखायें दुर्भाग्य तथा दुश्चिंताओं की प्रतीक होती हैं। पर्वत पर बहुत ही हल्की रेखा वक्ष पर घाव के कष्ट को दर्शाती है।

विकसित शनि पर्वत पर रेखाओं का जाल व्यक्ति को भाग्यहीन, वृद्धावस्था में कष्ट कारक होता है। सन्तान, मित्र और समाज सबकी उपेक्षा का पात्र बनता है।

शनि पर्वत पर किसी रेखा, चिन्ह या धब्बे का न होना लाभकारी है। व्यक्ति धर्मात्मा, दानी, गम्भीर, विवेकी, शान्त, अच्छी संगति वाला और पत्नीव्रत होता है। उसके संतान भी योग्य पैदा होती है।

यदि शनि पर्वत से निकलकर एक रेखा भाग्य रेखा को काट रही हो तो व्यक्ति का बुढ़ापा कष्टों में बीतेगा।

शनि पर्वत से एक या अधिक रेखायें चलकर गुरु पर्वत तक आ रही हों तो व्यक्ति धन, यश, समृद्धि और सफलता प्राप्त करता है।

शनि पर्वत पर बहुत-सी आड़ी रेखायें हृदय रेखा को काट रही हों तो यह पैतृक रोग से पीड़ित होने का प्रतीक है।

एक स्पष्ट रेखा जो कटी-फटी न हो हृदय रेखा से निकलकर शनि

पर्वत तक पहुंच जाये तो व्यक्ति धनी और सफलता पाने वाला होगा। इस स्थिति में निर्धन व्यक्ति को किसी सम्बंधी आदि का या लॉटरी आदि से धन प्राप्त होता है।

यदि भाग्य रेखा मध्यमा उंगली के तीसरे पोर पर जाकर समाप्त हो और शनि पर्वत के ऊपरी भाग पर एक तारे का चिन्ह हो तो व्यक्ति की हत्या की जायेगी।

पर्वत पर चिन्ह

शनि पर्वत पर छोटा क्रॉस नपुंसकता का द्योतक है और बहुत बड़ा क्रॉस व्यक्ति को धार्मिक एवं दान-दक्षिणा देने वाला बना देता है। वह तीर्थयात्रायें भी करता है। मध्यम क्रॉस दुर्घटना का सूचक है।

शनि पर्वत पर वर्ग का चिन्ह अनिष्टों के आगमन और उनसे बचाव दोनों काम करता है।

शनि पर्वत पर नक्षत्र का होना दुष्टता और हत्या करने की प्रबल भावना का संकेत देता है।

तिल और धब्बे यदि श्वेत हों तो शुभ, लाल हों तो अल्प अशुभ और काले हों तो अत्यन्त अशुभ होते हैं।

शनि क्षेत्र पर त्रिभुज व्यक्ति को लॉटरी, सट्टा अथवा वसीयत से धन लाभ कराता है। ऐसे व्यक्ति की अभिरुचि रहस्यमय कार्यों में रहती है; जैसे ज्योतिष, मनोविज्ञान आदि।

शनि पर्वत पर वृत्त शुभ कार्यों में रुचि रखने वाला बनाता है, परन्तु सामान्यत: अशुभ होता है।

शनि पर्वत पर द्वीप का चिन्ह अशुभ फल देता है। यह व्यक्ति को दु:खी और अभागा बना देता है।

विकसित शनि पर्वत पर एक वृत्त के साथ हाथ की मध्यमा उंगली लम्बी, सीधी और शुभ लक्षणों से युक्त हो तो व्यक्ति विवेकी, सौभाग्यशाली, दृढ़ निश्चयी और शांतचित्त होता है।

यदि शनि पर्वत और चन्द्र पर्वत दोनों पर एक सितारा हो, चन्द्र पर्वत पर अनेक छोटी-छोटी रेखायें हों तथा मस्तिष्क रेखा शनि पर्वत पर आकर समाप्त होती हो और उसकी एक शाखा हृदय या आयु रेखा से जाकर मिलती हो तो व्यक्ति अत्यधिक कामी होगा। ऐसे व्यक्ति अक्सर लकवा के शिकार भी हो जाते हैं।

विकसित शनि पर्वत पर काले धब्बे दुर्भाग्य के सूचक हैं। उसे न धन

मिल सकेगा न यश। पत्नी और संतान भी उसे सुख नहीं देंगे। सफेद धब्बे वाले व्यक्ति में दांतों के रोगों के परिचायक हैं।

स्त्री के बायें हाथ में शनि पर्वत शिखर पर एक क्रॉस का चिन्ह उसे काम-सम्भोग के पश्चात् भी गर्भवती नहीं होने देगा। ऐसी औरत जादू-टोनों, पीर-फकीरों, साधु-संतों के यहां भटकती रहती है।

3. सूर्य पर्वत

तृतीय उंगली अर्थात् अनामिका के तीसरे पोर से नीचे हृदय रेखा के बीच का क्षेत्र सूर्य पर्वत का क्षेत्र है। इसकी उपस्थिति मनुष्य की सफलता, यश, उन्नति और वैभव की सूचक है तथा इसकी अनुपस्थिति साधारण जीवन की परिचायक है।

सामान्य रूप से विकसित सूर्य पर्वत वाला व्यक्ति सुन्दर, हृष्टपुष्ट, आकर्षक व्यक्तित्व वाला और प्रतिभावान् होता है। ऐसा व्यक्ति बड़े-से-बड़े व्यक्ति को भी प्रभावित कर लेता है।

उन्नत और विकसित सूर्य पर्वत वाला धनी, सुखी एवं वैभवशाली होता है। ऐसा व्यक्ति तेजस्वी और स्वतंत्र प्रकृति वाले तथा कला, संगीत के प्रति रुचि रखने वाले होते हैं। व्यापार में सफलता और नौकरी में शीघ्र उच्च पद प्राप्त कर लेते हैं। यदि राजनीति में भाग लें तो बड़े नेता बन जाते हैं। ऐसे लोगों को कीर्ति, सम्मान और धन की प्राप्ति होती है। इस पर्वत का विकसित होना व्यक्ति को स्थिर चित्त, प्रयत्नशील और उदार बना देता है। वह लड़ाई-झगड़ा पसंद तो नहीं करता, परन्तु यदि नौबत आ जाये तो डटकर मुकाबला करता है और विजयी भी होता है। ऐसा व्यक्ति नीच कार्य और छल-कपट नहीं करता। अन्याय भी सहन नहीं करता। आपसी सम्बंधों में ईमानदार एवं सुन्दर वस्तुओं का संग्रह करने वाला होता है। विकसित सूर्य पर्वत वाले अच्छी सूझबूझ वाले होते हैं और कोई भूल हो जाने पर तर्क तथा प्रमाण के आधार पर तुरन्त स्वीकार कर लेते हैं। वे मिलनसार और विनोदी स्वभाव के होते हैं।

विकसित सूर्य पर्वत वाला यदि निर्धन घर में भी जन्मा हो तो अपनी प्रतिभा और प्रभाव से उन्नति कर लेता है। अनपढ़ व्यक्ति भी धनी और सफल हो जाता है।

विकसित सूर्य पर्वत वाले लोग दूसरों की परेशानी और दुःख में उनको ढाढ़स बंधाकर उनका मनोबल बढ़ा देते हैं परन्तु स्वयं विषम परिस्थितियों

में घबड़ा जाते हैं और निराशा झेल पाना अत्यन्त कठिन हो जाता है।

विकसित सूर्य पर्वत वाले व्यक्ति पचास वर्ष की उम्र के बाद नेत्र कष्टों से ग्रस्त हो जाते हैं।

रवि या सूर्य पर्वत का अत्यधिक विकसित होना व्यक्ति को घमंडी, ईर्ष्यालु, चापलूसी पसंद, और अपनी हैसियत से ज्यादा प्रदर्शित करने वाला बना देता है। वह अपने आपको ही सर्वश्रेष्ठ समझता है।

अविकसित सूर्य पर्वत का क्षेत्र वाले मनुष्य प्रायः कायर, परिस्थितियों के सताये साधारण जीवन व्यतीत करते हैं। वे निरुत्साह तथा सामाजिक गतिविधियों से दूर रहते हैं।

दबा हुआ सूर्य पर्वत मनुष्य के जीवन को असफलताओं और आर्थिक कष्टों से भर देता है। विद्या अर्जन के लिये उसे अथक परिश्रम और कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे लोग जुये और सट्टे में भी हानि ही उठाते हैं। दवे हुये सूर्य पर्वत वाले लोगों को संगीत, साहित्य अथवा कला-क्षेत्र में कोई रुचि नहीं होती। यश और सफलता उनसे दूर ही रहते हैं।

यदि सूर्य पर्वत बुध पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो मनुष्य निश्चित रूप से व्यापारिक सफलतायें प्राप्त करता है।

यदि सूर्य अर्थात् रवि पर्वत च्युत होकर शनि की ओर झुका हुआ हो तो यह तमोगुणी प्रवृत्ति का पोषक बन जाता है। ऐसा व्यक्ति धन की कमी और पतन की ओर अग्रसर हो जाता है। उसमें शिथिलता, उदासी तथा एकान्तप्रियता घर कर जाती है, और रात्रि के अकेलेपन में रोने को मन करने लगता है।

यदि सूर्य पर्वत चपटा हो और उसमें उभार न हो तो व्यक्ति अधीर मिथ्याभिमानी तथा दुर्बल हृदय होता है। साहस और सहनशीलता की कमी होने के उपरान्त भी वह मित्रों का हितैषी, सहयोगियों से काम करवाने में चतुर तथा नौकरी में सफल रहता है। ऐसे व्यक्ति बहुत मितव्ययी होते हैं।

रवि अर्थात् सूर्य पर्वत के विकसित होने के साथ व्यक्ति का अंगूठा सुन्दर और शुभ लक्षणों से युक्त हो तो वह अभिमानी, दृढ़प्रतिज्ञ और परोपकारी होगा। ऐसा व्यक्ति जल्दी ही गुस्सा होने वाला और जल्द ही शान्त होने वाला होता है।

विकसित सूर्य पर्वत के साथ भाग्य रेखा कटी-फटी न होकर स्पष्ट हो तो मनुष्य सामाजिक कार्यों में महत्वपूर्ण कार्य कर यश प्राप्त करेगा। ऐसा व्यक्ति सफल आयोजन, कुशल नेतृत्व और अपनी बात को प्रमाण तथा तर्कों

द्वारा सिद्ध करने में सक्षम होता है। यदि वह अभिनेता बनता है तो अपार धन कमाता है। विलक्षण स्मरण शक्ति तथा आत्मविश्वास के बल पर वह धार्मिक कार्यों तथा संस्था रूपों में ऊंचा पद प्राप्त करता है एवं लोगों से अपना कार्य करवा लेता है। ऐसे व्यक्ति से प्रेम का अवसर पाकर स्त्रियां अपने को धन्य समझती हैं।

विकसित रवि पर्वत के साथ शनि पर्वत भी विकसित हो तो व्यक्ति अनायास धन प्राप्त करने की इच्छा करने वाला और परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाकर सफलता पाने वाला तथा खतरों से खेलने वाला होता है। शत्रु परास्त होते हैं।

सूर्य उंगली छोटी, बेडोल या टेढ़ी-मेढ़ी हो तो सूर्य पर्वत के गुण कम हो जाते हैं। व्यवहार में कटुता और बदले की भावना बढ़ जाती है।

सूर्य की उंगली अनामिका पर मानसिक विश्व का विकसित होना व्यक्ति को साहित्य क्षेत्र में यश दिलाने वाला होता है। व्यावहारिक विश्व की सबलता व्यक्ति को कार्यों में निपुण बनाती है। यदि निम्न विश्व विकसित हो तो व्यक्ति आत्मद्रोही या आत्ममुग्ध हो जाता है। उंगली का वर्गाकार होना व्यवहार-कुशलता और नुकीला होना आदर्शवादी होने का संकेत देता है।

विकसित रवि पर्वत के साथ यदि भाग्य और मस्तिष्क रेखा भी सुन्दर हो तो व्यक्ति प्रतिभावान बनता है, सम्मान और यश प्राप्त करता है। उसकी बुद्धि प्रखर, वाणी ओजस्वी, व्यक्तित्व आकर्षक तथा स्वभाव सरल होता है वह व्यक्ति अपने देश का संसार में नाम करता है।

विकसित सूर्य पर्वत के साथ सूर्य क्षेत्र की उंगली अनामिका का अग्रभाग छोटा हो, नाखून मांस में धंसे हों, उंगली के जोड़ टेढ़े-मेढ़े हों, पोर बेडोल हो तो व्यक्ति कड़वा बोलने वाला, अपनी श्रेष्ठता दिखाने वाला और रूप बदलने वाला होता है।

विकसित सूर्य पर्वत के साथ अनामिका टेढ़ी-मेढ़ी हो तो व्यक्ति दूसरों की कटु आलोचना करने वाला, स्वार्थी मदिरापान करने वाला, जुआरी और चतुरता बघारने वाला होता है।

यदि सूर्य पर्वत की उंगली तर्जनी की अपेक्षा ज्यादा लम्बी हो तो व्यक्ति कलाप्रिय और सुरुचिपूर्ण जीवन बिताने वाला होता है।

विकसित सूर्य पर्वत के साथ अनामिका शनि की उंगली की ओर झुकी हुई हो तो व्यक्तित्व का प्रभाव कर देती है। व्यक्ति निराशावादी और किसी निश्चित उद्देश्य के बिना जीवन यापन करता है।

यदि सूर्य पर्वत विकसित हो और अनामिका-मध्यमा अर्थात् शनि की उंगली के बराबर लम्बी हो तो व्यक्ति जीवन में प्राप्त स्मर्णिम अवसर का लाभ प्राप्त करता है।

यदि सूर्य उंगली बुध की उंगली कनिष्ठिका की ओर बहुत अधिक झुकी हुई हो तो व्यक्ति सुन्दरता का प्रेमी होगा, देशाटन करेगा, प्रकृति और सुन्दर स्त्रियों पर जान छिड़केगा तथा अभिनय में रुचि रखेगा, संगीत से भी लगाव रखेगा।

विकसित सूर्य पर्वत वाले हाँथ की उगलियों के अग्रभाग चौड़े या फैले हुये हों तो वह मनुष्य व्यवहार कुशल होगा तथा उसकी विभिन्न खेलों में रुचि उसे अच्छा खिलाड़ी बना देती है।

यदि सूर्य पर्वत बहुत अधिक उभरा हुआ तो व्यक्ति की दृष्टि कमजोर हो जाती है एवं नेत्रों में शिथिलता आ जाती है।

पर्वत पर रेखायें

सूर्य पर्वत पर एक रेखा धन्न और प्रतिष्ठा की, कई रेखायें उच्च पद की प्राप्ति एवं कलाप्रेम की तथा आपस में कटती हुई रेखायें नौकरी में व्यवधान की सूचक हैं।

सूर्य पर्वत पर आड़ी-तिरछी रेखायें बुरे स्वास्थ्य की सूचना देती हैं।

पर्वत पर चिन्ह

सूर्य अर्थात् रवि पर्वत पर क्रॉस का चिन्ह व्यक्ति की यश में कमी होना तथा जीवन के अंतिम चरण में सुख और सम्मान की हानि का प्रतीक है।

सूर्य पर्वत पर वर्ग का चिन्ह सामाजिक सम्मान तो दिखाता है परन्तु सूर्य क्षेत्र के स्वाभाविक गुणों का प्रभाव क़म कर देता है। यह चिन्ह विपत्तियां लाता भी है और उनसे रक्षा भी करता है।

रवि पर्वत पर नक्षत्र का चिन्ह असाधारण प्रसिद्धि, उच्च पद, सम्मान एवं वैभव प्राप्त करने का प्रतीक है।

सूर्य पर्वत पर वृत्त शुभ होता है। यह व्यक्ति को विदेश-गमन कराता है। व्यक्ति कला, संगीत और सुन्दरता का पारखी होता है और धन तथा ऐश्वर्य अर्जित करता है एवं शिक्षा में सम्मान प्राप्त करता है।

सूर्य पर्वत पर तिल और धब्बे यदि श्वेत हों तो शुभ फल देने वाले, लाल हों तो अल्प अशुभ एवं काले हों तो अत्यन्त अशुभकारी होते हैं। काले तिल वाले व्यक्ति निराशा में डूबकर आत्महत्या तक कर लेते हैं।

सूर्य पर्वत पर जाली एवं द्वीप दीर्घकाल तक अशुभ ही रहते हैं। व्यक्ति को निन्दा तथा मानहानि का सामना करना पड़ता है।

4. बुध पर्वत

कनिष्ठिका उंगली के मूल के नीचे अर्थात् चौथी अंगुली के आधार पर बुध पर्वत का क्षेत्र है। यह ग्रह व्यक्ति को भौतिक सफलतायें दिलाता है। सुन्दर और गोलाकार बुध-पर्वत मनुष्य को बुद्धिमान एवं कार्यकशुल बनाते हैं। ऐसे व्यक्ति प्रत्युत्पन्नमति, फुर्तीले और विचारवान् होते हैं तथा किसी बड़े या महत्वपूर्ण कार्य को करने से पूर्व अपने मित्रों या रिश्तेदारों से विचारविमर्श जरूर करते हैं।

बुध पर्वत का प्रभाव हाथ की बनावट, रेखाओं आदि के अनुसार रहता है। हाथ पर शुभ लक्षणों की अधिकता होने पर शुभ फल एवं अशुभ लक्षणों की बहुलता होने पर अशुभ फल देता है।

विकसित बुध पर्वत का क्षेत्र व्यक्ति को चिन्तामुक्त रखता है। ऐसे लोग इंजीनियर, वैज्ञानिक, व्यापारी अथवा वकील बनकर सफलता प्राप्त करते हैं। समुन्नत बुध पर्वत के व्यक्तियों की मनोदशा अस्थिर रहती है। ये लोग आमोद-प्रमोद के शौकीन, भ्रमणशील तथा शारीरिक श्रम की अपेक्षा बौद्धिक कार्य करने में रुचि रखते हैं। अपनी तेज बौद्धिक क्षमता के कारण कार्यों को आसानी से पूर्ण कर लेते हैं। इनकी मैत्री अस्थायी होती है परन्तु मित्र बनाने में ये लोग दक्ष होते हैं और बातचीत से लोगों को प्रभावित कर लेते हैं, इनके बारे में लोगों की राय अच्छी नहीं रह पाती।

बुध-प्रधान व्यक्तियों में लगन, परिस्थितियों को समझने की क्षमता तथा कार्य तत्परता पर्याप्त होती है और वे कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। ऐसे व्यक्ति अवसरवादी और चतुर होने के कारण मौके का फायदा उठाने में दक्ष होते हैं। बुध पर्वत-प्रधान व्यक्ति अच्छे मनोवैज्ञानिक भी होते हैं और वे मनुष्य की मनोदशा तथा उसके मनोभावों को ताड़कर अपने कार्यों को करवाने में सफलता प्राप्त कर लेते हैं। ये लोग समाज में अच्छी दृष्टि से नहीं देखे जाते भले ही वे निजी जीवन में श्रेष्ठता प्राप्त कर लें अथवा धन कमा लें।

दबा हुआ या अवनत बुध क्षेत्र वाले मनुष्य अदूरदर्शी, जल्दबाज और मंदबुद्धि होते हैं। वे कोई स्थायी जीविका या व्यवसाय नहीं कर पाते। समाज या परिचित क्षेत्र के लोग इनकी अस्थिर कार्यप्रणाली के कारण इनसे कतराने

लगते हैं। ये लोग असहाय तथा एकाकी रह जाते हैं।

बुध क्षेत्र के अत्यधिक उभार वाले व्यक्ति येन-केन धन कमाने वाले, स्वार्थी तथा कुण्ठित बुद्धि वाले होते हैं। वे यश व आदर-सम्मान पाने के लिये लोक कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेते हैं। स्वार्थसिद्धि के लिये लोगों को मूर्ख बनाने और मित्रता दिखाने से भी नहीं चूकते। ऐसे लोग युद्ध से डरते हैं और अहिंसक होने का ढोंग किये रहते हैं। अपने को श्रेष्ठ, दूसरों को मूर्ख समझते हैं। अत्यधिक विकसित बुध पर्वत वाले व्यक्ति को दुश्चिंतायें घेरे रखती हैं। वह छल-कपट, षड्यंत्र तथा जादू टोने आदि में विश्वास करने वाला होता है। आत्म-प्रशंसक तथा उच्च पद का आकांक्षी होता है। वाक्पटुता, अवसरवादिता और अपराध प्रवृत्ति इनको प्रधानता से होती है। ऐसे लोगों का सामान्य ज्ञान बहुत बढ़ा हुआ होता है और इन्हें देश-विदेश की यात्राओं का शौक रहता है।

यदि बुध पर्वत के उभार के साथ हथेली लचीली हो तो व्यक्ति की बुद्धि तीक्ष्ण होती है।

विकसित बुध पर्वत के साथ उसका झुकाव सूर्य क्षेत्र की ओर हो तो मनुष्य जीवन में सफलतायें सरलता से प्राप्त कर लेता है। विद्या के क्षेत्र में व्यक्ति अच्छे लेखक एवं साहित्यकार एवं स्वभाव से हँसमुख होते हैं।

विकसित बुध पर्वत के साथ मंगल पर्वत भी बहुत उभरा हुआ हो तो व्यक्ति धोखेबाज, चोर, झूठा, लम्पट और जेबकतरा होता है।

विकसित बुध पर्वत के साथ गुरु पर्वत भी उभरा हुआ और शुभ लक्षणों से युक्त हो तो व्यक्ति आदर्शवादी होता है। वह प्रसिद्धि एवं सफलता प्राप्त करता है।

विकसित बुध पर्वत का रंग गुलाबी या लाल होना बुध पर्वत के दोष कम कर गुणों में वृद्धि करता है। पीला एवं उदर रोगों का प्रतीक है।

विकसित बुध पर्वत के साथ हाथ की उंगलियां अधिक लम्बी हों तो व्यक्ति पूर्ण और गहन अध्ययन के पश्चात् ही कोई निष्कर्ष निकालता है। यदि उंगलियां बहुत छोटी हों तो व्यक्ति तेज-तर्रार, और जल्दबाज होता है। वह कम सोने वाला, तेज चलने वाला, जल्दी-जल्दी खाने वाला और तेज बोलने वाला होगा। यदि उंगलियां गठीली हों तो व्यक्ति तार्किक और युक्ति-पूर्ण बातें करने वाला तथा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने के बाद ही किसी निर्णय पर पहुंचने वाला होता है। गांठोंरहित पोर तथा चिकनी उंगलियां साधारण बुद्धि की प्रतीक हैं। ऐसे लोग ठोस प्रमाणों की बजाय अनुमानों

और कल्पना के आधार पर ही निर्णय ले लेते हैं जो बहुधा गलत निकलते हैं।

विकसित बुध पर्वत के साथ कनिष्ठिका उंगली का सिरा नुकीला हो तो व्यक्ति व्यापार में सफलता प्राप्त करता है। वह अपनी व्यवहारकुशलता से लोगों को आकर्षित कर लेता है। यदि कनिष्ठिका का अग्रभाग वर्गाकार हो तो व्यक्ति तार्किक तथा विवेकशील होता है। ऐसे व्यक्ति परिश्रम से ऊंचा पद भी प्राप्त कर लेते हैं। कनिष्ठिका का फैला हुआ सिरा आकस्मिक धन-प्राप्ति का परिचायक है।

विकसित बुध क्षेत्र के साथ मानसिक विश्व की प्रधानता जीवन में सफलता प्राप्त करने की प्रतीक है।

पर्वत शिखर

बुध पर्वत का शिखर यदि सूर्य पर्वत के समीप हो तो व्यक्ति सिविल या मेकेनिकल इंजीनियर बन सकता है, क्योंकि उसकी रुचि भवन-निर्माण, चित्रकला, मूर्तिकला आदि दस्तकारी के कार्यों में होती है।

यदि पर्वत का शिखर कनिष्ठिका उंगली के ठीक नीचे हो तो व्यक्ति अश्लीलताप्रिय और हँसमुख होगा, सबको प्रसन्न रखने का प्रयत्न करेगा, किसी का बुरा नहीं चाहेगा न करेगा।

पर्वत पर रेखायें व चिन्ह

बुध पर्वत पर एक रेखा धन और समृद्धि की द्योतक होती है, कई रेखायें व्यापार में असाधारण सफलता की प्रतीक हैं तथा आपस में कटती हुई रेखायें चिकित्सा क्षेत्र में निपुणता प्रदान करने वाली होती हैं।

बुध पर्वत पर क्रॉस का चिन्ह व्यवसाय में उन्नति, उत्तम आर्थिक स्थिति एवं यशपूर्ण सामाजिक स्थान प्रदान करता है, शत्रु वश में रहते हैं परन्तु असमान गुणन चिन्ह व्यापार में हानि का प्रतीक होता है। ऐसे व्यक्ति दब्बू और स्वार्थी होते हैं।

बुध क्षेत्र पर बिन्दु का चिन्ह असफलता और व्यवसाय में हानि का परिचायक है।

बुध क्षेत्र पर वर्ग का चिन्ह वाला व्यक्ति कार्य को शीघ्र निपटाने वाला, भविष्य की बात समझने वाला होता है। यह चिन्ह हानि होने से भी बचा लेते हैं। धन-हानि नहीं होने देते।

बुध पर्वत पर नक्षत्र का चिन्ह विदेशों से व्यापार करने वाला, परन्तु अपराधी प्रवृत्ति का बना देता है।

बुध क्षेत्र पर त्रिकोण राजनीतिक सफलता तो दिलाते हैं, परन्तु व्यापार में अरुचि पैदा कर देते हैं।

बुध पर्वत पर द्वीप का चिन्ह हो तो व्यक्ति लगभग हर क्षेत्र में असफल रहता है।

बुध पर्वत पर यदि एक वृत्त का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति अभागा ही होता है और उसकी मृत्यु आकस्मिक रूप से अथवा किसी दुर्घटना में होती है।

बुध पर्वत पर एक बड़ा काला धब्बा व्यक्ति के जीवन पर रोगी बने रहने का प्रतीक होता है। एक लाल धब्बा नौकरी में पदोन्नति एवं व्यापार में हानि का द्योतक होता है। काले धब्बे भी अशुभ होते हैं। श्वेत धब्बे शुभ माने गये हैं।

बुध क्षेत्र पर जाली का चिन्ह होना मानहानि एवं आर्थिक रूप से दिवालिया होने का लक्षण है।

बुध पर्वत के क्षेत्र के मध्य में एक सितारे का चिन्ह वाक्पटुता, सफल व्यापार और प्रभावी भाषण कला का परिचायक है।

यदि किसी स्त्री के बुध पर्वत पर बहुत-सी खड़ी रेखायें हों और उन रेखाओं को बड़ी रेखायें काट रही हों तो वह स्त्री बांझ होगी, सम्भोग में बहुत रुचि रखेगी परन्तु अधिक पुरुषों से सम्भोग के पश्चात् भी वह संतान पैदा नहीं कर सकेगी।

5. चंद्र पर्वत

कनिष्ठिका की सीध में बुध क्षेत्र के नीचे मणिबंध की रेखा से मस्तिक रेखा एवं हथेली के छोर के बीच भाग्य रेखा से मिला हुआ क्षेत्र चंद्र पर्वत का क्षेत्र कहलाता है।

चन्द्रमा ग्रह पृथ्वी के सर्वाधिक निकट होने के कारण इसका प्रभाव भी मनुष्य पर सर्वाधिक रहता है। इसका सम्वंध व्यक्ति के स्वभाव, सौंदर्य, यात्रा एवं कल्पनाशीलता से होता है।

ज्योतिष में यूनानी इसे 'लूना', अरबी में 'कमर' और फारसी में 'माह' कहते हैं।

चन्द्र-प्रधान व्यक्ति में रसिकता, कल्पना, भावुकता और कलाकारिता के गुण भरे होते हैं।

यदि चन्द्र पर्वत, अधिक उभरा हुआ हो तो मनुष्य शांत एवं शीतल स्वभाव

का होता है। वह परिवर्तनप्रिय, नये स्थानों की यात्रा तथा पर्वतारोहण का शौकीन होता है। आदर्शवादी होने के साथ अपने आदर्शों का बखान और प्रदर्शन भी करेगा। ऐसे व्यक्तियों को काम करने, चलने-फिरने और खाने-पीने में तेजी बनी रहती है।

अत्यधिक विकसित चन्द्र क्षेत्र व्यक्ति को वास्तविकता और व्यावहारिकता से दूर कर देते हैं। वे कल्पनाओं में डूबे रहते हैं तथा उनमें आत्मविश्वास की कमी आ जाती है। ऐसे व्यक्तियों के हाथ में यदि मस्तिष्क रेखा सीधी नहीं है तो वे अपने कार्यों से कीर्ति तो प्राप्त कर लेंगे लेकिन धन और सुख से प्रायः वंचित रह जाते हैं। ऐसे व्यक्ति कभी-कभी पागल भी हो जाते हैं।

यदि चंद्र पर्वत सीधा उठा हुआ, स्पष्ट और विकसित हो तो व्यक्ति पूरी तरह प्रकृति में रम जाता है। ऐसे व्यक्ति सौंदर्यप्रेमी, संगीतज्ञ, कलाकार, कवि, साहित्यकार तथा छल-कपट से परे होते हैं। इन लोगों के विचार भी श्रेष्ठ और स्वतंत्र होते हैं।

विकसित चन्द्र पर्वत वाला व्यक्ति बहुधा असफल नहीं होता और न वह भौतिकवादी ही होता है। प्रेम और सौंदर्य पर मुग्ध ऐसे व्यक्तियों के प्रेम का परिणाम दुःखद ही होता है।

यदि चन्द्र पर्वत सामान्य रूप से उभरा हुआ हो तो व्यक्ति निष्क्रिय जीवन बिताता है। इनमें न तो आत्मविश्वास ही होता है और न संघर्ष करने की क्षमता। इनकी भावुकता भी इन्हें जीवन में सफलता प्राप्त नहीं करने देती।

चन्द्र पर्वत की हाथ में अनुपस्थिति व्यक्ति को कठोर हृदय और भौतिकवादी बना देती है। ऐसे लोग युद्धप्रिय होते हैं। यात्राओं तथा पढ़ने-लिखने में इन्हें कोई रुचि नहीं होती। ऐसे लोगों में संवेदनशीलता, सहिष्णुता और कल्पनाशक्ति की कमी तथा तर्क-वितर्क और विवेक से रहित होते हैं।

विकसित चन्द्र पर्वत के साथ यदि शुक्र का क्षेत्र भी बहुत उभरा हुआ हो तो व्यक्ति परस्त्री गामी होता हैं। यदि चन्द्र पर्वत शुक्र पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो व्यक्ति भोगों से आशक्त रहेगा। वह निर्लज्ज और समाज में बदनाम हो जाता है। व्यसनों में फंसकर उसे अपने-पराये की सुध नहीं रहती।

विकसित चन्द्र पर्वत यदि हथेली के बाहर की ओर झुकता हुआ हो तो व्यक्ति काफी व्यभिचारी और भोगविलासी बन जाता है।

पर्वत पर रेखायें

चंद्र पर्वत पर एक खड़ी रेखा वुध पर्वत तक पहुंचती हो तो व्यक्ति में कल्पनाशक्ति उर्वरा होगी। उसके काम करने का ढंग सुन्दर और सुरुचिपूर्ण होगा और वह ज्योतिष, अध्यात्म, रहस्यवाद तथा हिप्नोटिज्म आदि में रुचि रखेगा, यदि यह रेखा सीधी न हो तो व्यक्ति में सूक्ष्म अंतर्दृष्टि होती है।

चंद्र पर्वत पर एक छोटी-सी खड़ी रेखा व्यक्ति को कष्ट सहने की शक्ति प्रदान करती है।

चंद्र पर्वत क्षेत्र पर कई रेखायें सौंदर्यप्रियता और कोमल स्वभाव की प्रतीक होती हैं। अनेक छोटी-छोटी रेखायें व्यक्ति को भविष्यदर्शी बना देती हैं। वह भावुक होता है और आने वाले कष्टों का पूर्वानुमान लगा लेता है। दूसरों के प्रति संवेदनशील और सहायक बना रहता है।

चंद्र क्षेत्र पर आपस में कटती हुई रेखायें चिन्ता एवं संतापों की प्रतीक हैं। आड़ी रेखायें भी व्यक्ति को चिंतित रखती हैं।

मणिबंध से प्रारम्भ होकर एक खड़ी रेखा चन्द्र पर्वत पर आकर समाप्त हो रही हो तो व्यक्ति पर पीड़क होता है और स्वयं की भूलों का दोष दूसरों पर डालने का प्रयत्न करता है।

यदि चन्द्र पर्वत के नीचे भाग पर अनेक छोटी-छोटी आड़ी-तिरछी और लम्बी रेखायें हों तथा मस्तिष्क रेखा अनेक शून्य रेखाओं से गुंथी हुई हो एवं उसके अंतिम छोर पर सितारे हों तो व्यक्ति पागल हो जाता है।

पर्वत पर चिन्ह

चन्द्र पर्वत पर सामान्य क्रॉस का चिन्ह चिन्ताओं, सामाजिक कार्यों में असफलताओं तथा कल्पनाओं और अंधविश्वासों द्वारा हानि का सूचक है बड़ा क्रॉस का चिन्ह वाला व्यक्ति दानी-अभिमानी और आत्म-प्रशंसक होता है। ऐसे व्यक्ति को पानी में डूबने का खतरा बना रहता है।

यदि चन्द्र पर्वत अत्यधिक उभरा हुआ हो और उस पर एक सितारे का चिन्ह हो तो व्यक्ति नीच और धोखेबाज होगा।

चन्द्र पर्वत पर रेखाओं का जाल निराशा और चिन्ता का प्रतीक होता है। व्यक्ति स्नायु विकारों से पीड़ित, कार्यों में असफल तथा प्रेम में निराश रहता है।

चंद्र क्षेत्र पर नक्षत्र का चिन्ह लेखन कार्य से सम्मान प्राप्त होने का प्रतीक है। वृत्त का चिन्ह जल में डूबने से मृत्यु का लक्षण है। त्रिकोण उच्चकोटि का कवि बनाता है, वर्ग का चिन्ह धन-प्राप्ति का प्रतीक है।

चंद्र क्षेत्र पर श्वेत तिल और धब्बे शुभ, लाल अल्प अशुभ तथा काले अत्यन्त अशुभ माने जाते हैं।

स्त्री के बायें हाथ के चन्द्र पर्वत पर रेखाओं का जाल हिस्टीरिया रोग का लक्षण है। उसे गर्भकाल में कष्ट रहेगा।

यदि स्त्री के बायें हाथ के चन्द्र पर्वत पर अनेक छोटी-छोटी मिश्रित रेखायें हों, हृदय रेखा गुंथी हुई हो तो उसकी काम वासना बढ़ी हुई होती है। वह पुरुषों को आकर्षित करने के लिये अंग प्रदर्शन करेगी तथा अनेक पुरुषों से प्रेम सम्बंध बनायेगी। ऐसी स्त्री अपने निकट-सम्बंधियों से भी सम्भोग कराने से नहीं चूकती।

6. शुक्र पर्वत

अंगूठे के मूल के नीचे जीवन रेखा से घिरा हुआ क्षेत्र शुक्र पर्वत का क्षेत्र कहलाता है। यूनानी, ज्योतिषाचार्य इसे वीनस देवी का स्थान मानते हैं जिन्हें कला, सौंदर्य और प्रेम की देवी कहा गया है। शुक्र ग्रह-प्रधान व्यक्तियों में इन गुणों का विकास श्रेष्ठतम स्थिति तक होता है।

अत्यधिक विकसित शुक्र पर्वत कामुकता, संवेदनशीलता एवं भावुकता का प्रतीक है। ऐसे व्यक्ति विनम्र, रसिक और सहृदय होते हैं। इनका प्रेम वासनापूर्ण और कामुक होता है। स्त्री पुरुष की ओर एवं पुरुष स्त्रियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। बहुत अधिक उभार वाला शुक्र पर्वत व्यक्ति को हठी, अभिमानी, अस्थिर एवं प्रदर्शनप्रिय, व्यभिचारी और शराबी बना देता है। ऐसा व्यक्ति जुआ, सट्टा, लॉटरी आदि व्यसनों में रुचि लेता है।

विकसित शुक्र पर्वत उत्तम स्वास्थ्य एवं प्रभावशील व्यक्तित्व का प्रतीक होता है। ऐसे व्यक्तियों की हथेली गुलाबी रंग की आभा लिये हुये रहती है जो साहस और स्फूर्ति की परिचायक है, परन्तु अत्यधिक गहरा लाल रंग व्यक्ति को व्यभिचारी और बलात्कारी बना देता है।

विकसित शुक्र पर्वत वाले व्यक्तियों में सहानुभूति की भावना अधिक होती है। वे दूसरों की सहायता करने को तत्पर रहते हैं। ऐसे व्यक्तियों का व्यवहार शालीन, उदार और आकांक्षायें ऊंची होती हैं। विरोधियों को तर्क से परास्त करते हैं, अनेक सुन्दर स्त्रियों से प्रेम सम्बंध जोड़ते हैं तथा सुन्दरता के प्रेमी होते हैं। इनकी रुचि संगीत, कविता तथा साहित्य लेखन के साथ सुन्दर वस्तुओं, सुन्दर नारी, सुन्दर संतानों, सुन्दर वस्त्र, सुन्दर मकान आदि में होती है।

शुक्र-प्रधान व्यक्तियों को प्रायः गले, फेफड़े अथवा हृदय की बीमारी लग जाती है। ये व्यसनी तथा स्वछंद जीवन जीने में विश्वास रखते हैं, ईश्वर में इनकी आस्था नहीं के बराबर होती है, परन्तु मित्रों की संख्या बहुत होती है।

सपाट अथवा अवनत शुक्र पर्वत मनुष्य को कायर, स्वार्थी, संवेदनहीन एवं आत्मकेन्द्रित बना देता है। ऐसे व्यक्ति आदर्श, संयम अथवा चरित्र को कोई महत्व नहीं देते। प्रेम और भावना की बजाय तर्क और बुद्धि से काम लेते हैं। शंकालु स्वभाव होने के कारण इनके मित्रों की संख्या कम और विरोधियों की संख्या ज्यादा हो जाती है। ऐसे व्यक्ति कानून और चिकित्सा में अधिक रुचि लेते हैं।

जिस व्यक्ति का शुक्र पर्वत दबा हुआ हो वह आलसी, स्वार्थी, हठी और हीन विचारों वाला होगा। उसकी ढीली-ढाली, फूहड़ प्रवृत्ति किसी भी सामाजिक अथवा कलात्मक कार्यों में रुचि नहीं लेने देगी। इनमें वासना और अश्लीलता की भावना भरी रहती है।

शुक्र पर्वत की अनुपस्थिति वाला व्यक्ति निर्मोही, वीतरागी और संन्यासी बन जाता है, उसे एकान्त अथवा वन पसंद होते हैं, अतः गृहत्यागी होता है।

शुक्र पर्वत के ऊंचे उभार वाली हथेली यदि कठोर और खुरदरी हो तो व्यक्ति अति कामी और भौतिकता का गुलाम बन जाता है।

पर्वत का शिखर

शुक्र पर्वत का शिखर यदि जीवन रेखा के पास हो तो व्यक्ति व्यभिचारी और बदमाश बनेगा, यदि मणिबन्ध के समीप होगा तो कामी होगा, यदि चन्द्र पर्वत के पास होगा तो गुण्डा होगा और यदि अंगूठे के पास होगा तो क्रोधी और शीघ्र ही उत्तेजित होने वाला होगा।

पर्वत पर रेखायें

शुक्र पर्वत पर एक रेखा का होना तीव्र कामुकता का प्रतीक है, कई रेखायें व्यक्ति को सौंदर्यप्रेमी और विषय भोगी बनाती हैं तथा आपस में काटती हुई रेखायें प्रेम में असफल रहना एवं मानहानि की सूचक हैं।

शुक्र पर्वत पर सूक्ष्म रेखाओं का बना जाल वाला व्यक्ति छोटी-छोटी बातों पर भी उत्तेजित होगा, वह व्यभिचारी की हद तक विषयभोगी होगा तथा सम्भोग के लिये ऊंच-नीच, जाति-पांति का भी ध्यान नहीं रखेगा।

रेखाओं से भरा हुआ जाल वाला शुक्र पर्वत व्यक्ति में दूरदर्शिता का

परिचायक है, ऐसा व्यक्ति भविष्य की घटनाचक्रों का भी आभास लगा लेता है।

शुक्र पर्वत से प्रारम्भ होकर कोई रेखा यदि भाग्य रेखा को काटती है तो यह रोजगार-व्यवसाय में बाधा आने का लक्षण है, शुक्र पर्वत से शुरू होकर कोई रेखा यदि हृदय रेखा तक पहुंचती है तो व्यक्ति को मित्रों से दुःख मिलेगा, वह चिन्ताग्रस्त रहेगा तथा हृदय रोग से ग्रस्त भी हो सकता है।

शुक्र पर्वत से निकली रेखा भाग्य रेखा को काटती हुई मस्तिष्क रेखा को भी काट रही हो तो यह व्यवसाय में व्यवधान एवं लोगों से विचार भिन्नता दर्शाती है।

शुक्र पर्वत से निकली रेखा गहरी और मोटी हो तथा आयु रेखा को काटती हो परन्तु भाग्य रेखा को न छूती हो तो वह व्यक्ति दमे का रोगी होगा।

शुक्र पर्वत से प्रारम्भ होकर रेखा यदि मस्तिष्क रेखा तक पहुंच रही हो तो यह आर्थिक कष्ट एवं सम्बंधियों से विरोध की सूचक है।

शुक्र पर्वत से निकलकर कोई रेखा यदि शनि पर्वत की ओर मुड़ रही हो तो व्यक्ति किसी भयंकर रोग से ग्रस्त होगा अथवा किसी दुर्घटना का शिकार। यह मानहानि की भी सूचक है।

शुक्र पर्वत से शुरू होकर एक स्पष्ट रेखा बुध पर्वत तक पहुंच जाये तो ऐसा व्यक्ति परम भाग्यवान, अत्यन्त धनवान और वैभवशाली होता है।

शुक्र पर्वत से निकली रेखा यदि हृदय रेखा तक जाती हो तो यह प्रेमिका द्वारा व्यवसाय या नौकरी में व्यवधान का कारण है।

शुक्र पर्वत से निकलकर एक रेखा का गुरु पर्वत तक पहुंचना आर्थिक लाभ की द्योतक है। ऐसा व्यक्ति सफलता प्राप्त करने के साथ मनचाही स्त्री से विवाह कर आनंदपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। उसकी इच्छायें पूरी होती हैं। यदि यह रेखा गुरु पर्वत पर पड़ी रेखाओं से घट रही हो तो व्यक्ति की इच्छा-पूर्ति में बाधायें आती हैं, उसे आर्थिक संकट तथा पत्नी की मृत्यु या भयंकर रोग का सामना करना पड़ता है।

शुक्र पर्वत से चलकर एक रेखा आयु रेखा एवं भाग्य रेखा को पार कर चन्द्र पर्वत पर पहुंच जाये तो व्यक्ति के कार्यों में उसकी पत्नी या प्रेमिका बाधायें खड़ी करेगी।

शुक्र पर्वत से प्रारम्भ होकर एक रेखा विवाह रेखा को भी पार कर

जाये तो यह विवाह में विघ्न का परिचायक है, ऐसा विवाह का अंत या तो तलाक में होता है अथवा पति-पत्नी को घर से निकाल देता है या पत्नी घर छोड़कर चली जाती है।

शुक्र पर्वत से निकलकर एक रेखा शनि पर्वत को पार करती हुई मध्यमा उंगली के मूल तक पहुंचती हो तो व्यक्ति मूत्र रोग से ग्रस्त रहेगा, यदि यह रेखा स्त्री के बायें हाथ में हो तो उसे प्रसवकाल में कष्ट होगा।

शुक्र पर्वत से चलकर एक रेखा अंगूठे के दूसरे पोर तक पहुंच जाय तो व्यक्ति एकान्त प्रिय और घर गृहस्थी के कार्यों में रुचि रखने वाला होगा।

शुक्र पर्वत से आरम्भ होकर एक रेखा बुध पर्वत तक निर्बाध पहुंच रही हो तो व्यक्ति नौकरी, व्यवसाय आदि में सफलता प्राप्त करता है।

पर्वत पर चिन्ह

शुक्र पर्वत पर एक क्रॉस व्यक्ति के असफल एवं निराश पारिवारिक जीवन का द्योतक है। उसके प्रेम का परिणाम दुःखद होता है। यदि शुक्र पर्वत के साथ-साथ बृहस्पति पर्वत पर भी क्रॉस का चिन्ह हो तो यह सत्यप्रियता की निशानी है। व्यक्ति का प्यार, सफल और प्रेमपूर्ण होता है। स्त्री को प्रेमी का वियोग सहन करना पड़ता है।

शुक्र पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह शुभ होता है। व्यक्ति का जीवन शांति से व्यतीत होता है, परन्तु व्यक्ति मनमानी करता है।

शुक्र पर्वत पर वर्ग का चिन्ह विपत्तियों का सूचक है परन्तु व्यक्ति को क्षति नहीं होने देता।

शुक्र पर्वत पर वृत्त का चिन्ह व्यक्ति की अस्वस्थता का प्रतीक है जो जीवन भर पीछा नहीं छोड़ेगी।

शुक्र पर्वत पर चतुष्कोण यदि शनि पर्वत की सीमा से लगा हुआ होगा तो ऐसा व्यक्ति सांसारिकता को त्याग कर वन में चला जायेगा अथवा किसी विशेष कारणवश अस्पताल या जेल में पहुंच जायेगा।

सामान्य विकसित शुक्र पर्वत के मध्य में एक तारा वाला व्यक्ति प्रेम में सफल रहता है, उसकी प्रेमिका उसे पूरा प्यार देगी।

शुक्र पर्वत पर बिन्दु का निशान गुप्तांगों में भयंकर बीमारी का द्योतक है।

शुक्र पर्वत पर श्वेत तिल या धब्बे शुभ फल देने वाले, लाल अल्प अशुभ एवं काले अत्यन्त अशुभ होते हैं।

7. मंगल पर्वत

मंगल पर्वत का क्षेत्र हथेली पर दो स्थानों पर स्थित होता है–1. बुध पर्वत्त और भाग्य रेखा के नीचे तथा चंद्र पर्वत के ऊपर। 2. बृहस्पति पर्वत के नीचे और शुक्र पर्वत के ऊपर।

प्रथम स्थिति को भौम मानसिक एवं दूसरी स्थिति को भौम भौतिक कहा जाता है। इन्हें क्रमशः ऊपरी मंगल एवं निम्न मंगल पर्वत भी कहते हैं। भूमि का पुत्र मंगल मुख्यतः युद्ध का देवता है। मंगल–प्रधान व्यक्ति हृष्टपुष्ट, लम्बे, सुगठित शरीर के तथा गोल चेहरे वाले होते हैं। ऐसे लोग साहसी और धैर्यवान् होते हैं तथा अन्याय सहन नहीं करते। इनकी रुचि उत्तम भोजन तथा यात्राओं में रहती है तथा प्रवृत्ति शासन करने की होती है। इन लोगों में कायरता एवं संकोच नहीं होता। भौम मानसिक, ऊर्ध्व अथवा ऊपरी मंगल का विकसित होना जीवन में दृढ़ता तथा संतुलन का प्रतीक है वहीं भौम भौतिक अर्थात् निम्न मंगल व्यक्ति की लड़ाकू प्रवृत्ति को दर्शाता है। मानसिक भौम अर्थात् ऊर्ध्व मंगल एवं भौतिक भौम अर्थात् निम्न मंगल के फल लगभग समान ही होते हैं। अंतर केवल इतना होता है कि भौतिक भौम का प्रभाव शारीरिक स्तर पर एवं मानसिक भौम का प्रभाव मानसिक स्तर पर रहता है।

मंगल पर्वत यदि दबा हुआ हो तो व्यक्ति कायर होगा, भयभीत रहेगा, लड़ाई–झगड़े से बचेगा और अपमान भी सहन कर लेगा, ऐसे व्यक्ति की इच्छायें तो ऊंची होंगी, परन्तु उन्हें पूरी नहीं कर पायेगा।

मंगल पर्वत की अनुपस्थिति व्यक्ति में कायरता की परिचायक है। ऐसे व्यक्ति चरित्रहीन, ईर्ष्यालु और विवेकरहित होते हैं, उन पर विश्वास भी नहीं किया जा सकता।

अत्यधिक विकसित मंगल क्षेत्र व्यक्ति को अपराधी प्रवृत्ति का क्रोधी, झगड़ालू और हिंसक बना देता है। यदि ऐसे व्यक्ति की हथेली कठोर और अंगूठा गोल हो तो वह हत्यारा बनता है। अति उभार वाले व्यक्ति शीघ्र उत्तेजित हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति पुलिस अथवा सेना में कार्य करते हैं।

सामान्य विकसित मंगल क्षेत्र वाला व्यक्ति एक पत्नी प्रेम में ही विश्वास रखते हैं। सच्चे प्रेमी और काम वासना से रहित होते हैं। ऐसे लोग परोपकारी प्रवृत्ति के और सफलता के लिये प्रयत्नशील रहते हैं एवं इन्हें अपनी विवेक बुद्धि से सफलता मिल भी जाती है।

विकसित मंगल पर्वत वाले व्यक्ति को बीमारियां नहीं लगतीं, वह साधारणतयः पूर्ण स्वस्थ, चुस्त और प्रसन्नचित्त रहता है। ऐसे व्यक्ति व्यवहारकुशल एवं स्पष्ट वक्ता होते हैं एवं कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं।

पूर्ण विकसित ऊर्ध्व मंगल वाले लोग तर्क और प्रमाणों से विवादों में विजय प्राप्त करते हैं। ये लोग झगड़ालू प्रवृत्ति के नहीं होते जबकि पूर्ण विकसति निम्न मंगल वाला व्यक्ति धूर्त और लड़ाकू प्रवृत्ति का होता है। यदि ऊर्ध्व एवं निम्न दोनों मंगल पर्वत विकसित हों तो व्यक्ति सेना में अधिकारी होगा, वह साहसी तथा तेज बोलने वाला होगा।

विकसित मंगल पर्वत के साथ हथेली का रंग गुलाबी हो तो व्यक्ति में दुर्गुणों के साथ अच्छे गुण भी होते हैं। यदि हथेली का रंग सफेद हो तो व्यक्ति आलसी, सुस्त और अस्वस्थ रहता है। पीले रंग की हथेली व्यक्ति को अपराधों की तरफ ले जाती है। लाल रंग उच्चपद प्राप्त होने का सूचक होता है जबकि नीला या बैंगनी रंग रोगी रहने का प्रतीक है।

यदि मंगल पर्वत का झुकाव शुक्र पर्वत की ओर हो तो व्यक्ति में अच्छाइयां कम और बुराइयां अधिक होंगी। ऐसे व्यक्ति झूठी शान दिखाने वाले और कायर स्वभाव के होते हैं।

विकसित मंगल पर्वत वाले हाथ में उंगलियां कोणीक हों तो व्यक्ति आदर्शवादी, गठीली उंगलियां हों तो व्यक्ति तर्कशील एवं यदि उंगलियां वर्गाकार हों तो व्यक्ति को व्यवहारकुशल बनाती हैं। फैली हुई उंगलियों वाला व्यक्ति चुस्त और चतुर होता है।

पर्वत पर रेखायें

मंगल पर्वत पर मंगल रेखा का स्पष्ट और उभरी हुई होना व्यक्ति को सेना का कमाण्डर या डाकुओं का सरदार बना देती है।

विकसित मंगल पर्वत के साथ उत्तम भाग्य रेखा व मस्तिष्क रेखा का होना सम्पत्ति का स्वामी होना दर्शाती है। ऐसा व्यक्ति सदा सफल और अपराजित रहता है। सुन्दर स्त्रियों से प्रेम करने में धन खूब खर्च करता है।

विकसित मंगल पर्वत के साथ यदि मस्तिष्क रेखा टूटी हुई हो तो यह दुःख, चिन्ता, भय और मनोविकार से पीड़ित करने वाली होती है।

विकसित मंगल पर्वत के साथ-साथ लचीला हो तो वह व्यक्ति शान्त स्वभाव का, संयमी और सभ्य व्यवहार वाला होगा।

मंगल पर्वत पर एक रेखा पराक्रम और साहस की, कई रेखायें हिंसक

प्रवृत्ति की तथा आपस में कटती हुई रेखायें युद्ध-प्रेमी होने की परिचायक होती हैं। एक लहराती हुई रेखा व्यक्ति को हठी और लड़ाकू बना देती है।

विकसित मंगल पर्वत पर एक खड़ी रेखा हो और उंगलियों के नाखून छोटे हों तो व्यक्ति में शासन करने की, दूसरों को दबाने की एवं तर्क-वितर्क करने की प्रवृत्ति होती है।

मंगल पर्वत पर कई रेखाओं के साथ एक त्रिशूल का चिन्ह व्यक्ति को गले और फेफड़े के रोगों से ग्रस्त करता है।

मंगल पर्वत से चलकर यदि एक रेखा जीवन रेखा को काट रही हो तो उस व्यक्ति को आर्थिक हानि उठानी पड़ती है। ऐसे व्यक्ति को अपने मित्रों से सावधान रहना चाहिये।

मंगल पर्वत से चलकर यदि एक रेखा भाग्य रेखा को काटती है तो व्यक्ति को शत्रुओं से हानि उठानी पड़ती है।

अत्यधिक विकसित मंगल पर्वत पर रेखाओं का जाल बना हो तो व्यक्ति परपीड़क, डाकू या हत्यारा भी बन सकता है।

कम विकसित मंगल पर्वत पर बना रेखाओं का जाल वाला व्यक्ति लड़ाई-झगड़ों में शारीरिक कष्ट और हानि उठायेगा।

मंगल क्षेत्र पर अनेक बारीक रेखायें व्यक्ति को लड़ाकू, झगड़ालू और मुकदमेबाज बना देती हैं।

मंगल पर्वत से चली एक रेखा यदि हृदय रेखा को काटकर सूर्य पर्वत तक पहुंचती हो तो वह व्यक्ति महत्वाकांक्षी बनेगा।

पर्वत पर चिन्ह

मंगल पर्वत पर क्रॉस का चिन्ह वाले व्यक्ति की मृत्यु युद्ध में होती है। यदि क्रॉस का चिन्ह अत्यधिक विकसित पर्वत पर हो तो व्यक्ति हमेशा मुकदमेबाजी में फंसा रहता है। भौम भौतिक मंगल पर क्रॉस का चिन्ह व्यक्ति के दुर्घटनाओं में फंसने एवं उसके झगड़ालू होने का संकेत देता है। भौम मानसिक मंगल पर क्रॉस चिन्ह वाला व्यक्ति जीवन भर चिंताओं, झगड़ों, मुकदमों आदि में घिरा रहता है।

मंगल पर्वत पर यदि जाल का चिन्ह हो तो व्यक्ति की मृत्यु किसी दुर्घटना में होती है। यह युद्ध में पराजय और आत्महत्या का द्योतक भी है।

अति विकसित मंगल पर्वत पर वर्ग का चिन्ह व्यक्ति को संयमी, शांत और समर्थ बनाता है, परन्तु कम विकसित मंगल पर्वत पर वर्ग का चिन्ह व्यक्ति को रोगी बनाता है।

अत्यधिक विकसित मंगल पर्वत पर तारे का चिन्ह वाला व्यक्ति ईर्ष्यालु, क्रोधी स्वभाव का एवं अपराधी प्रकृति का होगा।

मंगल पर्वत पर वृत्त का चिन्ह व्यक्ति के नीति निपुण होने का सूचक है तथा त्रिकोण चिन्ह वाला व्यक्ति कार्यों को योजना बनाकर पूरी क्षमता से करता है।

कम विकसित मंगल पर्वत पर द्वीप का चिन्ह व्यक्ति को संकोची, कायर और डरपोक बनाता है।

मंगल पर्वत पर नक्षत्र का चिन्ह सेना या पुलिस में उच्च पद प्राप्त करवाता है।

यदि दोनों हाथों के मंगल पर्वत पर काले धव्वे हों तो व्यक्ति को मुकदमों में धनहानि उठानी पड़ती है।

निम्न मंगल पर्वत पर एक रेखा के ऊपर एक स्पष्ट क्रॉस हो तो व्यक्ति की रुचि ज्योतिष, अध्यात्म तथा रहस्यवादी विषयों में होती है।

विकसित निम्न मंगल पर्वत पर जाल हो और यह चन्द्र पर्वत तक हो तो व्यक्ति पेट की बीमारियों से पीड़ित रहता है।

यदि निम्न मंगल पर्वत पर बहुत–सी आड़ी रेखायें हों तो व्यक्ति का पारिवारिक व्यवहार उसके माता–पिता और रिस्तेदारों के अधीन रहता है।

यदि निम्न मंगल पर्वत का शिखर शुक्र पर्वत के पास हो तो व्यक्ति सहनशील, धैर्यवान और दयावान् होता है।

निम्न मंगल पर्वत से चलकर एक या अनेक रेखायें जीवन रेखा तक पहुंच रही हों तो व्यक्ति अपने परिवार वालों अथवा सम्बंधियों द्वारा कष्ट पाता है।

यदि निम्न मंगल पर्वत का शिखर बृहस्पति पर्वत के समीप हो तो व्यक्ति आत्म–प्रशंसक, वाचाल होने के साथ–साथ सहनशील होगा।

निम्न मंगल पर्वत से निकलकर एक रेखा भाग्य रेखा को छू रही हो तो व्यक्ति का पारिवारिक जीवन कष्टों में ही बीतेगा।

यदि निम्न मंगल पर्वत का शिकार अंगूठे के समीप हो तो व्यक्ति बुद्धिमान और विचारवान होगा।

यदि निम्न मंगल पर्वत पर पड़ी रेखा के ऊपर एक तारा का चिन्ह हो तो व्यक्ति का स्वास्थ्य व व्यवसाय बिगड़ेंगे तथा परिवार भी रोगों से कष्ट पायेगा।

यदि मंगल पर्वत पर कोई रेखा अथवा चिन्ह न हो तो वह व्यक्ति शांतचित्त, संयमी, साहसी एवं बलिष्ठ होता है।

8. हर्षल पर्वत

हर्षल ग्रह का क्षेत्र हृदय एवं मस्तिष्क रेखा के बीच बुध पर्वत से नीचे होता है। इसके पर्वत द्वारा एक छोर हृदय रेखा तथा दूसरा छोर मस्तिक रेखा को छूने के कारण हर्षल का प्रभाव हृदय और मस्तिष्क पर पड़ता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में हर्षल पर्वत हृदय एवं मस्तिष्क रेखाओं के बीच और बुध पर्वत के ठीक नीचे स्थित होता है वे व्यक्ति वैज्ञानिक अथवा गणितज्ञ होते हैं और अपने कार्यों से प्रसिद्धि पाते हैं।

यदि हर्षल पर्वत बुध पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो वह व्यक्ति अपनी योग्यताओं एवं क्षमताओं का उपयोग गलत कामों में करता है। ऐसे व्यक्ति ठग और लुटेरे बन जाते हैं तथा हृदय रोग से पीड़ित रहते हैं।

यदि हर्षल पर्वत का झुकाव नेपच्यून पर्वत की ओर होता है तो व्यक्ति अय्याश हो जाता है। वासना में डूबा यह व्यक्ति दुःखपूर्ण जीवन बिताता है। ऐसे लोगों का विवाहित जीवन नाटकीय बन जाता है।

अल्प विकसित हर्षल पर्वत वाला व्यक्ति मशीनरी या यंत्रों सम्बन्धी कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

यदि एक रेखा हर्षल पर्वत से निकलकर अनामिका उंगली की ओर जा रही हो तो यह वैभवशाली जीवन का प्रतीक होती है।

हर्षल पर्वत पर वर्ग या त्रिकोण सौभाग्य का सूचक चिन्ह है। ऐसे व्यक्ति समाज एवं देश में यश प्राप्त करते हैं।

हर्षल पर्वत पर एक रेखा का होना सम्मान की, कई रेखायें विदेश यात्रा की तथा आपस में कटती हुई रेखायें हवाई दुर्घटना की परिचायक हैं।

हर्षल पर्वत पर क्रॉस का चिन्ह विदेश यात्रा एवं वृत्त का चिन्ह धन-प्राप्ति का सूचक होता है।

हर्षल पर्वत पर नक्षत्र का चिन्ह विदेशों में यश दिलवाता है, परन्तु जाली का चिन्ह दुर्घटना में मृत्यु का प्रतीक है।

9. नेपच्यून ग्रह पर्वत

पृथ्वी से अत्यधिक दूरी पर होने के कारण नेपच्यून का प्रभाव कम हो जाता है परन्तु यह प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण और चमत्कारिक होता है। नेपच्यून ग्रह मस्तिष्क रेखा से नीचे एवं चन्द्र पर्वत क्षेत्र के ऊपर स्थित होता है।

सुविकसित नेपच्यून पर्वत व्यक्ति को लेखक, कवि अथवा संगीतकार बना देता है।

यदि नेपच्यून पर्वत का उभार सामान्य से बहुत ज्यादा हो तो व्यक्ति का पारवारिक जीवन कष्टपूर्ण हो जाता है। वह शंकालु और हिंसक प्रवृत्ति का होता है। यदि यह उभार चन्द्र पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो व्यक्ति का वैचारिक एवं व्यावहारिक स्तर निम्न होता है। उस व्यक्ति का घटिया स्तर उससे निंदनीय कार्य करवाता रहता है।

यदि नेपच्यून पर्वत का उभार हर्षल पर्वत से मिल रहा हो तो वह व्यक्ति धन-सम्पत्ति के लोभ में किसी की हत्या कर सकता है।

यदि कोई रेखा नेपच्यून पर्वत से निकलकर मस्तिष्क रेखा को काट रही हो तो वह व्यक्ति निश्चित रूप से पागल हो जायेगा।

नेपच्यून पर्वत के ऊपर एक पतली रेखा प्रारम्भ होकर भाग्य अथवा मस्तिष्क रेखा से मिल जाये तो यह व्यक्ति को उच्च पद प्राप्त कराती है।

नेपच्यून पर्वत पर क्रॉस का चिन्ह वाले व्यक्ति धनी परिवार में जन्म लेकर भी निर्धन बन जाते हैं तथा पैसे-पैसे को मोहताज हो जाते हैं।

नेपच्यून पर्वत पर जाली पानी में मृत्यु तथा वृत्त का चिन्ह मानसिक दुर्बलता का द्योतक होता है।

नेपच्यून पर्वत पर आपस में कटती हुई रेखायें व्यक्ति में निराशा भर देती हैं।

नेपच्यून पर्वत पर वर्ग का चिन्ह यश-प्राप्ति तथा नक्षत्र जलयान की यात्रा का प्रतीक होता है।

नेपच्यून पर्वत पर एक या अनेक रेखायें व्यक्ति में सामाजिक भावनायें भर देती हैं।

10. प्लूटो पर्वत

प्लूटो ग्रह को हिन्दी में इन्द्र भी कहते हैं। हाथ पर यह हृदय रेखा के नीचे तथा मस्तिष्क रेखा के ऊपर अर्थात् हर्षल एवं गुरु पर्वतों के बीच में स्थित होता है।

विकसित प्लूटो पर्वत सुखी वृद्धावस्था का सूचक है। यदि प्लूटो पर्वत अवनत हो अथवा हथेली पर हो ही नहीं तो व्यक्ति का बुढ़ापा कष्टों में बीतता है। ऐसे व्यक्ति भाग्यहीन होने के कारण ईर्ष्यालु और चिड़चिड़े स्वभाव के हो जाते हैं।

सामान्य से अधिक विकसित प्लूटो पर्वत वाला व्यक्ति शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाता, व्यावहारिक जीवन में उसे सदैव कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति धन का सदुपयोग भी नहीं कर अपव्यय करते हैं।

प्लूटो पर्वत पर क्रॉस का चिन्ह वाले व्यक्ति प्रौढ़ावस्था में ही दुर्घटना के शिकार हो जाते हैं अथवा आत्महत्या कर लेता है।

प्लूटो पर्वत पर एक या अनेक रेखायें उन्नति की, परन्तु आपस में कटती हुई रेखायें समाज से विमुख होने की द्योतक होती हैं।

प्लूटो पर्वत पर जाली का चिन्ह व्यक्ति के जीवन में असफलताओं का प्रतीक होता है।

जिस व्यक्ति के प्लूटो पर्वत पर वर्ग का चिन्ह हो वह बुद्धिहीन होता है।

प्लूटो पर्वत पर त्रिभुज का चिन्ह विभिन्न विद्याओं और विद्याओं में प्रवीण होने का तथा वृत्त का चिन्ह धार्मिक कार्यों में रुचि लेने का संकेत देता है।

11. राहु पर्वत

हथेली पर मस्तक रेखा से नीचे चन्द्र, शुक्र एवं मंगल पर्वतों से घिरा हुआ क्षेत्र राहु पर्वत का स्थान है। मणिबंध से नीचे भाग्य रेखा इसी पर्वत से चलकर शनि पर्वत तक पहुंचती है। यह भाग्य रेखा जितनी स्पष्ट और गहरी होगी व्यक्ति उतना ही भाग्यवान, प्रतिभावान, परोपकारी और यात्राओं का शौकीन होगा।

विकसित राहु पर्वत व्यक्ति को वैभव प्रदान करता है, परन्तु विकसित राहु पर्वत पर यदि भाग्य रेखा टूटी-फूटी या छीण और जंजीर जैसी हो तो व्यक्ति का आर्थिक पतन हो जाता है। व्यावसायिक क्षेत्र में कठिनाइयों एवं असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

अवनत राहु पर्वत वाला व्यक्ति अस्थिर चित्त वाला, झगड़ालू तथा धन-सम्पत्ति का नाश करने वाला होता है।

जिन हथेलियों में राहु पर्वत मध्य भाग की ओर खिसक गया हो तो व्यक्ति की यौवनावस्था कष्टपूर्ण व्यतीत होती है।

राहु पर्वत पर एक रेखा साहस, अनेक रेखायें क्रोधी स्वभाव एवं आपस में कटती हुई रेखायें उत्तम दायित्व हीनता का प्रतीक होती है।

राहु पर्वत पर जाली का होना दरिद्रता तथा क्रॉस का निशान मानहानि एवं धनहानि का संकेत देता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में राहु पर्वत पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो वह युद्ध-प्रिय होता है।

राहु पर्वत पर वर्ग का चिन्ह व्यक्ति को राज्य से सम्मान दिलवाता है एवं त्रिकोण का चिन्ह धन-प्राप्ति का परिचायक है।

12. केतु पर्वत

केतु ग्रह का क्षेत्र हथेली पर मणिबंध के ऊपर शुक्र तथा चन्द्र क्षेत्रों को अलग-अलग करता हुआ भाग्य रेखा के उद्‌गम स्थान के पास होता है। केतु ग्रह का प्रभाव मनुष्य के जीवन में बीस वर्ष की आयु तक ही रहता है और इसके फल समान्यतयः राहु के समान ही होते हैं।

विकसित केतु पर्वत के साथ भाग्य रेखा भी गहरी और स्पष्ट हो तो वह किशोर या तो धनी परिवार में जन्म लेने वाला होता है अथवा वह जिस निर्धन घर में जन्म लेता है वह परिवार आकस्मिक धन-लाभ प्राप्त कर लेता है। ऐसे बालक पढ़ने में मेधावी होते हैं और समाज में सम्मान प्राप्त करते हैं।

अवनत केतु पर्वत पर भाग्य रेखा की प्रबलता भी किशोर के घर की निर्धनता नहीं हटा पाती। ऐसा बच्चा बचपन में उदर रोगों से पीड़ित रहता है। उसकी शिक्षा सुचारु रूप से नहीं चलती और मंदबुद्धि होता है।

अत्यधिक उभरा हुआ केतु पर्वत के साथ घृणित अथवा कटी-फटी भाग्य रेखा बचपन में बुरे दिनों की सूचक होती है। बचपन रोगी होने और अपर्याप्त चिकित्सा में बीतता है। क्षीण आर्थिक स्थिति में बालक को शिक्षा प्राप्त करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ता है।

❑❑❑
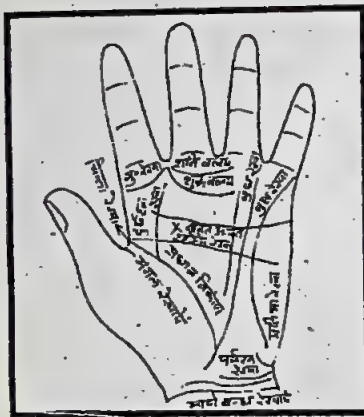
अध्याय-2

हाथ पर युग्म पर्वत (दो पर्वतों का) फल

1. गुरु अर्थात् बृहस्पति एवं अन्य–गुरु एवं शनि दोनों पर्वत सुविकसित हों तो व्यक्ति विचारशील, सुशील और भाग्यशाली होता है, उसे यश प्राप्त होता है।

यदि गुरु का पर्वत और शुक्र का पर्वत दोनों विकसित हों तो व्यक्ति उन्नतिशील परन्तु आत्म-प्रशंसा सुनने वाला होता है।

गुरु एवं सूर्य के पर्वत दोनों सुविकसित हों तो व्यक्ति को धन, सम्मान, पद और यश की प्राप्ति होती है। वह दयालु होता है।

गुरु एवं बुध दोनों पर्वतों का विकसित होना व्यक्ति को गणितज्ञ, सफल वक्ता, प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं शास्त्रों में रुचि रखने वाला बनाता है। वह समाजसेवी होता है।

गुरु और चन्द्र पर्वतों का विकसित होना गम्भीर व्यक्तित्व तथा कार्य-सुघड़ता का प्रतीक है।

यदि गुरु तथा शुक्र दोनों पर्वत विकसित हों तो व्यक्ति अपने आकर्षक व्यक्तित्व से लोगों को प्रभावित कर लेगा।

गुरु एवं मंगल पर्वतों का विकसित होना व्यक्ति की सफल रणनीति, उसकी कार्य-निपुणता एवं पराक्रम का सूचक है।

यदि गुरु पर्वत अवनत हो परन्तु शनि विकसित हो तो व्यक्ति दूसरे लोगों से घृणा करने वाला होता है।

यदि गुरु एवं चन्द्र पर्वत विकसित हो परन्तु बुध का पर्वत अवनत हो तो व्यक्ति के सोचे-विचारे कार्य सफल नहीं होते।

गुरु पर्वत तथा राहु पर्वतों का विकसित होना व्यक्ति में आत्मविश्वास की कमी के साथ कुत्सित विचार होना दर्शाता है।

गुरु पर्वत के उभार के साथ यदि केतु पर्वत भी विकसित हो तो व्यक्ति को चिन्ताओं, कार्य में बाधाओं और कठिनाइयों से घिरा रहना पड़ता है।

गुरु अथवा हर्षल दोनों पर्वतों के विकसित हाथ वाला व्यक्ति परोपकारी और विज्ञान में रुचि रखने वाला होता है। वह अपने कार्यों से यश भी अर्जित करता है।

गुरु एवं नेपच्यून पर्वतों का विकसित होना व्यक्ति को धनी एवं उत्तम विचारों वाला बनाता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में गुरु तथा प्लूटो दोनों पर्वत विकसित हों वह बुद्धिमान और अच्छा वक्ता बनता है।

यदि स्त्री के हाथ में गुरु एवं शनि दोनों पर्वत उठे हुए हों तो वह हिस्टीरिया रोग से पीड़ित रहती है।

2. शनि एवं अन्य–शनि एवं सूर्य दोनों पर्वतों का विकसित होना मनुष्य में तर्क शक्ति, विचारशीलता तथा वैज्ञानिक सोच का परिचायक है। व्यक्ति शांतिप्रिय और परोपकारी होता है।

शनि और बुध पर्वतों के विकसित हाथ वाला व्यक्ति उत्तम विचारों से युक्तियुक्त निर्णय लेता है। ऐसा व्यक्ति एकांत में उदास परन्तु समाज में प्रसन्न रहता है। वह सच्चा भी होता है।

शनि और मंगल पर्वत दोनों का विकसित होना व्यक्ति को क्रोधी, लड़ाकू, मिथ्याभिमानी तथा विषयभोगी बना देता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों से द्वेष भावना रखता है।

शनि एवं शुक्र पर्वतों का विकसित हाथ वाला व्यक्ति स्वार्थी, सौंदर्य प्रेमी, धर्मभीरू तथा गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला होता है।

शनि एवं चन्द्र दोनों पर्वतों का विकसित होना मनुष्य के रहस्यमय व्यक्तित्व और स्वाभिमानी होने का प्रतीक होता है। ऐसा व्यक्ति भीरू स्वभाव का होता है उसमें कल्पनाशक्ति की कमी होती है।

यदि शनि तथा प्लूटो दोनों ग्रह पर्वत विकसित हों तो व्यक्ति मेधावी, चतुर और विवेकशील होता है।

यदि शनि एवं नेपच्यून दोनों पर्वत क्षेत्र विकसित हों तो देश-विदेश की यात्रायें कराता है।

विकसित शनि पर्वत के साथ हर्षल पर्वत भी यदि विकसित हो तो व्यक्ति एकान्तप्रिय और ललित कलाओं में पारंगत बनता है।

शनि एवं राहु पर्वतों का विकसित होना आकस्मिक धन-लाभ एवं

गुणवान होने का प्रतीक है।

शनि और केतु ग्रह पर्वतों का विकसित होना व्यक्ति को जीवन यापन के लिये साधनों की चिन्ता एवं कठिनाइयों से घेरे रहती है।

3. सूर्य एवं अन्य—यदि हाथ पर सूर्य और बुध दोनों पर्वत विकसित हों तो व्यक्ति अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय में सफलता प्राप्त करता है अथवा वह वैज्ञानिक मेधा से सम्पन्न होता है। वह बुद्धिमान और प्रखर वक्ता भी होता है।

सूर्य और मंगल पर्वतों को विकसित रखने वाले हाथ का व्यक्ति मिलनसार, परोपकारी तथा शांत स्वभाव का होता है। उसमें बलिदान की भावना भरी रहती है। ऐसा व्यक्ति पवित्र आचरण वाला और ज्ञानवान होता है।

सूर्य एवं शुक्र ग्रहों के पर्वत यदि विकसित हों तो व्यक्ति मित्रता निभाने वाला, व्यवहारकुशल तथा योजना बनाकर कार्य करने वाला होता है।

यदि सूर्य और हर्षल दोनों ग्रह विकसित हों तो व्यक्ति ज्ञानी और विवेक-बुद्धि वाला होता है। वह यश प्राप्त करता है।

सूर्य पर्वत के साथ प्लूटो ग्रह पर्वत भी विकसित हो तो यह प्रतीक होता है गम्भीरता का।

विकसित सूर्य पर्वत के साथ यदि नेपच्यून पर्वत भी विकसित हो तो व्यक्ति सोच-विचारकर एवं समझ-बूझकर काम करने वाला होता है।

विकसित सूर्य पर्वत के साथ यदि चन्द्र पर्वत भी विकसित अवस्था में हो तो व्यक्ति कल्पना और आडम्बर में डूबा रहता है और कृत्रिम दिखावे में जीता है।

सूर्य पर्वत और राहु पर्वत दोनों का विकसित होना कष्ट, तनाव और संकट का सूचक है।

विकसित सूर्य एवं केतु पर्वत व्यक्ति की विदेश यात्रा का संकेत देते हैं।

4. बुध एवं अन्य—विकसित बुध-पर्वत एवं विकसित शुक्र पर्वत का साथ होना व्यक्ति को संगीत से गहरी रुचि रखने वाला तथा विपरीत योनि के प्रति आकर्षण रखने वाला बनाता है। ऐसा व्यक्ति प्रसन्नचित्त और विनोदी होता है।

विकसित बुध पर्वत के साथ यदि मंगल पर्वत भी विकसित हो तो व्यक्ति में शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता रहती है। वह विनोदी स्वभाव का, लड़कियों को आकर्षित करने वाला एवं पशु-पक्षियों में रुचि रखने वाला होता है।

बुध पर्वत और चन्द्र पर्वतों का विकसित होना व्यक्ति को बुद्धिमान, भाग्यशाली, दूरदर्शी और वैज्ञानिक प्रतिभा से सम्पन्न बनाते हैं।

यदि बुध पर्वत एवं राहु पर्वत दोनों विकसित हों तो व्यक्ति चिड़चिड़ा स्वभाव पाता है।

यदि बुध पर्वत और केतु पर्वत दोनों विकसित हों तो व्यक्ति मानवीय गुणों से सम्पन्न और यात्रा-प्रेमी होता है।

यदि विकसित बुध पर्वत के साथ हर्षल पर्वत भी विकसित हो तो वह प्रेमी और कल्पनाशील होने का प्रतीक है।

बुध पर्वत एवं प्लूटो दोनों पर्वतों का विकसित होना व्यक्ति को अंतर्राष्ट्रीय व्यवसाय में सफलता देता है।

यदि बुध पर्वत और नेपच्यून दोनों पर्वत विकसित अवस्था में हों तो व्यक्ति परोपकारी होता है।

5. चन्द्र एवं अन्य–विकसित चंद्र पर्वत के साथ यदि मंगल पर्वत भी विकसित हो तो व्यक्ति समुद्री यात्रायें करेगा। विकसित चंद्र पर्वत के साथ यदि प्लूटो पर्वत भी उन्नत हो तो व्यक्ति अति कामुक होता है।

उन्नत चन्द्र पर्वत के साथ हर्षल पर्वत का भी उन्नत होना व्यक्ति को सहज और सरल स्वभाव का बनाते हैं।

विकसित चन्द्र पर्वत और विकसित नेपच्यून पर्वत का साथ व्यक्ति को कल्पनाशील और विवेकी बनाते हैं।

यदि विकसित चन्द्र पर्वत के साथ राहु पर्वत भी उन्नत हो तो दुष्ट मित्रों की संगति भोगनी पड़ती है।

उन्नत चन्द्र पर्वत और उन्नत केतु पर्वत प्रेम में असफलता का प्रतीक है।

6. राहु एवं अन्य–राहु एवं केतु का हथेली पर विकसित होना कष्टदायी दुःख का प्रतीक होता है। व्यक्ति को जीवन यापन के लिये कठोर परिश्रम करना पड़ता है।

विकसित राहु पर्वत के साथ विकसित प्लूटो पर्वत व्यक्ति की अपराध प्रवृत्ति को द्योतक है लेकिन ऐसे व्यक्ति संवेदनशील भी होते हैं।

यदि विकसित राहु पर्वत के साथ हर्षल पर्वत भी उन्नत हो तो यह चिन्ता और दुःखों का कारण बनता है।

उन्नत राहु पर्वत और उन्नत नेपच्यून पर्वत हाथ वाला व्यक्ति विदेश में विवाह करता है।

7. केतु एवं अन्य–केतु पर्वत विकसित हो और प्लूटो पर्वत भी उन्नत हो तो यह सम्मान प्राप्त करवाता है। विकसित केतु पर्वत के साथ यदि हर्षल पर्वत भी विकसित हो तो व्यक्ति में कठोर शासन की भावना होती है और वह दुःख भी पाता है।

उन्नत केतु पर्वत के साथ उन्नत नेपच्यून पर्वत की उपस्थिति व्यक्ति में विवेकहीनता का प्रतीक होती है।

8. शुक्र एवं अन्य–यदि व्यक्ति के हाथ पर शुक्र एवं चन्द्र दोनों पर्वत उन्नत अवस्था में हों तो व्यक्ति में सौंदर्य के प्रति वासना और सुख भोगने की लालसा भरी रहती है।

उन्नत शुक्र पर्वत के साथ यदि मंगल पर्वत भी विकसित हो तो व्यक्ति संगीत क्षेत्र में निपुणता प्राप्त करेगा।

विकसित शुक्र पर्वत और विकसित हर्षल पर्वत तीव्र प्रेम-भावना के प्रतीक हैं।

यदि शुक्र पर्वत और प्लूटो पर्वत दोनों उन्नत हों तो व्यक्ति जीवन की विद्याओं की समझ रखने वाला होता है।

विकसित शुक्र पर्वत के साथ यदि नेपच्यून पर्वत भी विकसित हो तो यह व्यक्ति में गहरी संवेदनशीलता और कला-प्रेम का प्रतीक होता है।

उन्नत शुक्र पर्वत एवं उन्नत राहु पर्वत का साथ नीच स्त्रियों के प्रति गहरे लगाव का परिचायक है।

यदि विकसित शुक्र पर्वत के साथ केतु पर्वत भी विकसित अवस्था में हो तो व्यक्ति कोमल हृदय वाला होता है।

9. हर्षल एवं अन्य–व्यक्ति की हथेली पर विकसित हर्षल पर्वत के साथ नेपच्यून पर्वत भी विकसित हो तो यह उच्चपद की प्राप्ति एवं विदेश यात्रा का द्योतक होता है।

विकसित हर्षल पर्वत के साथ यदि हाथ पर प्लूटो पर्वत भी विकसित हो तो व्यक्ति वैज्ञानिक प्रतिभा से सम्पन्न होता है।

10. प्लूटो एवं अन्य–यदि व्यक्ति की हथेली पर प्लूटो पर्वत एवं नेपच्यून दोनों पर्वत उन्नत अवस्था में हो तो व्यक्ति अति कामी होता है और दशा से बादर भी प्रेम-सम्बंध स्थापित करता है।

अंगूठा

शरीर विज्ञानियों के अनुसार अंगूठे का रक्त धमनियों द्वारा मस्तिष्क

से सीधा सम्बंध है इसलिये अंगूठा नैसर्गिक इच्छाशक्ति का केन्द्र माना गया है और यह नाड़ी द्वारा मस्तिष्क से सम्बंधित होने के कारण मनुष्य के स्वभाव, प्रकृति एवं मनोदशा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंग है।

अंगूठे को पूरे हाथ का मूल मानने का कारण यही है कि इसका सीधा सम्पर्क मस्तिष्क से होता है और मस्तिष्क ही मनुष्य की विचारशक्ति एवं क्रियाशीलता का उद्गम होता है, अतः हस्तरेखा विज्ञान में अंगूठे का अध्ययन सर्वाधिक महत्वपूर्ण एवं सर्वोपरि माना गया है। अकेला अंगूठा ही व्यक्ति के भौतिक और मानसिक चरित्र की सम्पूर्ण व्याख्या कर सकने में समर्थ है।

विकसित अंगूठे वाले व्यक्ति का बौद्धिक स्तर ऊंचा एवं अविकसित अंगूठे वाले व्यक्ति का बौद्धिक एवं व्यक्तित्व का विकास अपूर्ण रहता है।

कोमल एवं कुछ झुके हुये अंगूठे वाले व्यक्ति मिलनसार और शीघ्र मित्रता करने वाले होते हैं, जबकि सुदृढ़ एवं सीधे अंगूठे वाले मनुष्य जिद्दी और स्वेच्छाचारी प्रकृति के होते हैं, ऐसे लोग जल्दी मित्र नहीं बनाते और यात्राओं में भी चुपचाप बैठे रहते हैं।

हाथ पर हथेली के साथ अंगूठे की तीन स्थितियां होती हैं–1. अधिक कोण, 2. समकोण, 3. न्यून कोण।

इसके गुणावगुण निम्न प्रकार से हैं–

1. अधिक कोण–हथेली पर अधिक कोण बनाते हुये अंगूठे लम्बे, पतले तथा सुन्दर होते हैं। ऐसे अंगूठे वाले मनुष्य सात्विकी और मधुर स्वभाव वाले, संगीतकार, विद्या और कलाप्रेमी तथा आत्मबल से भरे होते हैं। इनको विद्याध्ययन में घरेलू परिस्थितियों एवं धन की कमी की बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

यदि ऐसे अंगूठे की लम्बाई सामान्य से बहुत अधिक हो अर्थात् तर्जनी अंगुली के दूसरे पोरूवे के बीच तक पहुंच जाये तो यह मूर्खता का सूचक है। सामान्य लम्बाई अर्थात् उंगलियों के अनुपात में उचित लम्बाई वाले व्यक्ति मेधावी तथा सभ्य व्यवहार वाले होते हैं। ऐसे लोग कर्त्तव्यनिष्ठ, सेवाभावी, भाग्यवादी, अस्थिरचित्त, धार्मिक प्रवृत्ति के और शक्की होते हैं, इनके मित्र अधिक, शत्रु नगन्य होते हैं।

2. समकोण–ये अंगूठे हथेली पर तर्जनी के साथ समकोण बनाते हैं और देखने में सुन्दर, सुदृढ़ तथा लम्बवत् होते हैं। रजोगुणी प्रकृति के ऐसे अंगूठे पीछे की ओर झुके हुये नहीं होते।

समकोणीय अंगूठे वाले व्यक्ति रूढ़िवादी, स्वेच्छाचारी परन्तु देशभक्त और दूसरों की सहायता करने वाले होते हैं। किसी का अहसान नहीं रखते इनकी इच्छाशक्ति भी प्रबल होती है। ऐसे व्यक्ति परिश्रमी और जिद्दी होते हैं। बदला लेने की भावना इनमें कभी समाप्त नहीं होती। इनका क्रोध भी शीघ्र शान्त हो जाता है। ये या तो अच्छे मित्र बनते हैं या अच्छे शत्रु। ये लोग किसी भी परिस्थिति में झुकते नहीं।

3. न्यूनकोण–इस प्रकार के अंगूठे हथेली पर तर्जनी उंगली के साथ नब्बे डिग्री से कम अर्थात् न्यूनकोण बनाते हैं। तमोगुणी स्वभाव वाले इन अंगूठों की लम्बाई कम परन्तु बीच में मोटाई अधिक होती है।

न्यूनकोण अंगूठे वाले व्यक्ति निराशावादी, अपव्ययी, आलसी तथा व्यसनी होते हैं। न तो इनकी रुचि कार्यों की पूर्णता पर होती है न यात्रा करने में ऐसे लोग कर्जदार ही बने रहते हैं। धर्म-कर्म में विश्वास न कर भूत-प्रेतों की उपासना करते रहते हैं। नीरस कार्य करना इन्हें पसंद रहता है।

इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति का अंगूठा काफी छोटा और स्थूलकाय हो तो वह काफी होगा तथा अनेक स्त्रियों से काम-सम्बंध बनायेगा, जो उसकी बदनामी का कारण बनेगा।

अंगूठे के आकार के अनुसार फल विचार–

1. सामान्य से अधिक लम्बा अंगूठा–अत्यधिक लम्बा अंगूठा मनुष्य के मानसिक विकास का प्रतीक है। ऐसे व्यक्ति पूरी तरह सोचने-समझने और परखने के बाद ही किसी पर विश्वास करते हैं। स्वभाव से जिद्दी और दुराग्राही भी हो सकते हैं।

यदि अंगूठे की लम्बाई तर्जनी उंगली के दूसरे पोर से अधिक हो तो यह सामान्य से अधिक लम्बा अंगूठा माना जाता है, ऐसे व्यक्ति में अधिक बुद्धि, अच्छी तर्कशक्ति और प्रबल इच्छाशक्ति होती है।

2. सामान्य लम्बाई और आकार का अंगूठा–ऐसे व्यक्ति बुद्धिमान दूरदर्शी, संयमी, आदर्शवादी और विवेकशील होते हैं। इनमें शासन करने की क्षमता होती है। यदि इसकी लम्बाई तर्जनी के तीसरे पोर तक पहुंचती हो तो यह सामान्य लम्बाई कही जाती है।

3. छोटा अंगूठा–जिस अंगूठे का अग्रभाग तर्जनी के सबसे निचले अर्थात् तीसरे पोर तक भी न पहुंचता हो तो वह छोटा अंगूठा माना जाता है। ऐसे अंगूठे वाले व्यक्ति में बुद्धि, इच्छाशक्ति और तर्कशीलता की कमी

रहती है। छोटा अंगूठा अस्थिर मस्तिष्क, असंयमी स्वभाव, निर्बलता तथा सामाजिक सूझबूझ की कमी का परिचायक होता है। ऐसे अंगूठे यदि मोटे और कुरूप हों तो व्यक्ति मूर्ख और क्रोधी होते हैं।

हाथ की अन्य अंगुलियों की लम्बाई के अनुपात में यदि अंगूठा बहुत छोटा होगा तो व्यक्ति की कामवासना तीव्र होगी।

4. अधिक नोंकदार अंगूठा–अधिक नोंक वाला अंगूठा तेज और अस्थिर स्वभाव का संकेत देता है।

5. पतला अंगूठा–ऐसे अंगूठे वाले व्यक्ति में स्फूर्ति की एवं जनन शक्ति की कमी होती है। व्यक्ति दुर्बल होता है।

6. वर्गाकार सिरे का मोटा अंगूठा–ऐसा व्यक्ति हठी और स्वेच्छाचारी होता है।

7. मध्य में पतला अंगूठा–ऐसा व्यक्ति दूरदर्शी तो होता है, परन्तु उसकी विचारशक्ति कमजोर हो जाती है।

8. दबा हुआ अंगूठा–कुरूप और मांस की थैली जैसे अंगूठे वाला व्यक्ति पशु की तरह व्यवहार करता है। इसका व्यवहार अशिष्ट तथा इनमें ममत्व और इच्छाशक्ति की कमी होती है।

9. मध्य भाग में मोटा अंगूठा–ऐसे अंगूठे वाला व्यक्ति बुद्धिहीन और अदूरदर्शी होता है।

10. लचकदार अंगूठा–जिस व्यक्ति का अंगूठा आसानी से आगे पीछे मुड़ जाये वह व्यक्ति प्रतिभावान, कार्यों को कुशलतापूर्वक करने वाला लेकिन लापरवाह स्वभाव का होता है। ऐसा व्यक्ति परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको ढाल लेता है अतः सफल रहता है।

11. ऊर्ध्व भाग में पतला अंगूठा–इस प्रकार के अंगूठे वाले व्यक्ति में काम के प्रति रुचि नहीं होती।

12. ऊर्ध्व भाग में मोटा अंगूठा–ऊर्ध्व भाग में अधिक मोटे अंगूठे क्रूरता, धूर्तता और ज़िद्दी एवं झगड़ालू स्वभाव के द्योतक होते हैं।

13. पुष्ट अंगूठा–ऐसे व्यक्ति अच्छे स्वास्थ्य वाले होते हैं लेकिन यदि अंगूठे के ऊपर हथेली की ओर मांस की गद्दी-सी बनी हो तो व्यक्ति अति कामी होते हैं।

14. कठोर अंगूठा–जिस व्यक्ति के अंगूठे में लचक न हो वह किसी का भरोसा नहीं करता, हमेशा धन कमाने और इकट्ठा करने की ओर लगा रहता है। व्यक्ति संयमी, स्थिरचित्त एवं बुद्धिमान होता है। अत्यधिक कठोर

अंगूठे वाला व्यक्ति कंजूस होता है।

15. गोल अंगूठा–अंगूठा यदि सिरे पर गोल हो तो वह व्यक्ति क्रोधी, हिंसक प्रवृत्ति वाला और सदैव लड़ने पर उतारू रहता है। यदि ऐसा अंगूठा मांस से भरा और छोटे गोल नाखून वाला हो तो व्यक्ति खूनी होता है।

यदि स्त्री का हाथ का अंगूठा पूरी तरह गोल हो तो वह विधवा होती है। जिस स्त्री के पांव का अंगूठा पूरी तरह गोल हो वह पतिव्रता होती है।

16. चौड़ा अंगूठा–चौड़े अंगूठे वाला व्यक्ति दृढ़ इच्छाशक्ति रखने वाला, हृष्टपुष्ट शरीर वाला और कष्टों को सहन करने की शक्ति रखने वाला होता है।

17. कोणिक सिरे वाला अंगूठा–ऐसा व्यक्ति सहनशील स्वभाव का, अनुभवी, दूसरों को प्रभावित करने वाला होगा।

18. फैला हुआ अंगूठा–अंगूठे का अग्रभाग अधिक चौड़ा हो तो व्यक्ति दु:खी और स्त्रीरहित होता है। ऐसा व्यक्ति मनमानी करने वाला तथा मौलिक विचारों वाला होता है।

19. यदि अंगूठा तर्जनी उंगली की ओर झुका हुआ हो तो व्यक्ति की भावुकता एवं व्यावहारिकता से सामंजस्य बना रहता है। ऐसा व्यक्ति आवश्यकतानुसार ही उदार और स्थायी होगा। वह स्थितप्रज्ञ और स्पष्टवादी होगा। उसकी इच्छाशक्ति और निर्णय क्षमता प्रबल होगी। वह मनमानी करेगा तथा कार्यों को योजनानुसार पूरा करेगा।

20. तर्जनी की ओर बहुत ज्यादा झुका हुआ अंगूठा व्यक्ति को नीचता की हद तक स्वार्थी बना देता है। वह क्रोधी, कायर और कंजूस होता है।

21. यदि अंगूठा खोलने पर तर्जनी से 45° अंश का कोण बनाये तो व्यक्ति उदार हृदय का, संतोषी स्वभाव का होगा। वह सुखी जीवन बितायेगा तथा एक पत्नी से संतुष्ट रहेगा।

अंगूठे के भाग

मनुष्य का अंगूठा तीन विभक्तियों में बंटा हुआ होता है–

1. पहला भाग अर्थात् नाखून वाला पोरूआ–यह भाग सत एवं इच्छाशक्ति का प्रतीक है। यदि अंगूठे का प्रथम पोरूआ
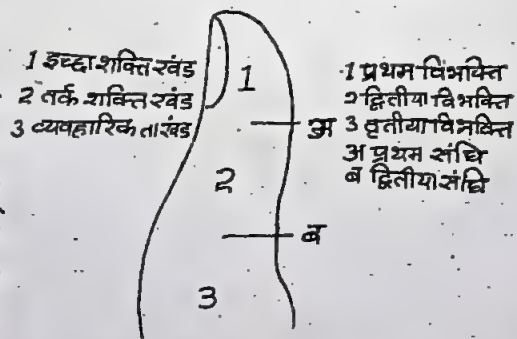
दूसरे से बड़ा हो तो व्यक्ति में तर्कशक्ति की तुलना में इच्छाशक्ति की प्रबलता अधिक होती है। वह धार्मिक विचारों वाला एवं निर्णय प्रतिभा से सम्पन्न होता है।

यदि प्रथम पोरूए की लम्बाई और मोटाई दूसरे पोरूए के बराबर हो तो वह व्यक्ति न तो किसी को धोखा देता है और न आसानी से धोखा खाता है। वह सम्मान प्राप्त करता है और समाज में स्थान बनाकर लोकप्रिय बन जाता है। ऐसा व्यक्ति कार्य में सफलता प्राप्त करता है।

यदि प्रथम पोरूआ दूसरे पोरूए से छोटा हो तो व्यक्ति तर्कशील होता है। ऐसा व्यक्ति कमजोर विचारों वाला तथा शंकालु प्रकृति का होता है। निर्बल शरीर एवं दुर्बल मानसिकता के कारण ऐसे व्यक्तियों का जीवन प्रायः असफलताओं से भरा रहता है।

प्रथम पोरूआ यदि मोटा और कड़ा हो तो व्यक्ति क्रोधी, स्वार्थी, दम्भी और धोखेबाज होगा तथा अपने आपको महान समझेगा।

यदि प्रथम पोरूआ सुन्दर, लम्बा, सुदृढ़ और सुडोल आकृति का हो तो वह व्यक्ति परिश्रमी, कर्त्तव्यनिष्ठ और मानवीय गुणों से युक्त होता है। ऐसे व्यक्ति सफल जीवन व्यतीत करते हैं और मानव सेवा के लिये तत्पर रहते हैं।

प्रथम पोरूए का नोंकदार होना तथा ऊपर की ओर पतला होते चले जाना व्यक्ति के स्वार्थी, धूर्त और चालाक होने का संकेत देता है। अपने छोटे-से स्वार्थ के लिये वह किसी का बड़ा अनिष्ट भी कर सकता है। वह अपना काम निकालने के लिये दूसरों को भय, क्रोध अथवा धमकाकर दवाव डालता है।

अंगूठे के पहले पोर पर चिन्ह—नाखून के पास यदि दो तारे चिंहित हो रहे हों तो व्यक्ति दूसरों में दोष ढूंढने वाला होगा। यदि नाखून के पास त्रिकोण में दोष ढूंढने वाला होगा। यदि नाखून के पास त्रिकोण का चिन्ह हो तो व्यक्ति की रुचि मनोविज्ञान के प्रति होगी।

नाखून के पास चक्र का चिन्ह व्यक्ति की प्रबल इच्छाशक्ति का प्रतीक होता है और इसके बल पर सफलता प्राप्त करता है। नाखून के पीछे यदि क्रॉस का चिन्ह हो और साथ ही कुछ अस्पष्ट रेखायें हों तो वह व्यक्ति वेश्यागामी हो सकता है। यदि नाखून के पीछे दो क्रॉस चिन्हित हों तो व्यक्ति अपव्ययी होता है।

नाखून की चौड़ाई के समानान्तर तीन रेखायें व्यक्ति को मानसिक संतापों

व कलेशों से दूर रखती हैं। नाखून की चौड़ाई के समानान्तर पोर पर अनेक रेखायें व्यक्ति को विश्वासपात्र, ईमानदार; पोर पर अनेक रेखायें व्यक्ति को विश्वासपात्र, ईमानदार और दृढ़निश्चयी बनाती हैं। उसका प्रेम सच्चा होता है।

प्रथम पोर पर खड़ी रेखायें धनवान होने का प्रतीक हैं। यदि खड़ी रेखायें पोर की पड़ी रेखाओं को काट रही हों तो व्यक्ति के व्यवसाय में बाधायें आयेंगी।

2. दूसरा भाग अर्थात् बीच वाला पोरूआ–यह हिस्सा तर्कशक्ति का सूचक स्थान माना जाता है। यदि बीच वाला दूसरा पोरूआ पहले पोरूआ से बड़ा और दृढ़ हो तो व्यक्ति में प्रबल तार्किक शक्ति होती है। उचित–अनुचित तर्क देकर भी अपनी बात को सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं।

अपनी बुद्धिमता और वाकपटुता से ये लोग सफल भी हो जाते हैं। लेकिन समाज इन्हें सम्मान नहीं देता।

यदि दूसरा पोरूआ पहले पोरूए की तुलना में कुछ सुकड़ा हुआ और कमजोर हो तो ऐसा व्यक्ति स्वयं कोई निर्णय नहीं ले पाता और दूसरों पर निर्भर रहता है। आलसी एवं भाग्यवादी होने के कारण इन्हें कार्यों में सफलता नहीं मिलती। ऐसे व्यक्ति निर्बल शंकालु हृदय, अस्थिर विचारधारा तथा झगड़ालू स्वभाव के होते हैं।

अंगूठे के दूसरे पोर पर चिन्ह–दूसरे पोर पर क्रॉस का एक चिन्ह व्यक्ति के कायर स्वभाव का प्रतीक होता है। दूसरे पोर पर यदि एक या दो तारे बन रहे हों तो वह व्यक्ति कुमार्गगामी होता है। ऐसा व्यक्ति सहृदय होता है और सबकी सहायता के लिये तैयार रहता है। इस पोर पर खड़ी रेखाओं वाला व्यक्ति बात–बात में तर्क करेगा तथा झूठे तर्क देने में जी नहीं हिचकेगा।

द्वितीय पोर पर तीन चौड़ी अर्थात् आड़ी रेखायें व्यक्ति को विचारपूर्ण तार्किक बनाती हैं।

3. तृतीय भाग अर्थात् अंगुष्ठ मूल–अंगूठे का यह हिस्सा प्रेम को दर्शाता है। यह शुक्र नक्षत्र का स्थान है। शुक्र को वीर्य भी कहते हैं। पुष्ट अंगुल मूल वाला व्यक्ति साहसी, नीतिज्ञ और बलशाली होता है। प्रबल वीर्यवान होने के कारण उसकी संतानें भी स्वस्थ एवं दीर्घायु होती हैं। ऐसे पोर वाले लोग कष्टों में भी धैर्य नहीं छोड़ते तथा समाज में सम्मान की दृष्टि से आदर पाते हैं।

यदि तृतीय पोरूआ अवनत, सिकुड़ा हुआ एवं श्यामल अथवा पीतवती हो तो व्यक्ति निराशावादी, भावना शून्य, कामुक एवं हृदयहीन होता है। ऐसे लोगों का जीवन कटुताभरा रहता है तथा समाज में भी सम्मान नहीं पाते।

यदि अंगुष्ठ मूल अति विकसित और उभरा हुआ हो तो वह व्यक्ति सौंदर्य के पीछे भटकने वाला और भोगी होता है। कामुकता के आवेश में आगा-पीछा नहीं देखता।

अंगूठे के तृतीय पोर पर चिन्ह—यदि अंगुष्ठ मूल के अंत में गहरी रेखायें हों तो व्यक्ति सौंदर्यप्रेमी और उदार हृदय होता है। उसकी रुचि विपरीत योनि एवं ललित कलाओं में अधिक रहती है।

इस पोर पर जाल का निशान निराशावादी प्रवृत्ति का परिचायक है। ऐसा व्यक्ति कामुक और भावनाशून्य होता है तथा इनका विवाहित जीवन कलहपूर्ण रहता है।

अंगूठे की संधियां अर्थात् जोड़—प्रथम और द्वितीय विभक्तियों अर्थात् पोरूओं की संधि के ऊपर अंगूठे के भाग को पीछे की ओर खड़ा करने पर यदि वह उस ओर झुक जाये तो ऐसा अंगूठे वाला व्यक्ति दूसरे की बात को सुनने और मानने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति परिस्थितियों में सामंजस्य बिठा लेता है।

उपरोक्त संधि अर्थात् जोड़ यदि दृढ़ हो और पीछे न झुके तो व्यक्ति हठी, स्वाभिमानी तथा स्पष्टवादी होता है। ऐसे लोग अपने मनमाने ढंग से बिना सोचे-विचारे ही कार्य करने की चेष्टा करते हैं, किसी की परवाह नहीं करते।

उंगलियां

अंगूठे के अतिरिक्त मनुष्य के हाथ में चार उंगलियां होती हैं। किसी-किसी के हाथ में पांच या छः भी पाई गयी हैं। पांचवीं उंगली चार में से ही किसी एक उंगली में मिली या जुड़ी हुई होती है अथवा हथेली के किसी भाग में उठी हुई होती है, परन्तु सामुद्रिक शास्त्र में इन अतिरिक्त उंगलियों को कोई महत्त्व नहीं दिया गया।

चारों उंगलियां हाथ पर आकृति और आकार में एक-दूसरे से भिन्न होती हैं तथा उनका फल भी भिन्न होता है। ज्योतिष शास्त्र में उंगलियों का नामकरण निम्न प्रकार से किया गया है—

1. प्रथम उंगली अर्थात् अंगूठे के पास वाली, बृहस्पति की या तर्जनी उंगली।

2. द्वितीय उंगली अर्थात् तर्जनी के साथ वाली, शनि की या मध्यमा उंगली।
3. तृतीय उंगली अर्थात् मध्यमा के साथ वाली, सूर्य की उंगली या अनामिका।
4. चतुर्थ उंगली अर्थात् सबसे अंत की, बुध की उंगली या कनिष्ठिका।

सभी उंगलियां एक विशेष अनुपात में लम्बाई लिये हुये होती हैं। मध्यमा सबसे बड़ी तर्जनी मध्यमा के प्रथम पोर अर्थात् आखिरी खंड तक पहुंचने वाली, अनामिका भी मध्यमा के आखिरी खंड के मध्य तक लम्बी एवं कनिष्ठिका उंगली अनामिका के प्रथम पोर के मूल अर्थात् आखिरी खंड के आधार तक पहुंचती हुई होती है।

उंगलियां मूल रूप से ग्रह क्षेत्रों के गुण-अवगुणों की पूरक होती हैं, और उनके प्रायः फल भी वैसे ही होते हैं जो उनके मूल पर स्थित ग्रहों के होते हैं। ऐसा माना जाता है कि यदि कोई ग्रह क्षेत्र अविकसित हो और उसके गुण या लक्षण प्रकट नहीं हो परन्तु उस ग्रह की ऊपर वाली उंगली सुन्दर, सुडौल एवं लम्बी हो तो ग्रह के गुण या लक्षण उस व्यक्ति में विद्यमान हैं तथा उस व्यक्ति के प्रयास अथवा अनुकूल अवसर आने पर वे अपना प्रभाव दिखला सकते हैं। इसके विपरीत यदि ग्रह क्षेत्र सुविकसित भी हो परन्तु उस ग्रह की उंगली छोटी और धंसी हुई हो तो ग्रह के गुण व लक्षण अपना पूर्ण अथवा पूर्णकालिक प्रभाव प्रकट नहीं हो सकेंगे।
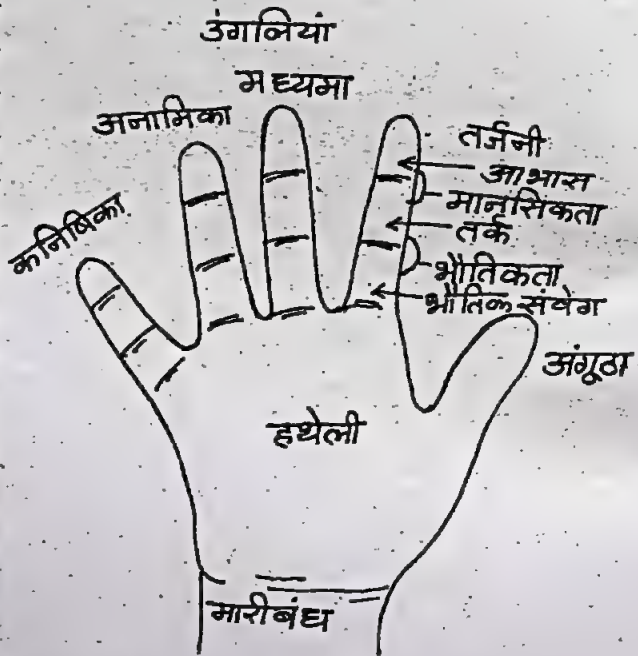
उंगलियों में राशियों की स्थिति—एक उंगली में तीन पर्व या पोर होते हैं तथा प्रत्येक गर्व में एक राशि का स्थान माना गया है, जो निम्न प्रकार से है—

उंगली	पर्व	राशि	वर्ष का मास	ऋतु
तर्जनी	प्रथम	मेष	मार्च	बसंत
	द्वितीय	वृष	अप्रैल	
	तृतीय	मिथुन	मई	
मध्यमा	प्रथम	मकर	दिसम्बर	शीत
	द्वितीय	कुम्भ	जनवरी	
	तृतीय	मीन	फरवरी	
अनामिका	प्रथम	कर्क	जून	ग्रीष्म
	द्वितीय	सिंह	जुलाई	
	तृतीय	कन्या	अगस्त	
उंगली	पर्व	राशि	वर्ष का मास	ऋतु
कनिष्ठिका	प्रथम	तुला	सितम्बर	हेमन्त
	द्वितीय	वृश्चिक	अक्टूबर	
	तृतीय	धनु	नवम्बर	

उंगलियों का समग्र प्रभाव—सुन्दर, सीधी, सुदृढ़ एवं चिकनी उंगलियां ग्रह पर्वतों के गुणों को बढ़ाती हैं अथवा प्रकट होने का अवसर प्रदान करती हैं जबकि भद्दी, टेढ़ी, दुबली और खुरदरी उंगलियां सम्बंधित ग्रह पर्वतों के गुणों का ह्रास करती हैं या कम कर देती हैं।

हाथ की सभी चारों उंगलियां यदि सीधी होंगी तो व्यक्ति व्यवहारकुशल, स्पष्ट वक्ता, निष्कपट, साहसी, स्फूर्तिवान तथा

उंगलियों के प्रकार

नुकीली उंगली

कोणिक उंगली

वर्गाकार उंगली

आत्मविश्वास से भरा हुआ होगा।

यदि सभी उंगलियों के अग्रभाग मध्यमा उंगली की ओर झुके होंगे तो ऐसा व्यक्ति बहुत सोच-समझकर काम करेगा। वह सतर्क और शंकालु रहेगा। दूसरों पर कम भरोसा करने वाला, सब काम धीमी गति से करेगा।

हाथ की सभी उंगलियों के जोड़ों का बराबर या एक-जैसा होना, उनका टेढ़ा-मेढ़ा या ऊंचा-नीचा न होना व्यक्ति को भावुक बना देगा।

यदि उंगलियां भीतर की ओर झुकी हुई हों तो व्यक्ति पूरी तरह दुनियादारी में निपुण होगा। हर काम को खूब सोच-समझकर प्रारम्भ करेगा और भीरू होगा।

यदि सभी उंगलियां बाहर की ओर झुक रही हों तो व्यक्ति मौलिक एवं उन्नत विचारों वाला होता है, परन्तु आर्थिक रूप से झुकाव के अनुपात में तंगी झेलता है।

सभी चारों उंगलियों का भद्दा, टेढ़ा-मेढ़ा एवं इधर-उधर मुड़ा होना व्यक्ति को अपराधी बना देता है।

चारों उंगलियों का मोटा होना निर्धनता का प्रतीक होता है।

सभी उंगलियां गठीली हों तो व्यक्ति विवेकी, अध्ययनप्रिय और विचारवान होता है।

चपटी उंगलियों वाला व्यक्ति सेवा-कार्य में रुचि रखेगा। जिस व्यक्ति के सभी उंगलियों के अग्रभाग नुकीले हों तो वह कुशाग्र बुद्धि वाला होता है।

चिकनी गांठों वाले उंगलियों वाले व्यक्ति आस्तिक और संवेदनशील होते हैं।

यदि सभी उंगलियों की गांठें सुविकसित हों तो व्यक्ति चिंतित रहता है। वह मेधावी होता है। यदि सभी उंगलियों की गांठें अत्यधिक उभरी हुई हों तो व्यक्ति जीवन के प्रति उदासीन होकर रहता है।

गांठोंरहित उंगलियां व्यक्ति के दार्शनिक तथा धार्मिक होने की परिचायक है।

यदि उंगलियां आपस में सटी हुई हों तो वह व्यक्ति दूसरों की सलाह पर काम करेगा, लोक-लाज का ध्यान रखेगा। उससे साहस की कमी होगी और अंधविश्वासी तथा लकीर का फकीर बना रहता है।

यदि हाथ पर अंगूठे तथा तर्जनी उंगली के बीच दूरी अधिक हो तो व्यक्ति स्नेहिल, क्षमाशील, दयालु और श्रद्धावान होगा वह मानवीय गुणों से भरा रहेगा।

तर्जनी और मध्यमा के बीच की खाली जगह व्यक्ति की विचार स्वतंत्रता की द्योतक होती हैं।

मध्यमा और अनामिका के मध्य खाली स्थान की कमी व्यक्ति की उत्तरदायित्वहीनता, उपेक्षापूर्ण व्यवहार एवं कार्य में लापरवाही की सूचक है, यदि खाली जगह अधिक हो तो व्यक्ति साहसी तथा भौतिक विचारों वाला होगा।

अनामिका तथा कनिष्ठिका उंगलियों के बीच की खाली जगह व्यक्ति को निर्मम और अनियंत्रित बनाती हैं। वह मर्यादाहीन कार्य करेगा और बदनाम होगा।

यदि सभी उंगलियों के अग्रभाग हथेली की ओर मुड़कर हथेली को कुरूप बना रहे हों तो व्यक्ति लोभी, नीच स्वार्थी एवं ईर्ष्यालु होता है।

यदि सभी उंगलियों के अग्रभाग पीछे की ओर मुड़ रहे हों तो व्यक्ति गधे हांकने वाला होगा। वह कोई बात या भेद गुप्त नहीं रख सकेगा।

उंगलियों के अग्रभाग का अधिक नोकीला होना व्यक्ति को कल्पना के संसार में रखता है। उनका वास्तविक जीवन असफल रहता है।

जिन व्यक्तियों के हाथ में उंगलियों के अग्रभाग कोणीक होते हैं वे साहित्य, संगीत और चित्रकला, मूर्ति-निर्माण तथा फोटोग्राफी में रुचि रखते हैं। अधिक नुकीलापन व्यक्ति को काल्पनिक और अव्यावहारिक बना देता है। ऐसे व्यक्ति कठिनता से ही सफल हो पाते हैं।

यदि सभी उंगलियों के अग्रभाग चौड़े और फैले हुए हों तो वह व्यक्ति व्यवहारकुशल, मेधावी, भौतिकतापूर्ण एवं प्रतिभावान होता है, वह समय का पाबंद और तर्कशील होगा तथा प्रत्येक कार्य सुरुचिपूर्ण ढंग से योजना बनाकर करेगा। ऐसे व्यक्ति को भविष्य में आने वाली घटनाओं का पूर्वाभास हो जाता है। यदि सभी चारों उंगलियों में एक रेखा पहले जोड़ से उंगली के मूल तक चली गयी हो तो व्यक्ति मेधावी और चरित्रवान होगा।

यदि सभी उंगलियों के नाखून वाले अर्थात् पहले जोड़ पर अनेक आड़ी अर्थात् चौड़ाई पड़ी हुई टेढ़ी-मेढ़ी रेखायें हों—उस व्यक्ति की मृत्यु पानी में डूबने या बाढ़ में वह जाने से होगी।

जिस व्यक्ति की उंगलियां टेढ़ी और परस्पर मिलाने पर झिरी हो वह धनी नहीं होता।

लम्बी, मोटी और गठीली उंगलियों वाले व्यक्ति अपने परिश्रम से धनी और सम्पन्न बनते हैं।

उंगलियों के पोरूए—इसका विस्तृत विवेचन आगे के पृष्ठों पर दिया गया है। यहां मुख्यतः प्रभाव डालने वाले मध्यमा अर्थात् शनि की उंगली के पोरूओं का उल्लेख किया जा रहा है।

प्रथम पोर यदि लम्बा है तो व्यक्ति शीघ्र मृत्यु की इच्छा करने लगता है।

यदि दूसरा पोर लम्बा है तो व्यक्ति की रुचि गुप्त विद्याओं में होती है।

यदि तीसरा पोर लम्बा है तो वह व्यक्ति समाज में लोकप्रियता प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति मितव्ययी होते हैं।

हथेली और उंगलियों के अनुपातिक फल—हथेली के अनुपात में बहुत लम्बी उंगलियों वाला व्यक्ति दूसरों को नीचा दिखाने वाला उनका हक छीनने वाला, पर छिद्रान्वेषी और दूसरे के हर काम में रोड़े अटकाने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति दूसरे व्यक्तियों की महनत का फल स्वयं के नाम करने में निपुण होते हैं।

जिस व्यक्ति के हाथ में उंगलियों की लम्बाई और हथेली की लम्बाई सम हो तो वह व्यक्ति चरित्रवान, दूसरों का आदर करने वाला तथा ईमानदार होता है। वह अपने कार्य समझदारी तथा कुशलता से निष्पादित करता है।

हथेली के अनुपात में छोटी उंगलियों वाले व्यक्ति चुस्त-दुरूस्त होते हैं। चौकन्ने रहने वाले इन व्यक्तियों को धोखा देना सहन नहीं होता। इनमें व्यक्तियों को पहचानने की क्षमता होती है और वे समस्या का समाधान शीघ्र ही ढूंढ लेते हैं। इन लोगों में कामुकता बहुत होती है तथा वे संतान भी अधिक पैदा करते हैं। ऐसे व्यक्ति अपनी पत्नी को मारने-पीटने से भी बाज नहीं आते।

हथेली के अनुपात में बहुत छोटी उंगलियां व्यक्ति को दुर्बल शरीर, सुस्त, स्वार्थी, अकुशल एवं कठोर हृदय बना देती है। यदि उंगलियों के ग्रह पर्वत अथवा हस्तरेखायें भी अशुभ हों, तो ऐसा व्यक्ति हत्यारा बन जाता है।

बहुत छोटी उंगलियां यदि मोटी, कुरूप और टेढ़ी-मेढ़ी भी हों तो वह व्यक्ति कामी और निर्दयी होता है तथा उसमें बदले की भावना बड़ी प्रबल हो[illegible]

[illegible]हुत छोटी उंगलियां अपने मूल में मोटी परन्तु आगे पतली होती [illegible]हों, तो व्यक्ति कामुकता की पराकाष्ठा वाला होता है। किसी

भी स्तर की स्त्री से काम सम्बंध बना लेने में चतुर और संगीत-प्रेमी होता है। व्यवहार में नम्र, परन्तु खाता बहुत है।

अलग-अलग उंगलियों के फल

1. बृहस्पति की उंगली अर्थात् तर्जनी—हथेली के अनुपात में सीधी तर्जनी उंगली यदि लम्बी हो तो व्यक्ति बुद्धिमान, कर्त्तव्यनिष्ठ, आत्म-सम्मान वाला, आदर्शप्रेमी और महत्वाकांक्षी होता है। वह अपने उत्तरदायित्वों के प्रति जागरुक रहता है। ऐसे व्यक्ति में शासन करने की प्रतिभा होती है तथा वह सम्मान और यश प्राप्त करता है।

तर्जनी उंगली यदि हाथ के अनुपात में छोटी हो तो व्यक्ति का जीवन निरुद्देश्य एवं उत्तरदायित्वहीन होता है। यह व्यक्ति कायर और दूसरों के अधीन निम्न स्तर के लोगों के साथ काम करने वाला होता है।

अधिक लम्बी तर्जनी उंगली वाला व्यक्ति हठी, प्रदर्शनप्रिय और दूसरों को नीचा दिखाने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति संकुचित मनोवृत्ति के होते हैं परन्तु दान देते रहते हैं।

टेढ़ी-मेढ़ी तर्जनी उंगली वाले व्यक्ति कपटी और पाखंडी होते हैं तथा उधार या कर्ज लेकर वापस नहीं करते।

यदि तर्जनी उंगली अनामिका से लम्बाई में बड़ी हो तो व्यक्ति महत्वपूर्ण पदों पर कार्य करने वाले, प्रसन्नचित्त रहने वाले, वैभवशाली परन्तु अभिमानी होते हैं। इनमें शासन करने की प्रवृत्ति बड़ी प्रबल होती है। अपने अधीनस्थों को कड़े नियंत्रण में रखते हैं तथा चाटुकारी को पसंद करते हैं। अपनी निन्दा की परवाह किये बिना अपने धीरज और साहस के फलस्वरूप यह अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं।

यदि तर्जनी उंगली अनामिका से छोटी हो तो वह व्यक्ति चालाक, स्वार्थी और येन-केन-प्रकारेण अपना काम निकलवा लेने वाला होता है। दूसरों से काम करवाकर उसका श्रेय स्वयं लेने में चतुर होते हैं।

यदि तर्जनी उंगली बहुत लम्बी हो और अन्य तीनों उंगलियां तर्जनी की ओर झुकी हुई हों तो व्यक्ति कुशल शासक, निपुण, संगठनकर्ता और सत्तालोलुप होगा। वह नेता बनेगा तथा महत्वाकांक्षी होगा, सत्ता प्राप्त करने के लिये वह कुछ भी करने को तत्पर रहेगा।

यदि तर्जनी उंगली मध्यमा अर्थात् शनि की उंगली की ओर झुकी हुई हो तो व्यक्ति सदैव सतर्क एवं चौकन्ना रहता है। वह अपनी हीन भावना को छिपा लेता है परन्तु किसी को प्रभावित नहीं कर सकता। ऐसा व्यक्ति

शर्मीला और स्पष्ट कहने वाला होता है।

2. शनि की उंगली अर्थात् मध्यमा—यदि मध्यमा उंगली अपने मूल स्थान से अधिक उभरी हुई होगी तो व्यक्ति क्रोधी, क्रूर और चिड़चिड़े स्वभाव का होगा, उस व्यक्ति पर काम करने का जनून सवार रहता है।

यह उंगली तर्जनी उंगली से लम्बी होती है और अनामिका से भी बड़ी ही होती है। इसका 2 से 3 सूत तक बड़ा होना शुभ माना गया है जो कि व्यक्ति को सद्बुद्धि देती है। ऐसा व्यक्ति मितव्ययी होता है, शुभ कार्य करता है, उन्नति प्राप्त करता है तथा समाज में पद और सम्मान का अधिकारी बनता है।

मध्यमा उंगली यदि तर्जनी से आधा इंच से भी ज्यादा बड़ी हो तो व्यक्ति षड्यंत्रकारी और हत्यारा बन जाता है।

यदि हाथ के अनुपात में मध्यमा सामान्य लम्बी तथा सीधी हो तो व्यक्ति गम्भीर स्वभाव का, एकान्तप्रिय, धार्मिक आचार-विचार वाला, दूरदर्शी तथा विचारवान होता है। धन सम्बंधी कार्यों में निपुणता प्राप्त कर लेता है।

शनि की अत्यधिक लम्बी उंगली व्यक्ति को स्वार्थी, कंजूस और एकान्तप्रिय बना देती है। ऐसा व्यक्ति लगभग मित्रहीन ही रहता है।

छोटी मध्यमा उंगली वाला व्यक्ति बकवादी, भीरू स्वभाव का अंधविश्वासी होता है। इस पर कोई विश्वास नहीं करता। व्यक्ति प्रासाद से ग्रस्त रहता है।

यदि मध्यमा उंगली टेढ़ी-मेढ़ी भद्दी हो तो यह व्यक्ति में भय उन्माद भर देती है। ऐसा व्यक्ति मिर्गी रोग से पीड़ित रहता है।

यदि मध्यमा उंगली तर्जनी उंगली की ओर झुकी हुई हो तो व्यक्ति, अपनी महत्वाकांक्षाओं एवं आदर्शों की पूर्ति में लगा रहता है और इसके लिये धन भी व्यय करता है। वह अंधविश्वासी एवं पराशक्तियों में विश्वास करने वाला होता है।

शनि उंगली यदि सूर्य की उंगली अर्थात् अनामिका की ओर झुक रही हो तो वह उदासी और चिन्ताओं से घिरा रहता है और अपना धन अपनी कीर्ति एवं ज्ञानवर्धन के लिये व्यय करता है।

यदि शनि और सूर्य की उंगलियों की लम्बाई बराबर हो और दोनों उंगलियां लम्बी हों तो व्यक्ति अपने परिश्रम की कमाई को जुए, सट्टे अथवा लॉटरी आदि में गंवा देता है।

3. सूर्य की उंगली अर्थात् अनामिका—यह उंगली मध्यमा से छोटी

एवं कनिष्ठिका से लम्बी होती है। इस उंगली का तर्जनी से बड़ा होना शुभ होता है और व्यक्ति में प्रेम एवं दया की सूचक होती है। यदि अनामिका उंगली मध्यमा के बराबर लम्बी हो तो व्यक्ति स्वार्थी, दुष्ट प्रवृत्ति एवं भाग्यवादी होता है। इनका स्वभाव निर्दयी तथा व्यवहार असभ्य होता है। ऐसे लोग अपना धन बुरे व्यसनों तथा जुए आदि में नष्ट करते हैं।

यदि अनामिका उंगली सीधी और लम्बी हो तो वह व्यक्ति प्रसन्न चित्त वाला, मुख पर ओज लिये हुये वाला, साहित्य एवं सौंदर्य का प्रेमी होता है, वह समाज में लोकप्रिय बनता है।

यदि अनामिका उंगली सामान्य से बहुत अधिक लम्बी हो तो व्यक्ति साहसी और तेजस्वी होगा। धन कमाने के लिये वह उचित-अनुचित का ध्यान नहीं रखता तथा जुआ, सट्टा, लॉटरी आदि का शौकीन होता है वह विलासी भी हो जाता है।

यदि अनामिका या सूर्य की उंगली अपेक्षाकृत छोटी हो तो व्यक्ति कंजूस, साहसहीन और बहुत ज्यादा सोच-विचार कर कार्य प्रारम्भ करने वाला होगा। ऐसा व्यक्ति दूसरे को बदनाम कर भी स्वयं का सम्मान बढ़ाने की चेष्टा करेगा। ऐसे व्यक्ति के आसपास चाटुकार लोग चिपके रहते हैं।

टेढ़ी-मेढ़ी अनामिका वाले व्यक्ति कुव्यसनी, स्वार्थी तथा धनलोलुप होते हैं। वे अपने पद, यश, साहित्य-प्रेम एवं कला संगीत को भी धन-प्राप्ति का साधन बना लेते हैं।

यदि अनामिका उंगली मध्यमा की ओर झुकी हुई हो तो व्यक्ति आत्म-प्रशंसक और अपनी शेखी बघारने वाला होगा, परन्तु ऐसा व्यक्ति आत्म केन्द्रित एवं चिंतनशील भी होता है तथा अपनी प्रतिभा और प्रतिष्ठा का उपयोग धन कमाने में करता है।

यदि अनामिका का झुकाव कनिष्ठिका अर्थात् बुध की उंगली की ओर हो तो व्यापार से लाभ प्राप्त करता है, सार्वजनिक धन का उपयोग भी व्यक्तिगत लाभ के लिये करेगा तथा प्रत्येक कार्य में लाभ कमाने की लालसा रखेगा।

4. बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका—मनुष्य के हाथ में यह सबसे छोटी उंगली होती है। यदि यह उंगली सूर्य की उंगली अनामिका के नाखून की जड़ तक पहुंच रही हो तो अत्यन्त शुभ होती है और व्यक्ति को श्रेष्ठ साहित्यकार, कुशल-प्रशासक एवं सफल आविष्कारकर्त्ता बना देती हैं, ऐसा व्यक्ति वाचाल भी होता है।

यदि कनिष्ठिका उंगली अनामिका के ऊपर के अर्थात् प्रथम पोरूए के अर्द्ध-भाग तक भी पहुंचे तो वह व्यक्ति, उच्च प्रशासनिक अधिकारी बनता है। निम्न स्तर या पद पर होते हुये भी वह धनी बन जाता है।

लम्बी कनिष्ठिका उंगली वाले व्यक्ति निश्चित रूप से धनी होते हैं चाहे उन्हें आकस्मिक रूप से ही क्यों न धन मिले।

जिस व्यक्ति की कनिष्ठिका उंगली अनामिका के प्रथम पोर की जड़ तक पहुंच रही हो वह शांत स्वभाव का समझदार व्यक्ति होगा, न वह ज्यादा उन्नति करेगा न नीचे रहेगा।

अत्यधिक लम्बी कनिष्ठिका व्यक्ति को अविश्वसनीय बनाती है। उसका व्यवहार संदेहपूर्ण होता है। व्यक्ति दूसरों को मूर्ख बनाने वाला और अपराधी मनोवृत्ति का होता है। वह अपने जीवन में सफल और धनी बनता है।

बहुत छोटी कनिष्ठिका उंगली वाला व्यक्ति धनहीन, विवेकशून्य, विद्या विहीन एवं बार-बार व्यवसाय बदलने वाला होता है। वह परनिन्दक तथा उपद्रवी प्रवृत्ति वाला होता है।

उंगलियों की रेखायें

उंगलियों पर बनी रेखाओं के फल जानने के लिये उन पर बनी केवल खड़ी रेखाओं अर्थात् लम्बाई में रुख की रेखाओं का ही अध्ययन किया जाता है। इन रेखाओं की गणना करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना आवश्यक है–

1. दो आधी रेखाओं को मिलाकर एक माना जाये।
2. अंगूठे पर बनी रेखाओं की उंगलियों पर बनी रेखाओं की संख्या में न जोड़ा जाये।
3. प्रत्येक पोर अर्थात् विभक्ति की रेखाओं को अलग-अलग गिनकर जोड़ा जाना चाहिये।
4. गणना करते समय छोटी-बड़ी, कटी-फटी, टूटी-फूटी एवं पूरी विकसित सभी रेखाओं को गिना जाना चाहिये।

उंगलियों पर बनी रेखाओं की संख्या के अनुसार उनके पृथक्-पृथक् फल निम्न प्रकार से भाषित माने जाते हैं–

1. उंगलियों पर बनी कुल रेखाओं की संख्या यदि तेरह है तो व्यक्ति निष्कपट, धार्मिक और न्यायप्रिय होगा। उसका प्रेम सच्चा और समर्पित भावना से भरा हुआ होगा।

2. उंगलियों पर बनी सभी रेखाओं की संख्या यदि चौदह है तो व्यक्ति प्रदर्शनप्रिय होगा। उसके अंदर बदला लेने की भावना बड़ी प्रबल और उग्ररूप में होती है। ऐसे व्यक्ति अपने को रहस्य के आवरण में ढके रखते हैं। इन लोगों को अन्य लोगों से सहानुभूति नहीं मिल पाती तथा इनकी संतान भी इन्हें कष्ट ही देती हैं।
3. उंगलियों पर बनी समस्त रेखाओं की संख्या यदि पन्द्रह है तो वह व्यक्ति साहसी एवं भयमुक्त होता है। ऐसा व्यक्ति धन सम्बंधी कार्यों में जोखिम उठाने से नहीं घबराता। इसकी रुचि जहाजों पर कार्य करने में होती है। संघर्ष अथवा युद्ध के लिये तैयार रहता है। ऐसा व्यक्ति सम्भोग में रुचि रखता है तथा विदेशी स्त्रियों से काम सम्बंध बनाता है और विदेशी स्त्री से ही विवाह करता है। ऐसा व्यक्ति प्राय: डाकू और विश्वासघाती होता है।
यदि इस प्रकार की पन्द्रह रेखायें स्त्री के हाथ पर हों तो वह पर पुरुषों से काम-सम्वंध वनाती है और अंतर्जातीय विवाह करती है।
4. उंगलियों पर बनी रेखाओं का योग यदि सोलह हो तो व्यक्ति दृढ़-निश्चयी, व्यभिचारी और बलात्कारी होगा। काम-तृप्ति के लिये खूब धन व्यय करेगा। ऐसा व्यक्ति अवैध ब्योपार करेगा, चोरी-डकैती में सहभागी बनेगा एवं विदेशों में जाकर भी अय्याशी करेगा। ऐसा व्यक्ति विपनवकारी षड्यंत्रों का प्रणेता बनता है।
5. कुल रेखाओं का भोग यदि सत्रह है तो व्यक्ति प्रेम का प्रदर्शन करने वाला तथा अनेक स्त्रियों सें प्रेम सम्बंध रखने वाला होगा। ऐसा व्यक्ति किसी भी रहस्य को दिल में नहीं रख पाता।
6. यदि कुल रेखाओं का जोड़ अट्ठारह बनता है तो ऐसा व्यक्ति पूर्ण रूप से आस्तिक, भाग्यवादी एवं धर्मशास्त्रों के अनुसार व्यवहार करने वाला होगा। अपने संकल्पों तथा नियमों पर अडिग रहता है और अनुशासनप्रिय होता है। एक पत्नी से संतुष्ट रहता है। धन का प्रबंध अपने एकाधिकार में रखता है, पत्नी या पुत्र पर नहीं छोड़ता, ऐसे व्यक्ति की संतान पुष्ट परन्तु कम बुद्धिमान होती है।
7. उंगलियों पर बनी समस्त रेखाओं का योग यदि उन्नीस हो तो व्यक्ति सरल स्वभाव, मृदुभाषी तथा वैरागी प्रकृति का होगा। ऐसा व्यक्ति अपनी विद्वता एवं अध्यात्म श्रेष्ठता के कारण ख्याति अर्जित करता है और धनवान बनता है।

8. उंगलियों पर बनी कुल रेखाओं की संख्या यदि बीस हो तो वह व्यक्ति महत्वाकांक्षी होगा, बड़ी-बड़ी योजनायें बनायेगा परन्तु उसकी सफलता संदिग्ध रहेगी। ऐसा व्यक्ति शंकालु और चौकन्ना रहता है न मित्र पर विश्वास करता है और न शत्रु पर भरोसा। ऐसा व्यक्ति न तो स्त्रियों पर विश्वास करेगा न परलोक पर, उसके लिये सांसारिक सुख ही अभीष्ट रहता है वह धनी और क्रूर होता है।
9. समस्त रेखाओं की संख्या का जोड़ यदि इक्कीस होता है तो व्यक्ति अत्यन्त धनवान बनता है। वह अपनी लगन और मेहनत के बल पर जीवन में भारी प्रगति करेगा। ऐसा व्यक्ति अपनी निद्रा पर नियंत्रण रखता है और हमेशा अपनी उन्नति के प्रति सचेष्ट रहकर काम में जुटा रहता है। इसे छोटे-बड़े किसी भी स्तर के काम से परहेज नहीं होता। ऐसे व्यक्ति विचारवान होते हैं।
10. रेखाओं का योग यदि 22, 23 अथवा 24 आता है तो व्यक्ति अपने आदर्शों के प्रति समर्पित रहता है। अन्य फल हाथ पर शेष रेखाओं और चिन्हों के अनुसार होंगे।
11. यदि समस्त रेखाओं की संख्या 24 से अधिक है तो व्यक्ति को अदृश्यमय, कारण-अकारण चिन्तायें व क्रोध तथा मन के संताप घेरे रहते हैं। शेष फल हाथ के पर्वत, रेखायें और चिन्हों के अनुसार होंगे।

उंगलियों के पोर

मनुष्य की प्रत्येक उंगली में तीन पोर होते हैं, जो एक-एक रेखा मोड़ से विभाजित रहते हैं। उंगली के सबसे ऊपर वाला अर्थात् अग्रभाग वाला पोर प्रथम पोर मानसिक जगत का प्रतिनिधित्व करता है। दूसरा अर्थात् बीच वाला पोर मध्यम पोर होता है जो व्यावहारिक जगत का प्रतिनिधि कहलाता है। तीसरा और सबसे नीचे वाला पोर भौतिक विश्व को दर्शाता है। सामान्यतः उंगली के तीनों पोरों की लम्बाई एक समान नहीं होती। उंगलियों के अनुसार तीनों पोरों की विकसित स्थिति के फल निम्न प्रकार से हैं-

1. तर्जनी का प्रथम पोर-तर्जनी का प्रथम अर्थात् नाखून वाला पोर अधिक लम्बा हो तो व्यक्ति उद्यमी, क्रियाशील, चुस्त, धार्मिक एवं बड़ा व्यवसायी होता है। वह सामाजिक कार्यों में अत्यधिक रुचि लेता है। रहस्यात्मक विषयों को पसंद करता है। कलात्मक हाथ में तर्जनी के प्रथम पोर का लम्बा होना व्यक्ति को रहस्यवादी कवि, ज्योतिषी अथवा जादूगर बना देता है।

2. तर्जनी का द्वितीय पोर–तर्जनी के द्वितीय पोर का लम्बा होना व्यक्ति को महत्वाकांक्षी तो बनाता है परन्तु साहस न होने के कारण सफलता कठिनता से ही मिल पाती है। व्यावसायिक कर्मठ हाथ वाले व्यक्ति उद्देश्य-प्राप्ति में आसानी से सफल हो जाते हैं।

3. तर्जनी का तृतीय पोर–तर्जनी के तृतीय पोर का लम्बा होना व्यक्ति को व्यवहारकुशल और अच्छा संगठनकर्त्ता वनाता है। ऐसे व्यक्ति वाचाल और अपनी शेखी बघारने वाले होते हैं। कलात्मक हाथ में यह स्थिति व्यक्ति को ज्योतिष व अध्यात्म विषयों तथा स्त्रियों में स्नेह रखने वाला बनाती है।

4. मध्यमा का प्रथम पोर–मध्यमा उंगली का प्रथम पोर अधिक लम्बा हो तो व्यक्ति निराशावादी, स्वार्थी, चतुर तथा नीच स्वभाव का होगा। सदैव अपने और दूसरों के दु:खों का बखान करता रहेगा, चालाकी से अपने कार्य सिद्ध करेगा।

5. मध्यमा का द्वितीय पोर–मध्यमा के बीच वाले पोर का अधिक विकसित होना वर्गाकार हाथ वाले व्यक्ति को विज्ञान अथवा मंत्रों में रुचि रखने वाला, चमचाकार हाथ में व्यवहारकुशल एवं अस्थिरचित्त, आदर्श हाथ वाले व्यक्ति को व्यभिचारी और छोटी-बड़ी आयु की स्त्रियों को पटाने में निपुण तथा कलात्मक हाथ में पराई स्त्रियों से सम्भोग करने वाला बना देता है। कलात्मक हाथ में मध्यमा उंगली का द्वितीय पोर यदि स्त्री के हाथ में अधिक विकसित हो वह व्यभिचारिणी होगी और किसी भी पुरुष से सम्भोग के लिये तैयार रहती है।

6. मध्यमा उंगली का तृतीय पोर–यदि यह पोर अधिक लम्बा है तो व्यक्ति व्यभिचारी, अति कामी, परनारी से काम-सम्बंध रखने वाला और भ्रष्टाचारी होता है।

7. अनामिका का प्रथम पोर–अनामिका उंगली के प्रथम पोर का पर्याप्त विकसित होना व्यक्ति में सत्यता, न्यायप्रियता, सौंदर्य के प्रति रुचि एवं हस्तकला में मनोयोग का परिचायक होता है।

8. अनामिका का द्वितीय पोर–इस पोर के विकसित वाले हाथ का व्यक्ति दस्तकारी एवं हस्त कलाओं में सफलता प्राप्त करता है।

9. अनामिका का तृतीय पोर–अनामिका के तृतीय पोर का विकसित होना व्यक्ति की जीविका का आधार ललित कलाएं, संगीत, चित्रकारी अथवा काव्य को होने का संकेत देता है। वह इन विद्याओं में नवीन कृतियां भी आविष्कृत कर सकता है।

10. कनिष्ठिका उंगली का प्रथम पोर–जिस व्यक्ति के हाथ की कनिष्ठिका का अर्थात् बुध की उंगली का प्रथम पोर विकसित अवस्था में होता है वह विज्ञान एवं यंत्रों के क्षेत्रों में न केवल रुचि लेता है वरन् अपने तकनीकी ज्ञान से नये यंत्रों का आविष्कार भी करता है।

11. कनिष्ठिका का द्वितीय पोर–इस पोर के विकसित होने वाले हाथ का व्यक्ति भाषा और साहित्यक विषयों में रुचि लेता है। कलात्मक हाथ वाला व्यक्ति कविता में तथा दार्शनिक हाथ वाला व्यक्ति समाजशास्त्र में रुचि रखता है।

12. कनिष्ठिका का तृतीय पोर–जिस व्यक्ति के हाथ की कनिष्ठिका उंगली का तृतीय पोर पूर्ण विकसित हो तो व्यक्ति बेईमान और चालाक होने के साथ कला एवं साहित्य में रुचि लेने वाला होता है। यह स्थिति यदि मिश्रित हाथ में हो तो वह व्यक्ति महान व्यापारी या वैज्ञानिक बनेगा।

उंगलियों के जोड़ों की स्थिति का फल

उंगलियों को आपस में मिलाने वाली संधियों को जोड़ कहते हैं। प्रथम पोर को दूसरे अर्थात् मध्य पोर से जोड़ने वाले जोड़ को प्रथम जोड़, दूसरे पोर से तीसरे पोर से जोड़ने वाले जोड़ को द्वितीय जोड़ तथा तीसरे पोर को पर्वत से जोड़ने वाले जोड़ को तृतीय जोड़ कहते हैं, इसे अंगति–मूल का जोड़ भी कहा जाता है। इन तीनों जोड़ों की स्थिति का फल निम्न प्रकार से है–

1. तर्जनी उंगली का प्रथम जोड़–तर्जनी के प्रथम जोड़ पर एक रेखा व्यक्ति को धार्मिक और अंधविश्वासी बनाती है। यदि यह रेखा अकेली, पतली लेकिन गहरी हो तो व्यक्ति महत्वाकांक्षी होता है तथा अपनी पत्नी अथवा प्रेमिका से भरपूर प्यार करता है।

यदि एक रेखा लम्बी होकर प्रथम जोड़ पर नाखून तक पहुंच रही हो तो व्यक्ति को सिर पर आघात लगेगा।

तर्जनी के प्रथम जोड़ पर लहरदार रेखायें हों तो व्यक्ति धार्मिक प्रवृत्ति का होगा।

तर्जनी के ऊपर वाले तोड़ पर रेखाओं का जाल व्यक्ति को अंधविश्वासी, परिश्रमी, ईमानदार परन्तु संकीर्ण हृदय वाला बनाता है। वह व्यक्ति एकान्त पसंद करेगा, स्त्रियों में अरुचि होगी तथा मित्र भी नहीं बनायेगा।

यदि तर्जनी के प्रथम जोड़ पर अर्द्धचंद्राकार रेखा होगी तो व्यक्ति विचारहीन और अविवेकी होगा तथा कष्ट भोगेगा।

तर्जनी उंगली के पहले जोड़ पर सितारे का चिन्ह व्यक्ति के धनी और सुखी होने का प्रतीक होता है।

क्रॉस के चिन्ह वाला व्यक्ति भूत-प्रेतों एवं मृत आत्माओं में विश्वास रखेगा और पागलों जैसा व्यवहार करेगा।

यदि तर्जनी के पहले मोड़ पर वृत्त का चिन्ह हो तो व्यक्ति बुद्धिमान और तर्कशील होगा।

त्रिभुज के चिन्ह वाला व्यक्ति आध्यात्मिक विचारों वाला होगा तथा इहलोक की अपेक्षा परलोक की चिन्ता करेगा।

2. तर्जनी उंगली का द्वितीय जोड़—तर्जनी उंगली के दूसरे अर्थात् मध्य जोड़ पर एक गहरी रेखा व्यक्ति की कार्य-सफलता एवं महत्वाकांक्षी होने का प्रतीक होती है।

एक लहराती हुई रेखा वाला व्यक्ति कार्यसिद्धि के लिये अनुचित तरीकों को भी अपनाता है।

यदि एक रेखा प्रथम जोड़ और दूसरे जोड़ को मिला रही है तो व्यक्ति धूर्त, धोखेबाज एवं ईर्ष्यालु प्रकृति का होगा।

तर्जनी उंगली के दूसरे मोड़ पर जाल का चिन्ह व्यक्ति के भ्रष्ट आचरण का द्योतक होता है।

त्रिशूल के निशान वाला व्यक्ति मशीनों के कार्य में रुचि लेगा एवं उनकी मरम्मत या बनाने का कार्य करेगा।

3. तर्जनी उंगली का तृतीय जोड़—तर्जनी उंगली के अंगुलि मूल अर्थात् तीसरे जोड़ पर एक रेखा व्यक्ति को अधीर परन्तु तर्कशील बनाती है।

यदि एक रेखा तीसरे जोड़ से निकलकर दूसरे जोड़ पर पहुंच रही हो तो व्यक्ति उदार हृदय, परोपकारी परन्तु प्रदर्शनप्रिय होगा। तर्जनी के तीसरे मोड़ पर तारा का चिन्ह व्यक्ति में आदर, शिष्टाचार तथा अनुशासन की कमी का सूचक होता है।

4. मध्यमा उंगली का प्रथम जोड़—मध्यमा उंगली के नाखून वाले जोड़ पर तारे का चिन्ह व्यक्ति के हत्यारे होने की सम्भावना प्रकट करता है, परन्तु इसकी पुष्टि हाथ के अन्य सूत्रों द्वारा कर ली जानी चाहिये।

क्रॉस का चिन्ह अत्यन्त अशुभ लक्षण है। ऐसा व्यक्ति क्रोधी, अंधविश्वासी, बलात्कारी, व्यभिचारी और अपराधी स्वभाव का होता है। भूत-प्रेतों पर भरोसा रखता है। आत्महत्या करना चाहेगा लेकिन करेगा नहीं।

मध्यमा के प्रथम मोड़ पर काले धब्बे वाला व्यक्ति प्रायः बुखार से पीड़ित रहेगा।

5. मध्यमा उंगली का द्वितीय जोड़—मध्यमा उंगली के दूसरे जोड़ पर क्रॉस का चिन्ह व्यक्ति को मनोविज्ञान का ज्ञाता बनाता है। त्रिकोण का चिन्ह व्यक्ति की अध्यात्म अथवा मनोविज्ञान में रुचि दर्शाता है।

तारे का चिन्ह वाला व्यक्ति अपराधी मनोवृत्ति का होगा। मध्यमा उंगली के मध्य मोड़ पर खड़ी रेखा वाला व्यक्ति नितान्त मूर्ख होता है।

यदि जोड़ पर रेखाओं का जाल बना हो तो व्यक्ति टांगों या कानों के रोग से पीड़ित रहता है।

6. मध्यमा उंगली का तृतीय जोड़—मध्यमा उंगली के अंगुलिमूल जोड़ अर्थात् तीसरे जोड़ पर एक गहरी रेखा यदि दूसरे जोड़ तक पहुंच रही हो तो व्यक्ति प्रकांड पंडित, ज्ञानी तथा विद्या सागर बनता है।

एक लहराती हुई रेखा वाले व्यक्ति की मृत्यु किसी दंगे या युद्ध में होगी।

यदि जोड़ के मध्य से एक रेखा नीचे पर्वत की ओर झुक रही हो तो व्यक्ति भाग्यहीन होता है।

जोड़ पर अनेक टूटी-फूटी छोटी-छोटी रेखायें व्यक्ति को निर्मम एवं बलात्कारी बना देती हैं।

मध्यमा उंगली के तीसरे जोड़ पर जाल का चिन्ह वाला व्यक्ति मंद बुद्धि का होता है।

त्रिशूल का चिन्ह व्यक्ति की असहयोगी प्रकृति का परिचायक होता है।

चतुष्कोण या वर्ग का चिन्ह वाला व्यक्ति कंजूस होगा। यदि तीसरे मोड़ पर तारा का चिन्ह हो तो व्यक्ति हत्यारी प्रवृत्ति का हो सकता है।

त्रिभुज के चिन्ह वाला व्यक्ति भाग्यहीन और कुटिल होगा।

7. अनामिका उंगली का प्रथम जोड़—अनामिका उंगली के प्रथम जोड़ अर्थात् नाखून वाले जोड़ पर आड़ी या पड़ी हुई रेखायें व्यक्ति के कलात्मक कार्यों को सफल नहीं होने देंगी।

प्रथम जोड़ पर खड़ी अर्थात् लम्बवत् रेखाओं वाला व्यक्ति यद्यपि कलात्मक कार्यों में निपुण होगा परन्तु उसका चित्त अस्थिर रहेगा।

अनामिका के पहले मोड़ पर वृत्त का चिन्ह भाग्यशाली होने का प्रतीक माना गया है। व्यक्ति अप्रत्याशित रूप से धन प्राप्त करता है तथा अपने

प्रयत्नों में सफलता पाता है।

क्रॉस का चिन्ह वाला व्यक्ति मूर्ति अथवा भवन-निर्माण कला का जानकार होगा और व्यवहार कुशल होगा।

जाल का चिन्ह वाला व्यक्ति पागलपन का शिकार होगा। यदि पहले जोड़ पर तारे का चिन्ह है तो व्यक्ति प्रतिभावान होते हुये भी कमजोर दिल का और कभी-कभी अर्द्धविक्षिप्त भी हो सकता है।

त्रिकोण का निशान विज्ञान की प्रकृति शाखा का जानकार होगा।

8. अनामिका उंगली का द्वितीय जोड़—अनामिका के मध्य जोड़ अर्थात् द्वितीय जोड़ पर जिस व्यक्ति के एक पड़ी या आड़ी रेखा हो तो वह व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का होगा। कोई कार्य कुशलता से नहीं करेगा।

यदि एक रेखा दूसरे मोड़ से निकलकर तीसरे मोड़ तक पहुंच गयी हो तो व्यक्ति यश प्राप्त करेगा। ऐसा व्यक्ति शिष्ट और धनी होगा।

द्वितीय जोड़ पर त्रिकोण का चिन्ह वाला व्यक्ति कला के क्षेत्र में कुशलता प्राप्त करेगा।

त्रिशूल के चिन्ह वाला व्यक्ति दुविधा की स्थिति में रहता है।

अनामिका के दूसरे जोड़ पर वृत्त का चिन्ह प्रत्येक कार्य में सफलता का प्रतीक होता है।

दूसरे जोड़ पर तारे का चिन्ह व्यक्ति की योग्यता को प्रदर्शित करता है। ऐसा व्यक्ति समय का पाबंद रहता है।

9. अनामिका उंगली का तृतीय जोड़—सूर्य की उंगली के सबसे नीचे वाले तीसरे जोड़ पर एक रेखा वाला व्यक्ति अपने उद्देश्यों में सफल रहता है और भाग्यशाली होता है।

इस जोड़ पर अनेक खड़ी या लम्बवत् रेखायें व्यक्ति को धनहीन बनाती हैं और व्यक्ति दुर्भाग्य भोगता है।

तीसरे जोड़ से आरम्भ होकर सीधी रेखा यदि सूर्य पर्वत के ऊपर आकर समाप्त हो जाये तो व्यक्ति धनी परन्तु घमंडी होता है।

अनामिका के तीसरे जोड़ से दूसरे जोड़ तक बहुत-सी रेखायें व्यक्ति को अपने सगे-सम्बंधियों द्वारा कष्ट देने का संकेत देती हैं।

इस उंगली के तीसरे मोड़ से उंगली के पहले पोर के ऊपर तक अनेक रेखाओं वाला व्यक्ति किसी स्त्री से काम-सम्बंधों के कारण धन-हानि उठायेगा। यदि यह स्थिति स्त्री के बायें हाथ में हो तो वह किसी पुरुष से

काम-सम्बंधों के कारण अपना धन और जेवर आदि की हानि उठायेगी।

अनामिका उंगली के तीसरे मोड़ से उंगली के प्रथम पोरूए तक एक खड़ी रेखा व्यक्ति को महान प्रसिद्धि प्रदान करवाती है।

इस उंगली के तृतीय जोड़ पर अर्द्धचन्द्र का चिन्ह व्यक्ति को रोग, मुकदमे आदि संकटों से घिरा रखता है।

जाल के निशान वाला व्यक्ति दूसरों से ईर्ष्या करने वाला एवं निर्धन होता है।

त्रिकोण के चिन्ह वाला व्यक्ति बड़बोला होता है। जिस व्यक्ति की अनामिका के तीसरे मोड़ पर क्रॉस का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति व्यवसाय में असफल रहता है एवं उसके कार्यों में बाधाएं आती ही रहती हैं।

तीसरे जोड़ पर वृत्त का चिन्ह वाला व्यक्ति धन तथा यश अर्जित करता है।

तारे के चिन्ह वाला व्यक्ति नीच प्रकृति का एवं आत्म-प्रशंसक होता है।

10. कनिष्ठिका उंगली का प्रथम जोड़—कनिष्ठिका उंगली के पहले अर्थात् नाखून के पास वाले जोड़ पर एक खड़ी रेखा प्रारम्भ होकर तीसरे जोड़ तक पहुंच जाये तो वह व्यक्ति विज्ञान के किसी क्षेत्र में रुचि लेगा, विश्वासपात्र होगा, ईमानदारी बरतेगा एवं उसकी सोचने-विचारने की दिशा सही होगी।

यदि इस तरह की दो रेखायें चल रही हों तो व्यक्ति ईमानदार होने के साथ-साथ उदार हृदय भी होता है।

तीन रेखाओं वाला व्यक्ति विज्ञान के क्षेत्र में रुचि रखेगा। यदि पहले मोड़ पर अनेक पड़ी रेखायें हों तो व्यक्ति झूठ के साथ ज्यादा बोलने वाला और धोखेबाज होता है।

कनिष्ठिका उंगली के प्रथम जोड़ पर जाल का चिन्ह वाला व्यक्ति छोटे स्तर का चोर और हकलाकर बात करने वाला होता है।

तारे का चिन्ह कुशल वक्ता तो बनाता है, परन्तु धन की कमी बनाये रखता है।

त्रिशूल का चिन्ह व्यापार में असफलता का सूचक होता है। वर्ग का चिन्ह व्यापार में निपुणता की निशानी है। क्रॉस का चिन्ह वाला व्यक्ति अच्छे स्वास्थ्य से सम्पन्न एवं अच्छी सूझ वाला होता है।

त्रिकोण का चिन्ह आध्यात्मिक विषयों में रुचि का प्रतीक है।

11. कनिष्ठिका उंगली का द्वितीय जोड़—बुध की उंगली के दूसरे अर्थात् मध्य जोड़ पर अनेक पड़ी रेखाओं वाला व्यक्ति भावुक होता है।

बहुत-सी सीधी खड़ी रेखायें व्यक्ति को व्यवहारकुशल, चतुर एवं मनोविज्ञान में दक्ष बनाती हैं। यदि किसी स्त्री के बायें हाथ की कनिष्ठिका के द्वितीय जोड़ पर इस प्रकार की खड़ी रेखायें हों तो वह स्त्री अनेक पुरुषों से सम्भोग करती है।

मध्य जोड़ पर स्पष्ट लहराती हुई रेखायें व्यक्ति को चोरी, ठगी और व्यभिचार की ओर प्रेरित करती हैं।

यदि एक टेढ़ी-मेढ़ी रेखा दूसरे मोड़ से शुरू होकर तीसरे अर्थात् नीचे वाले मोड़ तक गयी हुई हो तो वह व्यक्ति अपनी विद्वता का अनुचित उपयोग करेगा दूसरों को अपमानित करने में रुचि रखेगा।

यदि यह रेखा सीधी चल रही होगी तो व्यक्ति विज्ञान की किसी शाखा में पारंगत होगा परन्तु उसका स्वभाव तेज होगा।

अनामिका के दूसरे ज़ोड़ पर तारे का चिन्ह व्यक्ति को अपयश का भागी बनाता है।

जाल के चिन्ह वाला व्यक्ति राजनीतिक अथवा व्यक्तिगत अपराध में कारावास भोगता है। काम से जी चुराता है।

त्रिशूल के चिन्ह वाले व्यक्ति का चित्त डांवाडोल रहता है। शीघ्र वीर्य पतन के कारण पत्नी खिन्न रहेगी। ऐसा व्यक्ति व्यापार में भी सफलता प्राप्त नहीं कर पाता।

दूसरे मोड़ पर वर्ग का चिन्ह हो तो बुध के लक्षण कुन्द हो जाते हैं।

अनामिका के द्वितीय जोड़ पर क्रॉस का चिन्ह भाग्यहीनता का प्रतीक है, यदि अन्य रेखायें और पर्वत भी अशुभ हों तो ऐसे व्यक्ति को जेल जाना पड़ता है।

त्रिभुज का चिन्ह व्यक्ति को मनोविज्ञान का ज्ञाता एवं इस गुण का उपयोग युवतियों को अपनी ओर आकर्षित करने वाला बनाता है।

12. कनिष्ठिका उंगली का तृतीय जोड़—कनिष्ठिका उंगली के अंगुलि मूल अर्थात् तीसरे मोड़ पर एक रेखा दूसरे मोड़ तक जा रही हो तो कुशल वक्ता, मृदुभाषी और वाचाल होगा। दूसरों को अपनी वाक्पटुता से मुग्ध करने वाला ऐसा व्यक्ति अपने कार्यों में सफलता प्राप्त कर लेता है।

यदि यह रेखा लहरदार हो तो व्यक्ति चालाक व फुर्तीला होता है एवं अपनी स्वार्थसिद्धि के लिये उचित-अनुचित तरीकों की परवाह नहीं करता।

कनिष्ठिका के तृतीय जोड़ पर क्रॉस का चिन्ह व्यक्ति को चोर या जेबकतरा बनाता है।

जाल एवं बिन्दु का चिन्ह वाला व्यक्ति बेईमान होता है।

तीसरे मोड़ पर तारे का चिन्ह प्रखर बुद्धि और व्यक्ति के वाचाल होने का प्रतीक होता है।

अर्द्धवृत्त एवं वृत्त का चिन्ह व्यक्ति को पाखंडी बनाता है। तृतीय मोड़ पर त्रिभुज का चिन्ह विदेश यात्रा अथवा विदेश में उच्च पद प्राप्त करने का सूचक होता है।

वर्ग के चिन्ह वाला व्यक्ति रहस्यमय जीवन जीता है।

नाखून

किसी व्यक्ति के नाखूनों से उसके चरित्र तथा स्वास्थ्य के बारे में जानकारी मिलती है। नाखून दो प्रकार के होते हैं, एक चौड़े आकार के दूसरे छोटे आकार के अनुसार फल भी भिन्न ही होते हैं।

1. चौड़े नाखून—चौड़े नाखून वाले व्यक्ति आराम पसंद अतः परिश्रम वाले कामों से घबराने वाले होते हैं। इनमें कल्पना और कला की अनुभूति बहुत होती है। शांत स्वभाव के ऐसे लोग कष्टों से घबरा जाते हैं।

यदि स्वास्थ्य रेखा भी दुर्बल हो तो चौड़े नाखूनों वाले व्यक्तियों के फेफड़े कमजोर होंगे।

यदि नाखूनों पर रेखायें हों तो व्यक्ति को गले और श्वासनली के कष्ट उठाने पड़ते हैं। यह रेखायें यदि आड़ी हों तो अन्य बीमारियां हो सकती हैं।

2. छोटे नाखून—छोटे नाखून वाले व्यक्तियों की बुद्धि तेज एवं वे व्यावहारिक होते हैं। हर बात को तर्क की तराजू पर तौल कर निर्णय लेते हैं। सूक्ष्म और गहन अध्ययन कर तथ्यों का पता लगाते हैं।

छोटे त्रिकोण आकार के नाखून लकवा होने की सम्भावना व्यक्त करते हैं।

यदि स्वास्थ्य रेखा निर्बल हो तो यह हृदय की दुर्बलता के परिचायक होते हैं।

नाखूनों का समग्र फल—

चिकने, नर्म और गुलाबी आभा वाले नाखून सामान्य स्वास्थ्य के सूचक होते हैं।

नाखूनों का नीलापन व्यक्ति के शरीर में त्रुटिपूर्ण रक्त संचार का द्योतक है।

खुरदरे और ढीले पड़े नाखून व्यक्ति के दुर्वल स्वास्थ्य के प्रतीक होते हैं।

बड़े नाखून पुरुषों के लिये तथा छोटे नाखून स्त्रियों के लिये शुभ माने जाते हैं।

गर्भवती स्त्री के नाखून यदि सामान्य से अधिक लाल हों तो हृदय की तेज धड़कन को सूचित करते हैं।

नाखूनों के मूल यदि चन्द्राकार नहीं हैं तो व्यक्ति की हृदयगति धीमी होती है और यदि चन्द्राकार वड़ा हो तो व्यक्ति शीघ्र ही आवेश में आने वाला होता है।

पीले नाखूनों वाला व्यक्ति निर्दयी और क्रोधी होता है।

गोल और छोटे नाखून वाला व्यक्ति व्यवसायी होता है।

गोल और अर्द्धचन्द्राकार नाखून वाला व्यक्ति राज्य-कर्मचारी बनता है।

गोल और लम्बे नाखून दीनता के द्योतक होते हैं।

लम्बे तथा अर्द्धचन्द्राकार नाखून वाले व्यक्ति परिश्रमी, विश्वासपात्र एवं विवेकशील होते हैं।

नाखूनों पर धब्बे या दाग

1. सफेद धब्बे–खून की कमी। गर्भवती स्त्री के नाखून सफेद हों–यह शरीर में खून की भारी कमी को दर्शाते हैं।

2. काले धब्बे–चिन्ताग्रस्त एवं अस्वस्थता के सूचक हैं।

3. काले एवं नीले धब्बे–रक्त दोष और अस्वस्थता प्रकट करते हैं।

4. लाल धब्बे–दु:खों के परिचायक हैं।

5. तर्जनी उंगली के नाखूनों पर सफेद धब्बे आर्थिक लाभ एवं काले धब्बे आर्थिक हानि के द्योतक हैं।

6. मध्यमा उंगली के नाखूनों पर काले दाग सम्भावित विपत्ति की सूचना देते हैं।

7. मध्यमा के नाखूनों पर सफेद धब्बे देश-विदेश भ्रमण को परिलक्षित करते हैं।

8. अनामिका उंगली के नाखूनों पर काले धब्बे आर्थिक हानि होने के सूचक हैं।

9. अनामिका के नाखूनों पर सफेद दाग लाभ एवं कीर्ति-प्राप्ति के सूचक हैं।

10. कनिष्ठिका उंगली के नाखूनों पर सफेद दाग विज्ञान के क्षेत्र में सफलता अथवा व्यवसाय में लाभ-प्राप्ति के प्रतीक हैं।

11. कनिष्ठिका उंगली के नाखूनों पर काले धब्बे शरीर में रक्तदोष एवं व्यापार में घाटा को दर्शाते हैं।

12. कनिष्ठिका उंगली के नाखूनों पर पीले दाग पीलिया अथवा इसी प्रकार के रोग के लक्षण होते हैं।

13. अंगूठे पर काले दाग आर्थिक हानि और अपराध प्रवृत्ति के सूचक होते हैं तथा सफेद दाग आर्थिक लाभ एवं मान-सम्मान और प्रेम-प्राप्ति के प्रतीक होते हैं।

यदि दाग या धब्बे नाखूनों के अगले भाग में हो तो भूतकाल, मध्य में हो तो वर्तमान काल और यदि जड़ में हो तो भविष्य के लिये निम्न फलों की सूचना देते हैं-

- नाखूनों पर पीली धारियां और जीवन रेखा की हाथ पर अनुपस्थिति मृत्यु का संकेत देती है।
- धूमिल नाखून और जीवन रेखा का कई प्रशाखाओं में बंटकर मणिबंध को छूना शीघ्र मृत्यु के प्रतीक माने जाते हैं।
- अत्यन्त छोटे नाखून और हाथ पर कटी हुई मस्तिष्क रेखा मिर्गी की बीमारी के परिचायक हैं।
- यदि नाखून संकरे हों और उन पर धारियां बन रही हैं तो खराब स्वास्थ्य की सूचक होती हैं।
- नीले नाखून स्नायुविक बीमारियों का संकेत देते हैं।
- आवश्यकता से बड़े नाखून व्यक्ति को रोगों से ग्रस्त रखते हैं।

हस्तरेखायें

हस्तरेखा विज्ञान अर्थात् सामुद्रिक शास्त्र का सबसे महत्वपूर्ण भाग हस्तरेखायें और उनका अध्ययन है।

जीवनी शक्ति का प्रवाह मस्तिष्क में से सुषुमा नाड़ी अर्थात् स्नायु मंडल से होता हुआ स्नायु तंतुओं के माध्यम से शरीर के समस्त अंगों में पहुंचता है। हथेली का स्नायुतंत्र सूक्ष्म जाल के रूप में हाथ की सभी रेखाओं और ग्रह पर्वतों को एक सूत्र में बांधकर रखता है। अत्यन्त सूक्ष्म होने के साथ-साथ

यह अत्यधिक सक्रिय एवं संवेदनशील भी हैं।

गर्भाशय के भ्रूण में जीव आने के साथ ही जीवनी शक्ति के प्रवाह प्रभाव से रेखाओं की रचना होना प्रारम्भ होती हैं जो जन्म के पश्चात् भी घटती-बढ़ती तथा बनती-बिगड़ती रहती है। इस प्रकार यह रेखायें व्यक्ति के व्यक्तित्व, कृत्यत्व एवं भाग्य को परिलक्षित करती हैं।

विश्व में किन्हीं दो व्यक्तियों की, चाहे वे माता-पिता व संतान हो, पति-पत्नी हो, भाई-बहन हो, भाई-भाई अथवा सगी वहनें हों, हथेलियां तथा उन पर पाई जाने वाली रेखायें एक समान नहीं पायी जातीं। यहां तक कि जुड़वां बच्चों की भी हस्तरेखाओं में अंतर रहता है।

हाथ की रेखायें दो प्रकार की होती हैं—मुख्य रेखायें तथा सामान्य, अथवा गौण रेखायें यह निम्न प्रकार हैं—
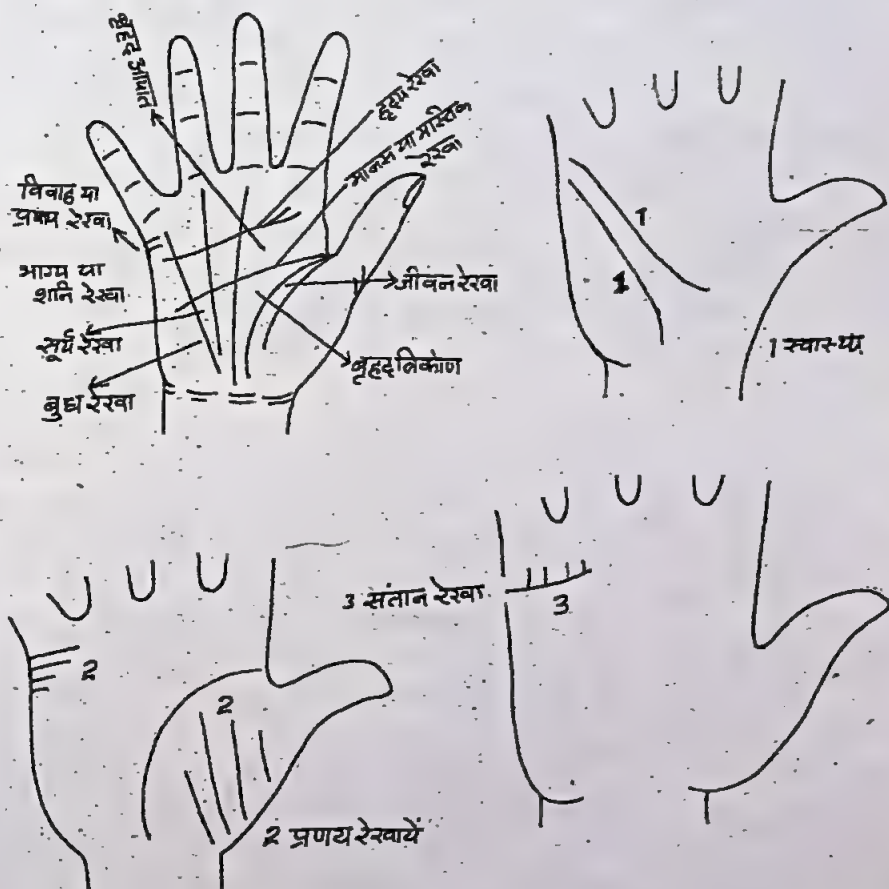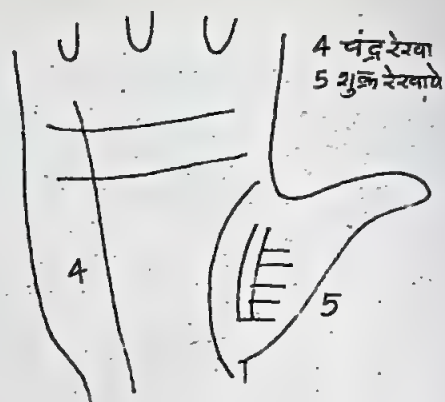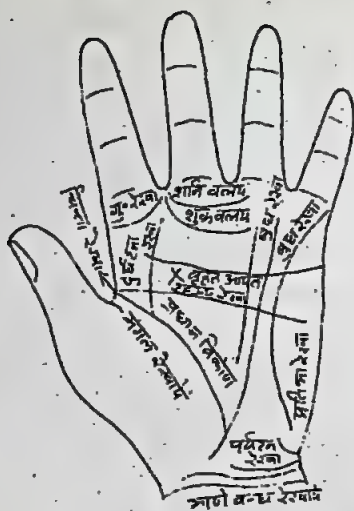
मुख्य रेखायें–यह सर्वाधिक महत्व की रेखायें हैं–

1. जीवन अथवा आयु रेखा	5. सूर्य रेखा
2. मस्तिष्क रेखा	6. स्वास्थ्य रेखा
3. हृदय रेखा	7. विवाह रेखा
4. भाग्य रेखा	8. संतान रेखा

सामान्य अथवा गौण रेखायें–यह रेखायें अपना प्रभाव क्षेत्र सीमित रखती हैं परन्तु फिर भी महत्वपूर्ण होती हैं और इनकी अनदेखी नहीं की जा सकती। गौण रेखायें निम्नलिखित हैं–

1. मंगल रेखा	6. गुरु वलय
2. मणिबंध रेखा	7. शनि वलय
3. चंद्र रेखा	8. सूर्य वलय
4. शुक्र रेखा	9. शुक्र वलय
5. यात्रा रेखा	10. बुध वलय

गहरी और लाल रंग की रेखायें आवेश में आने, क्रोधी स्वभाव और कभी-कभी निर्दयी होने की सूचक होती हैं।

छिन्न-भिन्न रेखायें अशुभ मानी जाती हैं।

कुशा के समान अग्र भाग वाली सुन्दर और सुस्पष्ट रेखायें व्यक्ति के पास धन की कमी नहीं आने देती।

मनुष्य की हथेली पर जो रेखा प्रधान हो, व्यक्ति में उसी के गुणों की प्रधानता रहती है।

हस्तरेखाओं का वर्गीकरण

रेखा का नाम	गुण	स्वभाव	चरिता	शक्ति का बाहुल्य	लोक
जीवन रेखा	सतोगुण	पुरुष	नभचर	जीवनी शक्ति	ऊर्ध्व लोक
हृदय रेखा	रजोगुण	स्त्री	थलचर	प्रेम	मृत्युलोक
मस्तिष्क रेखा	तमोगुण	नपुंसक	जलचर	मानसिक	पाताल लोक

बायें और दायें हाथ से गमन और आगमन की जानकारी प्राप्त होती है, अर्थात् बायें हाथ में यदि जीवन रेखा स्पष्ट हो तो प्राणी पितृलोक से आया है और दायें हाथ में हो तो मृत्यु पश्चात् पितृलोक में जायेगा।

मनुष्य के हाथ में लगभग दो या तीन वर्षों के अनंतर कई नई छोटी-छोटी रेखायें बनती हैं जो स्थिति के अनुसार शुभाशुभ फलों को परिलक्षित करती हैं।

रक्तवर्ण रेखायें व्यक्ति को मस्तिष्क से चुस्त और विवेकी बनाती हैं। काली रेखायें दुःख, निराशा एवं बदला लेने की भावना प्रकट करती हैं। पीले रंग की रेखायें रक्त की कमी तथा दुर्वल स्वास्थ्य की सूचक होती हैं। ऐसा व्यक्ति निराशावादी होता है। स्पष्ट, धुंधली और मंद रेखायें भविष्य में आने वाले संकटों का आभास कराती हैं। साफ-सुथरी, स्पष्ट एवं लालिमा लिये हुये रेखायें शुभ मानी जाती हैं। रेखाओं पर टूट-फूट, अशुभ चिन्ह एवं अशुभ रेखायें व शाखायें फलों में न्यूनता लाती हैं।

हथेली पर रेखाओं की स्थिति

कटी-फटी रेखायें
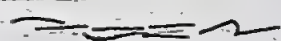
लहरीली रेखायें

गहरी रेखायें

जंजीर
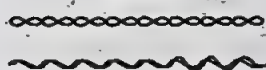
द्विमुखी अथवा द्विशाखी

बहुशाखी
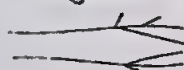
ऊर्ध्वमुखी शाखायें
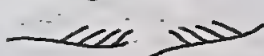
निम्नमुखी शाखायें
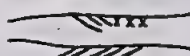
हल्की रेखायें

सहायक रेखा

सामान्य रेखायें
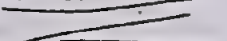
1. आयु अर्थात् जीवन रेखा

इसे पितृ रेखा भी कहा जाता है। यह रेखा अंगूठे और तर्जनी उंगली के बीच से प्रारम्भ होकर शुक्र ग्रह पर्वत के क्षेत्र को घेरती हुई मणिबंध अर्थात् कलाई की ओर चली जाती है। यह रेखा गोलाकार, अर्द्धगोलाकार अथवा सीधी भी हो सकती हैं।

जीवन रेखा से व्यक्ति की आयु, रोग एवं स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त होती हैं। यह समय-समय पर घटित होने वाली मनुष्य के जीवन की घटनाओं को भी दर्शाती है। आयु की सही गणना के लिये मस्तिष्क रेखा के फलों का ध्यान रखना चाहिये क्योंकि आयु रेखा के स्पष्ट, निर्विघ्न और विकसित होते हुये भी दुर्घटना अथवा असाध्य रोग मृत्यु का कारण बन सकते हैं। ऐसी स्थिति को जान लेने के लिये पुरुष की बायीं हाथ की जीवन रेखा भी देख लेनी चाहिये। जिस स्थान पर बायें हाथ की जीवन रेखा टूटी या क्षीण हो रही है तो उस अवधि में व्यक्ति किसी रोग अथवा दुर्घटना का शिकार बन सकता है। यदि दोनों हाथ की आयु रेखायें एक ही स्थान पर टूटें और टूटी हुई रेखा की दिशा शुक्र पर्वत की ओर हो तो मृत्यु निश्चित है।

शुक्र पर्वत को घेरते हुये यह रेखा जितना बड़ा वृत्त बनाती है उतना ही शुभ होती है।

जीवन रेखा जितनी स्पष्ट, निर्विघ्न तथा गहरी होगी उतनी ही शुभ होती है एवं व्यक्ति की जीवनी शक्ति, हृदय की भावनायें और स्वास्थ्य उतना ही समृद्ध होगा। यह रेखा यदि अस्पष्ट, धुंधली और टूटी-फूटी होगी तो व्यक्ति उतना ही अल्पायु, क्रोधी स्वभाव का और हृदयहीन होगा। ऐसा व्यक्ति दुर्घटनाओं से घिरा रहता है।

यदि किसी व्यक्ति के हाथ में जीवन रेखा अनुपस्थित हो तो व्यक्ति क्षीण स्वास्थ्य, शारीरिक रूप से असमर्थ, रोग प्रतिरोधक क्षमता से रहित होता है। आयु रेखा की अनुपस्थिति में हाथ की शनि अथवा मंगल रेखा ही जीवन रेखा का काम करती है।

यदि जीवन रेखा अप्रत्याशित रूप से किसी हथेली में गुरु पर्वत से प्रारम्भ हो रही हो तो व्यक्ति अत्यन्त महत्वाकांक्षी होता है। उसे सुन्दर स्त्री, अनेक संतानें, धन-सम्पत्ति, आदर-सम्मान और अपने यश की प्रबल इच्छा रहती है।

हथेली पर जो पर्वत सुविकसित और उभरा हुआ हो जीवन रेखा व्यक्ति में उसी गुण की प्रधानता व्यक्त करती है, जैसे यदि जीवन रेखा स्पष्ट हो और हाथ में शनि पर्वत की प्रधानता हो तो ऐसा व्यक्ति निश्चित रूप से वैज्ञानिक बनेगा।

यह रेखा एक विस्तृत रक्त कोष क्षेत्र बनाती है। शुक्र पर्वत के क्षेत्र को घेरते हुए जितना ही अधिक क्षेत्र जीवन रेखा द्वारा आवृत होता है, व्यक्ति में पौरुष और जीवनी शक्ति उतनी ही अधिक होती है परन्तु इस क्षेत्र का अत्यधिक विस्तुत होना व्यक्ति में भावुकता, कामुकता और संयम की सीमा को पार कर देता है। यदि ऐसे क्षेत्र के साथ जीवन रेखा का रंग गाढ़ा लाल या नीलिमा लिये हुये लाल हो तो व्यक्ति में उक्त अवगुण बेकाबू हो जाते हैं। उसका चारित्रिक पतन हो जाता है।

कठोर हथेली पर जीवन रेखा बृहस्पति क्षेत्र से शुरू हो रही हो तो व्यक्ति साहसी, निर्भीक और स्वतंत्रता प्रेमी होता है। इस प्रकार की रेखा के साथ यदि बृहस्पति क्षेत्र पर क्रॉस का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक अथवा सरकारी संगठनों में उच्च पद प्राप्त करता है तथा सफल रहता है।

यदि बृहस्पति पर्वत के नीचे जीवन रेखा और मस्तिष्क रेखा मिली हुई हों तो यह शुभ माना गया है। यह दोनों रेखायें जितनी अधिक निकट होंगी व्यक्ति उतना ही अधिक परिश्रमी, सोच-विचार का कार्य करने वाला और सतर्क प्रवृत्ति का होता है। यदि ये दोनों रेखायें उद्गम-स्थल पर अन्धा हो तो व्यक्ति अपनी धुन में मस्त, स्वतंत्र विचारों वाला एवं स्वतंत्र कार्य करने वाला होता है। यदि जीवन रेखा, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा तीनों ही उद्गम स्थान पर आपस में मिल गयी हो तो व्यक्ति की निश्चित रूप से या तो हत्या हो जाती है अथवा वह व्यक्ति अपने आवेश में उत्तेजित होकर आत्महत्या कर लेता है।

जीवन रेखा एवं मस्तिष्क रेखा के आसपास से अनेकों छोटी-छोटी रेखायें हथेली पर इन दोनों रेखाओं की शाखा मुक्त कर आपस में मिला देती हैं। यदि इस प्रकार मिली हुई रेखायें आगे चलकर हथेली के मध्य से पूर्व ही अलग हो गयी हों तो व्यक्ति दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास से भरा होता है।

यदि जीवन रेखा और मस्तिष्क रेखा के बीच समान अंतर हो तो व्यक्ति उत्साही, साहसी और यश की कामना करने वाला होता है।

यदि जीवन रेखा बृहस्पति क्षेत्र पर कुछ ऊपर से निकल रही हो और सूर्य क्षेत्र भी सुविकसित हो अथवा हथेली पर कोई रेखा सूर्य क्षेत्र की ओर जाती हो तो व्यक्ति प्रत्येक क्षेत्र में यश और सफलता प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति राज्य सेवा में उच्च पद पर अपने उत्तरदायित्वों का सफलतापूर्वक निष्पादन करते हैं।

जीवन रेखा से निकलकर कोई रेखा जिस पर्वत की ओर चलती है उस पर्वत के गुण उस व्यक्ति में विशेष रूप से पाये जाते हैं।

यदि जीवन रेखा के प्रारम्भ से ही एक सहायक रेखा चल रही हो तो व्यक्ति कल्पनाशील और बुद्धिमान होता है। वह अपनी कार्यप्रणाली योजनाबद्ध तरीके से निर्धारित करता है। यदि यह सहायक रेखा उद्गम स्थान से न होकर कुछ आगे से प्रारम्भ हुई हो तो जिस आयु अवधि के बिन्दु से यह प्रारम्भ होगी उस आयु से व्यक्ति का भाग्योदय होगा।

जीवन रेखा के समाप्त बिन्दु पर यदि बहुत-सी रेखायें, द्वीप, क्रॉस बिन्दु या नक्षत्र के चिन्ह हों तो व्यक्ति की उस आयु में मृत्यु होने की सम्भावना हो जाती है।

जीवन रेखा की अचानक समाप्ति व्यक्ति की अचानक मृत्यु का परिचायक है। यदि जीवन रेखा अंत तक पहुंचते-पहुंचते कई शाखाओं में बंट जाये तो व्यक्ति वृद्धावस्था में तपेदिक से पीड़ित होगा।

यदि जीवन रेखा का अंतिम सिरा तीन शाखाओं में विभाजित हो जाये उनकी आपसी दूरी अधिक हो तो यह अशुभ फल देती है परन्तु यदि यह तीनों शाखाओं की दूरी आपस में कम हो तो शुभ फल देती हैं।

यदि जीवन रेखा में से एक शाखा निकलकर चन्द्र पर्वत की ओर जा रही हो तो व्यक्ति बुढ़ापे में विक्षिप्त हो जायेगा अथवा सन्निपात से पीड़ित होगा।

यदि जीवन रेखा शनि रेखा से मिल रही हो तो व्यक्ति तेजस्वी एवं चिंतनशील बनेगा। यदि मंगल रेखा आकर जीवन रेखा से मिल रही हो तो व्यक्ति पुलिस अथवा सेना में उच्च पद प्राप्त करता है। यदि सूर्य रेखा आकर जीवन रेखा से मिल रही हो तो व्यक्ति शासन में उच्च पद पर नियुक्त होता है। यदि बुध की रेखा आकर जीवन रेखा से मिल रही हो तो व्यक्ति धनवान, सफल वक्ता और व्यापारी बनता है।

यदि कुछ रेखायें शुक्र के स्थान से निकलकर जीवन रेखा के साथ नीचे की ओर आ रही हों तो व्यक्ति रोमान्सप्रिय होता है। इन रेखाओं का न होना

व्यक्ति की शान्त प्रकृति का सूचक होता है और वे तनावरहित जीवन व्यतीत करते हैं। यदि यह रेखायें जीवन रेखाओं को काटती हैं तो व्यक्ति महत्वाकांक्षी होता है और सक्रिय रहता है। यदि यह रेखायें शनि पर्वत की ओर बढ़ रही हों तो व्यक्ति आकस्मिक दुर्घटनाओं का शिकार होगा। यदि यह रेखायें सूर्य पर्वत की ओर जा रही हों तो शुभ फलकारी हैं। बुध पर्वत की ओर जाती हुई ये रेखायें व्यापार में सफलता की द्योतक हैं। यदि ये रेखायें निम्न मंगल पर्वत की ओर आ रही हों तो व्यक्ति अत्यन्त कामुक होता है।

यदि यह रेखायें जीवन रेखा को काटती हुई हृदय रेखा तक पहुंच जाये तो व्यक्ति का दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद हो जाता है। यदि यह रेखायें सूर्य रेखा को काट दें तो व्यक्ति की प्रतिष्ठा पर कालिख लगती है। यदि यह रेखायें विवाह रेखा को काट रही हों तो तलाक हो जाता है अथवा पति-पत्नी में जीवन भर मनमुटाव बना रहता है।

जिस व्यक्ति के हाथ में ज़ीवन रेखा अंगूठे से दूर होती है वह उतना ही सहृदय, क्रियाशील और उत्साही होता है।

जीवन रेखा से मिलकर यदि मस्तक रेखा हथेली के अर्धभाग तक ही जाती हो तो वह व्यक्ति शरीर से दुर्बल होता है। उसमें साहस की कमी होने से विषम परिस्थितियों में हिम्मत हारकर घबरा जाता है।

यदि कुछ रेखायें जीवन रेखा के पास से निकलकर बाहर की ओर आ रही हों तो व्यक्ति देश-विदेश की यात्रायें करता है। यदि ये रेखायें लम्बी, गहरी और स्पष्ट हों तो व्यक्ति यात्राओं के बड़े-बड़े खतरों से भी बच निकलता है।

जीवन रेखा जिस आयु अवधि तक जंजीरदार होगी व्यक्ति उस अवधि तक या उस अवधि में बीमार रहेगा।

यदि जीवन रेखा के साथ-साथ मस्तक रेखा थोड़ी दूर तक चली गयी हो तो व्यक्ति सतर्क, दृढ़निश्चयी, शीघ्र निर्णय लेने वाला और सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि जीवन रेखा प्रारम्भ से अंत तक लहरदार या गुंथी हुई हो तो व्यक्ति वंशानुगत रोग से जीवन भर पीड़ित रहता है।

जीवन रेखा से मस्तिष्क रेखा का उद्गम स्थल बहुत दूर हो तो व्यक्ति कर्त्तव्यों के प्रति ईमानदार नहीं होता।

यदि जीवन रेखा उद्गम स्थल के पास ही दो या अधिक भागों में बंट रही हो तो व्यक्ति उदर रोग से पीड़ित रहता है। जीवन रेखा से प्रारम्भ होकर

यदि पतली रेखा चन्द्र स्थान तक आती हो तो व्यक्ति देश-विदेश में घूमने का शोकीन होता है।

जीवन रेखा से निकलकर यदि कोई रेखा सूर्य क्षेत्र तक जाती हो तो वह व्यक्ति तेजस्वी और कार्यों में निपुण होता है तथा यश, सम्मान एवं सफलता अर्जित करता है।

जीवन रेखा से प्रारम्भ होकर जो रेखा बृहस्पति पर्वत तक जाती है वह व्यक्ति के उत्साह, लाभ-प्राप्ति और सफलता प्राप्त करने की प्रतीक होती है।

जीवन रेखा से निकलकर यदि कोई रेखा बुध पर्वत की ओर चली गयी हो तो व्यक्ति विज्ञान अथवा व्यवसाय के क्षेत्र में उल्लेखनीय उन्नति करेगा।

यदि जीवन रेखा एवं मस्तिष्क रेखा पास-पास हों लेकिन एक-दूसरे को काटती न हों तो व्यक्ति बुद्धिमान, मननशील और विश्वासपात्र होता है।

यदि किसी व्यक्ति के हाथ में भाग्य रेखा न हो, परन्तु कोई रेखा जीवन रेखा से निकलकर शनि पर्वत तक पहुंचती हो तो यह रेखा ही भाग्य रेखा का काम करती है।

यदि जीवन रेखा से प्रारम्भ होकर कोई रेखा शनि पर्वत पर पहुंच रही हो और भाग्य रेखा भी हाथ पर विद्यमान हो तो वह व्यक्ति कोई अद्‌भुत कार्य करता है।

यदि जीवन रेखा से प्रारम्भ होकर कोई पतली रेखा गुरु, शनि या सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो तो व्यक्ति स्वयं के परिश्रम से बिना किसी श्रम की सहायता से सफलता अर्जित करता है।

यदि जीवन रेखा गहरी हो, शुक्र पर्वत उभरा हुआ हो तथा जीवन रेखा से एक रेखा अंदर की ओर अंगूठे की ओर गयी हो तो व्यक्ति युवतियों से काम सम्बंध बनाने वाला कामुक प्रकृति का होता है।

जीवन रेखा को यदि, अनेक खड़ी रेखायें काट रही हों तो व्यक्ति के जीवन में बाधाओं का अम्बार लगा रहता है।

जीवन रेखा से आरम्भ होकर सूक्ष्म रेखायें तर्जनी उंगली को जा रही हो तो व्यक्ति बुद्धिमान और मननशील होता है। यदि मध्यमा उंगली की ओर जा रही हों तो व्यक्ति साहसी एवं उद्यमशील होता है।

यदि जीवन रेखा क्रमशः क्षीण पड़ती जाये और उसके अंत में तारे या बिन्दु का चिन्ह बन रहा हो तो उस व्यक्ति की मृत्यु असमय में ही हो जाती है।

जीवन रेखा पर चिन्ह

मनुष्य के हाथ में जीवन रेखा के आसपास वर्ग का चिन्ह आने वाली विपत्तियों से रक्षा करता है।

जीवन रेखा के प्रारम्भ एवं अंत में सर्प की जीभ जैसे चिन्ह हों तो व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन कष्टों में बीतता है। धन का अभाव उसे घेरे रहता है। व्यक्ति व्यभिचारी, अभिमानी और नीच प्रकृति का होता है।

जीवन रेखा पर द्वीप का चिन्ह लम्बी अवधि तक रोगग्रस्त रहने की सूचना देता है। यदि व्यक्ति के दोनों हाथों में उसी स्थान पर द्वीप के चिन्ह जीवन रेखा पर हों तो व्यक्ति भयंकर बीमारी या कष्ट से पीड़ित रह सकता है। यदि इन द्वीप बिन्दुओं पर जीवन रेखा कमजोर अथवा हल्की हो तो लम्बी बीमारी के बाद व्यक्ति की मौत हो सकती है।

यदि जीवन रेखा पर सफेद धब्बे हों तो यह दिमागी बीमारी या कमजोरी का प्रतीक होती है। धुंधले धब्बे व्यक्ति की स्नायु दुर्वलताओं को प्रकट करते हैं।

जीवन रेखा के अंत में मत्स्याकार चिन्ह वाले व्यक्ति की मृत्यु पानी में डूबने से होती है।

जीवन रेखा पर तारों का चिन्ह भयंकर बीमारी का लक्षण होता है, ऐसे व्यक्ति अपयश के भागी भी बनते हैं।

जीवन रेखा के ऊपर त्रिभुज का चिन्ह व्यक्ति को कामी बनाता है।

जीवन रेखा पर लाल धब्बे व्यक्ति के कठोर स्वभाव एवं उसकी हृदयहीनता को दर्शाते हैं व हल्के काले धब्बे गले के रोग के परिचायक हैं।

जीवन रेखा पर श्वेत काले और लाल तिल के चिन्ह उदर रोग से ग्रस्त रखते हैं। ऐसी जीवन रेखा वाला व्यक्ति अपव्ययी भी होता है।

जीवन रेखा पर नीला धब्बा स्वर का संकेत देता है। यदि जीवन रेखा आगे चलकर रुकती हुई शक्र पर्वत पर अंकुश के चिन्ह-सी बन जाये तो वह व्यक्ति अपनी प्रेमिका के हाथों मारा जाता है।

जीवन रेखा के प्रारम्भ में दो क्रॉस व्यक्ति के व्यभिचारी होने, अनुशासनहीन होने और उसके असंयमी होने की सूचना देते हैं।

जीवन रेखा पर क्रॉस का चिन्ह दुर्घटना अथवा आकस्मिक बीमारी का सूचक है, यह चिन्ह जितना अधिक स्पष्ट होगा संकट उतना ही गहरा होगा। यदि इस गुणन के चिन्ह की कोई रेखायें जीवन रेखा को स्पर्श या काट

रही हों तो इन संकटों से प्राणों पर नहीं बनती।

जीवन रेखा से निकलकर कोई लहराती हुई रेखा बुध पर्वत की ओर जा रही हो तो व्यक्ति कैंसर का शिकार होता है।

यदि आड़ी रेखायें मिलकर हृदय रेखा, मस्तिष्क रेखा तथा जीवन रेखा तीनों को मिलाती हुई एक त्रिभुज बना लें तो व्यक्ति क्षमा या फेफड़ों के किसी रोग का मरीज होता है।

यदि भाग्य रेखा कोण बनाती हुई जीवन रेखा से मिल जाये तो वह जिस आयु में जीवन रेखा से मिलती है उस आयु वर्ष में व्यक्ति जीवन में उन्नति करना प्रारम्भ करता है।

2. मस्तिष्क रेखा

जीवन रेखा के पश्चात् जो रेखा प्राणी के जीवन में सबसे ज्यादा महत्व रखती है वह मस्तिष्क रेखा ही है, क्योंकि जीवन और मस्तिष्क का आपास में घनिष्ठ सम्बंध है। व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव तथा प्रकृति प्रवृत्तियों का निर्माण मस्तिष्क की स्थिति पर ही निर्भर करता है। यह रेखा व्यक्ति की बुद्धि स्मरण शक्ति, प्रतिभा एवं विचारशीलता की सूचक होती है क्योंकि मस्तिष्क प्राणी के शरीर की समस्त इन्द्रियों का संचालक, कार्य प्रणालियों का नियंत्रक एवं स्नायु संस्थान का नियामक होता है।

साधारणतय: मस्तिष्क रेखा तर्जनी उंगली और अंगूठे के बीच जीवन रेखा के निकट से प्रारम्भ होकर ऊर्ध्व मंगल तथा चन्द्र पर्वत के बीच तक पहुंचती है; परन्तु वास्तव में मस्तिष्क रेखा का हाथ पर कोई निश्चित स्थान नहीं होता। मस्तिष्क रेखा की उद्‌गम स्थिति के अनुसार फल भी अलग-अलग होते हैं–

1. जिन हाथों में मस्तिष्क रेखा जीवन् रेखा के उद्‌गम स्थान से प्रारम्भ होकर जीवन रेखा को काटती हुई हथेली के दूसरे छोर तक पहुंच रही होती है वे व्यक्ति मानसिक रूप से क्षीण, अदूरदर्शी और तुनक मिजाज होते हैं। ऐसे व्यक्तियों में बदले की भावना बहुत तेज होती है परन्तु योग्यता नहीं। इनके मित्रों की संख्या भी कम होती है।

2. यदि मस्तिष्क रेखा जीवन रेखा के भीतर से निकल रही हो तो व्यक्ति भावुक, सतर्क और भीरू स्वभाव का होता है। ऐसे व्यक्ति का अपनी भावनाओं पर वश नहीं होता और आवेश में आकर अपना काम बिगाड़ लेता है।

3. मस्तिष्क रेखा जीवन रेखा के उद्‌गम स्थान के निकट से प्रारम्भ

होकर हथेली के मध्य में जाकर समाप्त हो रही हो और स्पष्ट, सीधी तथा गहरी हो तो ऐसा व्यक्ति विद्वान, तार्किक तथा शीघ्र निर्णय लेने वाला होता है। वह अपने विचारों तथा कार्यों में सामंजस्य रखता है।

4. यदि मस्तिष्क रेखा तर्जनी के ऊपर गुरु पर्वत से निकल रही हो और उसमें से एक शाखा गुरु पर्वत पर जा रही हो तो व्यक्ति स्पष्टवादी, ईमानदार, महत्वाकांक्षी और नीतिनिपुण होता है। अपने उत्तरदायित्वों को भली-भांति निभाता है तथा प्रोफेसर या नेता बनता है व्यक्ति कर्मठ और बुद्धिमान होता है।

5. मस्तिष्क रेखा जीवन रेखा के समानान्तर चलती हुई दूर जाकर मार्ग बदलकर हथेली के छोर तक पहुंच जाये तो व्यक्ति में आत्मविश्वास की प्रबलता दर्शाती है। ऐसे व्यक्ति चतुर, बहुधंधी और धनोपार्जन में माहिर होते हैं। इनके अंदर हीन भावना का आ जाना इनको एकान्तप्रिय बना देता है। जिससे इनके परिचितों की संख्या में कमी आने लगती है और इनकी प्रगति रुक जाती है।

6. यदि मस्तिष्क रेखा जीवन रेखा के साथ मिली हुई हो तो व्यक्ति भावुक और चिन्ताग्रस्त होता है। उसमें आत्मविश्वास की कमी रहती है, जिसके कारण बुद्धिमान होते हुये भी अपनी कार्यक्षमता तथा कार्यकुशलता का उपयोग पूरी तरह नहीं कर पाता।

यदि इस प्रकार की रेखा आगे चलकर हथेली के नीचे मुड़ गयी हो तो चित्रकला में कुशल, चिन्ताग्रस्त, विचारों में तल्लीन और अल्पभावी होता है। ऐसा व्यक्ति अपने काम से काम रखता है।

7. यदि मस्तिष्क रेखा जीवन रेखा के पास से सीधी सपाट हथेली को दो भागों में बांटती हुई हथेली के दूसरे छोर तक पहुंच जाये तो व्यक्ति उत्पन्न भाग्यशाली होता है, उसे जीवन में कई बार अचानक धन-प्राप्ति होती है इस रेखा का स्पष्ट, गहरा, सीधा तथा दोषरहित होना व्यक्ति के जीवन में विदेश यात्रा का सूचक होता है। वह सफल व्यापारी भी बन सकता है।

8. मस्तिष्क रेखा जीवन रेखा के ऊपर कुछ दूरी से निकल रही हो तो व्यक्ति स्वतंत्र विचारों वाला तथा अत्यंत मेधावी होता है। उसकी मौलिक विचार शैली उसे शीघ्र निर्णय लेने में दक्ष कर देती है।

यदि ऐसी रेखा हथेली के पार तक चली गयी हो किन्तु नीचे न झुकती हो तो व्यक्ति में नेतृत्व क्षमता का आधिक्य होता है वह राजनैतिक, धार्मिक

अथवा सामाजिक क्षेत्र में नेता बनता है अपनी ओजस्वी क्षमता के कारण सफलता प्राप्त करते हैं।

यदि यह रेखा मुड़कर शुक्र पर्वत तक पहुंच रही हो तो व्यक्ति लोकप्रियता अर्जित करता है। सबको प्रसन्न रखने की कला में निपुण ऐसा व्यक्ति नेता भी बन जाता है।

9. यदि मस्तिष्क रेखा का उद्‌गम बृहस्पति पर्वत के ऊपर हो तो व्यक्ति तेजस्वी, अति बुद्धिमान और मौलिक प्रतिभा से सम्पन्न होता है वह कार्य-कुशल होता है।

10. मस्तिष्क रेखा का प्रारम्भ जीवन रेखा से बहुत दूर गुरु पर्वत के पास हो तो व्यक्ति में भावुकता की कमी होती है। वह बहुत सोच-विचार कर किसी निर्णय पर पहुंचता है। ऐसे व्यक्तियों में प्रसिद्धि पाने की तीव्र लालसा होती है वे व्यवहारकुशल होते हैं।

11. जिन हाथों में मस्तिष्क रेखा और हृदय रेखा एक ही हो या दोनों आपस में लिपटती हुई चल रही हों उस स्थिति में उसे मस्तिष्क रेखा ही माना जाता है, क्योंकि हृदय रेखा हाथ पर नहीं भी हो सकती है परन्तु मस्तिष्क रेखा अनुपस्थित नहीं होती। यद्यपि यह स्थिति बहुत ही कम होती है परन्तु ऐसी रेखा वाले व्यक्ति हृदयहीन और भावनाशून्य होते हैं। ऐसे व्यक्ति अपराधी प्रवृत्ति के होते हैं।

यदि हृदय रेखा हो ही नहीं मात्र मस्तिष्क रेखा ही हो और व्यक्ति का अंगूठा छोटा एवं गोल हो तो वह व्यक्ति हत्यारा, डाकू या लुटेरा बनता हैं।

12. यदि मस्तिष्क रेखा तथा जीवन रेखा दोनों का उद्‌गम स्थान अलग-अलग हो अथवा उद्‌गम स्थान पर दोनों अलग-अलग निकल रही हों तो व्यक्ति स्वंतत्र रहने वाला, स्वेच्छाचारी एवं प्रकृतिप्रिय होता है वह कुशल नेतृत्व की क्षमता रखता है।

यह स्थिति यदि स्त्री के हाथ में हो तो वह कुलटा होती है।

कुछ अन्य तथ्य–

1. सीधी मस्तिष्क रेखा द्वारा जीवन रेखा को कहीं स्पर्श करना अथवा प्रारम्भ में उससे जुड़ा रहना शुभ सूचक है परन्तु यदि मस्तिष्क रेखा प्रारम्भ में जीवन रेखा से अलग हो और दोनों में अंतर दूरी भी अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति हठी एवं स्वेच्छाधारी होता है वह अपने परिवार वालों तथा मित्रों से सुखद सम्बंध नहीं बना पाता। ऐसे व्यक्ति अपनी किशोरावस्था में ही

अपने माता-पिता अथवा बड़ों की कृपा से वंचित हो जाते हैं और स्वयं को आत्मनिर्भर बनाने को बाध्य हो जाते हैं।

2. मस्तिष्क रेखा और जीवन रेखा के उद्गम स्थल दूर-दूर हो तथा अंत तक दोनों रेखायें अधिक दूरी रखते हुए चली गयी हों तो व्यक्ति हठी, मिथ्याभिमानी एवं अनुदार होता है। माता-पिता अथवा अपने अभिभावकों से दूर या नियंत्रण मुक्त होने के कारण स्वेच्छाचारी बन जाता है।

इस स्थिति में यदि व्यक्ति की हृदय रेखा सुस्पष्ट, गहरी और पुष्ट हो तो व्यक्ति भावुकता एवं उत्तेजना के वशीभूत रहता है। इस स्वभाव के कारण उसे बहुधा शारीरिक आर्थिक तथा सम्मान की हानि भी उठानी पड़ जाती है परन्तु यदि यह भावुकता पर नियंत्रण कर लेते हैं तो यश और समान अर्जित कर सकते हैं।

3. सीधी और सुस्पष्ट मस्तिष्क रेखा व्यक्ति के मानसिक रूप से व्यवस्थित होने की परिचायक होती है। उसके दिमाग में कोई किसी प्रकार की उलझन नहीं होती और वह शीघ्र तथा उचित निर्णय लेने में सक्षम होता है।

4. यदि मस्तिष्क रेखा छोटी एवं अस्पष्ट हो तो व्यक्ति विक्षिप्त-सा रहता है और उसका जीवन कठिनाइयों तथा कष्टों में बीतता है।

5. यदि मस्तिष्क रेखा व्यक्ति की हथेली के बीच तक पहुंचकर नीचे झुकती हुई रुक गयी हो तो व्यक्ति धनलोलुप, कामी और भोगी बनता है।

6. यदि मस्तिष्क रेखा नीचे आकर ऊर्ध्व चन्द्र की ओर झुकी हुई हो तो व्यक्ति दृढ़ विचारों वाला, विवेकी, धैर्यवान तथा अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखने वाला होता है।

7. यदि मस्तिष्क रेखा नीचे आकर निम्न चन्द्र तक पहुंच रही हो तो व्यक्ति अत्यन्त भावुक हो जाता है और अपनी विवेक-बुद्धि का उपयोग नहीं कर पाता।

8. तीक्ष्ण बुद्धि, प्रबल स्मरणशक्ति एवं तीव्र विचार शक्ति के लिए मस्तिष्क रेखा का लम्बी, गहरी तथा कटी-फटी न होना आवश्यक है।

9. यदि मस्तिष्क रेखा आगे चलकर हृदय रेखा को छूती हो तो ऐसा व्यक्ति कई प्रेमिकायें रखता है, परन्तु उसका प्रेम बंटा रहता है। यदि यह रेखा हृदय रेखा से काफी दूर तक लिपटती चली गयी हो तो व्यक्ति क्रोध के वशीभूत होकर किसी प्रेमिका की हत्या भी कर देता है।

10. दोषरहित मस्तिष्क रेखा के साथ हृदय रेखा निर्बल हो तो तार्किक

और व्यावहारिक होता है। अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिये वह कठोर निर्णय ले सकता है और बड़े-से-बड़ा बलिदान भी कर देता है।

11. लहराती हुई मस्तिष्क रेखा व्यक्ति की अस्थिर बुद्धि की प्रतीक होती है। उसके कहने और करने में अंतर रहता है।

12. यदि मस्तिष्क रेखा बीच-बीच में टूट रही हो तो वह व्यक्ति की मानसिक अस्वस्थता को परिलक्षित करती है। ऐसे व्यक्ति न तो अपने बचनों को निभा पाते हैं न नियमों का ही पालन कर पाते हैं।

13. मस्तिष्क रेखा जिस आयु खंड में हृदय रेखा को काटती है, व्यक्ति को उस अवधि में भारी कष्ट उठाना पड़ता है।

14. यदि जंजीर की शक्ल की मस्तिष्क रेखा हो तो वह मस्तिष्क सम्बंधी रोग बढ़ाती है। व्यक्ति हत्या या आत्महत्या भी कर सकता है।

15. मस्तिष्क रेखा यदि बृहस्पति पर्वत के नीचे टूट रही हो तो व्यक्ति के बाल्यकाल में गम्भीर चोट लगती है, यदि रेखा शनि पर्वत के नीचे टूटी हो तो आयु के 20-25 वर्ष के बीच धारदार हथियार से चोट पहुंचती है, यदि यह रेखा सूर्य पर्वत के नीचे टूटी हो तो व्यक्ति को नौकरी या सेवा कार्यकाल में अपकीर्ति मिलती है और यदि मस्तिष्क रेखा बुध पर्वत के नीचे टूटी हो तो व्यक्ति का दिवाला निकल जाता है।

16. चंद्र पर्वत की ओर मस्तिष्क रेखा का मुड़ना व्यक्ति को अव्यावहारिक एवं कल्पनाशीलता को दर्शाता है। इसके साथ यदि हृदय रेखा सुविकसित हो तो व्यक्ति लेखक, कवि अथवा चित्रकार बनता है।

17. यदि मस्तिष्क रेखा घूमकर शुक्र पर्वत की ओर आ रही हो तो वह व्यक्ति की मानसिक परिपक्वता प्रकट करती है। ऐसा व्यक्ति स्त्रियों में लोकप्रियता प्राप्त करता है।

18. जिस व्यक्ति के हाथ में दोहरी मस्तिष्क रेखा होती है और वह सीधी चल रही हो तो व्यक्ति के पास अपार धन-सम्पदा होती है। वह यश प्राप्त करता है और ऐश्वर्य भोगता है। ऐसे व्यक्ति सफल प्रशासक प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ अथवा प्रभावशाली न्यायाधीश बनते हैं। निम्न परिवार वर्ग में जन्म लेकर भी वे उच्च पद तक पहुंच जाते हैं।

19. यदि मस्तिष्क रेखा का अंत दो शाखाओं में हो रहा हो तो वह व्यक्ति हमेशा दुविधाजनक स्थिति में रहता है।

20. मस्तिष्क रेखा पर गुरु पर्वत के नीचे द्वीप का चिन्ह वाला व्यक्ति विकृतावस्था में रहता है, शनि पर्वत के नीचे द्वीप का चिन्ह वाला व्यक्ति

35-40 वर्ष की आयु में पागल हो जाता है, सूर्य पर्वत के नीचे द्वीप का चिन्ह मानसिक कमियों को प्रदर्शित करता है तथा मस्तिष्क रेखा पर बुध पर्वत के नीचे द्वीप के चिन्ह वाला व्यक्ति किसी विस्फोट में मारा जाता है।

21. किसी व्यक्ति के दायें हाथ की मस्तिष्क रेखा सबल हो किन्तु बायें हाथ की मस्तिष्क रेखा दुर्बल हो तो वह व्यक्ति अपनी उन्नति स्वयं करते हैं वे परिश्रमी, स्वावलम्बी और काम में संलग्न रहने वाले होते हैं।

22. यदि किसी व्यक्ति के दायें हाथ पर मस्तिष्क रेखा दुर्बल हो किन्तु बायें हाथ पर सबल हो तो वह दुराचारी और नीच प्रकृति का होता है। अपनी योग्यताओं का कोई सदुपयोग नहीं करता।

23. मस्तिष्क रेखा का अपना पूरी लम्बाई में सीधा या ढलुआ होना व्यक्ति के भौतिकवादी विचारधारा को दर्शाता है। ऐसे व्यक्ति अपनी व्यावहारिक बुद्धि के बल पर सफलता प्राप्त करते हैं। यद्यपि उनमें विवेक-बुद्धि और तर्कशक्ति की कमी होती है।

24. मस्तिष्क रेखा अगल-बगल से कई पतली रेखायें मस्तिष्क रेखा से निकाल रही हों तो व्यक्ति अस्थिर चित्त वाला और विश्वासघात करने वाला होता है।

मस्तिष्क रेखा पर चिन्ह

मस्तिष्क रेखा पर क्रॉस का चिन्ह सिर पर दुर्घटना के कारण चोट लगने की सूचना देता है।

मस्तिष्क रेखा पर अर्द्धचन्द्र का चिन्ह व्यक्ति को कुकर्मी बनाता है और नीच कर्मों में ही उसकी मृत्यु होती है।

मस्तिष्क रेखा पर श्वेत बिन्दु सफलता के प्रतीक और काले मानसिक विकृति के सूचक होते हैं।

मस्तिष्क रेखा पर सूर्य पर्वत के नीचे वृत्त का चिन्ह आंखों की बीमारियों का संकेत देता है। तिल या धब्बा आंखों के अंधत्व तथा कानों के बहरेपन का द्योतक होता है।

मस्तिष्क रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह दुर्घटना में चोट लगने की सूचना देता है और वृत्त का चिन्ह व्यक्ति में सूझबूझ की कमी बताता है।

मस्तिष्क रेखा यदि चन्द्र पर्वत पर समाप्त हो रही हो और अंत में बिन्दु हो तो व्यक्ति के जल में डूबने का भय रहता है।

मस्तिष्क रेखा पर वर्ग का चिन्ह शुभ माना जाता है, परन्तु त्रिभुज का

चिन्ह भाग्यहीनता का परिचायक होता है। यदि मस्तिष्क रेखा शनि रेखा को पार करने से पूर्व ही समाप्त हो जाये और उस पर क्रॉस का चिन्ह बना हो तो व्यक्ति की असमय में ही मृत्यु हो जाती है।

यदि मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा दोनों बुध पर्वत के नीचे मिलती हों तो भी व्यक्ति असमय में ही मर जाता है।

3. हृदय रेखा

हृदय रेखा का सम्बंध मनुष्य के भावनात्मक जीवन से होता है। समस्त मानवीय विशिष्टतायें जैसे प्रेम, करुणा, दया, क्रोध, भय, आश्चर्य, हास्य, क्षमा इत्यादि का स्रोत स्थान हृदय ही है। यदि मनुष्य के पास जीवन और मस्तिष्क है परन्तु हृदय नहीं तो उसका जीवन अपूर्ण ही कहा जाता है। मन अर्थात् हृदय मनुष्य एवं परमात्मा के बीच एक सेतु के समान है। जीवन की सफलता, मानसिक शांति, भौतिक सुख एवं शारीरिक स्वस्थता को भी हृदय रेखा प्रकट करती है।

प्रायः प्रत्येक मनुष्य के हाथ में हृदय रेखा होती है परन्तु जिन लोगों के हाथ में हृदय रेखा नहीं होती वे हृदय रोगों से कष्ट पाते हैं। ऐसे लोगों का जीवन विलासितापूर्ण होता है। वे कठोर हृदय, कुकर्मी तथा कपटी होते हैं। डाकू भी बन जाते हैं।

उद्गम स्थान की दृष्टि से हृदय रेखा को निम्न प्रकार से पहचाना जाता है–

1. तर्जनी तथा मध्यमा के मध्य से–यदि हृदय रेखा गुरु पर्वत की उंगली तथा शनि पर्वत की उंगलियों के बीच से निकल रही हो तो व्यक्ति शान्त और संयत स्वभाव, उदार व दयालु प्रकृति का होता है। इनमें बदले की भावना बहुत कम होती है। ये सच्चे और निष्ठावान या प्रेमी होते हैं। ये प्रेम का प्रदर्शन भी नहीं करते। ऐसे व्यक्ति किसी को धोखा नहीं देते और पूरी तरह आस्तिक होते हैं।

2. बृहस्पति पर्वत के मध्य से–यदि हृदय रेखा बृहस्पति पर्वत क्षेत्र के मध्य से प्रारम्भ हो रही हो तो व्यक्ति परोपकारी, दयालु और उदारहृदय होता है। इनकी आदर्शप्रियता और महत्वाकांक्षायें उच्च वर्ग के लोगों से मैत्री सम्बंध बनाने में सहायक होती हैं। इस प्रकार की रेखा वाले व्यक्ति का विवाह अपने से ऊंचे स्तर के परिवार में होता है। इस रेखा वाली युवती सच्ची प्रेमिका होती है। वह एक ही व्यक्ति से प्रेम करती है। इनमें बदले

की भावना नहीं होती। अपनी मैत्री, निष्ठा या प्रेम का प्रतिदान न मिलने पर चुपचाप सहन कर लेते हैं।

3. शनि पर्वत से—इस प्रकार की हृदय रेखा वाले व्यक्ति प्रेम सम्बंधों में स्वार्थी और धोखेबाज होते हैं। सिर्फ अपनी वासना-पूर्ति के लिये प्रेम प्रदर्शन करते हैं। झूठी कसमें खाते हैं।

ऐसी रेखा वाले व्यक्ति अनुचित तरीकों से दूसरों की सम्पत्ति हड़पने में चतुर, आडम्बरप्रिय, धोखेबाज तथा अहसान-फरामोश होते हैं। ऐसे लोग शीघ्र ही समाज में घृणा के पात्र बन जाते हैं। इनका जीवन का अंत कष्टों में होता है।

यदि ऐसी रेखा वाले हाथ में सबल मस्तिष्क रेखा न हो तो व्यक्ति में आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता का पूर्ण अभाव रहता है। स्वतंत्र रूप से कोई कार्य कर सकना इनके वश की वात नहीं होती और वे साधारण नौकरी आदि से जीवन यापन करते हैं।

4. गुरु पर्वत तथा शनि पर्वत के बीच से—यदि हृदय रेखा का प्रारम्भ बृहस्पति पर्वत तथा शनि पर्वतों के मध्य से हो रहा हो तो व्यक्ति का प्रेममय जीवन भी सुखी नहीं होता, घोर परिश्रम करने पर ही उसे सफलता मिल पाती है। ऐसे लोग अपने प्रेम को प्रकाश में नहीं लाते और सच्चा प्रेम करते हैं, उसे निबाहते हैं तथा आदर्श प्रेमी साबित होते हैं। ऐसे लोग प्रेम को आडम्बर नहीं बनाते परन्तु बहुत सोच-समझकर किसी से प्रेम सम्बंध बनाते हैं।

5. सूर्य पर्वत से—ऐसी हृदय रेखा के उद्गम वाले व्यक्तियों का हृदय दुर्बल और स्वभाव चिड़चिड़ा होता है। ये लोग जिम्मेवारी के कामों से बचते हैं तथा दूसरों की बुराई करने में खूब रुचि लेते हैं। ऐसे लोग दुःखी व्यक्तियों की सहायता न कर उनका अपमान करना पसंद करते हैं।

ऐसी हृदय रेखा वाले व्यक्ति हृदय की घबराहट, हार्ट अटैक, कम्पन और हृदय की बीमारियों से ग्रस्त रहते हैं।

ऐसे व्यक्तियों के मन में ममता, दया और प्रेम का अभाव रहता है। प्रेम के सामने में वे बड़े अधीर और आतुर होते हैं।

6. हथेली के पार से—बहुत कम लोगों के हाथों में हृदय रेखा हथेली के पार से तर्जनी-मध्यमा उंगलियों के बीच से होकर गुरु पर्वत के नीचे से गुजरती है। इस प्रकार की रेखा वाले व्यक्ति अतिरेक से ग्रस्त रहते हैं। प्रेम करेंगे तो पूरी निष्ठा से और घृणा करेंगे तो पूरी तीव्रता से। मित्रता और प्रेम पूरी वफादारी से निभाते हैं और प्राणों की भी चिन्ता नहीं करते, उसी

शत्रुता और घृणा का बदला भी प्राणायण से लेने के लिये सदा तत्पर रहते हैं। ऐसे व्यक्ति कठोर परिश्रमी और अत्यन्त महत्वाकांक्षी होते हैं। यश, मान-सम्मान, पद तथा धन की प्राप्ति के लिये सदैव चेष्टा करते रहते हैं, अपनी लक्ष्य एवं उद्देश्य की प्राप्ति के लिये वे कुछ भी कर सकने को उद्यत रहते हैं।

इस प्रकार की रेखा यदि नीचे झुक रही हो तो व्यक्ति की इच्छायें अधूरी रह जाती हैं। ऐसा व्यक्ति दूसरे के प्रेम को देखकर ईर्ष्यालु हो जाता है परन्तु अपने प्रेम के लिये सब कुछ न्यौछावर कर देता है। ऐसा व्यक्ति कामातुर भी रहता है। यदि यह रेखा हथेली के छोर पर ऊपर उठ रही हो तो व्यक्ति के मनोरथ पूरे हो जाते हैं और वह सफलता के साथ-साथ यश तथा सम्मान भी प्राप्त करता है।

7. त्रिगुट उद्गम—यदि हृदय रेखा का प्रारम्भ जीवन रेखा तथा मस्तिष्क रेखा के उद्गम स्थल से हो; अर्थात् यह तीनों रेखायें एक ही स्थान से आरम्भ हो रही हों तो व्यक्ति के ऊपर संकट आता है। यदि इस प्रकार की हृदय रेखा कटी या टूटी हुई हो तो व्यक्ति को प्रेम में निराश होना पड़ता है।

कुछ अन्य तथ्य

1. यदि हृदय रेखा से निकलकर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिल रही हो तो वह व्यक्ति अपने उद्देश्य एवं लक्ष्य को पा लेने में सफल होता है। उसे हर क्षेत्र में विजय प्राप्त होती है।

2. तर्जनी उंगली और मध्यमा उंगली के बीच से प्रारम्भ होने वाली हृदय रेखा से यदि एक रेखा गुरु पर्वत तक पहुंच रही हो तो उत्तेजित अवस्था में वाचाल हो जाता है तथा अपने कष्टों और दुःखों का वर्णन अतिशयोक्ति-पूर्ण ढंग से करने वाला होता है।

3. तर्जनी एवं मध्यमा उंगलियों के मध्य से निकली हृदय रेखा यदि किसी अन्य रेखा द्वारा काटी गयी हो तो व्यक्ति को उसकी प्रेमिका धोखा देती है।

4. यदि हृदय रेखा मध्यमा अर्थात् शनि की उंगली के पास झुक रही हो और मस्तिष्क रेखा को स्पर्श कर ले तो व्यक्ति पर संकट आ सकता है।

5. यदि हृदय रेखा पूरी तरह मिलकर मस्तिष्क रेखा से एक हो जाये तो व्यक्ति में भावुकता एवं व्यावहारिकता का उत्तम समन्वय होता है। ऐसा व्यक्ति दूसरे की भावनाओं का सम्मान करने वाला और अपने कार्यों को

निष्ठापूर्वक पूर्ण करने वाला होता है। वह अपने सिद्धान्तों तथा लक्ष्यों से विचलित नहीं होता। अकारण न तो शत्रुता करता है न वाद-विवाद के झंझटों में पड़ता है।

6. यदि हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा को काटकर आगे जा रही हो तो उस आयु खंड में व्यक्ति को गम्भीर बीमारी लग सकती है।

7. यदि हृदय रेखा अपनी सामान्य स्थिति से कुछ नीचे उतर आये और मस्तिष्क रेखा अपने सामान्य मार्ग से ऊपर की ओर चल पड़े तथा हृदय रेखा से संयुक्त होकर चले तो यह स्थिति धन-सम्पत्ति की प्राप्ति की सूचक होती है। ऐसा व्यक्ति धन के लोभ में कभी-कभी गम्भीर अपराध भी कर लेता है।

8. यदि हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा की ओर झुक रही हो तो व्यक्ति अंधविश्वासी होता है और प्रेम, मित्रता अथवा धार्मिक मामलों में धोखा खा जाता है।

9. अनेक स्थानों पर टूटी-फूटी हृदय रेखा अस्वस्थता एवं हृदय रोग की द्योतक है तथा प्रेम में निराशा को प्रकट करती है।

10. असामान्य रूप से छोटी रेखा हृदय की दुर्बलता एवं कठोर स्वभाव का संकेत देती है।

11. यदि हृदय रेखा सूर्य पर्वत के पास टूटी हो तो व्यक्ति घमंडी होता है, शनि पर्वत के नीचे टूटी हो तो भयंकर रोग की सूचक होती है।

12. छोटी-छोटी शाखाओं में बंटकर चल रही हृदय रेखा वाला व्यक्ति अस्थिर चित्त वाला होता है। किसी से स्थायी सम्बंध नहीं रख पाता।

13. यदि हृदय रेखा को आड़ी रेखायें काटें तो व्यक्ति हृदय रोग का मरीज होता है।

14. यदि हृदय रेखा से कई छोटी-छोटी शाखायें मस्तिष्क रेखा की ओर चल रही हों तो वह व्यक्ति जीवन भर हृदय और मस्तिष्क के आंतरिक द्वन्द्व से त्रस्त रहता है, किसी निर्णय पर पहुंच पाना उसके लिये समस्या बन जाता है।

15. यदि हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा से लम्बी, स्पष्ट और गहरी हो तो व्यक्ति का हृदय विशाल होता है और वह संसार में कीर्ति प्राप्त करता है।

16. जिस व्यक्ति के हाथ में दोहरी हृदय रेखा हो वह परोपकारी, दयालु, साहसी और सबका आदर करने वाला होता है। अपनी प्रेमिका से अगाध प्रेम करता है, ऐसा व्यक्ति देश-विदेश में प्रसिद्धि और सम्मान पाता है।

17. यदि हृदय रेखा से कोई शाखा निकलकर मंगल पर्वत की ओर जा रही हो तो व्यक्ति कठोरहृदय होता है और प्रेम में असफल रहने पर कुछ भी करने पर उतारू हो जाता है।

18. असामान्य चौड़ी हृदय रेखा वाला व्यक्ति हृदय की दुर्बलता से पीड़ित रहता है।

19. यदि हृदय रेखा जहरीली हो और शनि पर्वत से निकल रही हो तो व्यक्ति विपरीत योनि के प्रति घोर घृणा रखेगा।

20. यदि किसी स्त्री की हृदय रेखा जंजीर की तरह गुंथी हुई हो और पतली हो तो वह स्त्री कम संतान वाली अथवा बांझ होगी।

21. यदि किसी स्त्री की हृदय रेखा शनि पर्वत पर जंजीर जैसी हो गयी हो तो वह स्त्री एक से अधिक पति रखेगी।

22. जंजीर के समान हृदय रेखा वाले व्यक्ति रहस्यमय होते हैं। उनकी कथनी और करनी में काफी अंतर होता है। वे विश्वस्त नहीं होते।

23. लहरदार हृदय रेखा वाले व्यक्ति का स्वभाव एवं विचार स्थिर नहीं होते और वह कभी एक बात पर टिका नहीं रह पाता।

24. जिस पर्वत से आकर कोई रेखा हृदय रेखा से मिलती है उस पर्वत का प्रभाव बढ़ा देती है।

25. यदि स्त्री के हाथ में हृदय रेखा शनि पर्वत के नीचे टूटी हो तो उसे प्रसव काल में घोर कष्ट उठाना पड़ता है।

26. हृदय रेखा से ऊपर जाने वाली रेखायें आशाजनक एवं नीचे जाने वाली रेखायें निराशा की सूचक होती हैं।

हृदय रेखा पर चिन्ह

1. यदि हृदय रेखा का रंग गहरा लाल हो तो व्यक्ति अत्यधिक कामुक होगा और प्रेम के लिये अधीर रहेगा। पीली रंग की हृदय रेखा भी व्यक्ति को व्यसनी और विषयी बना देती है। गहरा पीला रंग व्यक्ति को असमाजिक बनाता है।

2. बुध पर्वत के नीचे हृदय रेखा पर छोटे-छोटे द्वीप हों तो यह हृदय रोग से पीड़ित होने की सूचना देते हैं। व्यक्ति अनैतिक आचरण वाला होता है।

3. हृदय रेखा पर श्वेत बिन्दु के चिन्ह सफल दाम्पत्य जीवन के प्रतीक होते हैं।

4. हृदय रेखा पर काले बिन्दुओं के चिन्ह व्यक्ति के विवाह में विघ्न कारक होते हैं।

5. हृदय रेखा पर त्रिभुज का चिन्ह मित्र के सहयोग से व्यवसाय में सफलता अथवा नौकरी में उच्च पद दिलवाता है। यदि त्रिभुज श्वेत रंग का हो तो व्यक्ति प्रेम सम्बंधों या मित्रता के माध्यम से धन, यश और सम्मान प्राप्त करता है।

6. हृदय रेखा यदि हथेली के बीच में त्रिकोण अर्थात् त्रिभुज बना रही हो तो व्यक्ति संसार में प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

7. हृदय रेखा पर द्वीप के चिन्ह वाला व्यक्ति अपने मित्र अथवा प्रेमी द्वारा हानि उठाता है या कष्ट पाता है।

8. हृदय रेखा पर गुरु पर्वत के ऊपर द्वीप के चिन्ह वाला व्यक्ति भी अपने प्रेमी के कारण पद और सम्मान की हानि उठाता है।

9. हृदय रेखा पर शनि पर्वत के ऊपर द्वीप के चिन्ह प्रेम सम्बंधों में धन अथवा प्रेमी के कारण व्यवधान की सूचना देते हैं। यदि यह चिन्ह हृदय रेखा की तुलना में गहरे हों तो धन की कमी के कारण प्रेम में वियोग का दुःख उठाना पड़ सकता है।

10. यदि हृदय रेखा पर सूर्य पर्वत के नीचे द्वीप हो तो व्यक्ति अपने प्रताप अथवा मैत्री सम्बंधों के कारण समाज में सम्मान और यश का ह्रास झेलता है।

11. यदि हृदय रेखा बृहस्पति पर्वत के नीचे भंग हो रही हो तो व्यक्ति के प्रेम अपने मित्र से आदर्श, सामाजिक या आर्थिक स्तर अथवा स्थान के अंतरों के कारण सम्बंध बन नहीं पाते या टूट जाते हैं।

12. यदि हृदय रेखा शनि क्षेत्र के नीचे भंग हुई हो तो प्रेम या मित्रता के सम्बंध परिस्थितिवश विवशता के कारण भंग हो जाते हैं। आर्थिक अथवा धार्मिक स्थिति और संस्कार भी इस विशृंखलता के कारण हो सकते हैं।

13. बुध क्षेत्र पर हृदय रेखा का भंग दिखना या खंडित होना व्यक्ति अपने अस्थिर चित्त, स्वार्थी होने अथवा कामुकता के कारण उसके प्रेम सम्बंधों को नष्ट कर देता हैं।

14. हृदय रेखा पर मार्ग में नक्षत्र के चिन्ह भयंकर बीमारी के सूचक हैं।

15. यदि हृदय रेखा के अंतिम सिरे पर एक तारा बन रहा हो तो व्यक्ति की आकस्मिक दुर्घटना में मृत्यु होती है।

16. हृदय रेखा का द्विजिहाकार होना व्यक्ति की निष्पक्षता, सत्यता एवं परोपकारी भावना की प्रतीक होती है।

17. जिन व्यक्तियों की हृदय रेखा गुरु पर्वत के नीचे त्रिशूलवत् बन जाये वह व्यक्ति युवावस्था में ही विक्षिप्त हो जाता है।

4. भाग्य रेखा

भाग्य रेखा को प्रारब्ध रेखा या शनि रेखा भी कहते हैं, क्योंकि हथेली पर यह रेखा किसी भी स्थान से आरम्भ हो रही हो तो यह शनि क्षेत्र की ओर ही अग्रसर अथवा समाप्त होती है। हथेली पर एक से अधिक भी भाग्य रेखा हो सकती हैं परन्तु ऐसी रेखाओं में जो सर्वाधिक लम्बी, स्पष्ट तथा सुदृढ़ होती है वही मुख्य भाग्य रेखा कहलाती है, शेष सभी उसकी सहायक भाग्य रेखायें होती हैं। सामान्यतः भाग्य रेखा कलाई के मणिबंध से प्रारम्भ होकर शनि पर्वत या शनि क्षेत्र तक चलती है। हथेली पर काल की गणना भी मणिबंध से शनि पर्वत तक की दूरी के अनुसार की जाती है।

मनुष्य के जीवन में प्रारब्ध अर्थात् भाग्य का प्रमुख स्थान है। यदि जीवन में सब कुछ श्रेष्ठ और उपलब्ध है परन्तु प्रारब्ध नहीं तो जीवन व्यर्थ ही हो जाता है। स्वस्थ जीवन, उदार हृदय तथा विकसित मस्तिष्क बिना भाग्य के निष्क्रिय हो जाते हैं। भाग्य रेखा को इसी कारण ऊर्ध्व रेखा भी कहा गया है। यह रेखा व्यक्ति की भौतिक उपलब्धियों, सांसारिक जीवन तथा धन वैभव के बारे में जानकारियां प्रदान करती है।

जिन लोगों के हाथों में भाग्य रेखा होती है वे अपनी उन्नति और प्रगति में अपने परिवार, मित्रों अथवा किसी अन्य साधन की सहायता प्राप्त कर लेते हैं, परन्तु जिन लोगों के हाथों में यह रेखा नहीं होती वे स्वावलम्बी बनकर अपना अस्तित्व स्थापित करते हैं उन्हें किसी की सहायता नहीं मिल पाती। ऐसे व्यक्ति जीवन पर परिस्थितियों से संघर्ष करते रहते हैं और अपने प्रयत्नों, योग्यता तथा साहस से ही अपने भाग्य का निर्माण स्वयं करते हैं। ऐसे व्यक्तियों को न समाज से ही कोई सहायता मिलती है और न दैवी शक्तियों से। यदि ऐसे लोग कठोर परिश्रम न करें तो उन्हें जीवन में कुछ भी प्राप्त नहीं होता। भाग्य रेखा के होने से व्यक्ति अपनी शारीरिक, मानसिक और नैसर्गिक क्षमताओं का पूरा-पूरा उपयोग कर सकता है। यह रेखा स्पष्ट करती है कि तुलनात्मक दृष्टि से ऐसे व्यक्ति का जीवन अन्य लोगों से ज्यादा सुखी, सम्पन्न एवं सफल है। भाग्य रेखा की अनुपस्थिति में यदि व्यक्ति के हाथ पर अन्य लक्षण जैसे ग्रह क्षेत्र, रेखायें, चिन्ह आदि शुभ और प्रबल हों तो व्यक्ति अपने शारीरिक श्रम और बुद्धिबल से सफलता प्राप्त कर लेता है तथा अपार धन-वैभव का सुख भोगता है।

विशेष तथ्य

यदि भाग्य रेखा निर्बल और कुरूप होती है तो इस पर बने चिन्ह अधिक प्रभावी हो जाते हैं। वर्गाकार, चमचाकार एवं दार्शनिक हाथों पर इस रेखा का लेशमात्र अस्तित्व भी बड़ा महत्व रखता है, जबकि बौद्धिक, कलात्मक तथा पतले दार्शनिक हाथों में सुविकसित और सुडौल भाग्य रेखा भी अपेक्षाकृत कम प्रभावशील होती है।

यदि हाथ के सभी ग्रह पर्वत अवनत स्थिति में हों तो अत्यन्त श्रेष्ठ भाग्य रेखा भी व्यक्ति को सुखी एवं सफल बना पाने में समर्थ नहीं हो पाती।

टूटी-फूटी एवं अस्त-व्यस्त भाग्य रेखा जीवन में आने वाली कठिनाइयों और कष्टों को परिलक्षित करती है। भाग्य रेखा जिस आयु खंड में कटी हो उस आयु वर्ष में किसी अशुभ का संकेत देती है। यदि यह रेखा अनेक स्थानों पर कटकर चल रही हो तो ऐसा व्यक्ति अनेक कठिनाइयों के उपरान्त भी सफलता पा लेता है।

आड़ी रेखाओं द्वारा भाग्य रेखा का काटना अशुभ है। व्यक्ति के उद्देश्य की पूर्ति में बाधा पड़ती है, उन्नति अवरुद्ध हो जाती है। भाग्य रेखा में से निकलकर कोई शाखा जिस पर्वत पर जाकर मिलती है—व्यक्ति के जीवन में उस पर्वत के गुणों को बढ़ा देती है।

यदि स्पष्ट भाग्य रेखा हृदय रेखा तक पहुंचती हो और वह कहीं कटी-फटी या टूटी-फूटी न हो तो व्यक्ति को अपार धन और प्रेम की उपलब्धि होती है।

यदि भाग्य रेखा और विवाह रेखा एक-दूसरे से मिल जायें तो व्यक्ति का दाम्पत्य जीवन कष्टों एवं संकटों से भर जाता है। चंद्र पर्वत से चलकर आई कोई रेखा यदि भाग्य रेखा के साथ-साथ चले उसमें मिले नहीं तो व्यक्ति स्वावलम्बी होकर उन्नति करता है। यदि ऐसी रेखा भाग्य रेखा को पार करके गुरु पर्वत की ओर चली गयी हो तो व्यक्ति का व्यक्तित्व प्रभावशाली होता है।

भाग्य रेखा के साथ सहायक रेखा शुभफलदायक होता है। भाग्य रेखा में से निकलकर ऊपर की ओर जाने वाली रेखायें व्यक्ति की उन्नति और महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति कराने वाली होती हैं, परन्तु नीचे की ओर आने वाली रेखायें असफलता एवं कष्टों की परिचायक होती हैं।

जीवन रेखा से चलकर भाग्य रेखा का स्पर्श करने वाली रेखायें भाग्योदय में बाधक होती हैं।

व्यक्ति की विवेकहीनता एवं भ्रमित बुद्धि के कारण भाग्य अर्थात् शनि रेखा अपने उद्गम स्थान से ही यदि एक से अधिक शाखाओं में बंट गयी हो तो व्यक्ति का भाग्योदय उसके द्वारा की जाने वाली यात्राओं के माध्यम से होता है।

लहरदार भाग्य रेखा व्यक्ति के जीवन में लगातार उतार-चढ़ाव की सूचक होती है।

यदि भाग्य रेखा के उद्गम स्थान से ही उसमें से कोई शाखा निकलकर शुक्र क्षेत्र की ओर चली गयी हो तो व्यक्ति का भाग्योदय विदेश में होता है।

यदि भाग्य रेखा से निकली एक शाखा बुध पर्वत पर जाकर पहुंचे तो व्यक्ति प्रतिभाशाली, कार्यकुशल, विलक्षण रूप से बुद्धिमान, मौलिक प्रतिभा का धनी होता है। ऐसा व्यक्ति उदारहृदय, न्यायप्रिय और विवेकी होता है तथा अपने लक्ष्य एवं कार्य वैज्ञानिक विधि से निष्पादित करता है।

यदि भाग्य रेखा की एक शाखा बुध पर्वत की ओर जाती हुई मस्तिष्क रेखा में जाकर विलीन हो जाये तो व्यक्ति संस्कारी प्रतिभा वाला होता है और अपनी प्रतिभा तथा व्यवहारकुशलता के बल पर सफलता एवं कीर्ति अर्जित करता है। ऐसे व्यक्ति चतुरतापूर्वक अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर लेते हैं।

यदि शनि पर्वत पर भाग्य रेखा को कुछ आड़ी रेखायें काट रही हों तो व्यक्ति का बुढ़ापा दुःखों और कष्टों में बीतता है।

यदि भाग्य रेखा अंत में जाकर दो शाखाओं में बंट रही हो और उसमें एक शाखा शनि पर्वत तथा दूसरी शाखा गुरु पर्वत पर पहुंच जाये तो व्यक्ति सामाजिक अथवा राजनैतिक क्षेत्र में कार्यकर्त्ता या नेता बनता है। यदि इन दो शाखाओं में एक शाखा यथावत् रहे परन्तु दूसरी शाखा सूर्य पर्वत पर जा पहुंचे तो व्यक्ति संगीत, कविता, चित्रकला, मूर्तिकला अथवा भवन-निर्माण विद्या में निपुण होगा।

यदि भाग्य रेखा अंत में तीन भागों में विभाजित होकर उसका एक भाग गुरु पर्वत पर, दूसरा शनि पर्वत पर तथा तीसरा भाग सूर्य पर्वत पर जा मिले तो व्यक्ति उच्च विचारों वाला और महत्वाकांक्षी होता है, वह न केवल परिश्रमी और लगनशील बल्कि प्रतिभावान तथा कलात्मक दृष्टिकोण रखने वाला भी होता है। इसका सौभाग्य इसे विश्व में चर्चित और यशग्राही बना देता है। अस्पष्ट, धुंधली और गंदली भाग्य रेखा वाला प्राणी बलवीर्य से हीन तथा

अभावों में जीवन व्यतीत करता है; परन्तु सुस्पष्ट, निर्दोष एवं गहरी भाग्य रेखा वाला व्यक्ति शीघ्र उन्नति कर लेता है।

यदि भाग्य रेखा उद्गम से चलकर हथेली के मध्य में यकायक आकर समाप्त हो जाये तो व्यक्ति को परिस्थितिजन्य दु:खों का सामना करना पड़ता है और कष्ट उठाने पड़ते हैं।

यदि समय रेखा सीधी शनि क्षेत्र तक चली गयी हो परन्तु हाथ पर मस्तिष्क रेखा छोटी और कमजोर हो तो व्यक्ति का अपना कोई अस्तित्व नहीं रहता, वह दूसरों के हाथों की कठपुतली बन जाता है, उसकी इच्छायें भी सीमित रह जाती हैं और वह अपने व्यक्तित्व या धन का भी सदुपयोग नहीं कर पाता।

यदि भाग्य रेखा हृदय रेखा का स्पर्श करते ही रुक जाये तो वह व्यक्ति अपनी भावुकता, स्वार्थपरता तथा कामुकता के कारण स्वयं को भाग्यहीन बना लेता है।

अधिक लम्बी भाग्य रेखा अर्थात् शनि ग्रह के क्षेत्र को पार कर उसकी उंगली मध्यमा को स्पर्श करने लगे तो अशुभ होती है। सर्प-जिह्वाकार भाग्य रेखा भी अशुभ समझी जाती है।

यदि भाग्य रेखा बढ़ती हुई मध्यमा अर्थात् शनि क्षेत्र की उंगली के मूल से आगे बढ़ रही हो, हृदय रेखा मध्यमा उंगली के पास हो तथा शुक्र का क्षेत्र अधिक उन्नत हो तो ऐसा व्यक्ति व्यभिचारी होगा और व्यभिचार के आरोप में जेल की सजा भोगेगा।

यदि भाग्य रेखा मणिबंध रेखा को काटकर आगे बढ़ रही हो तो अशुभ मानी जाती है।

यदि कोई रेखा हथेली के किसी भी भाग से प्रारम्भ होकर भाग्य रेखा के पास आकर उसके समानान्तर चलने लगे तो व्यक्ति को आशातीत सफलतायें मिलती हैं।

यदि भाग्य रेखा शनि पर्वत क्षेत्र की बजाय बृहस्पति पर्वत पर आकर समाप्त हो तो व्यक्ति की समस्त कामनायें पूर्ण होती हैं।

भाग्य रेखा जिस-जिस आयु खंड में स्पष्ट, स्वच्छ एवं गहरी होती है व्यक्ति को उस आयु में विशेष लाभ की सम्भावना होती है।

भाग्य रेखा पर चन्द्र पर्वत से आई कोई एक रेखा आकर मिल रही हो तो उस आयु में विपरीत योनि के प्राणी के आने से भाग्योदय होता है।

भाग्य रेखा की उद्गम स्थिति का फल

भाग्य, प्रारब्ध, ऊर्ध्व अथवा शनि रेखा का प्रारम्भ या उद्गम स्थान हथेली के किसी भी स्थान पर से हो सकता है और उसी के अनुसार इसका प्रभाव होता है। उद्गम स्थान के अनुसार फल निम्न प्रकार से स्पष्ट किये जा रहे हैं–

1. यदि भाग्य रेखा मणिबंध या केतु क्षेत्र से निकलकर शनि पर्वत पर पहुंचती है तो यह भाग्य रेखा की सर्वोत्तम स्थिति कही गयी है, वह जितनी स्पष्ट, गहरी और निर्दोष होगी व्यक्ति में जीवन-संतुलन के गुण, शक्ति एवं सामर्थ्य उतनी ही अधिक मात्रा में होगी। शरीर पुष्ट और मन स्वस्थ रहता है। व्यक्ति अपनी समस्त शारीरिक और बौद्धिक शक्तियों का विकास कर सफलता प्राप्त कर लेता है।

यदि भाग्य रेखा मणिबंध से प्रारम्भ हो और सूर्य रेखा भी गहरी, स्पष्ट एवं निर्दोष हो तो व्यक्ति अपार धन-सम्पत्ति, मान-सम्मान तथा यश प्राप्त करता है और अपने उद्देश्य-प्राप्ति में सफल होता है।

2. यदि भाग्य रेखा शुक्र पर्वत से प्रारम्भ हो रही हो और शनि पर्वत पर जा रही हो तो व्यक्ति अपने बल पर ही सफलता पाता है। उसे अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिये मित्रों अथवा परिवार वालों से किसी प्रकार की सहायता नहीं मिलती बशर्ते कि यह भाग्य रेखा शनि पर्वत पर पहुंचने से पूर्व ही समाप्त हो जाये। यदि यह निर्दोष रहकर शनि पर्वत पर पहुंचती है तो व्यक्ति के भाग्य-निर्माण में उसके इष्ट मित्र, स्वजन अथवा पैतृक सम्पत्ति की मदद मिलती है।

यदि शुक्र क्षेत्र एवं चन्द्र क्षेत्र दोनों से एक-एक रेखा आकर हथेली के बीच में संयुक्त हो जाती है और एक होकर शनि क्षेत्र की ओर चलती है तो व्यक्ति की भावुकता एवं कामुकता उसके भाग्योदय में बाधा बन जाती है, परन्तु यदि यह रेखा अबोध रूप से शनि क्षेत्र तक पहुंच जाये तो आयु के मध्य में व्यक्ति का भाग्योदय होता है और उसे धन-लाभ होता है। यदि यह सम्मलित रेखा बृहस्पति क्षेत्र की ओर जाती है तो व्यक्ति शासन में उच्च पद प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति आदर्शवादी, उदारहृदय एवं साहसी होते हैं।

यदि शुक्र पर्वत से निकली भाग्य रेखा जीवन रेखा को गहराई से काटकर आगे बढ़ रही हो तो व्यक्ति को जीवन में दो बार भारी कष्टों का सामना करना पड़ता है, परन्तु यदि भाग्य रेखा स्वयं जीवन रेखा से कटकर आगे बढ़ रही हो तो शुभ होती है।

शुक्र पर्वत से निकली भाग्य रेखा वाले हाथ के व्यक्ति का भाग्योदय बीस वर्ष की आयु के पश्चात् अथवा विवाह के उपरान्त ही हो पाता है। प्रेम विवाह भी हो सकता है।

भाग्य रेखा जिस स्थान पर जीवन रेखा को काटे आयु के उस भाग में व्यक्ति मस्तिष्क कष्ट भोगता है; अर्थात् वह किसी भयंकर दुर्घटना में घायल हो सकता है, उसका दिवाला निकल सकता है, अथवा कोई महत्वपूर्ण मुकदमा हार सकता है। यह भी सम्भव है कि उसके किसी अति घनिष्ठ स्वजन की मृत्यु हो जाये जिससे व्यक्ति को भारी मानसिक आघात लगे।

शुक्र पर्वत से निकलने वाली भाग्य रेखा वाला व्यक्ति बाल्यावस्था एवं वृद्धावस्था में सुख नहीं पाता, उसे यौवनावस्था में ही सुख मिलता है। ऐसे व्यक्ति की पत्नी (स्त्री हो तो पति) तड़क-भड़क पसंद करने वाली और शौकीन तबीयत की होती है। स्त्री या पति पढ़ा-लिखा होता है और पत्नी मैके से खूब धन लाती है या नौकरी कर धन कमाती है, परन्तु इनका दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं होता—और यदि ऐसी भाग्य रेखा के ऊपर द्वीप का चिन्ह हो तो गम्भीर मनमुटाव या तलाक भी हो सकता है।

3. यदि भाग्य रेखा का उद्गम जीवन रेखा से हो तो व्यक्ति अपने भाग्य का निर्माता स्वयं होता है। ऐसे व्यक्ति अपने प्रारम्भिक काल में दूसरों की सहायता पर निर्भर रहते हैं और किसी के आश्रय से ही आगे बढ़ते हैं; परन्तु युवावस्था में इनका भाग्योदय होता है और अपने परिश्रम तथा लगन से जीवन में सफलतायें प्राप्त करने लगते हैं।

ऐसे व्यक्तियों की भाग्य रेखा जिस आयु में जीवन रेखा से पृथक् होती है उसी आयु से उसका भाग्योदय होता है, उसके बाद यदि भाग्य रेखा स्पष्ट और गहरी है तो आगे का जीवन सुखी और सफल रहता है एवं व्यक्ति की उन्नति का मार्ग खुल जाता है।

4. यदि भाग्य रेखा हृदय रेखा से निकलकर सीधी शनि क्षेत्र पर पहुंचती है तो व्यक्ति का भाग्योदय जीवन के अंतिम चरण में होता है। जीवन का पूर्व अधिकांश भाग परिस्थितियों से संघर्ष करते हुये बीतता है।

यदि इस भाग्य रेखा के त्रिशूलवत् होकर उसका एक सिरा गुरु पर्वत पर, दूसरा शनि पर्वत पर और तीसरा सूर्य पर्वत पर पहुंच रहा हो तो यह शुभ होता है। जिस स्थान से यह रेखा तीन भागों में विभक्त होती है व्यक्ति उसी आयु से उन्नति करना प्रारम्भ करता है और सफलता पाता चला जाता है।

ऐसे व्यक्ति धार्मिक विचारों के तथा परोपकारी होते हैं। धार्मिक कार्यों में दान-पुण्य करते रहते हैं और श्रेष्ठ तथा आदर्श जीवन व्यतीत करते हैं। वे व्यापार में अपार धन कमाते हैं और सम्पन्नता प्राप्त करते हैं।

5. भाग्य रेखा का उद्गम चन्द्र क्षेत्र से होना व्यक्ति के अनिश्चित और परिवर्तनशील भाग्य का सूचक होता है। ऐसे व्यक्ति भावुक, सहृदय और एकान्तप्रेमी होते हैं और उन्नति करते हुये सफलता प्राप्त करते हैं।

ऐसी भाग्य रेखा वाले व्यक्ति स्वतंत्र निर्णय लेने में असमर्थ रहते हैं और इनकी पत्नी इनकी सहायता करती है। अथवा पत्नी अपने पीहर से अपार धन-सम्पत्ति उपलब्ध कराती है। इनका भाग्योदय विवाह के पश्चात् ही होता है। अस्थिर बुद्धि और मन की चंचलता के कारण यदि इनका विवाह 20-25 वर्ष की आयु के बीच नहीं होता तो इनका चारित्रिक पतन हो जाता है। ऐसे व्यक्ति बहुधा प्रेम विवाह या अंतर्जातीय विवाह करते हैं।

इनके जीवन में जलयात्रा का प्रबल योग होता है। ऐसे व्यक्ति सार्वजनिक जीवन के कार्यक्षेत्र में अधिक सकल होते हैं। तीव्र कल्पनाशील से ये लोग उत्तम योजनायें तो बना सकते हैं परन्तु उनका क्रियान्वयन नहीं कर पाते।

यदि ऐसी रेखा शनि पर्वत पर दोमुंही अथवा तीनमुंही हो गयी हो तो वह व्यक्ति अनेक कार्यों से धन कमाता है। यदि ऐसी द्विजिह्वी रेखा की एक शाखा बृहस्पति पर्वत की ओर जा रही हो तो व्यक्ति अपने व्यावसायिक कार्यों अथवा लेखन आदि से प्रचुर धन अर्जित करता है। ऐसा व्यक्ति मृदु स्वभाव का एवं परोपकारी प्रकृति का होता है। यदि इस रेखा की एक शाखा सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो तो अपार धन कमाता है तथा धार्मिक कार्यों में लगाता है। अपनी धार्मिक रुचि के कारण ऐसा व्यक्ति समाज में सम्मानीय और आदर की दृष्टि से देखा जाता है।

ऐसी चंद्र क्षेत्र से निकली भाग्य रेखा के साथ यदि मस्तिष्क रेखा सीधी, पुष्ट और गहरी हो तो व्यक्ति व्यवहारकुशल होता है।

6. भाग्य रेखा का मंगल क्षेत्र से अर्थात् हथेली के मध्य से आरम्भ होना मंगलकारी माना जाता है। इस रेखा वाला व्यक्ति अपनी युवावस्था के समय से पहले कठिनाइयों का सामना करता रहता है, उसकी शिक्षा में बाधायें आती हैं और घर-परिवार में भी उसे उपेक्षा मिलती है, परन्तु आगे चलकर उसके जीवन में संघर्ष कम हो जाते हैं और वह सफलता पाता है। जीवन के मध्य काल से व्यक्ति का अपनी बुद्धिचातुर्य एवं किसी समर्थ व्यक्ति की सहायता

से भाग्योदय होता है। ऐसा व्यक्ति पुलिस अथवा सेना में उच्च पद प्राप्त करता है।

इस रेखा का टूटकर आगे चलना विपत्ति आने का संकेत देता है। इसी प्रकार अवरोधक रेखाओं द्वारा काटना, इस रेखा का लहरदार होना या इस पर द्वीप होना भी दुर्भाग्य का सूचक होता है।

यदि इस भाग्य रेखा के साथ कोई सहायक रेखा न हो तो व्यक्ति अपनी स्वयं की भूलों के कारण बुरी संगति में पड़ जाता है, फिर उसे उन्नति के लिये जीवन में कड़ा संघर्ष करना पड़ता है।

7. यदि भाग्य रेखा का आरम्भ मस्तिष्क रेखा से होता है तो व्यक्ति मध्य आयु के पश्चात् ही सफलता प्राप्त करता है, उससे पूर्व उसका जीवन कष्टमय रहता है और विपरीत परिस्थितियों के कारण हर समय परेशानियों, अनिश्चितता एवं चिन्ताओं से घिरा रहता है।

मध्यायु के पश्चात् ऐसी मस्तिष्क रेखा से प्रारम्भ हुई भाग्य रेखा वाले व्यक्ति अपने बुद्धिकौशल, कार्यकुशलता, निर्णयक्षमता एवं सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार से या तो अत्यंत उच्च और महत्वपूर्ण पद पर पहुंचते हैं अथवा व्यवसाय या उद्योग के क्षेत्र में देदीप्यमान नक्षत्र की तरह चमकने लगते हैं। अपने प्रयत्न तथा योजनाबद्ध कार्यप्रणाली द्वारा अपार धन-सम्पत्ति अर्जित करते हैं और यशस्वी होते हैं।

यदि यह रेखा शनि पर्वत पर द्विजिह्वी हो गयी हो तो व्यक्ति उच्च पद पर पहुंचता है और सभी प्रकार के सुखों का उपभोग करता है। यदि इनमें से एक शाखा बृहस्पति पर्वत पर पहुंच रही हो तो व्यक्ति विदेश में राजदूत का पद प्राप्त करता है।

8. राहु क्षेत्र से आरम्भ होने वाली भाग्य रेखा वाले व्यक्ति भी आयु के उत्तरार्द्ध में ही सफलता प्राप्त करते हैं। लगभग 35 वर्ष की आयु के पश्चात् प्रबल भाग्योदय का योग बनता है और धन, सम्मान, पद, प्रतिष्ठा आदि की प्राप्ति होती है।

इस प्रकार की भाग्य रेखा वाले व्यक्तियों के जीवन का आरम्भिक काल अभावों में ही बीतता है।

यदि इस रेखा की कोई शाखा बृहस्पति पर्वत की ओर जाती है तो व्यक्ति नौकरी में और यदि सूर्य पर्वत की ओर जाती है तो व्यापार में पर्याप्त सफलता प्राप्त करता है।

9. यदि भाग्य रेखा का उद्गम स्थान नेपच्यून पर्वत क्षेत्र से है और यह

...रहित है तो व्यक्ति का बाल्यकाल की अवधि
का विद्यार्थी जीवन प्रतिकूल सामाजिक परिस्थिति में बीतता है, परन्तु
कोई-न-कोई बाहरी संरक्षण प्राप्त होता है। ऐसे बालक मेधावी होते हैं और
उनके विचार मौलिक तथा स्वतंत्र होते हैं, वे उन्नति के पथ पर अग्रसर हो
जाते हैं।

ऐसे व्यक्ति विद्या से विभूषित होकर श्रेष्ठ वक्ता, लेखक, दार्शनिक
अथवा सफल वकील या न्यायाधीश बनते हैं। सद्गुणों से सम्पन्न ऐसे व्यक्ति
सुखी दामपत्य जीवन बिताते हैं तथा विदेश यात्रा भी करते हैं।

यदि ऐसी रेखा द्विजिह्वी हो तो व्यक्ति सभी ओर से सफलतायें प्राप्त
कर उन्नति करता है। ऐसे व्यक्तियों की वृद्धावस्था सुखपूर्वक व्यतीत होती
है।

यदि यह भाग्य रेखा लहरदार, टूटी हुई या जंजीरदार हो अथवा उस
पर द्वीप के चिन्ह हों तो व्यक्ति की प्रगति बाधित होती है और उसे जीवन
में अनेक बार उतार-चढ़ाव झेलने पड़ते हैं।

10. भाग्य रेखा के उद्गम स्थल का दर्शन क्षेत्र होना सुखी जीवन का
संकेत देता है। ऐसे व्यक्ति साहसी और धैर्यवान होते हैं। वे वायुसेना में पायलट
अथवा वायुसेना प्रधान के पद तक पहुंचते हैं। युद्ध काल में अपने शौर्य के
कारण सम्मानित भी होते हैं। इस प्रकार की स्पष्ट और निर्दोष भाग्य रेखा
की एक शाखा यदि गुरु पर्वत पर जा रही हो और मुख्य रेखा शनि पर्वत
पर पहुंच रही हो तो व्यक्ति अपार धन और मान-सम्मान प्राप्त करता है।

भाग्य रेखा पर चिन्ह

भाग्य रेखा एक परिवर्तनशील रेखा है और इस पर पाये जाने वाले चिन्ह
भी उसी प्रकार परिवर्तित होते रहते हैं। इन चिन्हों का फलों पर बहुत प्रभाव
पड़ता है और कभी-कभी तो यह भाग्य रेखा के उद्देश्य को ही उलट-पलट
कर देते हैं।

मणिबंध की ओर से आ रही भाग्य रेखा हथेली के मध्य में एक क्रॉस
का चिन्ह बनाती हुई समाप्त हो रही हो तो यह अत्यन्त अशुभ है। व्यक्ति
को अचानक धन-हानि, व्यवसाय अथवा नौकरी की समाप्ति, सम्पत्ति का
नुकसान या किसी स्वजन के निर्धन का दुःख उठाना पड़ता है। कभी-कभी
किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त होने वाली सहायता से भी वंचित होना पड़ता है।
यदि यह स्थिति किसी व्यक्ति के दोनों हाथों में हो तो दुर्भाग्य से कष्टों या
पीड़ा के कारण उस व्यक्ति की मृत्यु तक हो सकती है।

छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी भाग्य रेखा व्यवसाय आदि में अनिश्चितता की सूचक होती है और सफलता संदिग्ध रहती है।

यदि भाग्य रेखा तथा चन्द्र रेखा के बीच में क्रॉस का चिन्ह हो तो व्यक्ति की यात्रायें निराशाजनक होती हैं।

यदि क्रॉस का चिन्ह भाग्य रेखा को स्पर्श कर रहा हो या उसके ऊपर हो तो यह आर्थिक हानि का प्रतीक है।

यदि भाग्य रेखा, मस्तिष्क रेखा एवं हृदय रेखा के संगम पर क्रॉस का चिन्ह हो तो व्यक्ति धार्मिक विचारों वाला होता है।

यदि भाग्य रेखा से जुड़ा हुआ क्रॉस का चिन्ह जीवन रेखा के पास हो तो व्यक्ति के व्यवसाय में उसी के परिजन या सम्बंधी लोग बाधा पहुंचायेंगे।

यदि दोनों हाथों की भाग्य रेखाओं पर एक ही स्थल पर द्वीप बन रहा हो तो उस अवधि में व्यक्ति को आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

यदि भाग्य रेखा के उद्‌गम स्थान पर द्वीप का चिन्ह हो तो उस व्यक्ति का जन्म रहस्यपूर्ण रहा होगा। इसके अतिरिक्त यह चिन्ह अंयत्र कहीं हो तो व्यक्ति अपने जीवन साथी के साथ विश्वासघात करेगा और व्यभिचारी होगा। यदि यह चिन्ह दोनों हथेलियों पर समान हो तो धन और मानहानि भी होगी।

भाग्य रेखा पर त्रिभुज का चिन्ह व्यक्ति को अपार धन प्राप्त करने में सफलता दिखाता है।

भाग्य रेखा पर काले तिल का होना भारी अशुभ माना जाता है, इससे व्यक्ति को धनहानि, व्यावसायिक संकट और मानसिक उत्पीड़न झेलने पड़ते हैं। यदि काला तिल व्यक्ति के दोनों हाथों की भाग्य रेखा के समान स्थल पर हो तो अकाल मृत्यु की सम्भावना बन जाती हैं।

यदि भाग्य रेखा के उद्‌गम स्थल पर एक तारे का चिन्ह हो तो व्यक्ति अपनी पैतृक सम्पत्ति से हाथ धो बैठता है।

यदि भाग्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो और सूर्य पर्वत पर तारा बना हो तो किसी साहित्य या संगीत के क्षेत्र में प्रसिद्ध स्त्री से अनुचित यौन सम्बंध स्थापित होते हैं।

यदि भाग्य रेखा पर द्वीप हो और बृहस्पति पर्वत पर क्रॉस का चिन्ह हो तो ऐसे व्यक्ति अति धनी स्त्रियों से काम-सम्बंध बनाकर वासना की तृप्ति करते हैं।

यदि भाग्य रेखा शनि पर्वत पर बने वर्ग अर्थात् चतुष्कोण के चिन्ह को स्पर्श करे तो व्यक्ति भाग्य रेखा पर पड़ रहे अशुभ प्रभावों को नहीं झेलता।

यदि भाग्य रेखा पर उद्गम स्थान के अतिरिक्त अन्य कहीं भी द्वीप का चिन्ह बन रहा हो तो ऐसी स्त्री स्वतः धनी होगी तथा व्यभिचार कार्यों से भी खूब धन कमायेगी।

दोहरी भाग्य रेखा उत्तम फल देने वाली होती है। ऐसे व्यक्ति प्रत्येक कार्य में दोहरी सफलता प्राप्त करते हैं। यदि दूसरी भाग्य रेखा जीवन रेखा से चलती है और पहली भाग्य रेखा चन्द्र क्षेत्र से और दोनों ही समानान्तर चलती हुई शनि क्षेत्र की ओर बढ़ रही हों तो ऐसे व्यक्ति अपना भाग्य कठोर परिश्रम तथा लगन से बनाते हैं। उसे अन्य लोगों का भी भरपूर सहयोग मिल जाता है।

यदि किसी व्यक्ति की भाग्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो तथा हृदय रेखा मस्तिष्क रेखा से अधिक पुष्ट हो तो व्यक्ति को अपने प्रेम सम्बंध के कारण कलंकित होना पड़ता है। अपमान सहन करना पड़ता है और सम्भव है वह दुःखी होकर आत्महत्या का प्रयत्न भी करें।

5. सूर्य रेखा

सूर्य रेखा को तेज प्रदान कर ओजस्वी बनाती है। वह भाग्य रेखा के गुणों को चमका देती है तथा व्यक्ति के यश में वृद्धि करती है, अतः इसे यश रेखा भी कहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में अर्जित सफलता, श्रेष्ठता और मान-सम्मान की समाज, राष्ट्र तथा विश्व में प्रसिद्धि भी चाहता हैं ताकि उसके कार्यों की कीर्ति सब लोग जानें और उसे यश मिले यह सब सूर्य रेखा पर निर्भर करता है। सूर्य रेखा बहुत कम लोगों के हाथ पर परिलक्षित होती है यही रेखा व्यक्ति को सफलता, सम्मान, ऐश्वर्य, कीर्ति इत्यादि प्राप्त करने में सहायक होती है। जीवन रेखा, मस्तिष्क रेखा एवं हृदय रेखा की प्रबलता के शुभ फल यश रेखा की अनुपस्थिति में पूर्ण प्रभावी नहीं हो पाते, परन्तु भाग्य रेखा का स्पष्ट और पुष्ट होना सूर्य रेखा की सक्रियता तथा प्रभावोत्पादकता के लिये अति आवश्यक है।

श्रेष्ठ सूर्य रेखा और प्रबल भाग्य रेखा मनुष्य को महान बना देती है। राजा, महाराजा एवं धनाढ्य व्यापारी इसी वर्ग में आते हैं। स्पष्ट, सीधी, गहरी और दोषरहित रवि या सूर्य रेखा व्यक्ति को सद्गुणों, सुखों, सफलताओं एवं सुयश से विभूषित कर देती है। भाग्य द्वारा प्रदत्त धन-ऐश्वर्य का भोग-उपभोग

या उपयोग करने की क्षमता सूर्य रेखा की प्रबलता ही प्रदान करती है।

सूर्य रेखा के फल उसकी लम्बाई, स्पष्टता, गहराई, पुष्टता तथा उसके उद्गम स्थलों पर निर्भर करते हैं। व्यक्ति की उन्नति एवं लक्ष्य व उद्देश्यों की प्राप्ति इस रेखा के इन्हीं लक्षणों के अनुसार जाने जाते हैं।

हथेली पर कहीं से भी आरम्भ होकर सूर्य पर्वत क्षेत्र तक पहुंचने वाली रेखा सूर्य, रवि या यश रेखा कहलाती है।

सूर्य रेखा काफी कम लोगों के हाथों पर दिखाई देती है और स्पष्ट एवं पुष्ट सूर्य रेखा तो विरले हाथों में ही पायी जाती है।

आदर्शवादी, दार्शनिक तथा कलात्मक हाथों पर सूर्य रेखा अधिक पाई जाती है परन्तु इन हाथों पर इस रेखा का प्रभाव कम तीव्र होता है। इसके विपरीत वर्गाकार, चमचाकार और कठोर दार्शनिक हाथों पर सूर्य रेखा कम दिखलाई पड़ती है, परन्तु इन हाथों पर इस रेखा का चिन्ह भी विशेष प्रभाव छोड़ता है।

सूर्य रेखा की उपस्थिति व्यक्ति को भावुक, सहृदय और मानवीय गुणों से युक्त भी बनाती है। व्यक्ति की उदारता, परोपकारिता एवं आत्म-सम्मान की श्रेष्ठता की परिचायक भी सूर्य रेखा होती है, परन्तु भाग्य रेखा की उपस्थिति आवश्यक है।

भाग्य रेखा की अनुपस्थिति में सूर्य रेखा केवल यश, कला, प्रेम, सौंदर्य के प्रति रुचि एवं सम्मान की पात्रता को ही परिलक्षित करती है।

सुविकसित मस्तिष्क रेखा के साथ सुस्पष्ट एवं पुष्ट सूर्य रेखा व्यक्ति की बहुमुखी प्रतिभा का धनी और विद्वान बनाती है।

उद्गम स्थल के अनुसार सूर्य रेखा के फल

सूर्य रेखा का उद्गम स्थल चाहे जो हो परन्तु उसकी समाप्ति सूर्य पर्वत पर होनी चाहिये तभी वह सूर्य रेखा कहलाती है।

1. मणिबंध से प्रारम्भ होकर सूर्य क्षेत्र तक पहुंचने वाली सूर्य रेखा समाप्त सूर्य रेखाओं की उद्गम स्थिति से सर्वाधिक उत्तम स्थिति है एवं सर्वाधिक शुभ चिन्हों में एक है। ऐसे व्यक्ति सफलता के अंतिम शिखर तक पहुंचने में सफल होते हैं। इन लोगों का जन्म से लेकर मृत्यु तक का जीवन धन-ऐश्वर्य, सम्पन्नता और प्रतिष्ठा से परिपूर्ण रहता है। इनमें प्रतिभा भरी हुई होती है और दानशीलता, परोपकारिता तथा प्रभुता की कोई कमी नहीं होती। ऐसे लोग ईश्वरभक्त होते हैं और अपना जीवन सादगी एवं आनंदपूर्वक व्यतीत करते हैं। इस प्रकार की रेखा वाले व्यक्ति उच्च श्रेणी के व्यापारी या ठेकेदार,

उत्तम कोटि के न्यायाधीश अथवा श्रेष्ठ कोटि के साहित्यकार होते हैं और सफलता प्राप्त करते हैं।

यदि इस रेखा के अंतिम छोर पर त्रिशूल का चिन्ह हो तो व्यक्ति राजा या राजा के समान ऐश्वर्यवान तथा वैभवशाली होता है। दार्शनिक हाथ पर ऐसी स्थिति व्यक्ति को विद्वान अथवा दार्शनिक तथा कलात्मक व आदर्श हाथों पर यह स्थिति व्यक्ति को कला, साहित्य, संगीत अथवा अभिनय क्षेत्र में सफल बनाती है। ये श्रेष्ठ समाजसेवी भी हो सकते हैं।

मणिबंध से प्रारम्भ होने वाली सूर्य रेखा वाले व्यक्ति अपनी पत्नी की सहायता से भी सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं।

2. जीवन रेखा से आरम्भ होने वाली सूर्य रेखा वाले व्यक्ति अपने स्वयं के प्रयत्नों से सफलता प्राप्त करते हैं और यशस्वी बनते हैं। ऐसे व्यक्ति प्राकृतिक सौंदर्य में रुचि रखते हैं और कलाप्रेमी होते हैं। इनमें बात और कार्य को शीघ्र समझ लेने की प्रतिभा होती है। वे अपने परिश्रम और साधना से सफल कलाकार बन जाते हैं तथा कला के माध्यम से धन उपार्जित करते हैं। ऐसे व्यक्ति मृदुभाषी, मिलनसार और रसिक स्वभाव के होते हैं। उपरोक्त सभी गुणों के लिये आवश्यक है कि रेखा सीधी, स्पष्ट और निर्दोष हो।

3. यदि सूर्य रेखा मंगल क्षेत्र से प्रारम्भ होकर वृत्ताकार होकर हृदय रेखा को काटती हुई सूर्य पर्वत पर पहुंचती है तो व्यक्ति को अपने लक्ष्य अथवा उद्देश्य-प्राप्ति के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ता है, उसे अनेक कष्टों और बाधाओं को पार कर अंत में सफलता मिल जाती है। ऐसे व्यक्ति साहसी और अपने निश्चय पर दृढ़ रहते हैं। अपने परिश्रम से उन्नति कर सफलता प्राप्त करते हैं। ऐसे व्यक्ति पुलिस या सेना में अपूर्व वीरता दिखाकर कीर्ति अर्जित करते हैं। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति स्वनिर्मित व स्वावलम्बी होते हैं।

यह रेखा यदि भाग्य रेखा के पास हो और उसके समानान्तर चल रही हो तो व्यक्ति जिस कार्य को भी करेगा उसी में उसे सफलता मिलेगी। ऐसे व्यक्ति को सहयोगियों से प्रेम तथा अपने उच्च पदस्थ लोगों से प्रशंसा मिलती है एवं समाज में सम्मान मिलता है।

4. यदि सूर्य रेखा का प्रारम्भ हृदय रेखा से हो तो व्यक्ति ललित कलाओं में रुचि रखेगा, उसमें रचनात्मक क्षमता व योग्यता होगी। वह अपने स्वच्छ आचरण तथा पवित्र हृदय के कारण श्रद्धा व आदर का पात्र बनता है। ऐसे व्यक्ति भावुक, निर्मल मन, उदार स्वभाव के होते हैं तथा गुणवान कलाकारों का सम्मान करते हैं। उनका व्यवहार निष्कपट होता है। वे सबके प्रिय बनते

हैं और सम्मान पाते हैं। अपने इन सद्‌गुणों के कारण ही वे उन्नति करते हैं। अधिक धनवान न होते हुये भी वे दुःखी और गुणवान लोगों के प्रति पूरी सहानुभूति रखते हैं।

जीवन के अंतिम वर्षों में ऐसी रेखा वाले व्यक्ति सुख, शांति, वैभव और यश अर्जित करते हैं। कभी-कभी ऐसे व्यक्ति अलौकिक शक्ति से सम्पन्न भी हो जाते हैं और चमत्कारपूर्ण कार्य करते हैं। इनकी कीर्ति मृत्यु के पश्चात् भी कही जाती रहती है।

यदि ऐसी रेखा बीच में टूट रही हो या उस पर द्वीप का चिन्ह हो तो शुभ फल आधा ही रह जाता है।

5. यदि सूर्य रेखा का उद्‌गम स्थल मस्तिष्क रेखा से हो तो व्यक्ति की बुद्धि-क्षमता प्रखर होती है। वे बड़ी समस्याओं को अपने बुद्धिबल और चातुर्य से सुलझा लेने में सफल होते हैं। ऐसे व्यक्ति पढ़े-लिखे न होते हुये भी अभियांत्रिकी अथवा व्यापार आदि के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं और सम्मान पाते हैं। ऐसे लोग ओजस्वी तथा प्रतिभाशाली वक्ता भी होते हैं।

इस प्रकार की यश रेखा वाले व्यक्ति अपनी मध्यायु के पश्चात् बौद्धिक प्रतिभा द्वारा सफलता प्राप्त करते हैं और अपना स्थान बनाते हैं। इन्हें समाज में प्रतिष्ठा मिलती है।

ऐसे व्यक्ति प्रत्येक कार्य में अपनी बुद्धि-क्षमता का उपयोग कर प्रचुर मात्रा में धन कमाते हैं। ऐसे व्यक्ति उच्चकोटि के वैज्ञानिक बनते हैं अथवा साहित्य के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त करने वाले होते हैं।

लगभग 30 वर्ष की आयु तक इनका जीवन कष्टपूर्ण और संतापों से भरा रहता है।

यदि सूर्य रेखा का प्रारम्भ ऊर्ध्व चन्द्र पर्वत के ऊपर से हो तो व्यक्ति विदेशों में धन कमायेगा और यदि निम्न चन्द्र से हो तो अपने से विपरीत योनि के प्राणी की सहायता से सफलता प्राप्त करेगा।

6. चन्द्र क्षेत्र से प्रारम्भ होने वाली सूर्य रेखा यश और सम्मान की प्रतीक होती है, परन्तु मनुष्य की उन्नति हमेशा संदिग्ध बनी रहती है। उनके विचार स्थिर नहीं रह पाते, अतः निर्बल संकल्प शक्ति के कारण सफलता बड़ी कठिनता से ही मिल पाती है। ऐसे लोग प्रदर्शनप्रिय होते हैं।

ऐसे व्यक्तियों को दूसरों की सहायता पर निर्भर रहना पड़ता है और उन्हें उन्हीं कार्यों से सफलता मिलती है जो क्षेत्र सार्वजनिक सम्पर्क के होते

हैं। राजनीति अथवा अभिनय जैसे क्षेत्र ही उन्हें रुचिकर होते हैं। उसके सम्पर्क में आये बिना उन्नति नहीं कर सकते। पुरुष हो स्त्री और स्त्री हो तो पुरुष की सहायता लेना अब सम्भावी हो जाता है। बहुधा ऐसे व्यक्तियों का भाग्योदय विवाह के पश्चात् ही हो पाता है।

ऐसे लोग सहृदय, मिलनसार तथा रसिक स्वभाव के होते हैं, परन्तु शंकालु प्रकृति के कारण ऐसे व्यक्ति विश्वासपात्र नहीं बन पाते और सफलता संदिग्ध कर लेते हैं।

7. यदि सूर्य अर्थात् यश रेखा शुक्र क्षेत्र से प्रारम्भ होती है तो वह मार्ग में आने वाली सभी रेखाओं अर्थात् जीवन रेखा, भाग्य रेखा, हृदय रेखा आदि को काटती हुई सूर्य क्षेत्र तक पहुंचती है, कभी-कभी यह किसी रेखा को नहीं काटकर बल्कि स्वयं कटती हुई सूर्य पर्वत पर पहुंचती है।

हाथ पर ऐसी रेखा जो शुक्र क्षेत्र से प्रारम्भ होकर सूर्य क्षेत्र पर पहुंचती हो शुभ एवं सौभाग्यवर्द्धक मानी जाती है। ऐसा व्यक्ति अपनी ससुराल अथवा अपनी प्रेयसी से प्रचुर मात्रा में धन प्राप्त करता है। उसका भाग्योदय उसकी प्रेमिका या पत्नी के माध्यम से ही होता है। कभी-कभी ऐसी रेखा वाला व्यक्ति किसी धनी विधवा स्त्री द्वारा गोद ले लिया जाता है और उसे अनायास ही धन-सम्पत्ति उपलब्ध हो जाती है।

8. राहु क्षेत्र से आरम्भ होने वाली सूर्य रेखा वाले व्यक्ति बुद्धिमान, उत्साही और परिश्रमी होते हैं। अपनी चतुराई और दूरदृष्टि के कारण इनकी योजनायें सफल होती हैं। ऐसे लोगों के मैत्री सम्बंध सफल रहते हैं। स्थिर-चित्त होकर जो निर्णय ले लेते हैं उस पर अडिग बने रहते हैं। ये लोग स्वतंत्र जीवन व्यतीत करते हैं। इन्हें पत्रकारिता के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है।

10. भाग्य रेखा से निकलने वाली सूर्य अत्यन्त शुभ कही जाती है। ऐसे व्यक्ति भाग्य रेखा द्वारा प्रदत्त सौभाग्य में वृद्धि प्राप्त कर लेते हैं। वे जीवन में लगातार प्रगति करते हैं। ऐसी सूर्य रेखा भाग्य रेखा के अवगुणों को क्षीण भी कर देती है जिससे उसके गुण उभरकर सूर्य रेखा के गुणों में वृद्धि कर देते हैं।

यदि ऐसी सूर्य रेखा स्पष्ट-पुष्ट और निर्दोष हो तो व्यक्ति का यश अमर हो जाता है।

इस प्रकार की सूर्य रेखा वाले व्यक्ति किसी उत्तराधिकार में प्रचुर धन सम्पत्ति प्राप्त करते हैं, परन्तु यदि इस सूर्य रेखा की मस्तिष्क रेखा धूमिल

और दुर्बल हो तो व्यक्ति इस प्राप्त धन-सम्पत्ति को अपनी मूर्खता से गंवा देता है।

9. केतु क्षेत्र से आरम्भ होने वाली सूर्य रेखा हृदय रेखा को काटती हुई सूर्य क्षेत्र में प्रवेश करती है और अनामिका उंगली के मूल तक पहुंच जाती है। यदि यह रेखा स्पष्ट और दोषरहित हो तो व्यक्ति को अल्प परिश्रम से ही सफलतायें मिलती चली जाती हैं। वे उच्च श्रेणी के व्यवसायी बनते हैं और वैभव तथा यश प्राप्त करते हैं। ऐसे लोग बचपन से बुढ़ापे तक आनंदपूर्वक जीवन बिताते हैं।

ऐसी सूर्य रेखा यदि अस्पष्ट हो तो व्यक्ति नीच प्रकृति के लोगों के सम्पर्क में आ जाता है जिससे स्वयं का चरित्र भी स्वच्छ नहीं रह पाता। ऐसे व्यक्ति फिर अपनी सामाजिक स्थिति की चिन्ता नहीं करते।

11. हर्षल क्षेत्र से प्रारम्भ होने वाली सूर्य रेखा वाला व्यक्ति निर्धन परिवार से होता है। उसे परिवार से आर्थिक सहायता नहीं मिल पाती जिससे उनकी शिक्षा में व्यवधान रहता है, परन्तु इस अव्यवस्थित परिस्थिति में वे अपने परिश्रम से शिक्षा ग्रहण कर लेते हैं और विना किसी पारिवारिक सहयोग व व्यवस्था के अच्छे शिक्षक, वकील, न्यायाधीश बन जाते हैं।

ऐसे व्यक्ति विदेश यात्रा भी करते हैं और वहां अपने कार्यों से नाम कमाते हैं।

इस रेखा का दूषित या भंग होना विदेश में प्रेम-प्रसंगों के कारण वदनाम होने का संकेत देता है। कभी-कभी ऐसे व्यक्तियों की समुद्री यात्रा में मृत्यु भी हो जाती है।

12. यदि सूर्य रेखा का उद्गम वुध पर्वत क्षेत्र से हो तो व्यक्ति सफल अभिनेता वनता है। ऐसी रेखा वहुत ही कम हाथों में होती है, परन्तु यदि यह रेखा है तो उस व्यक्ति को फिल्म क्षेत्र में सफलता और प्रसिद्धि अवश्य मिलती है तथा व्यक्ति अपार धन कमाता है।

13. जिन लोगों के हाथ पर सूर्य रेखा हथेली के मध्य से निकल रही हो वे भाग्य के धनी होते हैं। उन्हें जीवन में कई बार आकस्मिक रूप से धन प्राप्त हो जाता है और वे धनी बन जाते हैं। समाज में उन्हें सम्मान मिलता है।

14. यश अर्थात् सूर्य रेखा भाग्य रेखा के समानान्तर ही मणिबंध से आरम्भ हो रही हो तो अत्यन्त शुभ फल देने वाली होती है। यदि यह रेखा सुस्पष्ट, निर्मल और गहरी है, तो व्यक्ति की सकल कामनायें पूरी करती है और वह सफलता तथा यश प्राप्त करता है।

परन्तु धूमिल और दोषपूर्ण रेखा व्यक्ति की उन्नति में व्यवधान खड़े कर देती है।

15. सूर्य रेखा का उद्गम कहीं से भी हो परन्तु दस्तकार के हाथ में सूर्य रेखा का होना उसे आर्थिक कष्टों से गुजारता है। जीवन निर्वाह के लिये श्रेष्ठ दस्तकार को भी धन जुटाने के लिये कठोर परिश्रम करना पड़ता है। उन्हें अपने जीवन-काल में यश नहीं मिल पाता, मरने के बाद ही लोग उन्हें पहचान पाते हैं।

सूर्य रेखा के अन्य तथ्य

1. सूर्य रेखा से निकलने वाली शाखा बृहस्पति क्षेत्र में जाकर समाप्त हो रही हो तो व्यक्ति शासन में उच्च पद प्राप्त करता है। सार्वजनिक कार्यों में रुचि लेता है तथा सफलता प्राप्त करता है। अपने उच्च अधिकारी वर्ग से सम्मान और जनता से प्रेम मिलता है। वह अपने कार्यों के विवेकपूर्ण निष्पादन से उन्नति प्राप्त करता है।

2. यदि सूर्य रेखा से शुरू होकर शाखा शनि क्षेत्र में जाकर विलीन हो रही हो और हाथ में भाग्य रेखा स्पष्ट, गहरी और निर्दोष हो तो वह व्यक्ति उन्नति एवं सफलता के शिखर पर पहुंच जाता है। वह सुखी और सम्पन्नतापूर्ण जीवन बिताता है तथा कीर्ति अर्जित करता है।

3. यदि सूर्य रेखा से प्रारम्भ होकर कोई शाखा बुध क्षेत्र में पहुंचकर समाप्त हो रही हो तो व्यक्ति अच्छा लेखक, संगीतकार, नाटककार, अभिनेता या चित्रकार बनता है। वह अपने कार्यक्षेत्र में निपुण होकर प्रभावी दक्षता से लोगों को आकर्षित करता है और यश कमाता है।

4. यदि सूर्य रेखा मंगल क्षेत्र से प्रारम्भ होकर आगे धुंधली हो जाये और सूर्य क्षेत्र में पहुंचने से पहले ही लुप्त हो जाये तो व्यक्ति के जीवन में अनेक अवरोध, विपत्तियां एवं निराशायें आती हैं। उसकी उन्नति का मार्ग अंधकार पूर्ण रहता है।

5. सुन्दर, स्पष्ट एवं गहरी सूर्य रेखा के साथ यदि चन्द्र ग्रह व शुक्र ग्रह के क्षेत्र सुविकसित उभरे हों तो व्यक्ति की रुचि साहित्य के क्षेत्र में होती है। वह उच्चकोटि का साहित्यकार अथवा आलोचक बनता है और ख्याति प्राप्त करता है।

6. हाथ पर स्पष्ट एवं पुष्ट सूर्य रेखा हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका उंगली से छोटी हो तो ऐसा व्यक्ति धनलोलुप होता है। वह धन प्राप्त करने के लियें कोई भी अच्छा-बुरा तरीका अपनाता है। वह लॉटरी, सट्टा, जुआ आदि से धन कमाने वाला होता है।

7. यदि सूर्य रेखा सूर्यक्षेत्र को पार कर शनिक्षेत्र की ओर बढ़ रही हो तो व्यक्ति अत्यन्त धनवान परन्तु स्वार्थी होता है। अपने लाभ के लिये दूसरों को हानि पहुंचाने से भी नहीं चूकता, लेकिन यह रेखा और आगे निकलकर गुरु पर्वत क्षेत्र तक पहुंच जाये तो फल उलटा हो जाता है। ऐसा व्यक्ति धार्मिक प्रकृति का उदारहृदय और दयालु होता है। अपने धन और वैभव द्वारा समाज में सम्मान प्राप्त करता है।

8. हृदय रेखा से निकलकर अनेक छोटी-छोटी स्पष्ट रेखायें सूर्य क्षेत्र पर बढ़ रही हों और भाग्य रेखा भी स्पष्ट और गहरी हो तथा किसी रेखा से कट नहीं रही हो तो व्यक्ति बहुमुखी प्रतिभा का धनी होता है धार्मिक, उदार और दयालु स्वभाव के ऐसे व्यक्ति मध्य आयु के पश्चात् प्रसिद्धि पाते हैं।

9. यदि सूर्य रेखा के साथ कई सहायक रेखायें हों तो शुभ होती हैं।

10. लम्बी सूर्य रेखा सम्मान, पद-प्राप्ति और प्रतिष्ठा की वर्द्धक होती है। छोटी सूर्य रेखा वाला व्यक्ति प्रतिभाशाली होता है, परन्तु सफलता कड़े संघर्ष के पश्चात् ही मिल पाती है।

11. सूर्य रेखा को यदि विवाह रेखा काटे तो व्यक्ति बेमेल विवाह के कारण दुःखी रहेगा तथा धन की हानि और अपयश मिलेगा।

12. जिस आयु खंड में सूर्य रेखा टूट रही हो, व्यक्ति उस आयु वर्ष में अपनी नौकरी, कार्य का व्यवसाय बदल लेता है।

13. जिस स्थान पर सूर्य रेखा अत्यन्त स्पष्ट और गहरी हो, व्यक्ति उस आयु खंड में विशेष लाभ प्राप्त करता है।

14. टेढ़ी-मेढ़ी सूर्य रेखा के साथ हृदय रेखा लहरदार हो तो व्यक्ति अपने अवांछनीय कार्यों से उन्नति नहीं कर पाता।

15. स्पष्ट और पुष्ट सूर्य रेखा के साथ अनामिका उंगली यदि टेढ़ी-मेढ़ी हो तो व्यक्ति धन के लिये अपराध प्रवृत्ति भी अपना सकता है।

16. यदि सूर्य रेखा को काटने वाली आड़ी रेखा शनि पर्वत से आ रही हो तो व्यक्ति आर्थिक कठिनाइयों से ग्रस्त रहता है।

17. सूर्य रेखा को छोटी-छोटी रेखाओं द्वारा काटा जाना शत्रुओं द्वारा हानि पहुंचाने की सूचना देता है।

18. शुक्र पर्वत से आने वाली रेखा यदि सूर्य रेखा को काट रही हो तो व्यक्ति को सगे-सम्बंधियों द्वारा हानि उठानी पड़ती है।

19. यदि चन्द्र पर्वत से निकली कोई रेखा सूर्य रेखा को काट रही हो

तो व्यवसाय में हानि होगी तथा व्यक्ति के साथ काम-सम्बंध रखने वाली स्त्रियां उसका धन उजाड़ेंगी।

20. ऊर्ध्व मंगल से आती हुई रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो व्यक्ति मुकदमेबाजी में होगा और उसे धन की हानि उठानी पड़ेगी, यदि यह रेखा सूर्य रेखा काटे नहीं उसके समानान्तर चले तो उस पर लगा कलंक हट जाता है और पुनः प्रतिष्ठा प्राप्त हो जाती है।

सूर्य रेखा पर चिन्हों का फल

सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह सौभाग्यवर्द्धक होता है; वह अपार सुख, असीमित सफलता और विपुल वैभव का स्वामी होता है। यदि ऐसी स्थिति में भाग्य रेखा कुरूप भी हो तो भी व्यक्ति जीवन में संघर्षों के उपरान्त भी सुख-चैन से रहता है।

सूर्य रेखा पर वर्ग का अथवा चतुष्कोण का चिन्ह व्यक्ति के विरोधियों द्वारा लगाये गये कलंक का सफलतापूर्वक सामना करता है और यश तथा सम्मान को क्षति नहीं पहुंचने देता।

सूर्य रेखा पर त्रिकोण वाला व्यक्ति धन, सम्पत्ति, सुख, सम्मान और यश प्राप्त करता है।

सूर्य रेखा पर क्रॉस कोई विशेष हानि तो नहीं पहुंचाता, परन्तु उस आयु खंड में उसके सम्मान को अवश्य ठेस पहुंचाता है, इससे व्यक्ति निराशा और एकाकीपन अनुभव करने लगता है। यदि इस अवस्था में मस्तिष्क रेखा भी निर्बल हो तो व्यक्ति अपनी जल्दबाजी में की गयी गलतियों के कारण जीवन भर पछताता रहता है।

सूर्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह कलंक और अपकीर्ति का कारण बनता है। यदि यह चिन्ह व्यक्ति के दोनों हाथों की सूर्य रेखाओं पर हो तो व्यक्ति के सम्मान और प्रतिष्ठा पर गम्भीर चोट लगती है और व्यक्ति दुःखी होकर समाज से अपने आपको अलग कर लेता है। वह एकाकी जीवन व्यतीत करने लगता है।

सूर्य रेखा पर काले धब्बे धन और यश की हानि होने के द्योतक होते हैं। यदि ये धब्बे सूर्य रेखा और अन्य रेखाओं के संगम पर हों तो दृष्टि को कमजोर करते हैं।

सूर्य रेखा अंत में द्वीप बनाकर समाप्त हो रही हो तो व्यक्ति अपने जीवन का अंत अपयश और अवहेलना से दुःखी होकर आयु क्षय के कारण वह स्वतः ही कर लेता है।

सूर्य रेखा के मार्ग में द्वीप के चिन्ह उसे धनहानि के कारण दिवालिया बना देते हैं।

सूर्य रेखा का अंत यदि क्रॉस के चिन्ह से हो रहा हो तो व्यक्ति को अपने किन्हीं कार्यों के दुष्परिणाम भोगने पड़ते हैं।

यदि सूर्य रेखा का अंत बिन्दु के रूप में हो तो यह अत्यन्त कष्टकारक होता है।

यदि सूर्य रेखा के आरम्भ और अंत दोनों स्थानों पर नक्षत्र हो तो व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन सुख तथा मान-सम्मान से व्यतीत होता है।

सूर्य रेखा का अंत यदि द्विमुंहा अथवा बहुजिह्वी हो तो व्यक्ति समाज में निन्दा का पात्र बनता है।

यदि सूर्य का अंत खड़ी रेखा के रूप में हो रहा हो तो व्यक्ति की उन्नति अवरुद्ध हो जाती है और वह निष्क्रिय हो जाता है।

यदि सूर्य रेखा लहरदार, जंजीरदार या गुंथी हुई हो तो व्यक्ति अपनी उन्नति के मार्ग में आने वाली बाधाओं से परेशान रहता है।

सूर्य रेखा के नीचे गुणन का चिन्ह वाला व्यक्ति जुआ, सट्टा, लॉटरी आदि का शौकीन होता है।

6. स्वास्थ्य रेखा

स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा का मापदंड है। यह रेखा शरीर के स्वास्थ्य सम्बंधी समस्त स्थितियों, परिवर्तनों एवं रोगों आदि की परिचायक रेखा है। हाथ की समस्त रेखाओं में यह रेखा सर्वाधिक परिवर्तनशील है जो जलवायु, वातावरण और रहन-सहन की परिस्थितियों के प्रभाव के कारण शरीर में होने वाले परिवर्तनों के अनुसार अपना रूप और स्थिति बदलती रहती है।

स्वास्थ्य रेखा सामान्यतः मणिबंध रेखा के ऊपर से आरम्भ होकर बुध क्षेत्र की ओर चलती है, परन्तु इसका उद्‌गम हथेली पर अन्य स्थानों से भी हो सकता है और यह भी आवश्यक नहीं कि यह रेखा बुध पर्वत पर आकर ही समाप्त हो। कभी-कभी यह बुध पर्वत पर पहुंचती ही नहीं-ऐसी रेखा जो हथेली के नीचे के भाग में कहीं से भी प्रारम्भ होकर बुध पर्वत पर पहुंचती हो या जिसका झुकाव अथवा दिशा बुध पर्वत पर पहुंचती हो या जिसका झुकाव अथवा दिशा बुध पर्वत की ओर हो, स्वास्थ्य रेखा मानी जाती है इसीलिये इसे बुध रेखा भी कहते हैं। ऐसी रेखायें किसी-किसी हाथ में हृदय या मस्तिष्क रेखा के पास तक आकर ही समाप्त हो जाती है, परन्तु उनकी

दिशा या निकटता बुध क्षेत्र की ओर ही रहती है।

स्वास्थ्य रेखा का उद्गम जीवन रेखा, भाग्य रेखा, हृदय रेखा, मणिबंध रेखा, शुक्र पर्वत या चन्द्र पर्वत से भी हो सकता है लेकिन इन सभी स्थितियों में उनका रुख अथवा झुकाव बुध क्षेत्र की ओर ही होता है।

स्वास्थ्य रेखा आरम्भ से लेकर अंत तक सीधी होती है, कहीं मुड़ती नहीं।

स्वास्थ्य रेखा की सर्वोत्तम स्थिति यह है कि यह स्पष्ट हो और जीवन रेखा को बिल्कुल न छुये। इस प्रकार की स्वास्थ्य रेखा की दूरी जीवन रेखा से जितनी अधिक होगी व्यक्ति में आत्मबल एवं रोग प्रतिरोधक शक्ति उतनी ही अधिक मात्रा में होती है।

स्वास्थ्य क्षीण होने के साथ ही यह रेखा स्पष्टतर होती चली जाती है और ज्यों-ज्यों स्वास्थ्य में वृद्धि होती जायेगी यह रेखा धूमिल पड़ती जायेगी। निरोगी और बलिष्ठ पुरुषों में इस रेखा का नितांत अभाव होता है और जिन लोगों के हाथ में स्वास्थ्य रेखा स्पष्ट होगी वह रोगी होने का संकेत देती है। गहरी स्वास्थ्य रेखा भयानक रोगों की सूचक होती है और यदि ऐसी रेखा जीवन रेखा से मिल जाये तो उस आयु वर्ष में व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। स्वास्थ्य रेखा का हाथ पर न होना शुभ चिन्ह है। ऐसे व्यक्ति स्वस्थ, शक्तिशाली और निरोगी काया वाले होते हैं, वे अपेक्षाकृत दूसरों से अधिक परिश्रमी और पुरुषार्थी होते हैं।

जीवन रेखा प्रबल न हो परन्तु यदि हथेली पर स्वास्थ्य रेखा नहीं है तो भी व्यक्ति समस्त शारीरिक व्याधियों और रोगों से अपने आंतरिक बल क्षमता के कारण मुक्त रहता है।

यदि स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा को काटे नहीं मात्र स्पर्श करके ही रह जाये तो गम्भीर जीवन संकट के होते हुये भी मृत्यु नहीं होती। यदि स्वास्थ्य रेखा से कोई शाखा निकलकर जीवन रेखा को कहीं स्पर्श करे तो भी मृत्यु की सम्भावना बन जाती है।

चौड़ी और स्पष्ट स्वास्थ्य रेखा दुर्वल तन और क्षीण शक्ति की प्रतीक होती है। यदि यह रेखा शृंखलाबद्ध हो तो व्यक्ति आमाशय रोग एवं स्नायु-संस्थान की दुर्बलता से पीड़ित रहता है।

यदि स्वास्थ्य रेखा हृदय रेखा से मिल जाये तो व्यक्ति हृदय रोगों से कष्ट पाता है।

यदि स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा के अंत वाले स्थान से आरम्भ हो तो

व्यक्ति गुर्दे के रोग का शिकार होता है।

कई स्थानों पर टूटी स्वास्थ्य रेखा मनुष्य की पाचन शक्ति कमजोर होने का संकेत देती है। ऐसा व्यक्ति फेफड़ों में विकार आ जाने से तपेदिक आदि रोगों से पीड़ित रहता है।

स्वास्थ्य रेखा पर कई स्थानों पर द्वीप के चिन्ह हों और व्यक्ति के हाथ की उंगलियों के नाखून चौड़े हों तो उन लोगों को गले के रोग घेरे रखते हैं।

स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप और उंगलियों के नाखून लम्बे हों तो ऐसे व्यक्तियों को छाती के रोग पीड़ित रखते हैं। उन्हें गुर्दे और दिल की बीमारी भी रहती हैं।

हाथ पर निर्दोष स्वास्थ्य रेखा वाले व्यक्तियों की स्मरण शक्ति बड़ी तीक्ष्ण होती है। वे व्यवहारकुशल भी होते हैं।

स्वास्थ्य रेखा का लम्बा एवं स्याह होना कुशाग्र बुद्धि, व्यावसायिक निपुणता और उन्नतिशीलता का द्योतक होता है। इन लोगों की आयु भी लम्बी और स्वास्थ्य सामान्य रहता है।

स्वास्थ्य रेखा का दूषित होना व्यक्ति की भाग्य एवं सूर्य रेखाओं के गुणों को कम कर देता है।

निर्दोष, स्पष्ट और पुष्ट स्वास्थ्य रेखा उत्तम स्वास्थ्य की परिचायक होती है, उसका प्रभाव व्यक्ति के पाचन संस्थान को अच्छा बनाये रखता है।

यदि जीवन रेखा, भाग्य रेखा एवं मस्तिष्क रेखा शुभ लक्षणों से युक्त हों तो दोषपूर्ण स्वास्थ्य रेखा के प्रभाव क्षीण हो जाते हैं।

यदि स्वास्थ्य रेखा के साथ जीवन रेखा, मस्तिष्क रेखा, हृदय रेखा और भाग्य रेखायें भी शुभ हों तो व्यक्ति जीवन भर स्वस्थ, बलवान तथा सफल रहता है, परन्तु भोग-विलास और मदिरापान में मस्त रहने वाला होता है।

लहरदार स्वास्थ्य या बुध रेखा यकृत की बीमारियों से पीड़ा देने वाली होती है। व्यक्ति को मलेरिया, पीलिया जैसे रोग पीड़ित रखते हैं।

यदि स्वास्थ्य रेखा को कई स्थानों पर अवरोधक रेखायें काट रही हों तो व्यक्ति जीवन भर रोगी बना रहता है।

गहरी और लाल रंग की स्वास्थ्य रेखा वाले व्यक्ति जुकाम, खांसी और बुखार से पीड़ित बने रहते हैं। वे व्यभिचारी होते हैं।

जिन व्यक्तियों के नाखून गोलाकार और लम्बे हों तथा उनकी स्वास्थ्य

रेखा मस्तिष्क रेखा के आसपास द्वीप बना रही हो तो वे व्यक्ति तपेदिक के रोगी होते हैं।

यदि स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा व मस्तिष्क रेखा के साथ एक त्रिकोण बनाती हो तो व्यक्ति उदारहृदय होता है।

यदि स्वास्थ्य रेखा का अंत एक आड़ी रेखा बनकर हो रहा हो तो व्यक्ति की सफलता या प्रगति भी बाधित होकर समाप्त हो जाती है।

यदि स्वास्थ्य रेखा लाल रंग की हो और उसका अंत हृदय रेखा पर आकर हो रहा हो तो व्यक्ति कमजोर हृदय का होता है और उसे जीवन भर हृदय-रोग सताते रहते हैं।

यदि स्वास्थ्य रेखा का रंग लाल हो परन्तु लम्बाई में छोटी हो और उसका आरम्भ हृदय रेखा से हो रहा हो तो व्यक्ति तिल्ली या मंदाग्नि रोगों से घिरा रहता है।

स्वास्थ्य रेखा और जीवन रेखा के अंत में नक्षत्र बन रहा हो तथा नाखून नीलिमा लिये हुये त्रिकोणात्मक हो तो व्यक्ति को पक्षाघात होता है।

यदि स्वास्थ्य रेखा, जीवन रेखा और यात्रा रेखा तीनों मिल रही हों तो व्यक्ति की मृत्यु यात्रा में होती है।

यदि स्वास्थ्य रेखा हृदय रेखा को काट रही हो तो व्यक्ति रक्तचाप की बीमारी से पीड़ित रहता है।

पीले रंग की स्वास्थ्य रेखा व्यक्ति के शरीर में कमी का संकेत देती है। ऐसे व्यक्ति धातु रोगों से ग्रस्त रहते हैं।

यदि स्वास्थ्य रेखा तथा प्रणय रेखा का संगम हो जाये तो व्यक्ति की पत्नी जीवन भर बीमार बनी रहती है।

अत्यधिक गहरी स्वास्थ्य रेखा गुप्त रोगों की सूचक होती है। यदि स्वास्थ्य रेखा मस्तिष्क रेखा से मिलकर त्रिभुज बना ले तो व्यक्ति चतुर और बुद्धिमान होता है तथा अपनी क्षमताओं का भरपूर लाभ उठाता है।

यदि स्वास्थ्य रेखा की एक शाखा गुरु पर्वत तक पहुंच रही हो तो व्यक्ति असाधारण रूप से मेधावी होता है। वह पूर्ण रूप से स्वस्थ रहता है और सफलता तथा यश प्राप्त करता है।

यदि बुध पर्वत अर्थात् स्वास्थ्य रेखा से कोई प्रशाखा शनि पर्वत की ओर जा रही हो तो व्यक्ति गम्भीर प्रकृति का और अध्ययनशील होता है। वह अपने उद्देश्यों के प्रति शांतचित्त से प्रयत्न करता रहता है।

यदि स्वास्थ्य रेखा से एक शाखा निकलकर सूर्य क्षेत्र की ओर जा रही

हो तो व्यक्ति प्रतिभाशाली, प्रखर बुद्धि वाला और यशस्वी होता है।

यदि स्वास्थ्य रेखा की कोई शाखा मस्तिष्क रेखा को स्पर्श करे तो व्यक्ति अपनी मानसिक शक्तियों का निरन्तर विकास करता रहता है।

यदि स्वास्थ्य रेखा से छोटी-छोटी रेखायें निकलकर ऊपर की ओर बढ़ रही हों तो यह उत्तम स्वास्थ्य और निरोगता की निशानी है, परन्तु यदि यह रेखायें नीचे की ओर आ रही हों तो खराब स्वास्थ्य का सूचक होती हैं।

यदि बुध रेखा लहरदार हो और यह भाग्य रेखा को स्पर्श करे तो भाग्यहीनता की प्रतीक होती है, यदि यह सूर्य रेखा को छुये तो प्रतिष्ठा की हानि को दर्शाती है और यदि मस्तिष्क रेखा को स्पर्श करती हो तो विकृत मस्तिष्क की द्योतक होती है।

लहरदार स्वास्थ्य रेखा की शुक्र क्षेत्र पर उपस्थिति प्रेम में असफलता एवं बुध पर्वत पर होना व्यवसाय में भारी घाटे का संकेत देती है।

दोहरी स्वास्थ्य रेखा भाग्यवर्धक होती है यदि यह दोहरी स्वास्थ्य रेखा सूर्य पर्वत का स्पर्श करे तो वह व्यक्ति राजनीति के क्षेत्र में उच्च पद प्राप्त करता है।

यदि स्वास्थ्य रेखा एक साथ टूटी-फूटी, काली, बहुत चौड़ी और धूमिल हो तो वह व्यक्ति पूर्ण स्वस्थ और शरीर से शक्तिशाली होता है।

स्वास्थ्य रेखा कहीं चमकीली स्पष्ट और कहीं धूमिल हो या खंडित हो रही हो तो व्यक्ति जीवन भर रोगी बना रहता है एवं जिस आयु खंड में स्वास्थ्य रेखा टूटी है-व्यक्ति को घोर कष्ट झेलना पड़ता है।

यदि स्वास्थ्य रेखा का रंग गुलाबी हो और उसके इर्द-गिर्द अनेक छोटी-छोटी रेखायें बनी हों तो व्यक्ति रक्त की बीमारियों से ग्रस्त रहता है।

यदि स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा के समानान्तर चले और मणिबंध रेखा की ओर आकर धनुषाकार हो जाये परन्तु जीवन रेखा को स्पर्श न करे तो व्यक्ति भयंकर रोगों से ग्रस्त होने के बाद पुनः स्वस्थ और निरोग हो जायेगा और लम्बी उम्र पाता है।

स्वास्थ रेखा पर चिन्ह

1. यदि स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो तो व्यक्ति के फेफड़े दुर्बल होते हैं और व्यक्ति फेफड़ों की बीमारी से त्रस्त रहता है।
2. यदि स्वास्थ्य रेखा के मार्ग में राहु क्षेत्र पर द्वीप का चिन्ह हो तो व्यक्ति तपेदिक के रोग से ग्रस्त रहता है।

3. स्वास्थ्य रेखा पर जाली का चिन्ह कम आयु का द्योतक है।
4. स्वास्थ्य रेखा के चन्द्र पर्वत पर जाली का चिन्ह उस आयु वर्ष में मृत्यु की सूचना देता है।
5. स्वास्थ्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो व्यक्ति पारिवारिक सुख से वंचित रहता है, परन्तु यदि यह चिन्ह स्वास्थ्य रेखा के अंत में हो तो व्यक्ति जीवन में असाधारण सफलतायें प्राप्त करता है।
6. जंजीरदार स्वास्थ्य रेखा वाला व्यक्ति लम्बी बीमारी का रोगी बना रहता है।

बुध अर्थात् स्वास्थ्य रेखा को शरीर के भागों पर प्रभाव के अनुसार चार भागों में बांटा जा सकता है–

(1) स्वास्थ्य रेखा के उद्‌गम स्थल मणिबंध रेखा से चन्द्र क्षेत्र तक का भाग शरीर के निम्न स्तर भाग तथा जननेन्द्रियों से सम्बंधित है। इस भाग में अशुभ चिन्ह या रेखायें इन्हीं अंगों पर प्रभाव डालते हैं।

यदि उन्नत चन्द्र क्षेत्र से आकर एक रेखा स्वास्थ्य रेखा को काटती है तो व्यक्ति गठिया या वात रोग से पीड़ित रहता है। यदि इस भाग में मंगल रेखा से एक रेखा निकलकर स्वास्थ्य रेखा को काट रही हो तो व्यक्ति असाध्य रोग से ग्रस्त हो जाता है, यदि यह काटने वाली रेखा गहरी और स्पष्ट हो तो व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। यदि स्वास्थ्य रेखा का उद्‌गम स्थल मणिबंध उभरा हुआ हो तो यह गुप्तांग रोगों की सूचना देता है। यदि मणिबंध से एक सीधी रेखा आकर स्वास्थ्य रेखा को काट रही हो तो पुरुष नपुंसक होगा और स्त्री के हाथ पर यह स्थिति बांझपन की प्रतीक है।

2. स्वास्थ्य रेखा का यह भाग, जो चन्द्र क्षेत्र से हथेली के मध्य तक रहता है, पेट, आंत, तितली, जिगर, गुर्दे तथा सम्पूर्ण पाचन संस्थान को प्रभावित करता है।

यदि इस भाग में स्वास्थ्य रेखा लहरदार हो तो यह क्षीण पाचन शक्ति की प्रतीक होती है।

यदि इस भाग में स्वास्थ्य रेखा अनेक छोटे-छोटे धुंधले टुकड़ों से बनी हो तो व्यक्ति का स्वास्थ्य खराब रहने के कारण शरीर की दुर्बलता प्रकट करती है।

यदि स्वास्थ्य रेखा का यह भाग धुंधला, टूटा-फूटा और अस्त-व्यस्त हो तथा रंग भी पीलापन लिये हुये हो तो गुर्दे, आंत आदि की कमजोर कार्य प्रणाली की सूचक होती है।

3. मध्य हथेली से हृदय रेखा तक का तृतीय भाग की स्वास्थ्य रेखा व्यक्ति के हृदय, फेफड़ों, छाती तथा रीढ़ से सम्बंधित स्थिति की परिचायक होती है।

यदि इस भाग में स्वास्थ्य रेखा का रंग लाल हो और नाखून सपाट हों तो व्यक्ति स्नायु विकारों से पीड़ित रहता है। हृदय रोग एवं रक्तवाहिनी की अनयिमितायें कष्टकारक होती हैं।

यदि इस भाग में स्वास्थ्य रेखा पर किसी प्रकार का कोई भी चिन्ह हो अथवा रेखा टूटी-फूटी हो तो छाती, फेफड़े, हृदय के रोगों से कष्ट मिलता है।

इस भाग में स्वास्थ्य रेखा का पीलापन लिये हुये होना, अथवा जंजीरदार होना क्षय रोग की सूचना देता है।

स्वास्थ्य रेखा के इस भाग में द्वीप के चिन्ह हों अथवा रेखा कटी-फटी हो तथा हृदय रेखा गुरु क्षेत्र के नीचे मस्तिष्क रेखा की ओर झुकती हो तो व्यक्ति दमा या श्वास की बीमारी से ग्रस्त रहता है।

इस भाग की स्वास्थ्य रेखा यदि गहरे लाल रंग की हो और हृदय रेखा से निकलकर वापस मस्तिष्क रेखा पर आकर समाप्त हो रही हो तो व्यक्ति रक्तदोषों के कारण मस्तिष्क की दुर्बलता तथा रोगों का शिकार रहता है। उसे मृगी, उन्माद आदि रोग घेरे रह सकते हैं। ऐसी स्थिति में यदि मस्तिष्क रेखा चन्द्र पर्वत की ओर झुक रही हो तो हिस्टीरिया जैसे मस्तिष्क रोग घातक भी हो सकते हैं।

4. हृदय रेखा से स्वास्थ्य रेखा के अंतिम छोर तक का भाग मुख, कान, नेत्र, चेहरा और सिर से सम्बंध बनाता है, इस भाग में उपस्थित अशुभ चिन्ह इन अंगों के कष्टकारक होते हैं।

इस भाग की स्वास्थ्य रेखा यदि हल्की पीलापन लिये हुये पतली हो तो व्यक्ति निम्न रक्तचाप से पीड़ित रहता है, यदि गहरे लाल रंग की हो तो उच्च रक्तचाप से ग्रस्त रहता है।

स्वास्थ्य रेखा के इस भाग में कोई तिल हो अथवा रेखा टूट रही हो और मस्तिष्क रेखा भी इसी भाग में टूट रही हो तो ऐसे व्यक्ति की गम्भीर मानसिक आघात के कारण मृत्यु हो सकती है।

स्वास्थ्य रेखा इस भाग में यदि हृदय रेखा से निकल रही हो तो यह हृदय के रोगों या हृदय की दुर्बलता का लक्षण होता है।

इस भाग में स्वास्थ्य रेखा का गहरा लाल होना मस्तिष्क ज्वर या सिरदर्द का सूचक होता है।

स्वास्थ्य रेखा का इस भाग में भंग होना या उस पर द्वीप का चिन्ह होना तथा मस्तिष्क रेखा पर भी किसी स्थान पर भंग या द्वीप का चिन्ह हो तो यह स्मरण शक्ति की दुर्बलता, नेत्र कष्ट, चक्कर आना आदि कष्टों को परिलक्षित करता है।

7. विवाह रेखा

यह हथेली पर बुध की उंगली के नीचे और हृदय रेखा के ऊपर स्थित होता है। यद्यपि विवाह रेखा की गणना छोटी रेखाओं में होती है और यह होती भी सबसे कम लम्बी, परन्तु इस रेखा का महत्व कम नहीं होता।

प्रकृति में प्रत्येक प्राणी या तीव्र जोड़े से रहता है। गृहस्थ जीवन को इसीलिये महत्व दिया गया है कि संसार में जीवन का क्रम चलता रहे। विवाह रेखा यह दर्शाती है कि उसका जीवन साथी कैसा होगा और दाम्पत्य जीवन किस प्रकार बीतेगा? दाम्पत्य सुख भी सांसारिक सुखों का एक अति महत्वपूर्ण भाग है। प्रणय सम्बंध और दाम्पत्य जीवन व्यक्ति को उत्साह और शक्ति प्रदान कर भी सकते हैं और उसके बल एवं स्फूर्ति को हतोत्साहित भी कर सकते हैं। यदि जीवन साथी मनोनुकुल हो तो व्यक्ति सफलता और उन्नति के मार्ग पर सभी कठिनाइयों को झेलता हुआ भी आगे बढ़ जाता है, परन्तु वह यदि अनमोल हो तो व्यक्ति निराशा और कुंठाओं का शिकार भी हो सकता है।

विवाह रेखा को इसी कारण प्रणय रेखा, प्रेम रेखा, वासना रेखा या परिणय रेखा भी कहा जाता है।

वास्तव में मनुष्य का जीवन सफल और सुखी तभी होता है जब उसका अर्द्धांग भी समान विचारधारा और उसी तरह प्रेममय हो। सुन्दर सुलक्षण और शिक्षित पत्नी घर को स्वर्ग बना देती है और गंवार, प्रतिस्पर्धी तथा हठी पत्नी घर को नर्क बना देती है। इसी प्रकार आकर्षक व्यक्तित्व, सुदृढ़ और सहृदय पुरुष विवाहित जीवन में आनंद प्रदान करता है और दूसरी ओर व्यभिचारी, दुर्वल और शंकालु प्रकृति का पुरुष दाम्पत्य जीवन में कहर ढा देता है।

जीवन के संघर्षों भरे मार्ग को तय करने के लिये दोनों पक्षों का धैर्यवान, [illegible] और सहयोगी होना अति आवश्यक है।

हाथ पर स्पष्ट विवाह रेखा की उपस्थिति से यह निश्चित नहीं होता कि व्यक्ति विवाह अवश्य करेगा, हो सकता है वह आजीवन विवाह न करे, परन्तु जीवन भर किसी से प्रेम करता रहे और मृत्युपर्यन्त उसे निभाता रहे। इसीलिये इसे प्रणय और प्रेम रेखा भी कहा जाता है। प्रेम और वासना के बाद विवाह या परिणय सूत्र में बांधा जावे अथवा विवाह के पश्चात् प्रेम किया जावे। मनुष्य के जीवन में प्रसन्नता और आनंद का अनुभव होना चाहिये। विवाह रेखा इन्हीं बातों को हाथ पर परिलक्षित करती है। यह रेखा व्यक्ति के प्रेम, वासना, प्रणय और परिणय के बारे में उसकी मनोवृत्ति को भी व्यक्त करती है।

हाथ पर कई विवाह रेखायें हो सकती हैं परन्तु इनमें से एक प्रमुख होती है। इनका मूल उद्‌गम हृदय रेखा होती है और कनिष्ठिका उंगली के नीचे बुध ग्रहक्षेत्र में जाकर समाप्त हो जाती है।

हृदय रेखा से निकलती हुई विवाह रेखायें यदि ऊपर की ओर अग्रसर हो रही हों तो व्यक्ति का विवाह निश्चित रूप से होता है, परन्तु यदि ये रेखायें हृदय रेखा के नीचे उतर रही हों तो विवाह होना असम्भव होता है।

प्रमुख विवाह रेखा वही होती है जो स्पष्ट, गहरी और लम्बी हो। यदि हथेली पर इस प्रकार की एक से अधिक रेखायें हों तो व्यक्ति की एक से अधिक शादियां हो सकती हैं; अर्थात् जितनी संख्या में ऐसी रेखायें होती हैं उतनी ही शादियां।

मुख्य विवाह रेखा के साथ जो छोटी-छोटी समानान्तर रेखायें संख्या में जितनी होंगी व्यक्ति या स्त्री उतने ही स्त्रियों या पुरुषों से प्रेम सम्बंध बनायेंगे, यह सम्बंध वासनात्मक मात्र भी हो सकते हैं। यदि इस प्रकार की छोटी-छोटी प्रणय रेखायें न हों तो व्यक्ति संयमी होता है-उनमें सम्भोग इच्छा भी अधिक नहीं होती।

विवाह रेखा जितनी लम्बी, सीधी और गहरी होगी व्यक्ति का विवाहित जीवन उतना ही सुखी और दीर्घकालिक होगा। यदि यह रेखा छोटी और संकरी होगी तो प्रणय सम्बंध अल्पकालिक अथवा पति या पत्नी अल्पजीवनी होते हैं।

यदि विवाह रेखा के उद्‌गम स्थल पर द्वीप का चिन्ह हो तो व्यक्ति का जीवन साथी किसी और से प्रेम कर रहा होता है और अपने इस विवाहित साथी को पूरी तरह समर्पित नहीं हो पाता।

यदि विवाह रेखा विलीन होने से पहले ऊपर की ओर चलती हो तो

व्यक्ति प्रेम में अकेला ही रह जाता है और सारी उम्र वह विवाह से वंचित ही रहता है। विवाह सम्बंधों की प्रक्रिया या योजना में बाधायें आते रहने से व्यक्ति कुंआरा ही रह जाता है।

यदि विवाह रेखा अपने अंतिम छोर पर आकर नीचे की ओर झुक जाये और हृदय रेखा के पास आ रही हो तो व्यक्ति के जीवन साथी की लम्बी बीमारी के फलस्वरूप मृत्यु हो जाती है अथवा लम्बे समय तक कलह और विवाद चलने के बाद सम्बंध विच्छेद हो जाता है।

यदि विवाह रेखा आगे चलकर दो शाखाओं में विभाजित हो रही हो तो व्यक्ति के प्रेम सम्बंध बीच में ही टूट जाते हैं।

यदि विवाह रेखा बीच में भंग हो रही हो तो प्रेम सम्बंध बीच में ही टूट जाते हैं। अनेक लोग दुःखी, दाम्पत्य जीवन के सूचक होते हैं।

यदि विवाह रेखा विलुप्त होते समय गोलाकार होकर नीचे की ओर झुक जाये और हृदय रेखा में विलीन हो जाये तो दम्पत्ति में से एक ही मृत्यु हो जाती है।

विवाह रेखा के आरम्भ में तिल या वर्ग का चिन्ह हो तो व्यक्ति का विवाह पूर्व से ही रोगी चले आ रहे (पुरुष या स्त्री) से होता है। तिल का चिन्ह वाले व्यक्ति का जीवन साथी अधिक दिन तक साथ नहीं दे पाता जबकि वर्ग के चिन्ह वाले व्यक्ति का साथी विवाहोपरान्त स्वस्थ हो जाता है।

विवाह रेखा के अंतिम छोर पर द्वीप के चिन्ह वाले व्यक्ति का जीवन साथी जीवन भर रुग्ण बना रहता है जिससे उसका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहता।

बुध पर्वत के मूल से कोई रेखा निकलकर विवाह रेखा को काटती हुई निकल जाये तो लड़का और लड़की पक्ष के प्रयत्नों के उपरान्त भी वह विवाह नहीं हो पाता।

विवाह रेखा के साथ छोटी-छोटी रेखाओं की समानान्तर उपस्थिति के साथ यदि बृहस्पति पर्वत सर्वाधिक उभरा हुआ हो तो व्यक्ति रेखाओं की संख्या के बराबर प्रेम-सम्बंध बनाता है। यदि शनि पर्वत उन्नत हो तो व्यक्ति अपने से अधिक उम्र की स्त्रियों से काम-सम्बंध रखता है। यदि सूर्य पर्वत की प्रधानता हो तो वह व्यक्ति सोच-समझकर किसी से प्रेम-सम्बंध बनाता है। यदि हाथ पर चन्द्र पर्वत सर्वाधिक उन्नत हो तो व्यक्ति हमेशा कामातुर रहता है और यदि शुक्र पर्वत अति विकसित हो तो व्यक्ति अनेक स्त्रियों

से सम्भोग का आनंद उठाता है, उसे स्त्रियों की क़मी नहीं रहती और प्रेम प्रणय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

हृदय रेखा से निकलकर विवाह रेखा में यदि कोई रेखा मिल रही हो तो व्यक्ति किसी स्वार्थ से प्रेरित होकर ही विवाह करता है और स्वार्थ सिद्धि के पश्चात् अपने जीवन-संगी से उसका व्यवहार उपेक्षापूर्ण हो जाता है।

यदि विवाह रेखा अंत में द्विमुखी होकर नीचे की ओर झुक रही हो तो दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण और यातनादायक हो जाता है और इसका अंत सम्बंध विच्छेद भी हो सकता है। यदि विवाह रेखा हृदय रेखा को पार कर आगे निकलकर द्विमुखी हो जाये तो सम्बंध-विच्छेद दोनों की सहमति से हो जाता है।

यदि विवाह रेखा सर्प की जीभ के आकार की होकर द्वीप बनाती हो तो विवाह अपमान और अपकीर्ति का कारण बन जाता है। अंत में सम्बंध विच्छेद होकर रहता है। द्वीप के स्थान पर यदि वह रेखा क्रॉस का चिन्ह बनाती हुई भाग्य रेखा से स्पर्श करे तो इस विवाह का एक प्राणी आत्महत्या करेगा।

यदि विवाह रेखा बुध पर्वत के नीचे भाग पर हो और व्यक्ति के हाथ पर गुरु पर्वत सर्वाधिक उन्नत हो तो उसकी शादी कम उम्र में हो जायेगी, परन्तु यदि शनि पर्वत की प्रधानता हो तो विवाह अधिक उम्र में होगा। ऐसी रेखा के साथ यदि सूर्य, बुध अथवा मंगल पर्वत सर्वाधिक उन्नत हो तो व्यक्ति का विवाह समय पर हो जाता है। यदि चन्द्र पर्वत अथवा शुक्र पर्वत अत्यधिक विकसित हो तो विवाह कम आयु में होता है।

यदि विवाह रेखा बुध की उंगली के तीसरे या दूसरे पोर पर पहुंच रही हो तो व्यक्ति आजीवन अविवाहित ही रहता है।

यदि प्रणय रेखा पर कहीं त्रिशूल का चिन्ह हो तो पति-पत्नी में तीव्र मतभेद रहेंगे और परिणित सम्बंध-विच्छेद में होती है। यदि त्रिशूल का चिन्ह विवाह रेखा के आरम्भ या अंत में हो तो प्रेमी-प्रेमिका अथवा पति-पत्नी में मतभेद बने रहते हैं।

यदि विवाह रेखा आगे बढ़कर आयु रेखा को काट रही हो तो व्यक्ति जीवन भर अपनी पत्नी से दुःखी रहता है।

विवाह रेखा यदि सूर्य रेखा से मिल रही हो पत्नी नौकरी करने वाली होती है, और पति अत्यन्त विख्यात अथवा उच्च सेवा का अधिकारी होता है।

यदि विवाह रेखा का अंत मंगल पर्वत पर हो तो व्यक्ति अपने जीवन साथी से मतभेद रखेगा और एक-दूसरे से ईर्ष्या रखेंगे।

यदि विवाह रेखा को संतान रेखायें काट रही हों तो व्यक्ति का विवाह होना असम्भव होता है।

यदि विवाह रेखा द्विजिह्वी हो और उसकी एक शाखा हृदय रेखा को स्पर्श करे तो व्यक्ति अपनी साली से यौन सम्बंध बना लेता है।

द्विजिह्वी विवाह रेखा की एक शाखा यदि मस्तिष्क रेखा को छू रही हो तो पति-पत्नी में मनमुटाव के कारण सम्बंध टूट जाते हैं।

द्विजिह्वी विवाह रेखा की एक शाखा यदि नीचे आकर शुक्र पर्वत पर पहुंच जाये तो वह वैवाहिक जीवन नष्ट हो जाता है।

यदि मंगल रेखा से कोई शाखा निकलकर विवाह रेखा से स्पर्श कर रही हो तो व्यक्ति के विवाह में बाधायें आयेंगी।

यदि विवाह रेखा पर एक से अधिक द्वीप के चिन्ह हों तो वह व्यक्ति जीवन भर कुंआरा रहेगा।

यदि विवाह रेखा आगे चलकर मस्तिष्क और भाग्य रेखा के साथ मिलकर त्रिभुज बना ले तो विवाहित जीवन कलह और दुःखों से भर जाता है।

चंद्र पर्वत पर शुक्र पर्वत से कुछ रेखायें निकलकर विवाह रेखा को स्पर्श करें तो वह व्यक्ति कामुक और व्यसनी होता है। प्रबल दोहरी हृदय रेखा विवाह रेखा के फल को नष्ट कर देती है।

विवाह रेखा पर द्वीप का एक चिन्ह प्रणाय सम्बंधों की दुःखदायी समाप्ति का संकेत देता है। नक्षत्र का चिन्ह प्रेम सम्बंधों के कारण, अपयश का प्रतीक होता है। क्रॉस का चिन्ह प्रेम-सम्बंध के बीच में ही टूट जाने का सूचक होता है।

यदि सुविकसित शुक्र क्षेत्र पर मणिबन्ध की ओर से सीधी खड़ी रेखायें आ रही हों तो व्यक्ति में स्त्री सहवास की तीव्र इच्छा रहती है और वह अनेक स्त्रियों से काम-सम्बंध बनाता है। इनमें से जो रेखा सबसे लम्बी और स्पष्ट होती है वह व्यक्ति की जीवन साथी बनती है। ऐसी रेखा जीवन रेखा के जितने पास होगी जीवन साथी के साथ उसका स्वभाव, आचार-विचार और व्यवहार उतना ही अधिक अनुकूल रहेगा। यह रेखा जीवन रेखा से जितना भी अधिक दूर होगी; अर्थात् अंगूठे के मूल के निकट होगी तो व्यक्ति के जीवन साथी का स्वभाव, आचार-विचार और व्यवहार उतने ही अधिक

भिन्न होंगे। वे जीवन भर एक-दूसरे का सम्मान नहीं कर पाते और कभी भी भावनात्मक रूप से एक नहीं हो पाते।

विवाह की आयु-गणना

विवाह रेखा और हृदय रेखा के उद्‌गम स्थानों की दूरी को आधार मान कर ही विवाह के समय की गणना की जाती है। विवाह रेखा हृदय रेखा के जितने पास होगी विवाह की तिथि भी उतनी शीघ्र होगी। इस दूरी को चार भागों में बांटकर गणना की जाये तो बुध की अंगुल मूल से एक भाग लगभग 15 से 20 वर्ष, दूसरा भाग 20 से 30 वर्ष, तीसरा भाग 30 से 35 वर्ष और चौथा भाग 35 से 40 वर्ष का होता है।

8. संतान रेखायें

यह रेखायें विवाह रेखा पर खड़ी, ऊर्ध्वाकार लकीरों के रूप में स्थित होती हैं; किन्तु ये निर्दोष तथा निरूतर होती हुई भी इतनी पतली होती हैं कि इन्हें आसानी से स्पष्ट देख सकना अत्यन्त कठिन होता है बल्कि कभी-कभी तो कुछ हाथों पर ये दृष्टिगोचर ही नहीं होतीं और इन्हें देखने के लिये उत्तल लैंस का उपयोग करना पड़ता है अथवा इन रेखाओं के समीप अंगूठा रखकर उसे दबाकर थोड़ा बाहर की ओर खींच लिया जाये।

संतान रेखायें पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के हाथों में ज्यादा स्पष्ट होती हैं।

इन रेखाओं में से जो लम्बी, स्पष्ट और गहरी रेखायें होती हैं वे पुत्र संतान की और जो रेखायें सीधी, छोटी तथा पतली होती हैं वे पुत्री संतान की प्रतीक होती हैं। संतान रेखाओं में से जो रेखा बीच में ही टूट रही हो या टूटी हुई हो तो उस संतान की मृत्यु हो जाती है।

सीधी, स्पष्ट एवं लम्बी रेखा होनहार और मेधावी संतान की तथा टेढ़ी-मेढ़ी, धुंधली रेखा निकम्मी एवं दुःखदायी संतान होने की सूचक होती है।

स्पष्ट तथा सीधी संतान रेखायें स्वस्थ संतान एवं हल्की और टेढ़ी-मेढ़ी रेखायें दुर्बल संतान की द्योतक होती हैं।

संतान रेखाओं की गिनती बुध क्षेत्र के अंत की ओर से हथेली के अंदर की ओर करते हुये की जाती है।

यदि मणिबंध रेखा अपने स्थान पर अस्वाभाविक रूप से उठी हुई हथेली के ऊपर चढ़ी हुई हो; अर्थात् मणिबंध हथेली में धंसा हुआ हो और शुक्र

पर्वत अविकसित हो तो संतान रेखायें होते हुये भी ऐसे पुरुष नपुंसकता के शिकार होते हैं एवं ऐसी स्त्रियां बांझपन के कारण संतान उत्पन्न नहीं कर पातीं और निस्संतान ही रहती हैं।

संतान रेखायें कभी-कभी किसी व्यक्ति के हाथ में वे रेखायें भी होती हैं जो हृदय रेखा से छोटी-छोटी रेखाओं के रूप में निकलकर ऊपर अर्थात् उंगलियों की ओर जाती हैं।

हृदय रेखा से निकलने वाली संतान रेखायें यदि विवाह रेखा को स्पर्श कर रही हों तो व्यक्ति अपनी इन संतानों के प्रति अधिक स्नेह रखता है।

यदि संतान रेखायें बुध ग्रह पर स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रही हों तो संतान का जन्म विवाह के शीघ्र पश्चात् और यदि यह रेखायें भीतर की ओर हों तो संतान की उत्पत्ति विलम्ब से होती है।

किसी भी प्रकार की खड़ी रेखायें यदि शुक्र क्षेत्र पर न हों तो यह संतानहीनता का सूचक होती हैं।

संतान रेखाओं पर चिन्ह–

यदि संतान रेखा पर प्रारम्भ में ही तिल या द्वीप का चिन्ह हो, परन्तु आगे रेखा निर्दोष हो तो संतान जन्म के समय रोग से ग्रस्त होगी और बाद में स्वस्थ हो जायेगी।

यदि द्वीप का चिन्ह रेखा के बीच में हो तो युवावस्था में बीमार होने का सूचक होता है।

संतान रेखा के अंत में द्वीप का चिन्ह उसके लम्बी अवधि तक रोग-ग्रस्त रहने के पश्चात् उसकी मृत्यु होने का संकेत देती है।

यदि संतान रेखा विवाह रेखा को हृदय रेखा की ओर काट रही हो तो वह संतान माता-पिता को दुःख और कलेश पहुंचाने वाली एवं कुल को कलंकित करने वाली होती है।

संतान रेखा का टूटा होना उसकी असमय मृत्यु का प्रतीक होता है। यदि संतान रेखा टूटकर उसके पास से दूसरी रेखा प्रारम्भ हो गयी हो तो वह संतान मां-बाप से अलग होकर रहती है।

यदि संतान रेखा विवाह रेखा को काटकर कनिष्ठिका उंगली के मूल को पार कर जाये तो वह संतान राजदण्ड भोगती है।

यदि संतान रेखा छोटे-छोटे कई टुकड़ों में बंट गयी हो तो वह संतान अकाल मृत्यु का ग्रास बनती हैं।

□□□

अध्याय-3

गौण रेखायें

इन रेखाओं को यद्यपि गौण रेखायें कहा जाता है, परन्तु वास्तव में यह भी हाथ पर मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इनमें से कुछ स्वतंत्र रूप से अपना प्रभाव डालती हैं और कुछ बड़ी व मुख्य रेखाओं के सम्पर्क में आकर उनके फलों को प्रभावित करती हैं।

1. मंगल रेखा

एक अथवा कई मंगल रेखायें निम्न मंगल क्षेत्र से अथवा जीवन रेखा के उद्गम क्षेत्र से निकलकर जीवन रेखा के समानान्तर चलते हुये शुक्र क्षेत्र की ओर जाती हैं, इनका आकार और लम्बाई एक समान नहीं होतीं–वे बड़ी, छोटी, स्पष्ट, धुंधली, मोटी या पतली भी हो सकती है। इनकी स्थिति धनुष के आकार की होती है। इन सभी रेखाओं का उद्गम क्षेत्र मंगल ही होता है।

यह रेखा मंगल क्षेत्र की साहसिकता एवं शक्ति तथा शुक्र क्षेत्र की जीवनीशक्ति और आंतरिक क्षमता के सम्मलित प्रभाव को प्रतिफलित करती है। यदि अनेक मंगल रेखायें परस्पर समानान्तर चल रही हों तो व्यक्ति की आंतरिक शक्ति का पूरा उपयोग नहीं होने देतीं और व्यक्ति चिंतित अवस्था में रहने के कारण कार्यों में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता। ऐसा व्यक्ति अपना ध्यान व्यसनों में लगा देता है और वासना-पूर्ति के कारण स्वास्थ्य खो बैठता है, उसका चारित्रिक पतन भी हो जाता है; यदि ऐसी स्थिति में शुक्र पर्वत अति विकसित हो तो कामुकता और चरित्रहीनता अधिक प्रबल हो जाती है।

यदि व्यक्ति की दो मंगल रेखायें पर्याप्त लम्बाई में हों और साथ ही हाथ पर जीवन रेखा पुष्ट और स्पष्ट हो तो वह व्यक्ति अपनी असीम काम-

मंगल क्षेत्र भी सुविकसित हो तो व्यक्ति शराबी और किसी भी स्तर की स्त्री से काम सम्बंध बना लेता है।

यदि मंगल रेखायें जीवन रेखा के साथ-साथ उसकी सहायक रेखाओं की तरह चलकर जीवन रेखा के साथ ही समाप्त हो रही हों तो वह व्यक्ति मेधावी और प्रत्यन्तपन्न जाति होता है अपने निर्णय खूब सोच-विचार कर लेता है तथा बात का धनी होता है। इस प्रकार की रेखाओं वाले लोग विज्ञान तथा मशीनरी सम्बंधी जटिल कार्यों में रुचि लेते हैं। मृदु स्वभाव के ऐसे व्यक्ति धन और सुख दोनों ही अर्जित कर लेते हैं।

यदि मंगल रेखायें जीवन रेखा के साथ से हटकर शुक्र पर्वत की ओर दिशा बदल दें तो व्यक्ति जीवन के उस आयु खंड से स्वभाव से हठी और लापरवाह हो जाता है। वह घटिया स्तर के लोगों से सम्बंध बनाना शुरू कर देता है।

यदि हाथ पर मंगल रेखा सुदृढ़ हो और हृदय रेखा एक ही हो तो व्यक्ति पुलिस या सेना में उच्च पद प्राप्त करता है। वह साहसी, निडर और युद्धप्रिय प्रकृति का होता है।

यदि प्रबल मंगल रेखा के साथ हाथ पर हृदय रेखा दोहरी हो तो ऐसा व्यक्ति डाकू या लुटेरा बनता है।

जीवन रेखा टूटी-फूटी हो परन्तु यदि उसके सामने मंगल रेखा उपस्थित हो तो टूटी जीवन रेखा का दोष नष्ट हो जाता है।

यदि जीवन रेखा हाथ पर चलते-चलते बीच में ही समाप्त हो जाये परन्तु उसके सामने मंगल रेखा सीधी शुक्र क्षेत्र तक जा रही हो तो व्यक्ति की असमय मृत्यु का दोष मिट जाता है, वह शारीरिक दुर्बलता के होते हुये भी पूरी आयु जीता है।

यदि मंगल रेखायें विवाह रेखा को स्पर्श करें तो व्यक्ति का दाम्पत्य जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है।

दोषरहित आयु रेखा के साथ हाथ पर मंगल रेखा या रेखाओं की उपस्थिति व्यक्ति की जीवनी-शक्ति को बढ़ा देती है।

यदि मंगल रेखा से शाखायें निकलकर शनि अथवा सूर्य रेखा को काटे तो यह उन्नति में बाधा डालती है, परन्तु यदि ये शाखायें भाग्य रेखा से मिल रही हों तो व्यक्ति की मानसिक शक्ति को बढ़ा देती हैं तथा इनका हृदय रेखा से स्पर्श करना भावुकता का संकेत देता है।

2. मणिबंध रेखा

मनुष्य की कलाई पर आड़ी रेखायें मणिबंध रेखायें कहलाती हैं। ये संख्या में एक से चार तक हो सकती हैं, परन्तु प्रायः पुरुषों के हाथ में तीन और स्त्रियों के हाथ में दो होती हैं जो कलाई को घेरे रहती हैं।

मणिबंध रेखाओं की उपस्थिति मनुष्य के स्वास्थ्य, सम्पत्ति और सम्मान में वृद्धि करने वाली होती हैं।

पुरुषों के हाथ की मणिवंध रेखायें धन रेखा, व्यवसाय रेखा व आध्यात्मिक रेखा के रूप में तथा स्त्रियों की मणिबंध रेखायें सौभाग्य व संतान सुख की रेखाओं के रूप में भी जानी जाती हैं।

यदि मणिबंध रेखाओं की संख्या चार है तो व्यक्ति की आयु 90 वर्ष से अधिक, यदि तीन है तो 70-75 वर्ष, यदि दो है तो 50 वर्ष और यदि मात्र एक है तो आयु 25 वर्ष के लगभग मानी जाती है।

यदि मणिबंध पर तीन ही रेखायें हों और तीनों स्वच्छ व स्वस्थ हों तो आयु 90 वर्ष के लगभग होती है और प्रत्येक रेखा 30 वर्ष की आयु को इंगित करती है।

निर्दोष, पुष्ट, चिकनी और पूर्ण मणिवंध रेखायें व्यक्ति के शांत, सुखी और उन्नतिशील जीवन की तथा स्वस्थ शरीर की प्रतीक होती है। टूटी या खंडित एवं मलीन मणिबंध रेखायें दरिद्रता तथा जीवनपथ की बाधाओं को सूचित करती हैं।

आपस में मिली हुई जंजीरदार मणिबंध रेखायें आर्थिक विपन्नता और कठिनाइयोंभरे जीवन का संकेत करती हैं।

मणिबंध से प्रारम्भ होकर ऊपर शुक्र क्षेत्र की ओर जाती हुई रेखायें उन्नति एवं चन्द्र क्षेत्र की ओर आती हुई रेखायें व्यक्ति के यात्रा योग की सूचक होती हैं।

मणिवंध से यदि कोई रेखा निकालकर मंगल क्षेत्र को जा रही हो तो व्यक्ति अनायास धन प्राप्त करता है, यदि यह रेखा शनि क्षेत्र को स्पर्श करे तो व्यक्ति का किसी बिछुड़े हुये प्रेमीजन से पुनः मिलन हो जाता है।

यदि मणिबंध से प्रारम्भ होकर रेखायें जीवन रेखा में जाकर समाप्त हो जायें तो व्यक्ति की मौत यात्रा में होती हैं। यदि मणिवंध से निकलकर एक रेखा बृहस्पति क्षेत्र तक पहुंच रही हो तो इस हाथ वाले का विवाह अपने बहुत अधिक आयु वाले के साथ होगा। यदि रेखा वुध क्षेत्र पर जा

रही हो तो अचानक धन-प्राप्ति और यदि रेखा सूर्य क्षेत्र की ओर चली जाये तो किसी धनवान व्यक्ति की कृपा-प्राप्ति होती है।

आपस में मिली हुई मणिबंध रेखाओं में से यदि कोई एक रेखा निकलकर शुक्र पर्वत पर जा रही हो तो व्यक्ति की कामुकता बढ़ी हुई होती है, यदि केतु क्षेत्र की ओर बढ़ रही हो तो व्यक्ति का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है।

यदि दोषपूर्ण मणिबंध रेखाओं का रंग पीला हो तो व्यक्ति का कोई सगा-सम्बंधी विश्वासघात करता है। यदि रेखाओं का रंग लाल हो तो यात्रा में दुर्घटना घटित होती है, यदि इन रेखाओं का रंग नीला है तो यह गम्भीर बीमारी का संकेत है और यदि रेखायें गुलाबी रंग में है तो व्यक्ति जीवन में आर्थिक हानियां उठाता है। यदि ये विविध रंग लिये हुये मणिबंध रेखायें दोषमुक्त हैं तो अशुभ फल नहीं देतीं।

यदि मणिबंध की पहली रेखा हथेली को ऊपर उठाने पर वृत्ताकार बने तो हृदय की दुर्बलता की प्रतीक होती है, यदि ऐसी स्थिति स्त्री के हाथ में हो तो गर्भपात हो सकता है।

मणिबंध रेखा पर बिन्दु का चिन्ह उदर रोग का सूचक और क्रॉस का चिन्ह कष्टों का प्रतीक होता है। इन रेखाओं पर द्वीप का चिन्ह दुर्घटनाओं की सम्भावना व्यक्त करता है।

3. चंद्र रेखा

यह रेखा मणिबंध अथवा चन्द्र पर्वत से प्रारम्भ होकर धनुषाकार रूप में बुध क्षेत्र तक पहुंचती है। जिस व्यक्ति के हाथ पर यह रेखा होती है वह सरल स्वभाव, सादगी पसंद और शिष्ट, संयमी होता है ये अपने शांत और मधुर आचरण द्वारा लोगों को लुभा लेते हैं। इनके बहुत कम ही शत्रु होते हैं। ऐसे लोगों को जल यात्रा में सावधानी बरतनी चाहिये यह घातक हो सकती है।

चन्द्र रेखा वाले व्यक्ति यदि निर्धन परिवार में भी जन्मे हों तो भी उन्नति कर उच्चता के शिखर तक पहुंच जाते हैं।

4. शुक्र रेखा

जो रेखायें शुक्र पर्वत पर आड़ी या खड़ी अंगूठे की ओर से जीवन रेखा की ओर जाती हैं शुक्र रेखायें कही जाती हैं। इन रेखाओं वाला व्यक्ति दार्शनिक प्रकार का होता है।

यदि ये रेखायें जीवन रेखा को काटकर भाग्य रेखा को जाकर स्पर्श करें तो व्यक्ति को दुर्घटना में धन-जन की हानि उठानी पड़ सकती है।

शुक्र रेखाओं का स्पष्ट और दोषरहित होना ही शुक्र के शुभ फल देता है। यदि ये रेखायें लहरदार, जंजीरदार भंग या द्वीप के चिन्ह से युक्त होंगी तो पुरुष व्यभिचारी और स्त्री कुलटा होती है।

5. यात्रा रेखा

प्राय चंद्र क्षेत्र पर हथेली के छोर से कुछ छोटी-छोटी समानान्तर चलती हुई रेखायें यात्रा रेखाओं के रूप में जानी जाती हैं-इन रेखाओं की लम्बाई यात्रा की दूरी निर्धारित करती है। छोटी रेखा लघु यात्रा अर्थात् अंतर्राज्यीय, मध्यम लम्बी रेखा अंतर्देशीय और लम्बी रेखा विदेश यात्रा की द्योतक होती है। कभी-कभी यात्रा रेखायें चन्द्र क्षेत्र, शुक्र क्षेत्र या मंगल क्षेत्र से भी आरम्भ होती हैं।

यदि चन्द्र क्षेत्र से निकली यात्रा रेखा चन्द्र क्षेत्र को पार कर शुक्र के आधार तक पहुंच जाये तो उस व्यक्ति का अधिकांश जीवन विदेशों में बीतता है। यदि यह रेखा और आगे बढ़कर मणिबंध के सबसे नीचे स्पर्श करे तो व्यक्ति विदेशी नागरिकता ग्रहण कर वहीं बस जाता है।

शुक्र पर्वत से अर्द्धचन्द्राकार रेखा चन्द्र पर्वत की ओर जा रही हो और शनि की उंगली पर सफेद चन्द्र दिखाई दे तो व्यक्ति जलमार्ग से विदेश यात्रा करता है।

मंगल रेखा से कोई रेखा निकलकर जीवन रेखा से मिल गयी हो और शनि की उंगली के नाखून पर सफेद अर्द्धचन्द्र दिखाई दे तो व्यक्ति अंतर्राज्यीय यात्रायें करता है।

जीवन रेखा अपनी समाप्ति पर द्विमुखी हो गयी तो जिसकी एक शाखा शुक्र क्षेत्र पर और दूसरी शाखा चन्द्र क्षेत्र की ओर जा रही हो तो व्यक्ति अंतर्देशीय यात्रायें करता है।

यदि यात्रा रेखा के किसी भाग पर द्वीप का चिन्ह हो तो व्यक्ति यात्रा काल में बीमार पड़ जाता है और यदि दोनों हाथों की यात्रा रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो तो यात्रा में रोग से मृत्यु हो जाती है।

यदि यात्रा रेखा के अंत में क्रॉस, तिल या बाधा का चिन्ह हो तो यात्रा में दुर्घटना हो सकती है और यदि नक्षत्र का चिन्ह हो तो यात्रा दुर्घटना में मृत्यु भी हो सकती है।

यदि यात्रा रेखा अंत में द्विमुखी हो रही हो तो व्यक्ति रोमांस के लिये यात्रा करता है।

6. गुरु वलय

तर्जनी उंगली के मूल अर्थात् निचले भाग में एक पोर से गुरु ग्रह के क्षेत्र को अर्द्धचन्द्राकार या अर्द्धवृत्ताकार रूप में घेरती हुई तर्जनी के बाहरी भाग से शनि क्षेत्र की ओर जाती हुई मुद्रा या मुद्रिका को गुरु वलय या बृहस्पति मुद्रिका कहते हैं।

यह रेखा या वलय बहुत कम हाथों में पायी जाती है, परन्तु जिन हाथों में गुरु वलय होता है उन व्यक्तियों की इच्छायें और उनकी अपेक्षायें बहुत अधिक होती हैं। ऐसे व्यक्ति यद्यपि रंगीन मिजाज और प्रसन्न चित्त वाले होते हैं परन्तु प्रदर्शन बहुत करते हैं।

ऐसी रेखा वाले व्यक्ति पर विद्याओं; जैसे जादूगरी, भूत-प्रेत साधना इत्यादि में रुचि रखते हैं और उनमें सिद्धि प्राप्त करते हैं।

यदि गुरु वलय वाले हाथ में मस्तिष्क रेखा तथा गुरु पर्वत क्षेत्र सुविकसित, स्पष्ट और पुष्ट हों तो ऐसा व्यक्ति आदर्श, उच्च एवं धार्मिक विचारों का होता है। उसे मोक्ष और परलोक सुधारने की चेष्टा रहती है। उसकी आस्तिकता से दुःखी व्यक्तियों के प्रति सहृदय बनाये रखती हैं।

7. शनि वलय

यह रेखा मध्यमा उंगली के नीचे शनि क्षेत्र को अपने परिक्षेत्र में घेरती है। यह गोलाकार रेखा तर्जनी एवं मध्यमा से निकलकर मध्यमा तथा अनामिका के बीच समाप्त होती है, इसे शनि मुद्रा या शनि मुद्रिका भी कहते हैं।

शनि वलय शनि पर्वत क्षेत्र को काटता है जिसके कारण इसे अशुभ चिन्ह माना गया है। इस रेखा वाले व्यक्ति अत्यन्त ईर्ष्यालु, घोर स्वार्थी, अस्थिरचित्त और शंकालु प्रकृति के होते हैं। कोई भी कार्य एकाग्रचित्त से नहीं करने के कारण इन्हें अपने कार्यों में बहुधा असफलता ही हाथ लगती है। अपने चंचल स्वभाव के कारण भी इनके शत्रुओं की संख्या बहुत हो जाती है तथा इनके प्रिय जन भी इनसे कतराने लगते हैं। दुर्भाग्य इन्हें घेरे रहता है जिससे अधिक श्रम–कम लाभ की स्थिति बनी रहती है और जीवन अभावों में ही बीतता है।

ऐसे व्यक्ति दुःखी होकर संसार से विलग से होकर एकांतप्रिय हो जाते हैं और परलोक सुधारने की चिंता में लग जाते हैं। इस वलय वाले व्यक्तियों की जीवनचर्या बड़ी अस्त-व्यस्त और गयीगुजरी होती है। वे कभी संन्यास ले लेते हैं और कभी भी वापस आकर गृहस्थ भी बन सकते हैं। कभी तनावग्रस्त होकर आत्महत्या करने की भी सोचने लगते हैं।

यदि शनि वलय भाग्य रेखा को स्पर्श न करे तो व्यक्ति अपनी तंत्र-मंत्र साधना में अथवा उद्देश्य में सफलता प्राप्त कर लेता है।

8. सूर्य वलय

सूर्य अथवा रवि वलय रेखा अर्द्धचन्द्राकार रूप में मध्यमा तथा अनामिका उंगलियों के बीच से निकलकर सूर्य क्षेत्र को घेरती हुई अनामिका एवं कनिष्ठिका के बीच में आकर समाप्त होती है। यह रेखा शुभ नहीं मानी जाती क्योंकि हाथ पर इसकी उपस्थिति सूर्य पर्वत के गुणों को क्षीण कर देती है चाहे सूर्य पर्वत क्षेत्र कितना भी शुभ लक्षणों से युक्त क्यों न हो। इसे सूर्य या रवि मुद्रिका भी कहा जाता है।

सूर्य वलय का दूषित प्रभाव व्यक्ति को सफलतायें ही नहीं देता है बल्कि उसके अच्छे कार्यों का भी उसे श्रेय नहीं मिल पाता और वह एक तिरस्कृत असफल व्यक्ति की तरह जीवन व्यतीत करता है। इसके हिस्से में दुःख, संताप और अपयश ही आते हैं।

9. शुक्र वलय

प्रायः यह रेखा बृहस्पति तथा शनि पर्वतों के बीच से प्रारम्भ होकर सूर्य पर्वत या बुध पर्वत अथवा दोनों के मध्य जाकर समाप्त होती हैं, किन्तु कभी-कभी इसका उद्गम निम्न प्रकार से होता है-

2. तर्जनी उंगली से प्रारम्भ होकर बृहस्पति, शनि एवं सूर्य पर्वतों को घेरती हुई कनिष्ठिका उंगली तक।
3. मध्यमा और अनामिका उंगलियों को घेरकर समाप्त होती है।
4. बृहस्पति क्षेत्र से निकलकर बुध पर्वत क्षेत्र की ओर जाते हुये मार्ग में ही समाप्त हो जाना।

जिन व्यक्तियों के हाथ में हृदय रेखा न हो वहां शुक्र वलय ही हृदय रेखा का काम करता है।

शुक्र वलय की हाथ पर उपस्थिति स्नायु-दुर्बलता का प्रबल प्रतीक है और

ऐसे व्यक्ति मानसिक, विक्षिप्तता तथा स्नायुविक दुर्बलताओं से ग्रस्त रहते हैं।

यह रेखा हृदय रेखा की उपस्थिति में उसकी सहायक रेखा भी होती है तथा व्यक्ति को अधिक भावुक और रसिक बना देती है।

यदि शुक्र वलय गुरु क्षेत्र से बुध क्षेत्र तक सुस्पष्ट और पुष्ट हो तो अशुभकारी माना जाता है। ऐसा व्यक्ति धोखेबाज, चालाक और घोर कामुक होता है। अपनी दिखावटी उदारता, सरलता और सदाचारिता के आवरण में लोगों को फंसाकर अपनी स्वार्थ सिद्धि में लगा रहता है। अपनी मधुर वाणी और वाचालता से यह लोगों को भ्रमित कर उनका उपयोग अपने हित में करते हैं, परन्तु ऐसे लोगों का मुखोटा जल्दी ही उतर जाता है और लोग इन्हें पहचानकर इनसे अलग हो जाते हैं।

यदि शुक्र वलय चौड़ा, गहरा और लाल रंग का हो तो वह व्यक्ति व्यसनी, आलसी और शराबी होता है तथा इसके विचार भी नीच स्वर के होते हैं। अपनी कमाई को अपनी लम्पटता तथा अन्य व्यभिचारों में नष्ट कर देता है।

यदि गुरु क्षेत्र से सूर्य क्षेत्र तक का शुक्र वलय बीच में खंडित, धूमिल और पुष्ट न हो तो भी शुभ होता है। यह व्यक्ति को बुद्धिजीवी व्यवसाय से जोड़ता है अथवा सफल व्यवसायी बनाता है। स्पष्ट शुक्र वलय उच्च पद तथा यश प्रदान करता है।

शुक्र वलय यदि पतला और उथला हो तो ऐसे व्यक्ति वाक्पटु, चतुर, प्रेमी तथा परिस्थितियों को मापने वाले होते हैं।

टूटी हुई शुक्र मुद्रिका वाला व्यक्ति अपने से हीन कुल या निम्न स्तर की स्त्रियों से काम सम्बंध बनाता है।

यदि शुक्र वलय रेखा अपने रास्ते में विवाह रेखा को काट रही हो तो व्यक्ति या तो अविवाहित ही रह जाता है अथवा उसका विवाहित जीवन दुःखपूर्ण रहता है।

यदि शुक्र वलय भाग्य रेखा को काटे तो व्यक्ति हतभागी, यदि हृदय रेखा को काटे तो हृदय रोगों से पीड़ित और यदि स्वास्थ्य रेखा को काटे तो क्षीण स्वास्थ्य वाला होता है।

हाथ पर एक से अधिक शुक्र वलय यदि पुरुष के हाथ में हो तो वह परस्त्रीगामी और यदि स्त्री के हाथ में हो तो वह परपुरुषगामी होता है।

10. बुध वलय

सूर्य की उंगली अर्थात् अनामिका एवं बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका

इन दोनों के मध्य में से जो रेखा निकलकर बुध पर्वत को घेरती हुई हथेली के बाहर की ओर अर्द्धचन्द्र बनाती हुई निकलती है उसे बुध दलय या बुध मुद्रिका कहते हैं।

हथेली पर बुध वलय की उपस्थिति बुध पर्वत के गुणों को क्षीण करती है, ऐसा व्यक्ति बाल्यकाल में शिक्षा से और युवाकाल में धन से वंचित रहता है। उम्र के साथ-साथ इनमें दुर्गुण भी बढ़ते जाते हैं और ये दुष्कर्मों में प्रवृत हो जाते हैं।

11. शत्रु-मित्र रेखायें

उंगली के पोरूओं पर खड़ी लकीरें मित्र रेखायें तथा आड़ी लकीरें शत्रु रेखायें कहलाती हैं।

यदि पोरूओं पर खड़ी लकीरें अर्थात् लघु रेखायें न हों तो ऐसे व्यक्तियों के मित्र नहीं होते, वे एकान्तप्रिय होते हैं। ये रेखायें जितनी स्पष्ट, गहरी और दोषरहित होंगी व्यक्ति के मित्र भी उतने ही सच्चे और सहायक होते हैं और ये रेखायें जितनी धुंधली, पतली और दोषपूर्ण होंगी मित्र लोग उतने ही स्वार्थी और दिखावटी होंगे।

उंगलियों के पोरूओं पर आड़ी लकीरें अर्थात् लघु रेखायें यदि स्पष्ट, गहरी और निर्दोष होंगी तो व्यक्ति के शत्रु उतने ही सबल, दुष्ट और अहितकारी होंगे, यदि ये आड़ी रेखायें अस्पष्ट, कटी-फटी और दूषित होंगी तो उसके शत्रु दुर्बल एवं कम हानिकारक होंगे।

यदि पोरूओं पर खड़ी रेखायें पोरूओं की संधियों को काटकर आगे निकल जायें तो उनके मित्रों का व्यवहार शत्रुओं जैसे हो जाता है।

तर्जनी उंगली पर खड़ी लकीरें नौकरी करने वाले मित्रों तथा आड़ी लकीरें नौकरी करने वाले शत्रुओं की संख्या दर्शाती हैं।

मध्यमा उंगली पर खड़ी लकीरें कलाकार मित्र तथा आड़ी लकीरें कला क्षेत्र की शत्रुओं को सूचित करती हैं।

अनामिका उंगली पर खड़ी लकीरें उच्च स्तर के मित्र तथा आड़ी लकीरें प्रभुतासम्पन्न शत्रुओं का संकेत देती हैं।

कनिष्ठिका उंगली पर खड़ी लकीरें व्यवसायी मित्र तथा आड़ी लकीरें व्यापार क्षेत्र के शत्रुओं की प्रतीक होती हैं।

□□□

अध्याय-4
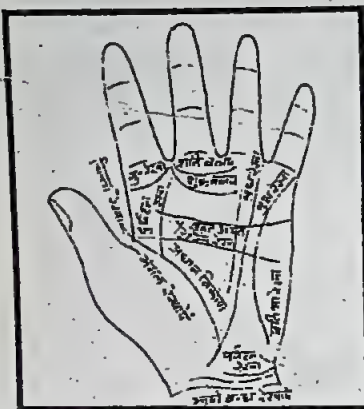
हस्त चिन्ह

मनुष्य के हाथ पर पर्वत क्षेत्रों एवं हस्तरेखाओं के अतिरिक्त कुछ अति महत्वपूर्ण चिन्ह होते हैं जो व्यक्तित्व व कृतित्व दोनों पर उल्लेखनीय प्रभाव डालते हैं।

1. बृहत् चतुष्कोण

हथेली पर हृदय रेखा तथा मस्तिष्क रेखा के मध्य जो घिरा हुआ स्थान होता है उसे बृहत् चतुष्कोण या आयत कहते हैं। यदि यह चतुष्कोण देखने में आकर्षक और गहरा हो तो व्यक्ति बुद्धिमान, चतुर, विवेकी, तर्कशील और दूरदर्शी होता है। ऐसे व्यक्ति हर परिस्थिति में अपनी चतुराई से कार्य सिद्ध कर लेते हैं। बृहत् चतुष्कोण हाथ वाले व्यक्ति राजनीति के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करते हैं। वे सामयिक सूझबूझ और सावधान रहने वाले व्यक्ति होते हैं।

हथेली पर अधिक चौड़ा चतुष्कोण व्यक्ति के विवेकहीन और कुतर्की होने का परिचायक होता है। ऐसे व्यक्ति यद्यपि अपनी बात पर टिके नहीं रह पाते और लापरवाह होते हैं, परन्तु हृदय से उदार तथा प्रेम एवं मित्रता में समर्पण व त्याग की भावना से भरे हुये होते हैं।

लम्बा और संकुचित चतुष्कोण वाला व्यक्ति भावुक एवं अति संवेदनशील होता है तथा आवेश में आकर परिणाम की परवाह किये बिना कार्य को कर डालता है और इसीलिये कभी-कभी हानि भी उठाता है।

यदि बृहत् चतुष्कोण हथेली के बीच चौड़ा और हथेली के छोर पर आते-आते संकुचित होता चला गया हो तो ऐसा व्यक्ति धूर्त प्रकृति का लोभी होता है। उसकी धारणायें धन इकट्ठा करने की होती हैं।

बृहत् चतुष्कोण हथेली के बीच प्रारम्भ में संकरा हो किन्तु हथेली के छोर पर अंत में आते हुये चौड़ा होता चला गया हो तो वह व्यक्ति हमेशा उतावला रहता है। हर बात को तुरन्त मान लेगा, परन्तु बाद में ध्यान आने पर उचित अनुचित विचार पर निर्णय करेगा।

वास्तव में मस्तिष्क रेखा और हृदय रेखा से बिना यह चतुष्कोण अथवा आयत मस्तिष्क तथा हृदय को संतुलन की स्थिति परिलक्षित करता है।

बृहत् चतुष्कोण के भीतर यदि स्पष्ट गुणन चिन्ह हो तो व्यक्ति आत्म-सम्मान वाला, बुद्धिमान तथा ज्योतिष विज्ञान में रुचि रखने वाला होता है।
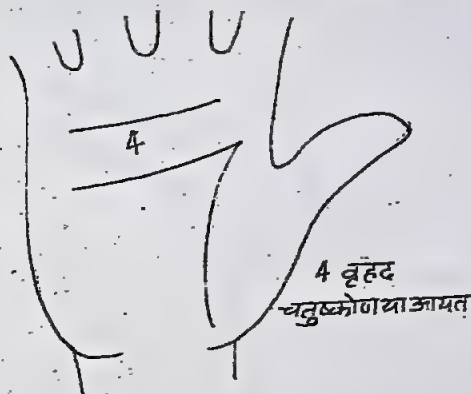
2. बृहत् त्रिभुज या त्रिकोण

जीवन रेखा, मस्तिष्क रेखा एवं बुध अथवा स्वास्थ्य रेखा—इन तीनों रेखाओं द्वारा घिरा हुआ त्रिकोणीय क्षेत्र बृहत् त्रिभुज कहलाता है। इस त्रिभुज की हाथ पर उपस्थिति अच्छी आर्थिक स्थिति का प्रतीक मानी जाती है।
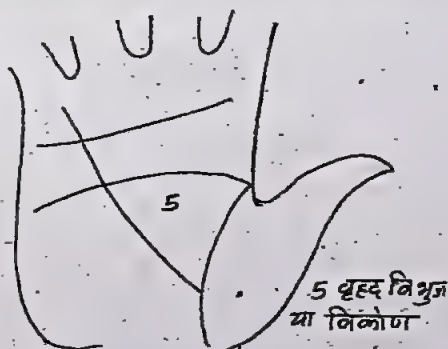
यह त्रिभुज या त्रिकोण जितना विस्तृत होता है व्यक्ति उसी अनुपात में स्वस्थ और सुखी रहता है।

जीवन रेखा तथा स्वास्थ्य रेखा के बीच का कोण जितना अधिक होगा; अर्थात् यह दोनों रेखायें आपस में जितनी पास होंगी कोण उतना ही बड़ा बनेगा, व्यक्ति का स्वास्थ्य उतना ही डांवाडोल रहता है। ऐसे व्यक्ति अपने स्वास्थ्य के प्रति वहुत चिंतित भी रहते हैं। यदि यह कोण समकोण या उससे कुछ ही अधिक हो; अर्थात् स्वास्थ्य रेखा जीवन रेखा पर लम्बवत्-सी खड़ी प्रतीत हो रही हो तो व्यक्ति की असमय मृत्यु की सम्भावना रहती है। इस कोण का न्यूनकोणीय होना; अर्थात् स्वास्थ्य रेखा एवं जीवन रेखा में अधिक अंतर होना उत्तम और नीरोगी स्वास्थ्य का सूचक होता है।

आकार में यह त्रिभुज जितना विशाल होगा व्यक्ति उतना ही दृढ़निश्चयी, वीर और स्वतंत्रता-प्रेमी होता है।

3. सामान्य त्रिभुज

सामान्यतः कम हाथों पर ही त्रिभुज के चिन्ह होते हैं। जिन त्रिभुजों अथवा त्रिकोणों की रचना हाथ पर स्पष्ट, पुष्ट एवं दोषरहित रेखाओं से होती है वह शुभ फल देने वाले होते हैं। यह त्रिभुज आकार में जितना बड़ा होगा उतना ही श्रेष्ठता और उत्तम फल का देने वाला होगा।

हाथ पर मध्य हथेली पर त्रिभुज की उपस्थिति व्यक्ति की क्रियाशीलता, सदाचारिता, सच्चरित्रता और आस्तिकता को दर्शाती है, ऐसा व्यक्ति भाग्यवान और उन्नति करने वाला होता है, ऐसा व्यक्ति स्वभाव से मृदु और गम्भीर तथा शांत होता है।

बृहत् आकार का त्रिभुज व्यक्ति की विशाल हृदयता एवं लघु आकार का त्रिभुज हृदय की संकीर्णता का परिचायक होता है। ऐसे व्यक्तियों में आत्मविश्वास की कमी होती है और उन्हें सफलता प्राप्त करने में कठिनाइयों तथा विलम्ब का सामना करना पड़ता है।

रेखाओं पर त्रिभुज

जीवन रेखा पर त्रिभुज के चिन्ह वाले मनुष्य की उम्र लम्बी; अर्थात् लगभग 80-90 वर्ष तक होती है। भाग्य रेखा पर हो तो व्यक्ति अपने कार्यों में असफल रहता है, भाग्य उसका साथ नहीं देता। हृदय रेखा पर त्रिभुज का चिन्ह वाले व्यक्ति का भाग्योदय उसकी वृद्धावस्था में होता है। मस्तक

रेखा पर यह चिन्ह मेधावी होने एवं उत्तम शिक्षा-प्राप्ति का प्रतीक होता है। सूर्य रेखा पर त्रिकोण बना हो तो वह व्यक्ति लेखन कार्य से कीर्ति प्राप्त करता है और यदि त्रिकोण का चिन्ह स्वास्थ्य रेखा पर हो तो स्वस्थ शरीर का सूचक होता है। यदि त्रिभुज का चिन्ह चन्द्र रेखा पर हो तो वह व्यक्ति एकाधिक विदेश यात्रायें करता है, परन्तु विवाह रेखा पर त्रिभुज का चिन्ह विवाह में बाधायें खड़ी करने वाला होता है।

पर्वतों पर त्रिभुज

बृहस्पति क्षेत्र पर निर्दोष त्रिभुज वाले हाथ का व्यक्ति उन्नतिशील, बुद्धिमान और कार्यकुशल होता है। वह अपनी कूटनीतिज्ञ चतुरता से मनुष्यों को अपने प्रभाव में ले लेते हैं और अपनी प्रगति में इस्तेमाल करते हैं। ऐसे व्यक्ति धूर्त भी होते हैं। यदि त्रिभुज दोषयुक्त है तो वह व्यक्ति वाचाल, आत्म-प्रशंसक एवं अभिमानी होता है।

शनि क्षेत्र पर यदि निर्दोष त्रिभुज का चिन्ह हो तो व्यक्ति परा विद्याओं में निपुण होता है। वह तंत्र-मंत्र की सिद्धि और हिप्नोटिज्म में भी दक्षता प्राप्त कर लेता है। दोषपूर्ण त्रिभुज वाला व्यक्ति धूर्त और ठग बनता है।

यदि दोषरहित त्रिभुज का चिन्ह सूर्य क्षेत्र पर हो तो व्यक्ति परोपकार करने वला, धार्मिक प्रवृत्ति का एवं कलाकार वृत्ति का होता है। ऐसा व्यक्ति अपनी बुद्धिमत्ता से कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। दोषयुक्त त्रिभुज असफलताओं एवं सामाजिक निन्दाओं का सूचक होता है।

बुध क्षेत्र पर दोष विहीन त्रिभुज का चिन्ह वाले व्यक्ति उच्च श्रेणी के व्यवसायी अथवा विख्यात वैज्ञानिक होते हैं। ऐसे व्यक्ति लोगों की कमजोरियों से भरपूर लाभ उठाते हैं। यदि यह त्रिभुज दोषपूर्ण है तो व्यक्ति का व्यापार में दिवाला निकल जाता है। उसका पूर्ववर्ती वंशजों से प्राप्त धन भी नष्ट हो जाता है।

यदि निर्दोष त्रिभुज का चिन्ह मंगल क्षेत्र पर हो तो व्यक्ति वीर, साहसी और धैर्यवान होता है। ऐसे व्यक्ति युद्ध-कौशल में प्रवीण होते हैं और विपरीत परिस्थितियों में भी लक्ष्य-प्राप्ति के मार्ग से हटते नहीं। ऐसे चिन्ह वाले लोग अपने शौर्य प्रदर्शन के लिये पुरस्कृत भी होते हैं। यदि त्रिभुज सदोष हो तो व्यक्ति भीरू स्वभाव का और निर्दयी होता है उसे दूसरों को सताने में आनंद आता है।

शुक्र क्षेत्र पर दोषरहित त्रिभुज का चिन्ह होना व्यक्ति के सरल और रंगीन स्वभाव तथा ललित कलाओं में रुचि रखने की सूचना देता है। ऐसे

व्यक्ति का जीवन-स्तर ऊंचा होता है। वह बात का धनी और उन्नतिशील होता है। दूषित त्रिभुज वाला व्यक्ति घोर कामुक होता है और यदि स्त्री के हाथ में शुक्र क्षेत्र पर दोषपूर्ण त्रिभुज है तो वह व्यभिचारिणी होती है।

प्लूटो क्षेत्र पर दोषरहित त्रिभुज का चिन्ह वाले व्यक्ति का बुढ़ापा सुख से कटता है, परन्तु दूषित त्रिभुज वाले व्यक्ति वृद्धावस्था में कष्ट उठाते हैं।

4. गुणन चिन्ह या क्रॉस

सामान्यत: हथेली पर क्रॉस का चिन्ह अशुभ लक्षणों का प्रतीक होता है परन्तु केवल गरु अर्थात् बृहस्पति पर्वत क्षेत्र पर इसे शुभ फल देने वाला माना जाता है। गुरु क्षेत्र पर क्रॉस का चिन्ह वाला व्यक्ति स्वयं धनवान होता है और उसे अपनी ससुराल से भी प्रचुर मात्रा में धन प्राप्त होता है। इसकी पत्नी शिक्षित और पतिव्रता होती है। ऐसा व्यक्ति दूसरों की सहायता करने वाला और धार्मिक विचारों वाला होता है।

शनि क्षेत्र पर क्रॉस का चिन्ह वाले व्यक्ति दुर्घटना में मृत्यु के शिकार बनते हैं अथवा इनकी असमय मृत्यु होती है।

सूर्य पर्वत क्षेत्र पर क्रॉस व्यवसाय में असफलता और आर्थिक हानि का द्योतक होता है। ऐसे अभागे पुरुष समाज में भी निन्दा और उपहास के पात्र बनते हैं इनकी मृत्यु हत्या से होती है।

बुध क्षेत्र पर यदि क्रॉस का चिन्ह हो तो व्यक्ति ठग, धोखेबाज, स्वार्थी और चालवाज होता है। अपने बुरे आचरणों के कारण समाज में सर्वत्र निन्दा मिलती है।

शुक्र क्षेत्र पर क्रॉस का चिन्ह व्यक्ति को प्रेम सम्वंधों में असफलता और निराशा दिलाता है। ये लोग बदनामी झेलते हैं और अपने प्रयत्नों में सफलता प्राप्त नहीं कर पाते, निराश और निंदित जीवन व्यतीत करते हैं।

चन्द्र क्षेत्र पर क्रॉस का चिन्ह वाला व्यक्ति मस्तिष्क अथवा जलोदर जैसे रोगों से ग्रस्त रहता है। इस चिन्ह वाला व्यक्ति विदेशों में रहते हुये भारी कष्ट उठाता है, उसकी मृत्यु जल में डूबने से होती है।

मंगल क्षेत्र पर क्रॉस का चिन्ह वाला व्यक्ति अत्यन्त क्रोधी स्वभाव का झगड़ालू प्रकृति का होता है। व्यक्ति जेल जाता है। ऐसे व्यक्ति की मृत्यु आत्महत्या अथवा युद्ध में होती है।

यदि हाथ के राहु क्षेत्र पर क्रॉस का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति हमेशा दु:ख भोगता है, दुर्भाग्य उसे छोड़ता नहीं।

यदि हाथ के केतु क्षेत्र पर क्रॉस का चिन्ह हो तो उसकी शिक्षा अधूरी रहती है तथा पूरा जीवन कष्टों में बीतता है।

जीवन रेखा के जिस आयुखंड पर क्रॉस का चिन्ह होता है तो ऐसा व्यक्ति आयु के उस भाग में घोर शारीरिक कष्ट भोगता है।

यदि क्रॉस का चिन्ह मस्तक रेखा पर हो तो व्यक्ति उस आयुभाग में मस्तिष्क पीड़ा या रोग से पीड़ित रहता है अथवा विक्षिप्त हो जाता है। इस आयु वर्ष में पति या पत्नी की मृत्यु भी हो सकती है।

हृदय रेखा पर क्रॉस चिन्ह उस आयुखंड में व्यक्ति को हृदय रोगों अथवा रक्तचाप से पीड़ित रखता है। ऐसे व्यक्तियों का हृदय दुर्बल होता है इस आयु-वर्ष में पति या पत्नी की मृत्यु होती है।

क्रॉस का चिन्ह यदि भाग्य रेखा पर हो तो आयु के उस भाग में वह किसी-न-किसी प्रकार की हानि उठाता है।

सूर्य रेखा पर क्रॉस का चिन्ह व्यक्ति की प्रगति में बाधक होता है और व्यक्ति अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता।

विवाह या प्रणय रेखाओं पर क्रॉस का चिन्ह पुरुष या स्त्री के विवाह में बाधक होता है। ऐसे पुरुष या स्त्री का विवाहित जीवन कलहपूर्ण रहता है।

स्वास्थ्य रेखा पर क्रॉस का चिन्ह वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य ठीक नहीं होता और वह अस्वस्थ रहता है विशेषकर आयु के चिन्ह वाले भाग में।

यात्रा रेखाओं पर क्रॉस का चिन्ह यात्रा-काल में आकस्मिक दुर्घटना में मृत्यु को दर्शाता है।

5. तारा एवं नक्षत्र

मनुष्य की हथेली पर तारे या नक्षत्रों के चिन्ह स्थलीय स्थिति के अनुसार फल देते हैं।

अंगूठे पर नक्षत्र का चिन्ह व्यक्ति की इच्छाशक्ति को प्रबलता प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति प्रभावशाली व्यक्तित्व वाला, परिश्रमी और सहनशील होता है।

जीवन रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह व्यक्ति की आकस्मिक मृत्यु की सूचना देता है।

मस्तिष्क रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह व्यक्ति की बुद्धि को कुंठित कर देता है। वह व्यक्ति रासायनिक दुर्बलताओं का रोगी रहता है। तारे या नक्षत्र

का चिन्ह का हृदय रेखा पर होना व्यक्ति को छद्म रोगों से ग्रस्त रखता है।

मंगल रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह व्यक्ति की आकस्मिक मृत्यु का आत्महत्या द्वारा होना दर्शाता है।

सूर्य रेखा पर यदि नक्षत्र का चिन्ह है तो वह व्यक्ति को धन-लाभ एवं कार्यों में सफलता दिलाता है।

चंद्र रेखा पर नक्षत्र के चिन्ह की उपस्थिति व्यक्ति की उन्नति में बाधक बनती है और वह जलोदर की उपस्थिति व्यक्ति की उन्नति में बाधक बनती है और वह जलोदर रोग से पीड़ित रहता है।

स्वास्थ्य रेखा पर तारे या नक्षत्र का चिन्ह व्यक्ति को जीवन भर भयंकर कष्ट देता रहता है। वह प्रायः रोगी ही बना रहता है।

नक्षत्र का चिन्ह यात्रा रेखा पर होना व्यक्ति की यात्रा-काल में ही मृत्यु का द्योतक होता है।

यदि प्रणय अर्थात् विवाह रेखा पर तारे या नक्षत्र का चिन्ह हो तो उस पुरुष को स्त्री के विवाह में अनेक बाधायें आती हैं तथा विवाह के बाद दाम्पत्य जीवन भी कलहकारी रहता है।

बृहस्पति क्षेत्र पर नक्षत्र का चिन्ह व्यक्ति के लिये अत्यन्त शुभ होता है वह धन, यश, उच्चपद और शक्तियां प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति को आकस्मिक रूप से भी धन की उपलब्धि हो जाती है। कार्यशील होने के कारण निरन्तर प्रगति करता है।

नक्षत्र या तारे का चिन्ह यदि शनि क्षेत्र पर हो तो व्यक्ति सद्गुणी, भाग्यशाली और यशस्वी तो होता है परन्तु वह अपनी वृद्धावस्था में कष्ट उठाता है।

सूर्य क्षेत्र पर नक्षत्र का चिन्ह व्यक्ति को मानसिक चिन्ताओं से मुक्त और ऐश्वर्य-वैभव से युक्त रखता है, उसे जीवन में कभी अभावों का सामना नहीं करना पड़ता।

यदि नक्षत्र का चिन्ह बुध क्षेत्र पर हो तो वह व्यक्ति की परोपकारी भावना और बुद्धिमत्ता का प्रतीक होता है। ऐसे व्यक्ति अध्यवसायी, उद्यमी, सक्षम एवं कुशल व्यापारी होते हैं और धनवान बनते हैं।

मंगल क्षेत्र पर तारे या नक्षत्र का चिन्ह वाला व्यक्ति साहसी, वीर तथा धीरज वाला होता है। वह अपने शौर्य पराक्रम से मान-सम्मान और यश पाने का अधिकारी बनता है।

चन्द्र क्षेत्र पर नक्षत्र के चिन्ह का होना व्यक्ति को उच्च श्रेणी का कलाकार बनाता है। ऐसा व्यक्ति लेखन अथवा साहित्य के माध्यम से धन और प्रसिद्धि अर्जित करता है।

शुक्र क्षेत्र पर यदि तारे अथवा नक्षत्र का चिन्ह हो तो वह व्यक्ति प्रेम सम्बंधों में सफल रहता है, उसकी काम वासना उद्धत रहती है तथा उसका विवाह भी सुन्दर स्त्री से ही होता है।

यदि नक्षत्र का चिन्ह राहु क्षेत्र पर हो तो वह पुरुष भाग्यवान होता है। सभी कार्यों में सफलता प्राप्त करता है और उसे यश मिलता है।

केतु क्षेत्र पर नक्षत्र या तारे के चिन्ह वाले व्यक्ति का जीवन मंगलमय रहता है और वह धनवान बनता है।

6. बिन्दु या तिल

मनुष्य की हथेली पर तिल सामान्यत: काले रंग के होते हैं परन्तु कभी-कभी किसी हाथ में इनका रंग श्वेत, पीला या लाल भी हो सकता है। काले रंग के बिन्दु या तिल ही सर्वाधिक बहुमुखी प्रभाव डालते हैं, ये धन की स्थिति को मुख्य रूप से परिलक्षित करते हैं। श्वेत बिन्दु जीवन में प्रगति, पीले बिन्दु शरीर में रक्त की कमी और लाल बिन्दु रक्तचाप के रोगों के परिचायक होते हैं।

धन के संदर्भ में यदि हाथ की मुट्ठी वंद करने पर काला तिल या विन्दु मुट्ठी के भीतर बंद हो जाता हो तो उस व्यक्ति के पास अक्षय धन होता है, परन्तु काला तिल यदि मुट्ठी के बाहर रह जाये तो धन का संग्रह नहीं हो सकता।

बृहस्पति क्षेत्र पर काला तिल बाधाओं और असफलताओं का सूचक होता है। व्यक्ति के विवाह में बाधायें आती हैं, धन-हानि होती है और अपयश भी मिलता है। इन व्यक्तियों को अपने उद्देश्यों में सफलता भी नहीं मिल पाती।

शनि क्षेत्र पर काला तिल प्रेम-सम्बंधों के कारण बादनामी दिलवाता है। ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति का विवाहित जीवन सुखी नहीं रहता, कभी-कभी कलह की परिणति किसी एक की आत्महत्या में होती है।

यदि काले तिल का चिन्ह सूर्य क्षेत्र पर हो तो व्यक्ति के मान-सम्मान पर आंच आती है और वह निन्दा का पात्र बनता है। ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति नेत्र रोगों से पीड़ित भी रहते हैं।

बुध-क्षेत्र पर काले तिल का चिन्ह व्यवसाय में हानि दर्शाता है। ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति बहुधा ठग और जेबकतरे भी बन जाते हैं।

शुक्र क्षेत्र पर काले तिल वाले हाथ का व्यक्ति अत्यन्त कामुक होता है, परन्तु सम्भोग में पूर्ण समर्थ न होने के कारण अपमानित होता रहता है।

चन्द्र क्षेत्र पर काले तिल वाले व्यक्ति को प्रेम-सम्बंधों में सफलता नहीं मिल पाती, इनका विवाह भी बिलम्ब से ही हो पाता है। इन्हें पानी में डूबने का खतरा बना रहता है।

राहु पर्वत क्षेत्र पर काले तिल वाला व्यक्ति अपनी युवावस्था में धन की कमी के कारण बहुत कष्ट पाता है।

केतु पर्वत क्षेत्र पर काला तिल हो तो वह व्यक्ति बाल्यकाल से ही रोगी बना रहता है।

भाग्य रेखा पर काला तिल उन्नति और प्रगति में बाधक तथा दुर्भाग्य का सूचक होता है।

चन्द्र रेखा पर काला तिल भी व्यक्ति की उन्नति में बाधा डालने वाला होता है। यह तिल व्यक्ति की जल में बह जाने या डूब जाने से मृत्यु की सम्भावना भी व्यक्त करता है।

स्वास्थ्य रेखा पर काले तिल वाला व्यक्ति जीवन भर रोगी और अस्वस्थ बना रहता है, यह जिन्दगी का कोई सुख नहीं भोग पाता।

मंगल रेखा पर काला तिल व्यक्ति को डरपोक और साहस विहीन बना देता है।

विवाह का प्रणय रेखा पर काले तिल वाले व्यक्ति को उसके प्रेम या विवाह में बाधायें आती हैं।

यात्रा रेखाओं में किसी एक पर काले तिल का होना यात्रा में व्यक्ति की मृत्यु का सूचक होता है।

हृदय रेखा पर काले तिल का होना व्यक्ति के हृदय की दुर्बलता का द्योतक होता है।

काला बिन्दु या तिल मस्तिष्क रेखा पर हो तो व्यक्ति को मस्तिष्क रोग से पीड़ित रखता है। व्यक्ति के कभी सिर पर आघात भी हो सकता है।

जीवन या आयु रेखा पर काला तिल वाला व्यक्ति स्वभाव से चिड़चिड़ा होता है, ऐसा व्यक्ति लम्बी अवधि की बीमारी से पीड़ित रहता है।

सूर्य रेखा पर काले तिल की उपस्थिति व्यक्ति के कार्यों प्रगति एवं उन्नति में बधक होती है और वह सफलता से दूर ही रह जाता है।

7. जाल

हाथ पर कभी-कभी आड़ी और खड़ी रेखायें परस्पर एक दूसरे को काटकर एक जाल का रूप दे देती हैं। इन जालों के भी हथेली के भिन्न-भिन्न स्थानों पर भिन्न-भिन्न फल होते हैं।

बृहस्पति क्षेत्र पर आड़ी-खड़ी रेखाओं से बना जाल व्यक्ति को दम्भी, निर्दयी, स्वार्थी और निर्लज्ज बना देता है।

शनि क्षेत्र पर बना जाल व्यक्ति को कंजूस, निष्क्रिय और चंचल चित्त वाला बना देता है।

सूर्य क्षेत्र पर लकीरों का जाल वाला व्यक्ति अपने स्वभाव व कार्यों के कारण समाज में निन्दा और उपहास का पात्र बनता है।

बुध क्षेत्र पर रेखाओं का जाल अपने विवेकहीन कार्यों से व्यक्ति को हानि एवं पछतावे से पीड़ित कर देता है।

मंगल क्षेत्र का रेखा-जाल व्यक्ति की मानसिक स्थिति को अशान्त कर देता है।

चंद्र क्षेत्र पर बना लकीरों का जाल व्यक्ति को सदा अस्थिर, चिन्ता, आतुर और असंतुष्ट रखता है।

शुक्र क्षेत्र पर बना हुआ जाल वाला व्यक्ति कामुक, लम्पट और व्यसनी होता है, वह इन कामों के लिये अधीर हो उठता है।

मणिबंध पर जाल का चिन्ह व्यक्ति को पतन के गर्त में गिरा देता है।

राहु क्षेत्र पर जाल का चिन्ह व्यक्ति के दुर्भाग्य का प्रतीक है। ऐसा व्यक्ति निराशा और असफलताओं से जीवन भर घिरा रहता है।

केतु क्षेत्र पर ज़ाल का चिन्ह वाला व्यक्ति छूत की बीमारियों से पीड़ित बना रहता है।

8. वृत्त

यह हथेली पर लकीरों या रेखाओं से बने छोटे-छोटे गोल घेरे होते हैं और व्यक्ति के जीवन पर प्रभाव भी डालते हैं। बृहस्पति पर्वत क्षेत्र पर वृत्त के चिन्ह वाले व्यक्ति प्रभावशाली व्यक्तित्व के होते हैं। वे उच्च पद और सफलतायें प्राप्त करते हैं। इन लोगों का विवाह धनी परिवार में होता है

जहां से इन्हें काफी दहेज भी मिलता है।

शनि क्षेत्र पर वृत्त का चिन्ह वाला व्यक्ति आकस्मिक रूप से धन प्राप्त करता है और उन्नति के पथ पर बढ़ता है।

सूर्य पर्वत क्षेत्र पर वृत्त का चिन्ह वाले व्यक्ति को अपने उच्च विचारों और आचरण के कारण यश प्राप्त होता है।

बुध क्षेत्र पर वृत्त का निशान वैभवपूर्ण जीवन एवं ऐशोआराम का प्रतीक होता है, ऐसा व्यक्ति व्यवसाय में भारी सफलतायें प्राप्त करता है।

शुक्र क्षेत्र पर बना वृत्त का चिन्ह व्यक्ति को कामुक, व्यसनी और इन्द्रियों का दास बना देता है। कभी-कभी ऐसे चिन्ह वाले लोग नपुंसक भी हो जाते हैं।

चन्द्र क्षेत्र पर वृत्त के चिन्ह वाला व्यक्ति बहुधा रोगी ही बना रहता है। ऐसे व्यक्तियों को जल में मरने की सम्भावना बनी रहती है।

मंगल क्षेत्र का वृत्त चिन्ह व्यक्ति को भीरू स्वभाव का बना देता है।

भाग्य रेखा पर वृत्त के चिन्ह वाला व्यक्ति जीवन भर कष्टों और संतापों से दुःख पाता रहता है।

जीवन रेखा पर वृत्त के चिन्ह की उपस्थिति दृष्टिदोष अथवा दृष्टि में कमजोरी की सूचक होती है।

हृदय रेखा पर बना घेरे का निशान व्यक्ति को संवेदनहीन बना देता है, उसे भावनायें प्रभावित नहीं करतीं।

मस्तिष्क रेखा पर घेरे का चिन्ह व्यक्ति को मानसिक रोगों से ग्रस्त रखता है।

सूर्य रेखा पर व्रत्त का चिन्ह वाला मनुष्य पद-प्रतिष्ठा, मान-सम्मान और धन प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करता है।

यात्रा रेखा पर वृत्त का निशान यात्रा में कष्ट या निशान वाली यात्रा में मृत्यु की सूचना देता है।

परिणाम या विवाह रेखा पर वृत्त के चिन्ह वाला मनुष्य आजीवन अविवाहित ही रह जाता है।

9. वर्ग या चतुष्कोण

चार छोटी या बड़ी अथवा दोनों प्रकार की समकोणीय रेखाओं से घिरे क्षेत्र को वर्ग या चतुष्कोण कहते हैं।

जीवन रेखा पर वर्ग का चिन्ह व्यक्ति की मरणांतक स्थिति में जीवन

रक्षा करने का सूचक होता है।

भाग्य रेखा पर वर्ग का चिन्ह व्यक्ति के भाग्योदय में सहायक होता है और बाधायें दूर करता है।

सूर्य रेखा पर वर्ग का चिन्ह वाला व्यक्ति मान-सम्मान, यश और धन अर्जित करता है।

चन्द्र रेखा पर वर्ग का चिन्ह व्यक्ति की उन्नति और प्रगति पथ की बाधायें हटाता है।

मस्तिष्क रेखा पर वर्ग का चिन्ह मनुष्य के मस्तिष्क को चिन्तामुक्त और सक्रिय बनाता है।

हृदय रेखा पर वर्ग का चिन्ह हृदय को पुष्ट रखता है। स्वास्थ्य रेखा पर यदि वर्ग का चिन्ह हो तो व्यक्ति का स्वास्थ्य उत्तम और नीरोगी रहता है।

यदि वर्ग का निशान विवाह रेखा पर वना हो तो उस पुरुष को सुन्दर पत्नी और धनी ससुराल मिलती है। व्यक्ति को ससुराल से काफी धन भी मिलता है।

यदि वर्ग का चिन्ह यात्रा रेखा पर हो तो यह सुखद जीवन यात्राओं का प्रतीक होता है।

बृहस्पति पर्वत क्षेत्र पर बन रहा वर्ग का चिन्ह वाला व्यक्ति उच्च पद प्राप्त करता है, वह कुशल प्रशासक होता है तथा यश अर्जित करता है।

शनि क्षेत्र पर वर्ग का चिन्ह संकटों में रक्षा करने में सहायक होता है। इस चिन्ह वाला व्यक्ति लम्बी उम्र पाता है।

सूर्य पर्वत क्षेत्र पर वर्ग का चिन्ह वाला व्यक्ति मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा और धन अर्जित करता है तथा अपने जनहित कार्यों के फलस्वरूप यश प्राप्त करता है।

बुध पर्वत क्षेत्र पर वर्ग का चिन्ह भी व्यक्ति को संकटों से बचाता है ऐसा व्यक्ति इस चिन्ह के कारण जेल जाने से भी बच जाता है। मंगल क्षेत्र पर वर्ग के चिन्ह वाला व्यक्ति संयमी स्वभाव का और लड़ाई-झगड़े से दूर रहने वाला होता है।

वर्ग का चिन्ह यदि चन्द्र पर्वत क्षेत्र पर हो तो व्यक्ति दयालु, क्षमाशील, विवेक-बुद्धिवाला तथा धीर-गम्भीर होता है।

वर्ग का चिन्ह यदि शुक्र पर्वत क्षेत्र पर हो तो व्यक्ति अपनी कामुक प्रवृत्ति होने पर भी बदनाम नहीं हो पाता।

वर्ग का चिन्ह यदि राहु पर्वत क्षेत्र पर हो तो कारावास के दंड से तो बच जाता है, परन्तु उसे घर छोड़ना पड़ जाता है।

वर्ग का चिन्ह यदि केतु पर्वत क्षेत्र पर हो तो यह मनुष्य के भाग्यवर्धन में सहायक होता है और मार्ग की बाधायें दूर करता है।

10. द्वीप

हथेली के किसी भी भाग पर द्वीप का चिन्ह हो वह प्रायः अमंगलकारी ही होता है। आयु के जिस भाग को यह घेरता; अर्थात् प्रभावित करता है वह अवधि मनुष्य के लिये कष्टसाध्य ही सिद्ध होती है।

गुरु अर्थात् बृहस्पति पर्वत क्षेत्र पर द्वीप की उपस्थिति व्यक्ति के आत्मविश्वास में कमी करती है।

शनि क्षेत्र पर द्वीप का चिन्ह व्यक्ति के हर कार्य में कष्टों की सूचना देता है।

सूर्य पर्वत क्षेत्र पर द्वीप का चिन्ह वाला व्यक्ति ईर्ष्यालु स्वभाव का होता है और उसमें उत्साह की कमी रहती है।

बुध पर्वत क्षेत्र पर द्वीप का होना व्यापारिक कार्यों में हानिकारक एवं शर्मसार करने वाला होता है।

शुक्र क्षेत्र पर द्वीप का चिन्ह होना जीवन भर निराशा देने वाला होता है। मनुष्य को अपने प्रियतम से बिछुड़ना पड़ता है।

चन्द्र क्षेत्र पर द्वीप का चिन्ह क्रूर स्वभाव का प्रतीक होता है। ऐसे व्यक्ति में उत्साह तथा खोज की कमी होती है।

जीवन रेखा पर द्वीप के चिन्ह वाला व्यक्ति वर्णसंकर होता है मस्तिष्क रेखा पर द्वीप के चिन्ह वाला व्यक्ति वंशानुगत मस्तिष्क रोगों से पीड़ित रहता है।

हृदय रेखा पर द्वीप के चिन्ह वाला व्यक्ति हृदय के रोगों और हृदय की दुर्बलता से दुःखी रहता है।

यदि द्वीप का चिन्ह भाग्य रेखा पर हो तो यह कष्ट, निराशा तथा असफलताओं का द्योतक होता है।

यह द्वीप का चिन्ह स्वास्थ्य रेखा पर हो तो व्यक्ति विभिन्न शारीरिक व्याधियों से ग्रस्त रहता है।

यदि द्वीप का चिन्ह सूर्य रेखा पर हो तो व्यक्ति को अपने जाने–अनजाने कार्यों के लिये [illegible]यश का भागी बनना पड़ता है।

हथेली पर स्थित चिन्ह

❑❑❑

अध्याय-5
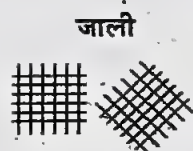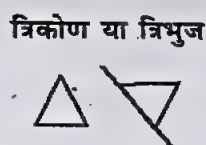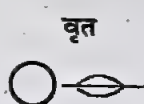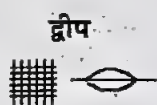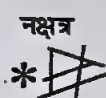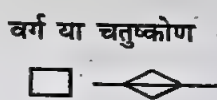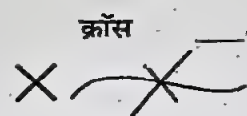
मनुष्य शरीर पर तिलों का समग्र प्रभाव

माथे पर तिल स्त्री को परिश्रमी बनाता है, वह अपने स्वामी को प्रसन्न रखती है।

बायें गाल पर तिल वाली स्त्री सौभाग्यवती होती है। जिस स्त्री की नाक के अग्रभाग पर लाल मस्सा हो वह वैभवशालिनी होती है, काला हो तो व्यभिचारिणी होती है और विधवा हो जाती है।

स्त्री के दायें अंग पर तिल हो तो पति प्रसन्न रहता है। स्त्री के कान, कपोल या कंठ के बायीं ओर तिल हो तो प्रथम संतान पुत्र होती है।

यदि स्त्री की दाहिनी आंख के कोने में तिल हो तो वह धनवान होती है, परन्तु यौवनावस्था में कष्ट पाती है। यदि बायें कोने में तिल हो तो उसके चालचलन के कारण उसकी बदनामी होगी तथा दुर्घटना में चोट लगने की सम्भावना रहती है।

स्त्री की कनपटी पर तिल हो तो उसके कुच पर भी तिल होगा, यदि यह तिल दायीं ओर है तो पति प्रसन्न रहता है परन्तु स्त्री विधवा हो जाती है। यदि बायीं ओर है तो रोगी बनी रहती है।

कान पर तिल का होना अल्पायु का द्योतक होता है।

यदि किसी मनुष्य के माथे पर बायीं ओर तिल है तो पेट पर और बांह पर बायीं ओर भी तिल होगा यह अशुभ होता है। यदि बायीं भौंह पर तिल होगा तो बायीं ओर छाती पर भी तिल होगा—यह यात्रा योग है।

दोनों भौंहों के बीच तिल वाले स्त्री और पुरुष प्रेम विवाह करते हैं।

नेत्र में तिल का होना परिश्रमी होने का प्रतीक होता है। कान में तिल वाला मनुष्य सदा सफलता प्राप्त करता है, परन्तु नाक में तिल का होना दुष्टता का सूचक होता है।

नाक के ऊपर तिल होगा तो नाभि पर भी होगा और व्यक्ति के प्रेम-सम्बंध अच्छे होते हैं। यात्रा का योग होता है।

नाक की नोंक पर यदि तिल है तो गुदा पर भी होगा—ऐसा पुरुष अल्पायु होता है और स्त्री आत्महत्या करती है।

यदि कान के पास तिल है तो पेट पर भी तिल होता है। यह तिल स्त्री-पुरुष दोनों को ही कष्टदायक होता है।

पुरुष के कान, कपोल अथवा कंठ पर बायीं ओर तिल हो तो प्रथम संतान कन्या और दायीं ओर तिल हो तो प्रथम संतान पुत्र होती है।

गाल पर यदि तिल है तो कूल्हे पर भी होगा—यह तिल यदि दायीं ओर है तो शुभ और यदि बायीं ओर है तो अशुभ होता है। दायीं ओर का तिल धनी और बायीं ओर का निर्धन बनाता है।

तिल यदि माथे पर दायीं ओर है तो मान-सम्मान में वृद्धि करता है परन्तु यदि यह तिल बायीं ओर है तो कष्ट देने वाला होता है, माथे के बीच में धनी होने का प्रतीक है।

ठुड्डी पर तिल की उपस्थिति पति-पत्नी में प्रेम रहने की सूचक होती है। ठुड्डी पर तिल होगा तो पुट्ठे या पांव पर भी होगा।

दोनों भौंहों पर तिल यात्रा-योग दर्शाता है।

बायीं आंख पर तिल कष्टकारक और दायीं आंख पर तिल सुखी दाम्पत्य जीवन का संकेत देता है।

बायीं ओर की भौंह पर तिल पुरुष को स्त्री द्वारा कष्ट देने वाला होता है। यदि व्यक्ति की दायीं आंख के भीतर का तिल है तो वह मेधावी होता है।

यदि तिल ओठों के ऊपर है तो पुरुष या स्त्री अय्याश होंगे और लोभी होंगे। यदि ऊपर के ओठ पर तिल है तो गुदा पर भी तिल होगा। यदि नीचे के ओठ पर तिल है तो घुटने पर भी तिल होगा और स्त्री हो या पुरुष विवाह दूरस्थ स्थान पर होगा।

यदि ठुड्डी पर तिल होने के साथ दायें पांव पर भी तिल हो तो व्यक्ति हिजड़ा होता है।

गर्दन पर दायीं ओर तिल का होना व्यक्ति के बुद्धिमान और ईश्वरभक्त होने तथा तिल का बायीं ओर होना दुर्घटना का संकेत देता है।

यदि तिल पेट के बीच में है तो व्यक्ति कायर होता है, पीठ पर है तो यात्रा-योग बनता है और तिल का निशान यदि पीठ के नीचे की ओर

है तो निर्धनता दर्शाता है।

दायीं ओर की बांह पर तिल का निशान सम्मान-प्राप्ति का एवं बायीं ओर की बांह पर तिल का निशान व्यक्ति के झगड़ालु स्वभाव को इंगित करता हैं।

तिल का निशान छाती के दायीं ओर पत्नी से प्रेम करना और छाती के बायीं ओर होना झगड़े की सूचना देता है।

जिन लोगों की कमर पर तिल होता है उनका सारा जीवन कष्टों में बीतता है।

यदि व्यक्ति की छाती पर दायीं ओर तिल का चिन्ह हो तो परेशानी का कारण बनता है। यह चिन्ह यदि बायीं ओर हो तो पुरुष कामुक होता है। जिन व्यक्तियों के बगल में तिल का चिन्ह होता है वे दूसरों को हानि पहुंचाते रहते हैं। छाती पर बीच में तिल का चिन्ह सुखी जीवन का प्रतीक होता है। पसलियों पर तिल का चिन्ह व्यक्ति को डरपोक बनाता है।

जिस व्यक्ति के दिल के ऊपर सीने पर तिल का चिन्ह होता है वह बुद्धिमान होता है।

दायीं हथेली पर तिल का होना धनी बनाता है और बायीं हथेली पर विद्यमान तिल वाले व्यक्ति अपव्ययी होते हैं।

दायें पैर पर तिल का निशान व्यक्ति को बुद्धिमान बनाता है, परन्तु बायें पैर पर तिल का चिन्ह व्यक्ति को फिजूलखर्ची बनाता है।

दायें हाथ के पीछे तिल का होना व्यक्ति को मितव्ययी एवं बायें हाथ के पीछे तिल वाला व्यक्ति बुद्धिमान होता है।

अंगूठे पर तिल का होना व्यक्ति को कार्यकुशल बनाता है, तर्जनी उंगली पर तिल हो तो व्यक्ति धनवान तो होता है, परन्तु वह दूसरों से द्वेष रखता है।

मध्यमा उंगली पर तिल की उपस्थिति धनी और सुखी जीवन की सूचक होती है।

अनामिका उंगली पर तिल वाला व्यक्ति मेधावी व पराक्रमी होता है। वह धनी होता है और यश अर्जित करता है। कनिष्ठिका उंगली पर तिल का होना व्यक्ति के चंचल चित्त का प्रतीक होता है। वह पराये धन से धनी बनता है।

अध्याय-6
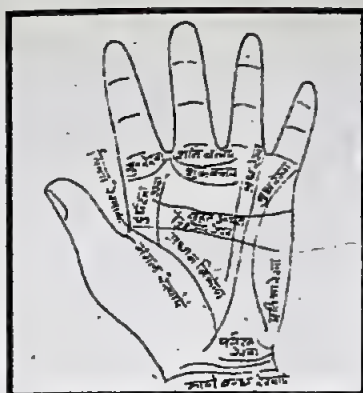
प्रमुख योग एवं फल

मनुष्य की हथेली पर कुछ रेखायें एवं चिन्ह इतने प्रभावशाली होते हैं कि व्यक्ति के जीवन में न केवल विशेष महत्व रखते हैं बल्कि विष्मयकारी और आमूलचूल परिवर्तन कर देते हैं। इनकी उपस्थिति राजयोग से लेकर निर्धन योग, जीवन योग से लेकर मृत्यु योग तथा मित्र योग से शत्रु योग की रचना कर देती है, इनके फल भी विविध और विभिन्न होते हैं–

1. राज योग–हाथ की दोषरहित सूर्य रेखा मस्तिष्क रेखा को स्पर्श करे एवं मस्तिष्क रेखा ऊपर की ओर चलकर बृहस्पति पर्वत को छू रही हो और इस प्रकार ये रेखायें एक चतुर्भुज बना रही हों, अथवा दाहिने हाथ के मध्य में कुम्भ, अश्व अथवा बदली स्तम्भ का चिन्ह हो तो व्यक्ति देश के उच्चतम पद पर पहुंचता है।

2. शासक योग–सूर्य की उंगली लम्बी, सीधी तथा उसका प्रथम पोरुआ लम्बा हो अथवा मस्तिष्क रेखा सीधी हो और शनि की उंगली लम्बी हो तो व्यक्ति देश का सर्वोच्च शासक होता है।

3. प्रशासक योग–हथेली पर बृहस्पति पर्वत एवं सूर्य पर्वत, उन्नत शनि रेखा तथा बुध रेखा स्पष्ट, पुष्ट और दोषहीन हो अथवा शनि पर्वत पर त्रिशूल का सुस्पष्ट चिन्ह एवं भाग्य रेखा और चन्द्र रेखा आपस में मिल रही हों तो व्यक्ति राज्यपाल अथवा प्रशासनिक सेवा का उच्च अधिकारी बनता है।

4. राजदूत योग–बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बी तथा नुकीली हो और उसके नाखून चमकीले हों।

अथवा बृहस्पति पर्वत एवं मंगल पर्वत उन्नत तथा मस्तिष्क रेखा द्विजिह्वी हो।

5. सेनापति योग–शनि पर्वत एवं मंगल क्षेत्र उन्नत हों तथा कनिष्ठिका उंगली लम्बी और पुष्ट हो तो व्यक्ति पराक्रमी होता है और पुलिस का सर्वोच्च अधिकारी अथवा सेनापति बनता है।

6. अधिकारी योग–तर्जनी उंगली और कनिष्ठिका उंगली सीधी पुष्ट, लालिमा लिये हुये और शुभ चिन्हों से अंकित हो तथा मंगल क्षेत्र अति विकसित न हो।

अथवा बृहस्पति, शनि एवं सूर्य पर्वत उन्नत हो और सूर्य रेखा लम्बी, गहरी व सुदृढ़ हो।

अथवा सूर्य पर्वत एवं मंगल पर्वत क्षेत्र उभरे हुये हों और सूर्य रेखा सुदृढ़ हो।

7. न्यायाधीश योग–बृहस्पति की उंगली अर्थात् तर्जनी सीधी, हथेली बड़ी, बुध उंगली अर्थात् कनिष्ठिका का पहला पोर लम्बा तथा उंगलियों के जोड़ लम्बे हों।

अथवा हृदय रेखा और मस्तिष्क रेखा के बीच चतुष्कोण बन रहा हो, मस्तिष्क रेखा सुस्पष्ट हो एवं कनिष्ठिका का प्रथम पोरूआ कोणीय हो।

अथवा मंगल क्षेत्र उन्नत और दोषमुक्त, कनिष्ठिका उंगली का पहला पोरूआ लम्बा एवं हाथ की उंगलियां गांठदार हो।

8. वकील योग–मस्तिष्क रेखा लम्बी, सीधी और शाखायुक्त हो तथा हथेली चपटी हो अथवा मस्तिष्क रेखा जीवन रेखा से अलग हो और सूर्य रेखा लम्बी हो।

9. चिकित्सक योग–बुध की उंगली लम्बी हो, बुध पर्वत सुविकसित हो और सूर्य रेखा स्पष्ट हो।

अथवा सूर्य व मस्तिष्क रेखायें पुष्ट हों, बुध का पर्वत उन्नत हो और उस पर कुछ रेखायें हों अथवा मंगल पर्वत और बुध पर्वत विकसित हो एवं बुध पर्वत पर चार खड़ी रेखायें हों।

10. नर्स योग–शुक्र और चन्द्र पर्वत उन्नत हो, बुध पर्वत पर अनेक रेखायें हों तथा हाथ सुदृढ़ पतला या चपटा हो।

11. अभिनेता योग–शुक्र पर्वत उन्नत हो तथा अंगूठे व उंगलियों के अग्रभाग नुकीले हों।

12. साहित्यक योग–मस्तिष्क रेखा स्पष्ट हो और कनिष्ठिका उंगली लम्बी, पुष्ट एवं सुन्दर हो।

अथवा उंगलियां चौकोर उनके सिरे नरम हों, मस्तिष्क रेखा स्पष्ट हो

तथा कनिष्ठिका उंगली सुदृढ़ और लम्बी हो।

13. लेखक योग—मस्तिष्क रेखा सुन्दर हो, दोनों हाथों में सूर्य रेखा गहरी और निर्दोष हो तथा सूर्य पर्वत उठा हुआ हो एवं मस्तिष्क रेखा शाखादार होकर चन्द्र पर्वत की ओर झुकी हुई हो।

14. कलाकार योग—हाथ की सभी उंगलियां कोणदार एवं सुदृढ़ हों और उनका पहला पोर लम्बा हो।

15. चित्रकार योग—मस्तिष्क रेखा लम्बी हो, सूर्य की उंगली मोटी हो एवं चन्द्र व मंगल क्षेत्र मणिबंध रेखा को दबा रहे हों।

16. नायक का योग—सूर्य की उंगली गोल, पतली, चपटी और सुविकसित हो तथा सभी उंगलियां आकार में समान और अलग हों एवं अंगूटा बाहर की ओर झुकता हो।

अथवा भाग्य रेखा की शाखायें बुध पर्वत की ओर जा रही हों।

अथवा मस्तिष्क रेखा बुध पर्वत की ओर झुक रही हो और जीवन रेखा से मिली हुई हो, बुध का पर्वत उन्नत हो एवं उंगली का नख छोटा हो।

अथवा भाग्य रेखा अंत में द्विजिह्वी हो गयी हो और शनि की उंगली अर्थात् मध्यमा हाथ की अन्य उंगलियों से श्रेष्ठ हो एवं शनि का पर्वत सूर्यक्षेत्र की ओर झुका हुआ हो।

17. गायक योग—सूर्य रेखा गहरी और सूर्य की उंगली अर्थात् अनामिका नुकीली हो तथा शुक्र पर्वत दृढ़ हो।

18. संगीतकार योग—हाथ की सभी उंगलियां कौणिक एवं मजबूत हों और उनका पहला पोर लम्बा हो तथा शुक्र पर्वत उन्नत हो।

19. शिक्षक योग—बृहस्पति, शनि, सूर्य और बुध के पर्वत उन्नत हों।

अथवा हाथ की उंगलियां लम्बी हों उनके आगे का सिरा मोटा हो, सूर्य रेखा सुन्दर हो और शनि की उंगली का दूसरा पोर लम्बा हो।

20. वैज्ञानिक योग—हाथ की सभी उंगलियां नोकदार हों।

21. गणितज्ञ योग—हथेली पतली हो, उंगलियां लम्बी, चौड़ी, दोहरी गांठों वाली हों, उनका पहला व दूसरा पोर पुष्ट हो, मस्तिष्क रेखा लम्बी, सीधी हो, मध्यमा उंगली भारी और उसका दूसरा पोर लम्बा हो या शुक्र के पर्वत पर त्रिकोण बन रहा हो।

22. इंजीनियर योग—सूर्य, बुध और मंगल पर्वत क्षेत्र उन्नत हो तथा मस्तिष्क रेखा स्पष्ट व निर्दोष हो।

23. ठेकेदार योग–जीवन रेखा से एक शाखा निकलकर सूर्य पर्वत की ओर जा रही हो।

24. सैनिक योग–बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका छोटी हो और मंगल क्षेत्र विकसित हो।

अथवा शनि पर्वत की प्रधानता हो और हृदय रेखा छोटी हो।

अथवा मंगल पर्वत अति उन्नत हो और उस पर त्रिकोण बना हो।

25. व्याख्यानिक योग–बुध पर्वत पर त्रिभुज का चिन्ह हो, बुध की उंगली लम्बी हो और सूर्य की उंगली के नाखून तक पहुंचती हो तथा मस्तिष्क रेखा लम्बी हो।

अथवा हाथ पर बृहस्पति की उंगली अर्थात् तर्जनी प्रधान हो और अंगूठा लम्बा, दृढ़ तथा दोषरहित हो।

26. क्लर्क योग–सूर्य का पर्वत अति उन्नत होकर अनामिका से नीचे खिसक गया हो।

27. कृषि योग–शनि की उंगली का दूसरा पोर लम्बा हो तथा हथेली कठोर हो।

अथवा सूर्य, शुक्र और चन्द्र पर्वत उन्नत हों, शनि की उंगली लम्बी और उसका दूसरा पोर लम्बा हो तथा हथेली चौड़ी हो।

28. सेवक योग–हाथ पर भाग्य रेखा अनुपस्थित हो, उंगलियां छोटी हों और हथेली उंगलियों से ज्यादा लम्बी हो।

29. व्यापारी योग–जीवन रेखा से एक शाखा शनि पर्वत पर जा रही हो अथवा भाग्य रेखा से एक रेखा बुध पर्वत पर जा रही हो अथवा मस्तिष्क रेखा से एक रेखा बुध पर्वत पर जा रही हो।

30. पेन्टर योग–बुध और शुक्र पर्वत सुविकसित हों।

31. जादूगर योग–शनि पर्वत उन्नत हो और उस पर त्रिभुज का चिन्ह हो अथवा चन्द्र पर्वत पर त्रिभुज बना हो।

32. जुआरी योग–शनि की उंगली मध्यमा और सूर्य की उंगली अनामिका बराबर लम्बी हो तथा सूर्य रेखा स्पष्ट हो अथवा मस्तिष्क रेखा नीचे की ओर झुक गयी हो।

33. ज्ञानी योग–बृहस्पति पर्वत उन्नत हो, चन्द्र पर्वत उन्नत हो, तर्जनी लम्बी हो, मस्तिष्क रेखा लम्बी और नीचे झुक रही हो।

अथवा बृहस्पति की उंगली तर्जनी प्रधान हो, बुध की उंगली कनिष्ठिका नुकीली हो, मस्तिष्क रेखा लम्बी हो तथा चन्द्र पर्वत क्षेत्र पुष्ट हो।

अथवा बुध का पर्वत उन्नत हो, कनिष्ठिका नुकीली हो और हाथ की सभी उंगलियां अलग-अलग हों।

34. **संत योग**—गुरु पर्वत और शनि पर्वत उन्नत हों एवं शनि पर्वत पर त्रिभुज का चिन्ह हो।

35. **धर्माचार्य योग**—गुरु पर्वत उभरा हुआ हो, हृदय रेखा लम्बी हो तथा एक खड़ी रेखा गुरु व शनि के मध्य से होकर हृदय रेखा तक गयी हो।

36. **ज्योतिषी योग**—शनि पर्वत, बुध पर्वत एवं शुक्र पर्वत उन्नत और पुष्ट हों तथा हाथ पर गुरु वलय हो।

37. **प्रतिष्ठा योग**—हथेली के मध्य में बड़ा चतुष्कोण बन रहा हो और उसे कोई रेखा या रेखायें काटती न हों।

38. **कीर्ति योग**—बुध रेखा तथा मस्तिष्क रेखायें कहीं-न-कहीं किसी प्रकार मिल रही हों और कनिष्ठिका उंगली में अनामिका उंगली से अधिक खड़ी रेखायें विद्यमान हों।

39. **स्वामित्व योग**—शनि की उंगली लम्बी हो और बृहस्पति की उंगली सीधी हो तो व्यक्ति हर कार्य में वर्चस्व बनाता है।

40. **सफलता योग**—भाग्य रेखा और मस्तिष्क रेखा दोनों स्पष्ट, पुष्ट तथा निर्दोष हों तो जीवन के हर क्षेत्र में सफलता मिलती है।

41. **प्रेम योग**—शुक्र पर्वत पर कई आड़ी रेखायें हों, परन्तु वे जीवन रेखा से स्पर्श न करें तो प्रेम या प्रणाम क्षेत्र में सफलता मिलती है।

42. **मद्यपान योग**—चन्द्र पर्वत अत्यधिक उभरा हुआ हो तो व्यक्ति शराबी होता है।

43. **शत्रु योग**—मणिबंध पर कोई रेखा सर्पाकार निकले तो जीवन भर शत्रुओं से घिरा रहना पड़ता है।

44. **अविवाहित योग**—यदि विवाह रेखा कनिष्ठिका उंगली की ओर झुकी हुई हो तो विवाह नहीं होगा।

45. **तस्कर योग**—बुध पर्वत विकसित हो, बुध की उंगली टेढ़ी हो तथा हथेली पर रेखाओं का जाल बना हो तो व्यक्ति तस्करी करता है।

46. **आत्महत्या योग**—मस्तिष्क रेखा और स्वास्थ्य रेखा मिल रही हो तथा जीवन रेखा अन्य रेखाओं से कट रही हो एवं शनि का पर्वत उन्नत हों।

अथवा चन्द्र पर्वत पर क्रॉस का चिन्ह हो और जीवन रेखा के अंत में क्रॉस हों।

अथवा मध्यमा उंगली का प्रथम पोरुआ लम्बा हो और चौकोर हो तथा बुध या मंगल पर्वत पर क्रॉस का चिन्ह हो।

47. व्यभिचारी योग—शुक्र रेखा जीवन को काट रही हो तथा भाग्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो।

अथवा दोनों हाथों की भाग्य रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो।

48. पतिव्रता योग—अनामिका उंगली के पहले पोर पर क्रॉस का चिन्ह हो तथा गुरु पर्वत उन्नत हो अथवा स्त्री के हाथ में मंगल रेखा विद्यमान हो अथवा मंगल पर्वत पर क्रॉस का चिन्ह हो और बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो।

49. दीर्घायु योग—हथेली का रंग लाल हो, उंगलियां लालिमा लिये हुये हों तथा जीवन रेखा स्पष्ट, गहरी और दोषरहित हो।

अथवा जीवन रेखा लम्बी, गहरी, स्वच्छ और गुलाबी रंग की हो तथा जीनों मणिबंध रेखायें सुविकसित हों।

50. शांति योग—स्वच्छ भाग्य रेखा बृहस्पति और शनि पर्वतों के मध्य कटी-फटी न हो तो जीवन शांति से बीतता है।

51. अकाल मृत्यु योग—जीवन रेखा, मस्तिष्क रेखा तथा भाग्य रेखा पर क्रॉस के चिन्ह हों।

अथवा दोनों हाथों में जीवन रेखा छोटी और टूटी हुई हों।

अथवा मस्तिष्क रेखा और हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे परस्पर मिल गयी हों।

52. स्वार्थी योग—मस्तिष्क रेखा और हृदय रेखा परस्पर मिल गयी हों तथा हथेली का मध्य भाग सफेद हो तो व्यक्ति घोर स्वार्थी होता है।

53. विदेश में मृत्यु योग—जीवन रेखा अंत में जाकर दो हिस्सों में बंट जाये और उसमें से एक शाखा चन्द्र पर्वत पर जा रही हो।

54. कारावास योग—मणिबंध रेखा से एक रेखा निकलकर शुक्र पर्वत की ओर से चन्द्र पर्वत पर जा रही हो तो जेल भुगतनी पड़ती है।

अथवा शुक्र और मंगल पर्वत पर चतुष्कोण बने हों, अथवा शनि क्षेत्र में जंजीर का चिन्ह हो।

अथवा किसी उंगली में तीन के बजाय चार पोरूए हों, तो जेल की सजा मिलती है।

55. साहस योग–सुविकसित एवं निर्दोष मंगल पर्वत क्षेत्र तथा अंगूठा दृढ़ हो तो भरपूर साहस होता है।

56. मृत्युदण्ड योग–तर्जनी उंगली से एक रेखा निकलकर अंगूठे की प्रथम संधि से जाकर मिल जाये तो मृत्युदंड की सजा मिलती है।

57. भाग्योदय योग–भाग्य रेखा गहरी, स्वच्छ और दोषरहित हो तथा मस्तिष्क रेखा स्पष्ट और पुष्ट हो तो भाग्योन्नति शीघ्र होती है।

58. धन-प्राप्ति योग–बुध पर्वत पर काला तिल हो।

अथवा मस्तिष्क रेखा से एक रेखा निकलकर सूर्य पर्वत पर पहुंच रही हो।

अथवा चन्द्र पर्वत क्षेत्र से लाल रंग की एक रेखा बुध क्षेत्र की ओर जा रही हो।

अथवा यदि बृहस्पति पर्वत पर क्रॉस अथवा तारे का चिन्ह हो तो विवाह में धन मिलता है।

59. धन-नाश योग–मंगल क्षेत्र पर काले धब्वे हों अथवा सूर्य रेखा पर द्वीप हो, सूर्य रेखा अनामिका किसी अन्य आड़ी रेखा से कट रही हो या टूट रही हो और मंगल क्षेत्र अवनत हो।

60. हत्या योग–शनि पर्वत के नीचे मस्तिष्क रेखा पर नीली रेखा हो और मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तो व्यक्ति खून करता है।

61. चोर योग–सभी उंगलियों के सिरे चपटे हों और बुध की उंगली गांठदार हो तथा उस पर वृत्त का चिन्ह हो तो व्यक्ति चोरी करता है।

62. मातृ या पितृ मृत्यु योग–भाग्य रेखा के प्रारम्भ में त्रिकोण या द्वीप का चिन्ह हो तो व्यक्ति के बाल्यकाल में माता-पिता या पिता की मृत्यु हो जाती है।

63. वासना-निवृति योग–यदि शुक्र पर्वत क्षेत्र पर किसी भी प्रकार का कोई चिन्ह न हो तो व्यक्ति सांसारिक वासनाओं से मुक्त रहता है।

64. प्रेम-कष्ट योग–दोनों हाथों में हृदय रेखा पर द्वीप का चिन्ह प्रेम में कष्ट का द्योतक है।

चन्द्र पर्वत पर कोई रेखा भाग्य रेखा से मिले तो असफल प्रेम की परिचायक है।

भाग्य रेखा टूटी या नक्षत्र के चिन्ह से युक्त होकर हृदय रेखा से शनि पर्वत के नीचे आकर स्पर्श करे। लहरदार मस्तिष्क रेखा हृदय रेखा के अंतिम छोर पर मिले। भाग्य या सूर्य रेखा दुर्वल या नक्षत्रों से युक्त हो अथवा दो

हृदय रेखायें हों तो व्यक्ति प्रेम में जीवन नष्ट कर देता है। यदि शनि और शुक्र पर्वत के बीच में एक द्वीप का चिन्ह हो तो प्रेमी लोभी होता है।

66. प्रेम-सुख—बृहस्पति पर्वत पर क्रॉस या तारे का चिन्ह एवं स्त्री के हाथ में मंगल रेखा हो तो प्रेम सुखमय होता है।

67. विश्वासघाती योग—हथेली पर हृदय रेखा का न होना एवं छोटे और पीले नाखूनों वाला व्यक्ति धोखेबाज होता है।

अथवा उंगलियां टेढ़ी और कनिष्ठिका अधिक टेढ़ी हो तो भी व्यक्ति दगाबाज होता है।

68. आत्मविश्वास योग—जीवन रेखा और मस्तिष्क रेखाओं के उद्गम स्थानों के बीच अधिक दूरी व्यक्ति में आत्मविश्वास की सूचक होती है।

69. धार्मिक योग—बृहस्पति की उंगली सीधी व नुकीली हो तथा बुध की उंगली का प्रथम पोरूआ लम्बा हो तो व्यक्ति धार्मिक रुचि वाला होगा।

70. मानसिक-शक्ति योग—अंगूठे का प्रथम पोरूआ बड़ा हो, बुध की उंगली लम्बी हो और मस्तिष्क रेखा पुष्ट व स्वच्छ हो तो व्यक्ति की मानसिक शक्ति प्रबल होती है।

❑❑❑

अध्याय-7

शरीर के अन्य भागों के लक्षण

1. भुजायें—भुजा की स्थिति कांख के ऊपर से मणिबंध अर्थात् कलाई तक मानी जाती है, इसमें हाथ सम्मिलित नहीं होता। घुटने के नीचे तक लम्बी भुजाओं वाला व्यक्ति महान् होता है और अजानबाहु कहलाता है।

जिस व्यक्ति की भुजायें घुटनों से थोड़ी-सी ही ऊपर रहें वह वैभवशाली और समृद्ध बनता है परन्तु वह कृपण और बेईमान होता है। इसकी प्रवृत्ति तामसिक होती है।

यदि किसी व्यक्ति की भजायें कमर से नीचे और जांघ के मध्य से ऊपर तक ही पहुंचें तो वह निर्धन होता है।

जिस व्यक्ति की भुजायें कमर के नीचे और जांघ के मध्य तक आ जायें वह व्यक्ति क्रियाशील, कुशल और धनी होता है। यदि व्यक्ति की भुजायें कमर तक ही हों तो वह व्यक्ति दुष्ट प्रकृति का होगा और हीन मनोवृत्ति रखेगा।

जिस व्यक्ति की बांह अर्थात् भुजा का कुहनी से ऊपर का भाग नीचे के भाग से बड़ा अर्थात् लम्बा हो तो वह व्यक्ति डाकू या लुटेरा वन सकता है। उसकी सोच नीच होती है। उसे विलासिता और विषय भोगों में रुचि रहती है।

यदि भुजा का कुहनी से नीचे का भाग ऊपर के भाग से बड़ा हो तो व्यक्ति ईश्वरभक्त और कर्मशील होता है।

जिस व्यक्ति के कुहनी से ऊपर और नीचे के दोनों भाग बराबर हों वह परिश्रमी और व्यापार में रुचि रखने वाला होता है तथा अपने अध्यवसाय से धन अर्जित करता है।

2. वक्षस्थल अर्थात् छाती—वक्ष पर अधिक बालों वाला व्यक्ति कामुक

होता है। जिस व्यक्ति की छाती पर बाल नहीं होते वह क्रियाशील परन्तु विश्वासघाती होता है। ऐसे व्यक्ति देखने में सरल परन्तु दिल के काले होते हैं। छाती पर सामान्य बालों वाला व्यक्ति सहृदय, कर्मशील और मितव्ययी होता है।

जिस व्यक्ति की छाती पर ऊपर से नाभि तक बालों की एक सुन्दर लकीर सीधी बनी हो तो वह व्यक्ति रसिक स्वभाव का होता है और गम्भीर रहता है। छाती पर सुनहरे बालों वाला व्यक्ति भाग्यशाली होता है, परन्तु उसकी रुचि व्यसनों में होती है।

3. उदर, अर्थात् पेट–लम्बे पेट वाला व्यक्ति भाग्यशाली और चरित्रवान होता है परन्तु क्रोधी भी होता है। छोटे परन्तु मोटे पेट वाला व्यक्ति निर्धन रहता है। उदर पर चार रेखायें समानान्तर पड़ी हों तो व्यक्ति धनलोलुप होता है।

उदर अर्थात् पेट पर यदि तीन रेखायें समानान्तर चल रही हों तो व्यक्ति भाग्यशाली और व्यसनी होता है। यदि दो रेखायें समानान्तर पड़ी हों तो व्यक्ति परिश्रमी और कुशल होता है।

उदर पर एक रेखा वाला व्यक्ति निर्धन होता है।

पेट पर चार से अधिक समानान्तर रेखाओं वाला व्यक्ति भाग्यहीन होता है।

उदर पर खड़ी रेखाओं वाला व्यक्ति वैभवशाली, समृद्ध, धनी और प्रशस्वी होता है।

4. ग्रीवा अर्थात् गर्दन--जिस व्यक्ति की गर्दन पर तीन बड़ी समानान्तर रेखायें पड़ रही हों और वह टूटी-फूटी हों तो वह व्यक्ति राजा या राजातुल्य होता है।

दो रेखाओं वाला व्यक्ति भाग्यशाली होता है। एक रेखा वाला सामान्य जीवन जीने वाला होता है।

यदि ग्रीवा पर कोई रेखा न बनती हो तो वह व्यक्ति दृढ़ निश्चय वाला और आस्तिक होता है।

गले पर खड़ी रेखाओं वाला व्यक्ति प्रतिभाशाली और धनी होता है।

गले पर टूटी-फूटी खड़ी रेखाओं वाला व्यक्ति सदैव विपत्तियों से घिरा रहता है।

5. कटि अर्थात् कमर–पतली कटि वाला मनुष्य साहसी और वीर होता है। पतली कटि वाली स्त्री सुन्दर और सच्चरित्र होती है।

मोटी कटि वाला मनुष्य व्यसनी होता है।

6. माल अर्थात् माथा—माथे पर एक छिन्न-भिन्न रेखा वाला व्यक्ति दुराचारी होता है, दो कटी-फटी रेखाओं वाला व्यक्ति निकम्मा होता है। अधिक रेखाओं वाला व्यक्ति संतोषी होता है। तीन रेखाओं वाला व्यक्ति भाग्यवान होता है।

7. पैर—दायें पैर पर त्रिभुज का चिन्ह रोजी-रोटी कमाने के लिये विदेश जाने का प्रतीक होता है।

दायें पैर पर द्वीप के चिन्ह वाला व्यक्ति योगी अथवा राजा होता है।

दायें पैर पर चतुर्भुज का चिन्ह धनी होने का संकेत देता है।

दायें पैर पर ध्वजा रेखा का चिन्ह व्यक्ति को परम वैभवशाली और धनी बनाता है।

दायें पैर पर त्रिशूल के निशान वाला व्यक्ति राज्य में उच्च पद और सम्मान प्राप्त करता है।

चतुष्कोण यदि बीच में से कटा हुआ हो तो वह व्यक्ति अपनी धन-सम्पत्ति गंवा देता है।

दायें पैर पर राजचिन्ह वाला व्यक्ति समृद्ध और शक्तिशाली होता है।

बायें पैर पर चतुष्कोण के चिन्ह वाला व्यक्ति भाग्यहीन होता है।

बायें पैर में चक्र, गदा, शंख, पद्म, पताका आदि के चिन्ह अशुभ और अमंगलकारी होते हैं।

बायें पैर में वृत्त का चिन्ह धनी व्यक्ति को अंत में निर्धन बना डालता है।

बायें पैर में त्रिकोण के चिन्ह वाला व्यक्ति भाग्यशाली होता है।

बायें पैर में सर्पीली रेखा वाला व्यक्ति उदार और क्रोधी होता है। उसकी मृत्यु का कारण उसकी पत्नी या सर्पदंश होता है।

बायें पैर में उल्टी गदा जैसी रेखा हो तो वह वीर पुरुष धोखे से मारा जाता है।

यदि दायें और बायें पैर दोनों में समान रेखायें हों तो व्यक्ति का जीवन सामान्य बीतता है।

यदि दायें पैर की अपेक्षा बायें पैर में अधिक रेखायें हो तो व्यक्ति भाग्यशाली और धनवान होता है।

बायें पैर में बिच्छू जैसी रेखा वाला व्यक्ति पत्नी से धन प्राप्त करता है।

बायें पैर में मछली जैसी रेखा वाले व्यक्ति की इच्छायें पूरी हो जाती हैं।

❑❑❑

अध्याय-8
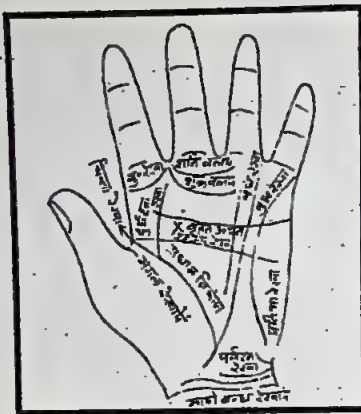
हस्त-चित्र उतारना

किसी भी हाथ के विस्तृत, समग्र एवं सूक्षतम रेखाओं व चिन्हों के अध्ययन के लिये यह परमावश्यक है कि उस हाथ का स्पष्ट और सम्पूर्णता लिये हुये चित्र उपलब्ध हों। यदि व्यक्ति हस्त अध्ययन के लिये स्वयं उपस्थित न हो सके तो यह नितांत आवश्यक हो जाता है कि हाथ की फोटो भली प्रकार ली गयी हो।

स्याही से लिये गये हस्त-चित्र अधिकांश रूप में अस्पष्ट, अपूर्ण एवं दूषित रहते हैं। हाथ का चित्र लेने के लिये निम्नलिखित तीन विधियां श्रेष्ठ मानी जाती हैं–

1. रोलर एवं स्याही–लकड़ी के मोटे टुकड़े को इस तरह रन्दे से चिकना, साफ और आकार दें कि वह बीच में से मनुष्य की हथेली का स्थान बनाते हुये उभरा हुआ हो, जिस पर हाथ रखने से अंगूठा, उंगलियां आदि स्पष्ट छाप छोड़ सकें। लकड़ी के इस टुकड़े पर एक सफेद नरम कागज लगा दें।

किसी छपाई प्रेस से छपाई कार्य पूरा होने के बाद ही स्याही रोलर से उतार लें यह स्याही अधिक गीली व गहरी नहीं रह जाती अतः फैलने का भय नहीं रहता, इस हल्की स्याही को हाथ पर या तो सीधे रोलर से अथवा किसी रबड़, लकड़ी या कांच के टुकड़े से इस तरह लगावें कि हाथ हिलाये बिना हाथ के समस्त अवयवों पर समूचे हाथ की छाप बन सके। अब हाथ के समस्त अवयवों पर समूचे हाथ की छाप बन सके। अब हाथ को उस कागज लगे टुकड़े पर इस तरह रखें कि वह अपनी पूरी-की-पूरी छाप उस कागज पर छोड़े हाथ बिल्कुल भी हिलायें-डुलायें नहीं, हाथ को धीरे से कागज पर दबायें और जब यह आभास हो जाये कि हाथ अपनी

सम्पूर्ण छाप कागज पर छोड़ चुका है तो हाथ को धीरे से बिना इधर-उधर हिलाये ज्यों-का-त्यों ऊपर उठा लें।

यदि पूर्व में लिखी भांति का लकड़ी का टुकड़ा उपलब्ध न हो सके तो कपड़े की एक छोटी, लचीली और मुलायम गद्दी भी काम में ली जा सकती है। ऐसी गद्दी प्रायः दर्जी या धोबी के यहां भी देखी जा सकती है परन्तु ध्यान रहे यह पूर्णतः चिकनी और एकसार हो।

2. कपूर का धुआं—एक टाइप पेपर जैसा सफेद, चिकना और कुछ-कुछ बड़ा कागज लें जो व्यक्ति के हाथ से चारों ओर लगभग दो-दो इंच बड़ा रहे। अब एक टुकड़ा कपूर लेकर किसी छोटी प्लेट या कटोरी में रखें और जला दें। कपूर जलने पर धुआं बनेगा। उस कागज को इस धुएं के ऊपर इस प्रकार पकड़ें कि उस पर धुआं समान रूप से छितरा जाये। ध्यान रहे कि कागज का कोई भी भाग कपूर की आग से जले नहीं और न उस पर पीले धब्बे पड़ें। इस पर्याप्त काले हो चुके कागज को उस लकड़ी के टुकड़े या कपड़े की गद्दी पर इस तरह रखें कि कालिख वाला भाग ऊपर की ओर रहे। अब धीरे से हाथ को उस कालिख लगे कागज पर रखकर मजबूती से दबा दें। हाथ को हिलायें नहीं, पूरा हाथ छप जाने पर हाथ उठा लें। इस छाप लगे कागज पर वेपोराइजर या पाइप से हल्का तेल दूर से छिड़क देंगे तो छाप उतरेगी या मिटेगी नहीं।

3. फोटो—यह विधि यद्यपि कुछ महंगी अवश्य है परन्तु सर्वाधिक विश्वसनीय और त्रुटिहीन है। हाथ की फोटो उतरवाते समय उस फोटोग्राफर को यह बता दें कि हाथ की फ़ोटो वह इस तरह और ढंग से ले कि समस्त अवयवों की छाप आ सके। कभी-कभी अधिक तेज लाइट के कारण चकाचौंध से सूक्ष्म रेखायें छिप जाती हैं। फोटो का साइज भी इतना बड़ा होना चाहिये कि हाथ के सभी अवयव स्पष्ट आ सकें। उत्तम कोटि के दानेदार फोटो पेपर पर हाथ की छाप पर दोष नहीं आते।

प्रत्येक हस्त-चित्र के पीछे या नीचे जहां भी कागज पर स्थान उपलब्ध हो व्यक्ति का नाम, पता, आयु और छाप लेने की तिथि या दिनांक भी अवश्य अंकित कर देनी चाहिये।

□□□

अध्याय-9

काल-निर्धारण एवं काल-गणना

मनुष्य की ज़िज्ञासा सदैव भविष्य जानने की रही है। हस्तरेखाओं के द्वारा जीवन में कब कौन-सी घटना घटित होगी, यह कोतूहल मन में निरन्तर बना रहता है। दुर्घटनाओं की कालावधि निर्धारण करना अथवा समय गणना करना यद्यपि एक कठिन कार्य है, परन्तु कुछ विधियों द्वारा काल-गणना सम्भव हो सकती है।

1. यव अर्थात् जौ पद्धति–इस प्रक्रिया में जीवन रेखा को जौ के दाने की लम्बाई के बराबर समान भागों में विभक्त कर दिया जाता है और प्रत्येक भाग की अवधि दस वर्ष मान ली जाती है। इस प्रकार जितने दानों के बराबर जीवन रेखा होती है उसमें दस का गुणा कर आयु निश्चित कर ली जाती है इतनी ही आयु सम्पूर्ण भाग्य रेखा की होती है, भाग्य रेखा को भी समान भागों में बांटकर काल की गणना की जा सकती है। यदि पूरी जीवन रेखा 90 वर्ष आयु बताती है अर्थात् 9 जौ के दानों के बराबर तो भाग्य रेखा की पूरी लम्बाई भी 90 वर्ष आयु है, इसे यदि 10 समान भागों में बांट दें तो प्रत्येक भाग 9 वर्षों का होगा।

अब जीवन रेखा और भाग्य रेखा पर बने चिन्ह पर इनसे सम्बन्धित रेखा के फल उस आयु अवधि पर जाने जा सकते हैं।

2. सूत्र पद्धति–जीवन रेखा की पूरी लम्बाई धागे की सहायता से मापकर सौ वर्ष मान ली जाती है इसे दस भागों में विभक्त कर प्रत्येक भाग की दस वर्ष की अवधि का निश्चय कर लिया जाता है और इसी प्रकार भाग्य रेखा को दस समान भागों में बांटकर प्रत्येक भाग को 10 वर्ष का मान लिया जाता है।

3. सप्तम पद्धति–इस प्रणाली में आयु सत्तर वर्ष मानकर आयु रेखा

की सम्पूर्ण लम्बाई को दस समान भागों में विभक्त कर लिया जाता है। प्रत्येक भाग सात वर्षों की कालावधि का होता है, भाग्य रेखा को भी उतनी ही अवधि का मानकर दस समान भागों में बांट दिया जाता है।

4. रेखा-स्थिति विधि–यदि भाग्य रेखा मणिबंध से प्रारम्भ होकर मस्तिष्क रेखा एवं हृदय रेखा को काटती हुई मध्यमा उंगली के तीसरे अर्थात् नीचे पोरूए तक पहुंचती है वह 16 वर्ष अवधि मानी जाती है।

जहां भाग्य रेखा मस्तिष्क रेखा को काटती है वह स्थान 36वें वर्ष का और जहां भाग्य रेखा हृदय रेखा को काटती है वह स्थान 57 वर्ष के पूरे होने को दर्शाता है, इससे ऊपर अर्थात् हृदय रेखा से ऊपर जाने वाली रेखा की कालावधि 39 वर्ष की मानी जाती है।

वर्तमान अर्थात् तात्कालिक आयु निकालना–व्यक्ति की हाथ दिखाने के समय की आयु निकालने के लिये पुरुष के दाहिने और स्त्री के बायें हाथ की पांचों उंगलियों के प्रत्येक पोर पर बनी खड़ी रेखाओं को गिन लें। गणना स्वच्छ, स्पष्ट, सीधी और पूरी रेखाओं की ही की जानी चाहिये, टूटी-फूटी या अत्यन्त सूक्ष्म और छोटी रेखाओं को न गिनें, इस संख्या में अंगूठे के नीचे शुक्र पर्वत पर बनी रेखाओं को भी गिनकर जोड़ दें। यह संख्या ध्रुवांक कहलाती है।

इस संख्या में 16 का गुणा करें और गुणनफल में 9 का भाग दें। इस प्रकार उपलब्ध संख्या व्यक्ति की आयु होगी।

उदाहरण के लिये, ध्रुवांक 30 आता है। 30 में 16 का गुणा करने पर गुणनफल 480 आता है, इस संख्या में 9 का भाग दें तो भागफल 53 एवं शेष 3 रहते हैं।

अतः व्यक्ति की इस समय आयु 53 वर्ष 3 माह है।

❑❑❑
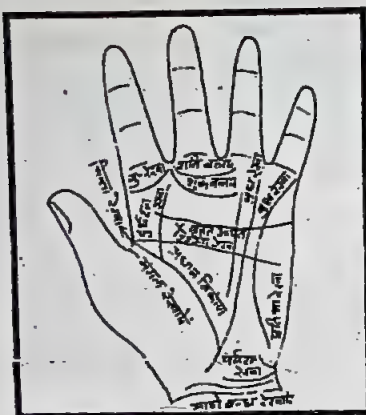
अध्याय-10

कुण्डली मिलान

किसी भी कुण्डली में निम्नलिखित घटक होते हैं–

लग्न	शरीर
सूर्य	अग्नि तत्व
चंद्र	जल तत्व
मंगल	अग्नि तत्व
बुध	पृथ्वी तत्व
गुरु	आकाश तत्व
शुक्र	जल तत्व
शनि	वायु तत्व

जन्म-पत्रिका मिलाने में केवल दो घटकों लग्न और चंद्र का ध्यान रखना आवश्यक माना जाता है।

1. लग्न–लड़का व लड़की का लग्न एक-दूसरे के लग्न से यदि 6–8 या 2–12 की स्थिति में है और लग्न का स्वामी ग्रह भी एक-दूसरे से 6–8 या 2–12 की स्थिति में है तो दोनों के शारीरिक सम्बंध ठीक नहीं रह सकेंगे।

2. चन्द्र–यह मन का आयाम है यानि मानसिक। दोनों की जन्म-पत्रिका में चंद्र एक-दूसरे से यदि 6–8 या 2–12 की स्थिति में है तो स्थिति ठीक नहीं। चन्द्र की एक-दूसरे से 5–9 की स्थिति उत्तम मानी जाती है।

3. जन्म-कुण्डलियों में वर्ण, वश्य, तारा, योनि, राशि गण, भकूर एवं नाड़ी–इन आठ दोषों का परिहार अत्यंत आवश्यक माना गया है, इन सभी में नाड़ी दोष प्रमुख है जिसका परिहार अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिये वर-कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न-भिन्न हों अथवा नक्षत्र एक और

राशियां भिन्न-भिन्न हों।

4. मांगलिक दोष—अगर कन्या की जन्मकुण्डली में मंगल ग्रह लग्न, चन्द्र अथवा शुक्र से 1, 2, 4, 7, 8 अथवा 12वें भाव में विद्यमान हो तो वर की आयु को और यदि वर की जन्मकुण्डली में यही स्थिति हो तो कन्या की आयु को खतरा बनता है। यह स्थिति पति-पत्नी के बीच गृह-कलह का कारण भी बनती है। जन्मकुण्डली में बृहस्पति एवं मंगल की युति अथवा मंगल एवं चन्द्र की युति से मंगल या बुध दोष का निवारण हो जाता है यह अत्यन्त आवश्यक है कि बुध दोषी वर का विवाह बुध दोषी कन्या से ही किया जावे।

कुण्डली के भावों की स्थिति
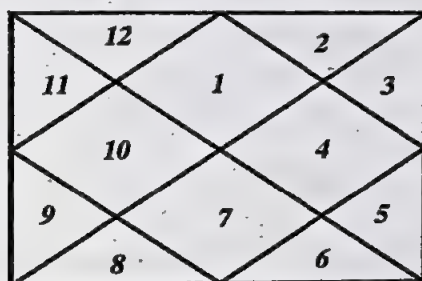
5. राशियों का मेल—

राशि	अनुकूल राशियां
मेष	मेष, कर्क, सिंह, तुला, धनु, कुंभ।
वृष	वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन।
मिथुन	मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धनु, कुंभ, मीन।
कर्क	मेष, वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, मकर, मीन।
सिंह	मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धनु।
कन्या	वृषभ, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर।
तुला	मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, कन्या, धनु, मकर, कुंभ, मीन।
वृश्चिक	वृष, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ, मीन।
धनु	मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु, कुंभ।
मकर	वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मीन, मकर।
कुंभ	मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु, कुंभ, मीन।
मीन	वृष, कर्क, सिंह, कन्या, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ।

6. अंक विचार–

पुरुष का मूलांक	प्रभावित ग्रह	जीवन साथी के चयन योग्य स्त्री की जन्म-तारीखें	भाग्यशाली रत्न	भाग्यशाली रंग
1.	सूर्य	6, 4, 8 और 9	माणिक	गुलाबी
2.	चन्द्र	2, 7 और 8	मोती	सफेद
3.	गुरु	3, 5, 6, 7 और 9	पुखराज	पीला
4.	हर्षल	1, 4 और 6	हीरा	रंग-बिरंगा
5.	बुध	3, 5 और 9	पन्ना	हरा
6.	शुक्र	3, 4, 6 और 9	हीरा	चमकीला सफेद
7.	वरुण	2, 3, 6 और 7	सुनैला	चमकीला केसरी
8.	शनि	1, 2 और 8	नीलम	नीला, काला
9.	मंगल	1, 3, 6 और 9	मूंगा	तला, भगवा

जिस दिनांक को जन्म हो उस अंक को व्यक्ति का मूलांक समझना चाहिये, यदि दिनांक 9 से अधिक हो तो दोनों अंकों को जोड़कर जो एक अंक आये वही व्यक्ति का मूलांक होगा। इसमें माह अथवा वर्ष को नहीं जोड़ना चाहिये।

7. तारीख के अनुसार विवाह की अनुकूल तारीखें

पुरुष की जन्म तारीख	कन्या की जन्म तरीख
1, 10, 19, 28	2, 11, 20, 29, 1, 10, 19, 28
4, 14, 22, 31	7, 16, 25
3, 12, 21, 30	3, 12, 21, 30
6, 16, 20	6, 15, 24
5, 14, 23	8, 17, 26

❑❑❑

अध्याय-11

राशियां और ग्रह

आकाश का गुण शब्द है। आकाश ही रूप बदलकर वायु बनता है जिसका गुण रूप है। तेज गति के कारण अग्नि के टुकड़े मंडलों के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। इन मंडलों के केन्द्रों की स्थिति सूर्य के रूप में प्रकट होती है। अग्नि से पानी बनता है जिसका गुण रस है। पानी से मिट्टी उत्पन्न होती है जिसका गुण गंध है। मिट्टी से मिलकर शरीर बनता है। शरीर के साथ मन और बुद्धि मिलने से ये सात, अर्थात् आकाश, वायु, अग्नि, जल, मिट्टी, मन और बुद्धि हो जाते हैं। इन सात तत्वों से समस्त चर-अचर सृष्टि की रचना होती है।

ब्रह्मांड में हमारे सूर्य का सौर मंडल ही हमारी पृथ्वी का जनक है ब्रह्मांड में स्थित असंख्या पिन्डों की भांति ही हमारी पृथ्वी के चारों ओर भी अनगिनत आकाशीय पिण्ड उपस्थित हैं। अत्यधिक दूरी पर विद्यमान पिण्डों का हमारी पृथ्वी पर प्रभाव भले ही अति अल्प हो या नगण्य हो, परन्तु निकट स्थित तारे पृथ्वी पर चुम्बकीय और गुरुत्वार्षक प्रभाव डालते हैं। इनका विद्युत चुम्बकीय विकिरण पृथ्वी के प्रत्येक जड़ व चेतन को प्रभावित करता है। जिस प्रकार भू-चुम्बकीय शक्ति मानव मस्तिष्क पर अपना प्रभाव डालती है, सागर में ज्वार-भाटा चन्द्रमा के कारण पूर्णिमा और अमावस्या के दिन आते हैं और इन्हीं दिनों मानवीय हत्याओं व आत्महत्याओं की घटनाओं में वृद्धि रहती है। सम्भव है कि पूर्णिमा तथा अमावस्या के दिनों में व्रत रखने की परम्परा इसी कारण डाली गयी हो ताकि इन दिनों मानसिक शांति बनी रह सके।

पृथ्वी की उत्पत्ति सूर्य से होने के कारण सूर्य का चुम्बकीय प्रभाव पृथ्वी पर अन्य ग्रहों की अपेक्षा काफी अधिक पड़ता है और चन्द्रमा के पृथ्वी से

निकटतम होने के कारण चन्द्रमा पृथ्वी के जनजीवन को सबसे अधिक प्रभावित करता है।

सूर्य के अतिरिक्त पृथ्वी भी बारह तारा मंडलों के सितारों से घिरी हुई है। इन समूहों को अलग-अलग राशि से पहचाना जाता है। भूमंडल 360 डिग्री में स्थित है। इस मंडल को 30-30 डिग्री के भागों में बांट दिया गया है। इस प्रकार समस्त भूमंडल 12 प्रभागों में स्थित हैं और यही प्रभाग एक-एक राशि के नाम से निर्धारित किये गये हैं। प्रत्येक राशि में स्थित तारा समूहों के तारों की सम्मलित आकृति उसके नाम के अनुरूप राशि की आकृति है, जैसे मेष राशि की आकृति मेष के जैसी, कुंभ राशि की आकृति कुंभ के जैसी, आदि कुल राशियां बारह हैं। मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन।

पृथ्वी अपनी कक्षा में घूमते हुये वर्ष में एक बार प्रत्येक राशि के सामने से निकलती है। इस समय इन राशियों का विकिरण प्रभाव मानव-जीवन पर पड़ता है। जन्म के समय पृथ्वी जिस राशि के सामने होगी नवजात शिशु उसी राशि से प्रभावित होगा।

बारहों राशियों की संरचना, स्वभाव और प्रभाव

1. मेष-अश्विनी, भरणी और कृत्तिका नक्षत्र के प्रथम चरण के संयोग से मेष राशि का निर्माण हुआ है। मेष राशि स्वभावगत चर राशि है। यह पृष्ठोदय मेष राशि अग्नितत्व वाली राशि है। इसका वर्ण क्षत्रिय, लिंग पुरुष है। चतुष्पद मेष राशि की प्रकृति उग्र होकर रक्त वर्ण है। इसके अधिपति देवता भगवान श्रीगणेश हैं। इसकी प्रकृति कफ-प्रधान है। काल पुरुष के मस्तक में इसका स्थान माना गया है, इसका बल समय रात्रि है। मेष राशि पूर्व दिशा की स्वामी है। मेष राशि के स्वामी मंगल ग्रह हैं। स्वामी मंगल को सेनानायक पद प्राप्त है। अतः साहसी, निडरता, स्वावलम्बी, पराक्रमी, होने के साथ ही व्यक्ति परिश्रमी होता है। गर्म प्रकृति व उत्तेजना व उत्तेजना आवेश स्वभाव में रहता है। दिमागी कार्य बड़ी चालाकी से करते हैं। कार्य के प्रति आलस्यता, लापरवाही नहीं रखते हैं। व्यावहारिक स्थितियों में स्वयं की श्रेष्ठता रखते हैं। अधीनस्थों के बजाय स्वयं ही कर्त्तव्यरत रहते हैं। कल्पना शक्ति बड़ी प्रबल रहती है। मन के विरुद्ध कार्य में क्रोध बढ़ता है। स्वयं के परिश्रम-मेहनत से पदप्रतिष्ठा व यश-कीर्ति प्राप्त करते हैं। कभी-कभी अपयश, क्रोध और प्रतिकूलता से चिंताग्रस्त रहते हैं। पूर्व तथा दक्षिण दिशा सम्बंधित काम हमेशा के लिए लाभप्रद होता है। हठधर्मिता के कारण भी

कई बार कार्यों में विलम्ब होता है। गुप्त ढंग से कार्य करने की प्रवृत्ति रहती है। चर्म रोग, वायु विकार, सिरदर्द, उच्च रक्तचाप, सर्दी, गर्मी, बीमारी से कभी-कभी पीड़ित रहते हैं। मन में बदले की भावना रहती है। माता-पिता व भाई-बहनों का सुख कोई खास संतोषजनक नहीं रहता। निराशा अधिक रहने के कारण भी प्रायः ताव की स्थिति बनी रहती है। प्रत्येक बात को तर्क-वितर्क एवं वृद्धि के द्वारा स्वीकार करते हैं। अपने कार्य को निकालने में चतुर रहते हैं। अपने कार्यक्षेत्र से मतलब रखते हुए दूसरों की परवाह कम ही करते हैं। भ्रमण, मनोरंजन व यात्रा करने का विशेष शोक रहता है। नमकीन चीजें भी अधिक पसंद करते हैं। बातचीत के दौरान जोश व क्रोध जल्दी आ जाता है। कार्य आरम्भ करने में पूरी दिलचस्पी होती है, परन्तु अंत तक पहले जैसी दिलचस्पी नहीं रहती। धार्मिक भावनाओं के साथ-साथ कलाकृतियों, सौंदर्य की परख, चित्रकारी, सिनेमा आदि में भी रुचि रखते हैं। मित्रों की सहायता तो ये करते हैं किंतु मित्र इनसे ईर्ष्या ही करते रहते हैं। यही कारण है कि वे शत्रु बन जाते हैं, परन्तु इनकी हानि नहीं होती। पारिवारिक एवं संतान सुख कम ही होता है। आर्थिक स्थिति परिवर्तनशील होती है। खर्चीले भी होते हैं तथा कई बार फिजूलखर्ची से आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ता है। पढ़ाई में तेज होते हैं और खेलों में पूरा भाग लेते हैं। बचपन में प्रगति के कार्यों में रुकावटें तथा कठिनाइयां आती हैं, जिससे बचपन में सुख कुछ कम ही होता है।

2. वृषभ—वृषभ राशि कृत्तिका नक्षत्र के तीन चरण, रोहिणी व मृगशिरा नक्षत्र के प्रथम और द्वितीय चरणों के संयोग से वृष राशि का निर्माण हुआ है। यह राशि भी पृष्ठोदय है। इसका तत्व भूमि है। इसका वर्ण वैश्य और लिंग स्त्री है। चतुष्पद वृषभ राशि की प्रकृति स्थिर होकर वर्ण श्वेत है। इसकी अधिपति महालक्ष्मी देवी हैं। इसका बल समय रात्रि है। वृषभ राशि दक्षिण दिशा की स्वामी है। वृषभ राशि की प्रकृति शिथिल है। काल पुरुष के चेहरे पर इसका स्थान है। मंत्रिमंडल में इसे मंत्री का पद प्राप्त है। वृषभ राशि के स्वामी शुक्र को कला एवं सौंदर्य का कारक माना गया है। इस राशि वाले व्यक्ति की स्मरण शक्ति बहुत तेज होती है एवं ईर्ष्यालु तो ये होते ही हैं। किसी भी बात को वर्षों तक मन में रखते हैं, भुलाते नहीं और अपने मन की बात किसी को नहीं बताते जब तक इनका उद्देश्य पूरा न हो जाए। घमण्डी, अभिमानी, हठधर्मी, अपने आप में मस्त, खाने-पीने को शौकीन तथा अपनी धुन में मस्त रहते हैं। सहनशक्ति, धैर्य व संतोषप्रद की

कमी रहती है। वैचारिक मतभेद प्रायः किसी-न-किसी से बना ही रहता है। स्वार्थवृत्ति के कारण चतुराई से स्वार्थ निकालने में सफल होते हैं। मानसिक चिंताएं लगी रहने के साथ ही वृद्धि के अंदर चालाकी कूट-कूट भरी रहती है। आत्मबल की ताकत से बोलचाल में कुछ रूखापन रहता है। प्रयत्न व परिश्रम को विशेष महत्व देते हैं। अत्यंत पुरुषार्थी व स्पष्टवादी व्यक्ति होते हैं। अपनी भरपूर मेहनत से रोजगार, नौकरी तथा छोटे-बड़े कारोबार में कठिन एवं कष्ट साध्य कार्यों को करते हुए तथा दुःख मुसीबतों को झेलते हुए उत्साहपूर्वक उन्नति का मार्ग प्राप्त करने में सफल रहते हैं। यदि इनको अधिक छेड़ा जाये तो ये क्रोधित हो जाते हैं और सब कियाधरा बिगाड़ देते हैं, छेड़ने वालों को भी हानि व कठिनाई में डाल देते हैं और फिर जल्दी काबू में नहीं आते तथा देर बाद ही शांत होते हैं। जिद्दी व अड़ियल भी होते हैं। भावुकता अधिक होने के कारण दूसरे लोग नाजायज फायदा उठाने के भरसक प्रयत्न में सफल होते हैं। अभीष्ट वचन बोलने वाले होते हैं। बुद्धि-चातुर्यता से कठिन कार्यों को सहज़ आसानी से कर लेते हैं। हर किसी पर विश्वास करने के कारण भी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। स्वयं के ज्ञान एवं बुद्धि के द्वारा निरंतर प्रगति करते रहते हैं। सौंदर्य के प्रति विशेष झुकाव रहने के कारण धन का नुकसान होता है। प्रेमपूर्वक व्यवहार द्वारा कोई भी इनको अपने अनुकूल बना लेता है। दूसरे के दोषों को देखने की प्रवृत्ति अधिक रहती है। उत्तम भोजन, सुगंधित वस्तुएं, उत्तम वस्त्र व दूसरों की खातिरदारी भी खूब करते हैं। गाने-बजाने के प्रेमी, विलासी एवं कार्य व्यवहार में कुशल होते हैं। सांसारिक सुखों तथा धन एकत्र करने की ओर अधिक रुचि लेते हैं। धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में भी रुचि रखते हैं। आहार की अनियमितता एवं अधिक परिश्रम के कारण कई बार अस्वस्थ हो जाते हैं। राज्य, समाज, परिवार एवं अपने कार्य-क्षेत्र में मान-प्रतिष्ठा, इज्जत प्राप्त करते हैं। दाम्पत्य जीवन में सरसता का अभाव रहता है। पति-पत्नी में प्रायः किसी न किसी बात पर झड़प और विवाद जैसी स्थिति बनी रहती है। कभी-कभी छोटी-मोटी बातों पर आपसी प्रेम और बोलचाल भी कुछ समय तक ठप्प हो जाया करते हैं। स्त्री वर्ग से काफी मित्रता रहती है। दुश्मनों के द्वारा उठाये गये हर उलझनपूर्ण विवादों पर आप बड़ी ही चालाकी तथा कूटनीति से विजय पाने की शक्ति अपने पास रखते हैं। भाइयों से भी प्रायः कम ही बनती है। कंठ रोग, उदर, कमर, अपच, गैस्टिक दर्द, शुगर की बीमारी का भी सामना करना पड़ता है। अच्छी चीजों का संग्रह करना, खेलकूद, गायन,

कथा, कीर्तन, सत्संगति आदि में से किसी एक बात में काफी दिलचस्पी रहती है। यह अपमान सहन नहीं करते हैं।

3. मिथुन—मृगशिरा नक्षत्र के तृतीय और चतुर्थ चरण आद्रा नक्षत्र तथा पुनर्वसु के तीन चरणों के संयोग से मिथुन राशि का निर्माण हुआ है। यह राशि द्विस्वभाव की पृष्ठोदय एवं शीर्षोदय राशि है। द्विपद मिथुन राशि की प्रकृति क्रूर और वर्ण हरित है। इसका वर्ण शुद्ध तथा लिंग स्त्री है। पश्चिम दिशा की स्वामी इस राशि का बल समय दिन है। इसका स्वभाव पित्त-प्रधान है। इसके अधिपति देव नारायण हैं। इसका स्थान काल पुरुष की भुजा में माना जाता है। इस राशि का पद युवराज का है। इस राशि के स्वामी बुध ग्रह हैं। बुध को गणित, वाणिज्य ओर साहित्य का कारक माना गया है। वायु तत्त्व-प्रधान मिथुन राशि में जन्में जनक बुद्धिजीवी वाक्‌चातुर्य गुणों से सम्पन्न अपने को परिस्थिति अनुसार बदल लेते हैं। संयम, सहयोग, सीधापन व भोलापन इस राशि के व्यक्ति में बना रहता है। संयम के साथ ही क्रोध रहता है। शंका, धारण, गलतफहमियों से जीवन में चिंता, भय बना रहता है। छोटी-छोटी बातों पर क्रोध करने की आदतें बनी रहती हैं। हर काम करने के पहले और बाद में भी संदेह तथा कांट-छांट करते रहते हैं। आपके सहयोगी और कहलाने वाले दोस्त मुंह पीछे हमेशा आपकी बुराई करने पर डटे रहते हैं। प्रगतिशील विचारधारा के साथ ही आत्मविश्वास की भी प्रवलता रहती है। अपने अज्ञान को दूर करने तथा उत्तम ज्ञान शक्ति प्रदान करने में चतुर रहते हैं। बुद्धि व तर्क बल से सभी कार्यों का सम्पादन करते हैं। कार्य करने में यह भी सावधानी बरतते हैं कि मेरे द्वारा किये गये कार्यों से किसी को कष्ट न पहुंचे। परोपकार की भावना भी प्रबल रहती है और सभी के हित के लिए सतत प्रयास करते रहते हैं। पारिवारिक सुख कुछ कम ही प्राप्त होता है। संतान सुख कम ही मिलता है। आडम्बर से दूर रहते हुए ईश्वर एवं धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठा रखते हैं। शनिवार का दिन हमेशा कष्टप्रद रहता है। ये मस्तिष्क पर बोझ अधिक डालते हैं तथा दिमागी चिंता के कारण बेचैन रहते हैं। साझेदारी एवं मित्रों के साथ निभी रहती हैं, परन्तु परिवर्तनशील स्वभाव के कारण निराशाजनक परिणाम निकलते हैं। सत्य के पक्षपाती, अध्ययनशील शायरी करना, कविता लिखना, न्यायिक बुद्धि व कलात्मक रुचि रहती है। आपके स्वभाव में सेवावृत्ति की प्रबल भावना होती है। शत्रु से भय बना रहता है। ये हर काम को पहले अपनी बुद्धि की कसौटी पर कसते हैं। अच्छे व्यवहार के कारण भी इन्हें अपनत्व प्राप्त होता है। सबके

साथ समान व्यवहार बना रहता है। सहनशीलता काफी होती है। ईमानदार, सभ्य, चरित्रवान् होते हैं। अपने वचन तथा संकल्प के पक्के होते हैं। अपने उत्तरदायित्व को निभाना अपना फर्ज मानते हैं। प्रवास, गायन, किताबें पढ़ना आदि का शौक रहता है। ये झूठ बोलने वालों व अकड़ने वालों से सख्त नफरत करते हैं। सर्विस अथवा व्यापार दोनों ही क्षेत्र में सफलता मिलती है। स्वास्थ्य सम्बंधी कुछ न कुछ शिकायतें प्रायः बनी रहती हैं।

4. कर्क–कर्क राशि पुनर्वसु नक्षत्र के चतुर्थ चरण, पुष्य आश्लेषा नक्षत्रों के संयोग से बनी है। चर स्वभाव की यह राशि पृष्ठोदय है और इसका तत्व जल है। इसकी जाति ब्राह्मण एवं प्रकृति कफ है। स्त्री लिंग की राशि कर्क अपद राशि है। इसकी अधिपति माता पार्वती हैं। इसका स्थान काल पुरुष के हृदय में है और बल समय रात्रि व दिशा उत्तर है। इसका वर्ण रक्त धवल है। कर्क राशि का स्वामी चन्द्र ग्रह है। इस राशि वाले व्यक्ति बुद्धिमान, चतुर और भावना प्रधान होते हैं। मित्रों की सलाह पर कार्य करते हैं जिससे कभी-कभी धोखा भी खा बैठते हैं। इनका चित्त स्थिर नहीं रह पाता फिर भी विपत्ति के समय संयम रखते हैं। आत्मविश्वास की कमी और जल्दबाजी के कारण कभी-कभी अपने बनेबनाये काम बिगाड़ लेते हैं। गम्भीर स्वभाव, स्वतंत्र विचारधारा एंवं विवेकशीलता के कारण अपने कार्यों को निपुणता से पूरा कर लेते हैं। दूसरों के अधीन अथवा मिलकर काम करने में सफलता मिलती है। मन में कई प्रकार की काल्पनिक तरंगों के कारण तथा स्वभाव परिवर्तनशील होने के कारण प्रेम सम्बंध स्थायी नहीं होते हैं। सभी के साथ अच्छा व्यवहार करने के इच्छुक रहते हैं। यदि कोई भी व्यक्ति इनके कार्य में हस्तक्षेप करता है तो वह भी इन्हें पसंद नहीं आता है। यात्राएं, तीर्थाटन, मनोरंजन में विशेष रुचि रहती है। पति-पत्नी के विचारों में विभिन्नता तथा मनमुटाव स्वाभाविक है। मर्यादा, विश्वास, प्रतिष्ठा को ज्यादा महत्त्व देते हैं। आलस्य की मात्रा भी अधिक होती है। पिता की अपेक्षा माता के प्रति विशेष झुकाव रहता है। आपकी विचारधारा सुधार वाली होने से आप समाज में अच्छी ख्याति प्राप्त करते हैं। आपकी सभी सफलताएं विघ्नों से युक्त होते हुए भी आप आसानी से अपनी तरक्की के रास्ते स्वयं निर्मित कर लेते हैं। मित्रों व सहयोगियों से लाभ कम ही मिलता है परन्तु ये उन्हें सहयोग करने में तत्पर रहते हैं। खर्च करने की प्रवृत्ति के कारण कभी-कभी आर्थिक परेशानी का भी सामना करना पड़ता है। आवेश, प्रेम, सौहार्द्रता, स्नेह, क्रोध एवं पश्चाताप की भावना प्रबल रहती है। शारीरिक एवं पारिवारिक

अशांति से तनाव बना रहता है।

5. सिंह–यह मघा, पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी के प्रथम चरण के संयोग से बनी है। यह राशि स्थिर होकर शीर्षोदय है। इसका तत्व अग्नि, धातु पित्त–प्रधान है। सिंह राशि का वर्ण क्षत्रिय और लिंग पुरुष है। इसका रक्त पीत है। यह पूर्व दिशा की स्वामी है। काल पुरुष के हृदय में इसका स्थान है। यह दिल में बलशाली होती है। चतुष्पद सिंह राशि के अधिपति देवता भगवान रूद्र हैं। ग्रह मण्डल में सिंह राशि राजा के पद पर अधिष्ठित है। सिंह राशि स्वामी सूर्य देव हैं। अग्नि तत्व एवं स्थिर राशि के होने के कारण व्यक्ति अत्यंत उग्र और क्रोधी के साथ स्पष्टवादी होते हैं। स्पष्टवादिता के कारण संघर्षमय जीवन व्यतीत करते हैं। प्रत्येक कार्य को अपने मन माफिक करवाने तथा स्वाभिमानता से रहना पसंद करते हैं। बुद्धि काफी तेज और विलक्षण होती है। नेतृत्व की क्षमता भी इनमें अद्भुत रहती है। स्वाभिमानी और मातृभक्त होते हुए भी जीवन के हर कदम पर विशेष चिंतातुर रहते हैं। रूखी और तेज बोली रहती है। पत्नी की ओर से दुःखी व चिंतित रहते हैं। प्रत्येक कार्यों में छल–बल और बड़ी चालाकी से विजय प्राप्त करते हैं। आपके लिए पूर्व दिशा की यात्रा और पूर्व में मुंह कर बैठकर सारे कार्य ज्यादा कल्याणकारी होते हैं। नौकरी करने पर मानसिक ठेस व अपमानों को भी सहन करना पड़ता है। चटपटा पदार्थ खट्टा–मीठा, तिक्त–कषेला पदार्थ खाने के लिए मन उतावला रहता है। स्वास्थ्य सम्बंधी शिकायत प्रायः बनी रहती है। आपके शरीर में पीठ, कमर, रीढ़ की हड्डियां, नेत्र और पेट का समीपवर्तीय स्थान प्रायः रोगग्रस्त रहता है। अपने निजी जीवन में किसी का भी हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं करते हैं। ये अपने आशा के बल पर ही कर्त्तव्य का पालन करते हैं। राजनीति, व्यापार, संगीत, लेखक, अभियंता व न्याय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। आपकी मान, इज्जत, धन–दौलत, व्यापारादि का विस्तार देखकर जलने–भुनने वाले निजी दुश्मन तैयार होते जाते हैं। स्वतंत्र विचार एवं परिश्रमी होने के साथ अपने कार्य में किसी का हस्तक्षेप बर्दाश्त नहीं करते। इनके मित्र बहुत होते हैं किंतु मित्रों से लाभ कम ही मिलता है। भाग्योदय के लिए भी काफी संघर्ष करना पड़ता है। प्रवास, तीर्थाटन, मनोरंजन आदि में विशेष रुचि रखते हैं। कार्य करना अथवा नहीं करना भी इनके स्वयं पर आधारित रहता है। मानसिक स्थिति भी ज्यादातर परिवर्तनशील होती रहती हैं। ये अपनी गलतियों को कभी स्वीकारते नहीं हैं।

6. कन्या–यह उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र के तीन चरण, हस्त नक्षत्र और चित्रा नक्षत्र के दो चरणों के योग से बनी है। कन्या राशि का स्वभाव द्विस्वभाव है। यह शीर्षोदय राशि है। इसका तत्व पृथ्वी, धातु वायु है। जाति वैश्य और स्त्री लिंग है। द्विपद कन्या राशि का रंग पिंगल है। यह रजोगुणी राशि है। कालपुरुष के आमाशय (कमर) में इसका स्थान है। यह राशि रात्रि में बली होती है। इसकी दिशा दक्षिण–पश्चिम है। कन्या राशि का स्वामी बुध ग्रह है। कन्या राशि के व्यक्ति परिवार के प्रति निःस्वार्थ समर्पित रहते हैं। परिश्रमी विषयासक्त, विघ्न–बाधाओं पर साधारण रूप से विजय प्राप्त करने वाले होते हैं। असफलताएं और बेइज्जत होने वाली परिस्थिति आपके समक्ष आती–जाती रहती है। आपके पीछे दुश्मन हाथ धोकर बरबाद करने की चेष्टा करते हैं। निज विवेक–बुद्धि से अपने हरएक महत्वपूर्ण कार्यों में उन्नति करते हैं। सहनशील, धैर्य धारण करने वाले और अपने विचारों पर अडिग रहने वाले होते हैं। आत्मविश्वास की भावना प्रबल एवं प्रत्येक क्षेत्र में साहसपूर्ण तरीके से मुकाबला करते हैं। ये बहुत–से लोगों से भलाई करेंगे, मगर बदले में बुराई मिलती है। ये हर किसी की झूठी–सच्ची बातों पर जल्द ही विश्वास कर लेते हैं, इसी कारण इनके खास लोग ही इन्हें धोखा देते रहते हैं। पारिवारिक वातावरण प्रायः विपरीत ही रहता है। मित्रता एवं किसी को दिया हुआ वचन पूर्ण निष्ठा के साथ निभाते हैं। सर्विस एवं व्यापार दोनों में ही लाभ मिलता है। स्वार्थी लोगों से प्रायः दूर ही रहते हैं। मिलनसारिता के कारण इनके कई काम स्वतः ही हो जाते हैं। ये अपनी कुछ खास आदतों की वजह से अपना बनाबनाया काम भी कभी–कभार चौपट कर दिया करते हैं। दायित्वों का निर्वहन कुशलतापूर्वक करते हैं। अधिक खर्च करने की प्रवृत्ति के कारण आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ता है। आपके दोस्त खाने–खरचवाने वाले ही मिलेंगे, खरचने और खिलाने वाले नहीं, अतः दोस्तों, परिचितों से ही सावधान रहें। इन्हें अपना स्वाभिमान, मर्यादा एवं मान–सम्मान का हमेशा विशेष ध्यान रहता है। दाम्पत्य जीवन सामान्य ही रहता है। पति–पत्नी के विचारों में मतभेद रहने के कारण प्रायः तनाव बना रहता है। ये कांट–छांट, तर्क–वितर्क किये बिना ही किसी की भी बात मान लेते हैं। काम के प्रति सच्ची लगन रखते हैं। ईमानदारी व चरित्र आपकी विशेषताएं हैं। इन्हें परिवार के प्रति अपना कर्त्तव्य सदैव याद रहता है। भावुकता के कारण दुश्चरित्र स्त्रियों के फंदे में जाकर कष्ट भी उठाते हैं। ये बात–ही–बात में विपक्षी लोगों के हृदय की गहराई जान जाते हैं। मनोरंजन, सैर–सपाटे, अतिथि सत्कार,

भ्रमण व शृंगारप्रिय रहते हैं। आध्यात्मिक बातों की तरफ भी इनका ध्यान रहता है। स्वयं दुःख पाकर भी परिवार के लोग सम्मान नहीं करते हैं। भाई-बंधु, रिश्तेदार व व्यावहारिक लोग इनसे स्वार्थभरा प्रेम रखते हैं।

7. तुला—यह राशि चित्रा नक्षत्र के दो चरण, स्वाति नक्षत्र और विशाखा के तीन चरणों के योग से बनी है। यह चर राशि होकर शीर्षोदय है। इसका तत्व वायु एवं धातु समधा है। इसकी जाति शूद्र है। तुला राशि पुरुष लिंग द्विपद राशि है। तुला राशि का रंग विचित्र रंग है। कालपुरुष के नाभि में इसका स्थान माना गया है। यह दिन में बलशाली रहती है। तुला राशि की दिशा पश्चिम, ऋतु शरद है। तुला राशि के स्वामी शुक्र हैं। इस राशि वाले व्यक्ति ईमानदार, सत्यप्रिय, न्यायवादी, प्रलोभनरहित, त्यागी स्वभाव के होते हैं। परिश्रमी, शांतिप्रिय परिजनों से स्नेह रखने वाले होते हैं। ये विचारशील, ज्ञानप्रिय, कुशल कार्यसम्पादक व राजनीतिज्ञ होते हैं। इन व्यक्तियों की संतुलन शक्ति बड़ी गजब की होती है। ये किसी भी व्यक्ति के मन की थाह पा लेते हैं। कोई व्यक्ति क्या कहना चाहता है, ये उसके बोलने के पहले ही उस व्यक्ति के हृदय की बात समझ लेते हैं। अपनी इस फुर्तीली निर्णयात्मक शक्ति के कारण ये शीघ्र ही लोगों पर छा जाते हैं। ये बड़े कुशल व्यापारी होते हैं तथा लोक-व्यवहार में चतुर होने के कारण इनको व्यापारिक सफलता शीघ्र ही मिल जाती है। ये व्यक्ति सत्यता, सच्चरित्रता एवं मौलिक स्थानों के आधार पर ही चलने का प्रयास करते हैं। ये सौंदर्य की ओर विशेष झुकाव रखते हैं। सच्चा व खरा परीक्षण करने की क्षमता ये रखते हैं तथा सहज में ही किसी व्यक्ति के छलावे में नहीं आ सकते। ये राजनीतिक क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इनके स्वभाव में चंचलता अधिक रहती है और स्वभाव में प्रायः परिवर्तन होता ही रहता है। महत्वपूर्ण चीजों का संग्रह करने की प्रवृत्ति इनमें रहती है। इनका व्यक्तित्व भी आकर्षक होता है जिससे अन्य लोग इनसे प्रभावित रहते हैं। अच्छा वातावरण एवं व्यवस्थित ढंग से रहने का प्रयास करते हैं। ये जिसके प्रति जैसा विचार बना लेते हैं, उससे उसी प्रकार से पेश आते हैं। इनकी प्रवृत्ति हास्यप्रिय होती है तथा बच्चों के प्रति इनके मन में प्रबल स्नेह का भाव विद्यमान रहता है। ये प्रगति के लिए हमेशा प्रयासरत रहते हैं। पारिवारिक, सामाजिक पदप्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। स्वतंत्रता से रहना एवं स्वतंत्र कार्य करना ही इनकी प्रवृत्ति होती है। ये दूसरों का सहयोग कम ही प्राप्त करते हैं। सभी कार्य स्वयं के ही बलबूते पर करते हैं। कला के प्रति इनका भावनात्मक लगाव रहता है। सुन्दर

दृश्यों एवं वस्तुओं के प्रति भी इनमें आकर्षण रहता है। ये अच्छे कार्यों से अपनी आजीविका अर्जित करते हैं। स्वाभाविक रूप से ये अन्य जनों को किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं देते हैं जिससे ये प्रसिद्ध तथा प्रतिष्ठित रहते हैं। क्रोध जितनी जल्दी आता है, उतनी ही जल्दी शांत भी हो जाया करते हैं। खान-पान पर नियंत्रण न रखने के कारण पाचन शक्ति पर प्रभाव पड़ता है एवं उदर रोग से पीड़ित रहते हैं। स्वास्थ्य सम्बंधी कुछ शिकायतें बनी रहती हैं। ये व्यक्ति पेट, कमर के दर्द, सिरदर्द, पथरी, रक्तचाप, दमा, दांत या आंख की तकलीफ आदि में से किसी एक रोग से अवश्य पीड़ित रहते हैं। प्रतिकूलता आने पर भी ये कभी विचलित नहीं होते हैं। ये बेईमानी व भ्रष्टाचार से हमेशा दूर ही रहते हैं। ईमानदारी से कार्य करने पर जो कुछ भी मिलता है, उसी में संतोष करते हैं। ये सुनते सभी की हैं किन्तु अपने विवेक के अनुसार ही हर कार्य करते हैं। जो व्यक्ति जैसा करता है उससे ये वैसा ही व्यवहार करते हैं। यदि इनको किसी बात की चिंता रहती है तो ये सो नहीं पाते हैं।

8. वृश्चिक–वृश्चिक राशि विशाखा नक्षत्र के एक चरण, अनुराधा नक्षत्र और ज्येष्ठा नक्षत्र के संयोग से बनी है। वृश्चिक स्थिर स्वभाव की राशि है। यह शीर्षोदय राशि है। इसका तत्व जल एवं धातु कफ है। इसका वर्ण ब्राह्मण एवं लिंग स्त्री है। यह कीट (बहुप्रद) राशि होकर इसका रंग श्वेत है। काल पुरुष के लिंग क्षेत्र में इसको स्थान दिया गया है। यह रात्रि में बलशाली होता है। यह उत्तर दिशा की स्वामी है। इसकी ऋतु हेमंत है। इस राशि का स्वामी मंगल ग्रह है। इस राशि के व्यक्ति का मिजाज गरम रहता है। आंखों में सुर्खी रहती है। क्रोध चाहे कितना ही बढ़ जाए किन्तु हृदय में दयाभाव रहता है। ये दूसरों के रास्ते में नहीं आते हैं, किन्तु कोई इनके रास्ते में आता है तो उसे सहन नहीं करते हैं। शरीर में उष्णता काफी अधिक बनी रहती है। ये व्यक्ति जीवन में स्वच्छता, वास्तविकता, स्पष्टता, न्याय एवं स्नेह के प्रति विशेष लगाव रखने वाले होते हैं। ये कई जगहों से नाजायज फायदा भी उठाते हैं। ये दान और परोपकार करने में रुचि रखते हैं। ये अभिमानी और कठोर सिद्धांतों को अपनाने वाले व्यक्ति होते हैं। विशेष स्नेह न रखते हुए लोग प्रायः इनसे दूर ही रहना पसंद करते हैं। मन में कोई भी बात गोपनीय रखना इनके बस में नहीं होता है, कहीं न कहीं तो उस बात को ये अवश्य प्रकट कर देते हैं। ये गुप्त हिम्मत, साहस और मेहनत से प्रतिष्ठा, यश, इज्जत, धन-दौलत, जमीन-जायदाद भी प्राप्त

करते हैं। इनकी जिह्वा काफी तीखी होती है। ये अच्छे आलोचक भी होते हैं। इन व्यक्तियों की इच्छाएं अवश्य पूर्ण होती हैं, किन्तु विलम्ब अवश्य रहता है। जिम्मेदारी आने पर ये निष्ठापूर्वक ही आते हैं। ये व्यक्ति कभी-कभी उन्नति की तह से नीचे गिर जाया करते हैं। कभी-कभी इन्हें कुछ सहयोगी ही धोखा दे देते हैं। इस राशि वाले पति-पत्नी दोनों को प्रायः कोई न कोई बीमारी या चिंता बनी रहती है। इनका येन-केन-प्रकारेण कार्य पूर्ण हो जाता है। ये क्रांतिकारी विचारधारा वाले होते हैं। ये शांतिपूर्वक अकेले, एकांत में रहकर अपना कार्य करना पसंद करते हैं। असफलता एवं निराशा के बावजूद भी जिस कार्य को एक बार प्रारम्भ करते हैं। उसे पूर्ण करके ही विश्राम लेते हैं। ये किसी धोखेबाज के चक्कर में फंसकर बदनामी और परेशानी भी मोल ले लेते हैं, जिससे ये कभी-कभी कानूनी उलझनों में भी पड़ सकते हैं। इनके घमंडी स्वभाव के कारण रिश्तेदारों व परिचितों में भी इनकी कम ही बनती है। ये व्यक्ति स्वतंत्र रहना ही पसंद करते हैं। दूसरों के अधीन रहना इन्हें पसंद नहीं। ये दूसरों से प्रभावित भी जल्द ही हो जाते हैं और हानि भी उठाते हैं। ये रोजगार-नौकरी में अधूरी सफलता पाते हैं किन्तु अनाज, कपड़ा, लोहा, लकड़ी, मशीनरी व सौंदर्य-प्रसाधनों के कारोबार व व्यवसाय में लाभ प्राप्त करते हैं। मुकदमा, परीक्षा या इन्टरव्यू वगैरह में ज्यादा मेहनत करने पर ही सफलता प्राप्त करते हैं। इनमें गुप्त रूपेण बदला होने की प्रवृत्ति होती है। बुद्धिमान, यशस्वी होने के साथ-साथ ये अत्यधिक चतुर भी होते हैं।

9. धनु—धनु राशि मूल, पूर्वाषाढ़ा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों के सहयोग से बनी है। ग्रह मंडल में इसे प्रधानमंत्री का पद प्राप्त है। यह द्विस्वभाव राशि होकर पृष्ठोदय है। इसका तत्व अग्नि, धातु पित्त है। इस राशि की जाति क्षत्रिय और लिंग पुरुष है। यह द्विपद एवं चतुष्पद अर्थात् उभयपद राशि है। इसका रंग सुनहरा (कंचन) एवं सत्य गुण है। यह काल पुरुष की जांघों में स्थित है। दिन में बलशाली होकर पूर्व दिशा की स्वामी है। इसकी ऋतु हेमंत है। इसका स्वामी गुरु ग्रह है। ज्योतिष में गुरु को बुद्धि व विवेक का कारक माना है। यह व्यक्ति वचन के धनी और पक्के होते हैं, परन्तु इनके क्षण-प्रतिक्षण विचार बदलते रहते हैं। ये अपनी उन्नति और भाग्य वृद्धि हेतु प्रत्येक कठोर साध्य मार्गों पर चलने को तैयार रहते हैं। यह अविचार-पूर्ण कार्यों को निःसंकोचपूर्ण करने वाले रहते हैं। तर्क-प्रधान बुद्धि होने के कारण भी प्रत्येक बात को तर्क के आधार पर

ही स्वीकार करते हैं। इनकी चाल-ढ़ाल तथा सभी काम-काज कुछ टेढ़ा और पेचीदा रहता है, ताकि कोई भी इनके रहस्य का पता न लगा सके। पारिवारिक कारणों से प्रायः इनका मन दुःखी रहता है। सभी से अपनत्व एवं स्नेह की भावना रखते हैं। स्वयं दुःखी रहकर दूसरों को सुख पहुंचाने की कोशिश करते हैं। यह बिना नियम संयम से अपना काम करते रहते हैं। विद्याध्ययन, परीक्षा, व्यापार और नौकरी के क्षेत्र में ज्यादा मेहनत करने पर ही सफलता मिलती है। साधारण तौर पर इनके निजी सम्पर्क में रहने वाले लोग ही इन्हें धोखा देते रहते हैं। ये किसी के भी चेहरे के भाव पढ़कर समयानुकूल उचित व्यवहार करते हैं। जलने-भुनने वाले दुश्मन लोग आपको नुकसान पहुंचाने की हर मुमकिन कोशिश भी करने में लगे रहते हैं। धार्मिक प्रवृत्ति के कारण व्रत-पूजा-पाठ, दान-उपकार और मदद करने में लगे रहते हैं। न्यायसंगत कार्यकुशलता, निर्णयों में स्पष्टता को महत्व देते हैं। इन्हें स्वयं की सोच, जिज्ञासा व एकाग्रता का लाभ मिलता है। अधिकतर ये क्षमाशील होते हैं फिर भी वास्तविकता, सत्यता को भी नहीं नकारते। ईमानदारीपूर्ण एवं साफ-सुथरा व्यवहार करते हैं। व्यर्थ का दिखावा, फैशन, अपव्यय आदि से ये दूर रहते हैं। अपने सद्‌गुणों के कारण समाज में आदर, मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। कई बार जल्दबाजी में ऐसे कार्य कर डालते हैं, जिसके लिए इन्हें आगे चलकर पछताना पड़ता है। इनका चित्त अस्थिर रहता है तथा किसी भी प्रश्न पर ये तुरंत निर्णय नहीं ले पाते। ये कठिन समस्याओं को धर्म, संतोष, साहस एवं परिश्रम से सुलझाते हैं। ये शीघ्र ही क्रोध में आ जाते हैं और अगले ही क्षण शांत भी हो जाते हैं। इनकी स्मरण शक्ति तीव्र होती है। इनके मित्र, दोस्त अधिक होते हैं। मित्रों पर ये बहुत उपकार करते हैं, परन्तु मित्र-बंधु इन्हें लाभ कम ही देते हैं। कार्यों में हमेशा परिवर्तन करते हैं, एक-जैसा कार्य इन्हें रास नहीं आता है। असफलता प्राप्त होने पर भी निराश नहीं होते हैं। मन के विरुद्ध कोई भी बात स्वीकार नहीं करते। ये शिक्षक, सरकारी व राजकीय सर्विस, लेखक, हेल्थ सेन्टर, बैंक अधिकारी, ज्योतिष एवं धार्मिक साधनों के परिचालन आदि में सफलता प्राप्त करते हैं। पढ़ाई के मामलों में कठिनाइयां तथा रुकावटें आती हैं परन्तु ये धैर्य तथा हिम्मत के साथ लगे रहे तो सफल होते हैं। घर हो, दफ्तर हो हर जगह अनुशासन को पसंद करते हैं। इनकी आंखों की दृष्टि कमजोर अथवा आंखों के विकार भी हो सकते हैं। वात रोग, जोड़ों में दर्द, श्वास का कष्ट, खांसी, चर्म

रोगादि की संभावना रहती है। पारिवारिक सुख सामान्य रहता है।

10. मकर–मकर राशि उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के तीन चरण, श्रवण एवं धनिष्ठा नक्षत्र के दो चरणों से मिलकर बनी है। यह राशि चर तथा पृष्ठोदय है। इसका तत्व पृथ्वी एवं धातु वायु है। इस राशि की जाति वैश्य और लिंग स्त्री है। इस राशि के दो पद चतुष्पद एवं दो पद जलचर माने गए हैं। इसका रंग पिंगल है। वात प्रकृति और कालपुरुष के घुटनों (पेट) में स्थान है। यह राशि में बली एवं दिशा दक्षिण है। मकर राशि का स्वामी शनि है। मकर राशि वाले स्वार्थी लालची, स्वाभिमानी, अधिक बोलने वाले, कठोर, जिद्दी होते हैं। इनका कोई भी कार्य सरलतापूर्वक नहीं बन पाता उसके लिए काफी संघर्ष व प्रयत्न करना पड़ते हैं। ये दूसरों का अहित करने में हिचकिचाते हैं। दूसरों के सामने हाथ फैलाना घृणास्पद कार्य मानते हैं। ऋण से दूर रहने का यथा संभव प्रयत्न करने रहते हैं। धन से अधिक सम्मान की चिंता करते हैं। इनके पीछे हमेशा किसी प्रकार की कौटुम्बिक पीड़ा चलती रहती है। दुनियादारी की परवाह कम करते हैं तथा विवादास्पद विषयों में ज्यादा दिलचस्पी रखते हैं। कारोबार या नौकरी के क्षेत्र में एक जगह स्थायी नहीं रह सकते हैं। माता–पिता एवं भाई–बंधुओं की ओर से प्रायः सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक मतभेद बने रहते हैं। मन में सोची हुई कामनाएं बड़ी चालाकी और धीरज से स्वयं पूरा कर लेते हैं। विचारों में एकरूपता नहीं रहती है। कई मामलों में अकेलापन महसूस होता है। जितनी निष्ठा परिश्रम रखते हैं, उसके विपरीत प्रतिफल मिलता है। स्वावलम्बन व दूर की सोच रखने से अधिकतर उलझ जाते हैं। किन्हीं मामलों में शंका व धारणा से नुकसान होता है। पारिवारिक दृष्टि से अधिकतर चिंतित रहते हैं। एकांतवास एवं धन–संग्रह में ज्यादा दिलचस्पी रखते हैं। आलस्य और ज्यादा मेहनत की शक्ति दोनों समान रहती हैं। अपने उद्देश्यों के प्रति यह सचेत रहते हैं तथा ऊंची–ऊंची योजनाओं को बनाने में हमेशा तत्पर रहते हैं। ये कमाते हैं, पर पैसा इनके पास टिकता नहीं। अतः हर समय द्रव्य का अभाव ही रहता है। वाक्शक्ति पर इनका नियंत्रण नहीं रहता है। भाइयों तथा सम्बंधियों से विशेष लाभ नहीं मिलता है। साझेदारी इनके लिए लाभप्रद होती है। धार्मिक कार्यों में रुचि रखना, अतिथियों का आदर करना व सभी को प्रसन्न रखने वाले होते हैं। स्वभाव में उत्साह के साथ–साथ झगड़ालु प्रवृत्ति के भी होते हैं। जहां ये अपना पक्ष कमजोर देखते हैं वहां पर नम्र भी हो जाते हैं। समाज में लोकप्रिय होते हैं। ये हर बात को तर्क की कसौटी पर रखते हैं। पत्नी का स्वा

कुछ पतिकूल ही रहता है। बच्चों की ओर से इन्हें परेशानी का सामना करना पड़ता है।

11. कुंभ–कुंभ राशि धनिष्ठा नक्षत्र के दो चरण, शतभिषा और पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र के तीन चरणों के संयोग से बनी है। यह स्थिर एवं शीर्षोदय राशि होकर वायु तत्व-प्रधान है। इसकी धातु समधा तथा जाति शूद्र है। पुरुष लिंग व रंग भूरा है। प्रकृति वात पित है। कालपुरुष की जंघाओं में इसका स्थान है। यह राशि दिन में बलशाली रहती है। इसकी दिशा पश्चिम तथा ऋतु शिशिर है। इस राशि का स्वामी शनि ग्रह है। इस राशि वाले व्यक्ति शिक्षित, सभ्य, शांत, अथक पराक्रमी, चंचल, ओजस्वी, दार्शनिक विचारधारा वाले होते हैं। दूसरों की सहायता करने को ये सदा तत्पर रहते हैं। सेवा, सहानुभूति इनमें गजब की होती है। ये खरी-कह देने में जरा भी हिचकिचाहट महसूस नहीं करते हैं। स्वयं को कमजोर नहीं समझते। दूसरों के सामने पराक्रम, साहसी व धीरजता रखते हैं। दूसरों के कारण विशेष विचलित भी रहते हैं। मानसिक धारणायें अधिकतर स्थायी रहती हैं। ये व्यवहारकुशल रहते हैं। संयमित धारण रखना तथा समय पर सब कुछ होगा, ऐसी इनकी मान्यता बनती है। किसी की दखलांदाजी ये पसंद नहीं करते हैं। अधिकतर सुखद व न्यायसंगत परिवर्तन चाहते हैं, जो संभव नहीं रहता ये अंदर ही अंदर कष्ट सहते हैं परन्तु बाहर उसकी आह तक नहीं निकालते। ये पूर्णतः रहस्यवादी व्यक्ति होते हैं। ये बड़ी-से-बड़ी रिस्क लेने में नहीं हिचकिचाते हैं। साहित्य एवं कला में रुचि के साथ-साथ ये उत्तम वक्ता भी होते हैं। ये भावुकता से कोई भी काम नहीं करते तथा बुद्धिमत्तापूर्वक सोच-समझकर अपने कार्यों को सम्पन्न करते हैं। इनके मन में अस्थिरता के भाव रहते हैं। मनोरंजन, भ्रमण या यात्रा के भी शौकीन रहते हैं। धर्म व ईश्वर के प्रति पूर्ण निष्ठा रखते हैं। मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा का विशेष ध्यान रखते हैं। व्यापार तथा सर्विस दोनों में समान अवसर रहते हैं तथा दोनों से ही लाभ मिलता है। सामाजिक, राजनैतिक व व्यावसायिक कार्यों में ये पूर्ण मनोयोग से जुड़े रहते हैं तथा सफलता भी अर्जित करते हैं। ये अपने सिद्धान्तों पर अड़िग रहते हैं। स्थायी मित्रता कम ही होती है। बाहर से मित्रता रखने वाले भीतर से इनके साथ शत्रुता रखते हैं। भाग्य में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। पिता की ओर से पूरा सहयोग व धन प्राप्त होता है। ये कठिनाइयों में से गुजरकर समाज में अच्छा स्थान पाते हैं तथा सम्मान पाने में सफल होते हैं। इनमें सब्र की भावना होती है। कठिनाइयों के बाद भी उच्च शिक्षा प्राप्त

करते हैं। आलस्यता की अधिकता के कारण भी कार्यों में देरी होती है। भाषा, ज्योतिष, भूगोलिक नक्षत्र, डॉक्टर, कर्मकांडी अध्यापक आदि से जुड़े रहते हैं। अपने विचारों को व घर के खर्च को सन्तुलित रखने में हमेशा बुद्धिमानी से कार्य करते रहते हैं। इनमें त्याग, सत्संग, निश्चलता की संभावनायें विशेष रूप से रहती हैं। पेट विकार, बवासीर, ज्वर पीड़ा, पैरों से सम्बंधित दर्द, श्वास, खांसी, ब्लड प्रेशर आदि की अशंका रहती है। संतान सुख भी उत्तम रहता है। इसके जीवन में कभी सुख तो कभी दुःख चलता रहता है। एक-सा जीवन कभी नहीं रहता। इनको आंखों की तकलीफ अवश्य होती है। इनकी मित्रता किसी भी व्यक्ति से शीघ्र होती है। ऐसा इनमें प्रभाव है। हमेशा किसी अध्ययन-मनन में लगे रहते हैं। इनका सम्पर्क क्षेत्र विस्तृत रहता है। जीवन में धीरे-धीरे उन्नति प्राप्त करते हैं।

12. मीन—मीन राशि पूर्वाभाद्रपद के चतुर्थ चरण, उत्तराभद्रपद और रेवती नक्षत्र के संयोग से बनी है। यह द्विस्वभाव राशि पृष्ठोदय है। मीन का तत्व जल, धातु कफ है। यह कालपुरुष के पैरों के तलवे में स्थित है। यह राशि रात्रि में बलवती होकर उत्तर दिशा की स्वामी है। इसकी ऋतु बसंत है। मीन राशि का स्वामी गुरु है। इस राशि वाले व्यक्ति अत्यंत चतुर, धर्मपरायण, श्रद्धालु तथा मेहनतप्रिय होते हैं। सामाजिक रूढ़ियों का पालन करने वाले होते हैं। बातचीत में प्रवीण तथा समझदार होते हैं। कोई इनके साथ बुराई का व्यवहार करता है तो उसका प्रत्युत्तर भलाई में ही देते हैं। रुपया-पैसा इनके पास आता है लेकिन टिकता नहीं है। खर्च अधिक रहता है तथा उससे ये पीछे भी नहीं हटते हैं। अपने भरपूर आत्मविश्वास के कारण अपने लक्ष्य के नजदीक पहुंचने की इनमें क्षमता होती है। शत्रुओं के प्रति लापरवाह होने के कारण हानि की संभावना बनी रहती है। शिक्षण काल में तो कई परेशानी आती हैं लेकिन नौकरी और व्यापार में ये सफल होते हैं। नेतृत्व की क्षमता भी इनमें अधिक रहती है। ससुराल से भी धन-प्राप्ति की स्थिति बनती है। यह व्यक्ति की पहचान करके ही कार्य करते हैं। भूमि सम्बंधी कार्यों से भी लाभ मिलता है। इनके जीवन में प्रलोभन आते हैं तथा बुरे काम से धन की संभावना भी बनती है लेकिन ये अपने आदर्शों को पहले रखते हैं। दिमाग चंचल होता है लेकिन साझेदारी में धोखा भी इन्हें मिलता है। अच्छी तार्किक शक्ति के साथ बातूनी भी होते हैं। ये घमंडी तथा निंदक दोनों से ही दूर रहते हैं। हर परिस्थिति से मनमौजी रहते हैं। इनका गृहस्थ जीवन सुखी रहता है।

राशियां और उनसे सम्बंधित शरीर के अंग

राशि का नाम	शरीर के अंग
मेष	नेत्र, दांत, कान, सिर, चेहरा आदि।
वृष	गला, चेहरा, कंठ।
मिथुन	वक्ष, बाहु, कंधा।
कर्क	हृदय, फेफड़े, कोहनी, सीना।
सिंह	उदर, पीठ, बांहों का निचला भाग।
कन्या	कमर, हाथ, जिगर, आंतें।
तुला	पेट का निचला भाग, तिल्ली।
वृश्चिक	गुदा, योनि, लिंग।
धनु	जांघें, नितम्ब।
मकर	घुटने।
कुम्भ	नितम्ब, पैर।
मीन	चरण, एड़ी।

जन्मराशि के अनुसार नाम के प्रथम अक्षर का निर्धारण

(क)—भारतीय गणना के आधार पर चन्द्र लग्न अनुसार—

मेष	चू चे चो ला लि ली ले लो आ।
वृष	इ उ ए ओ व वा वि वु वो वे।
मिथुन	क का कि कु घ ङ छ के को ह हा।
कर्क	हि हो हु हे ड डा डु डो डे डि।
सिंह	मा मि मु मो टा टि टु टे।
कन्या	टो प पा पि पू पे पो ष ण ढ।
तुला	रा रि रु रे रो ता तो तु ते।
वृश्चिक	नो ना नि नु ने या यु यि।
धनु	ये यो भा भू भे धा फा ढा फ।
मकर	भो जा जि खे खि खु खो गा गि।
कुम्भ	गु गो गे सा सि सु से सो दा।
मीन	दि दु दे दो झ ञ ची चा।

इस राशि के अनुसार नामकरण किया जाता है।

जन्मदिन के अनुसार राशि का निर्धारण

(ख)–पाश्चात्य गणना के आधार पर सूर्य लग्न के अनुसार–

मेष	(ARIES)	21 मार्च से 20 अप्रैल
वृष	(TAURUS)	21 अप्रैल से 20 मई
मिथुन	(GEMINI)	21 मई से 22 जून
कर्क	(CANCER)	23 जून से 21 जुलाई
सिंह	(LEO)	22 जुलाई से 23 अगस्त
कन्या	(VIRGO)	24 अगस्त से 21 सितम्बर
तुला	(LIBRA)	22 सितम्बर से 23 अक्टूबर
वृश्चिक	(SCORPIO)	24 अक्टूबर से 22 नवम्बर
धनु	(SAGITTARIUS)	23 नवम्बर से 22 दिसम्बर
मकर	(CAPRICORN)	23 दिसम्बर से 20 जनवरी
कुम्भ	(AQUARIUS)	1 जनवरी से 19 फरवरी
मीन	(PISCES)	20 फरवरी से 20 मार्च

ग्रह और उनके प्रभाव

1. **बृहस्पति**–अंग्रेजी में इसे Jupiter और अरबी में मुश्तरी कहते हैं। इसका सम्बंध इच्छाओं की शक्ति और महत्वाकांक्षाओं से है। यह आलस्य, शिक्षा, आकस्मिक धन-प्राप्ति, क्रोध, व्यभिचार, हाथ-पैर और दांतों के दर्द को प्रभावित करता है।

2. **शनि**–अंग्रेजी में इसे Saturn तथा अरबी में जुहुल कहते हैं। इसका सम्बंध चिन्तन, मनन, एकान्तवास और विरोध से है। यह चतुरता, व्यवहार कुशलता, चिन्ता, बीमारी, मित्रघात और स्पष्टवादिता दर्शाता है।

3. **सूर्य**–अंग्रेजी में इसे Sun और अरबी में आफताब कहते हैं। इसका सम्बंध विवधि कलाओं के प्रदर्शन, उच्च मानसिकता और प्रशासन से है। यह व्यक्ति की तर्कशक्ति, धन-प्राप्ति, ईश्वर साधना, पशुपालन और विद्यार्जन के बारे में प्रभाव डालता है।

4. **बुध**–अंग्रेजी में इसे Mercury एवं अरबी में उतारद कहते हैं। इसका सम्बंध व्यापार और विज्ञान से है। इसका प्रभाव क्षेत्र आर्थिक उन्नति, मित्रता, भोग-विलास, लेखन, बाधायें, बन्धु-बैर और अहंकार है।

5. **चंद्र**–अंग्रेजी में इसे Moon और अरबी में महताब कहते हैं। इसका

सम्बंध उदारता, मानसिक उत्थान और कल्पना से है। यह व्यक्ति के सामाजिक कार्यों, ईमानदारी, यश, परिश्रम तथा संगीत अभिरुचि को प्रभावित करता है।

6. शुक्र–अंग्रेजी में इसे Venus तथा अरबी में जुहरी कहते हैं। इसका सम्बंध सौंदर्य प्रेम, विलासिता और भोग-इच्छा से है। यह सफलता, धार्मिक, काम वासना, आक्रामकता, चित्रकला, महत्वाकांक्षा और कपटता को दर्शाता है।

7. मंगल–अंग्रेजी में इसे Mars एवं अरबी में मरीक कहते हैं। यह अधिकार भावना, दिखावा, कुशलता, अनैतिक रूप से धनअर्जन, बुद्धिमत्ता और अविश्वास की भावना प्रकट करता है। इसका सम्बंध परिश्रम और पौरुषता के गुणों से है।

इसके अतिरिक्त राहु Rahu, केतु Dragon's Tail, वरुण Neptune, इन्द्र Pluto तथा प्रजापति Herschel ग्रह भी व्यक्ति के जीवन पर अपना प्रभाव डालते हैं।

ग्रहों के संकेत चिन्ह तथा नाम

♃	गुरु या बृहस्पति	♄	शनि
☉	रवि या सूर्य	☿	बुध
♅	प्रजापति		वरूण
☾	शशि या चन्द्र	♀	शुक्र
♂	मंगल या भौग	⟿	राहु
⟿	केतु		इन्द्र

ग्रहों का विवरण

क्रम सं.	नाम	संस्कृति में पर्याय	प्रतीक
1.	सूर्य	रवि, आदित्य, भानु, अरूण मतंड, ग्रहपति, दिनकर	निरोगता, सम्पत्ति, विद्या, पिता, भोगलिप्सा, पशुपालन, धन-प्राप्ति, ईश्वर उपासना, कलह।
2.	चंद्र	सोम, हिमांशु, इन्दु, शशि राकेश, उड़पति, मृतांग	बुद्धि, मन, संगीतप्रेम, माता, परिश्रम, संपदा।
3.	मंगल	भौम, क्रूरनेत्र, भूसुत, अंगारक, क्षितिज, रुधिर	प्रतिभा, अधिकार, आडंबर, बल रोग, धनाढ्यता, प्रदर्शनप्रियता, भूमि, पुत्र, परिवार, जुआ-सट्टा, धौंस पट्टी, अनुचित कार्यों से धन-प्राप्ति, विचारशीलता, यश।
4.	बुध	श्याम, तारातन्य, इन्दु सुत, सौम्य, रोहिणेय	विद्या, विवेक, मित्र, बन्धु, मामा, वाक्शक्ति, संतान, लेखन, भोग, अहंकार, प्रेम, उन्नति, भाइयों से हानि, आलस, कार्यों में बाधा।
5.	गुरु	बृहस्पति, जीव, वाचस्पति, देवत्रय, सुराचार्य, अंगिरस।	शिक्षा, अचानक धन-प्राप्ति, घमंड, व्यभिचार, आलस्य, हाथ-पैरों व दांतों का कष्ट, क्रोध, पुत्र, पूजा, संतोष, महत्वांकाक्षा, ज्ञान।
6.	शुक्र	भार्गव, दानवैज्य, भृगुसुत, आरक, काण, उषना, काव्यसित।	महत्वाकांक्षा, पत्नी, कामवार, छल, सफलता, कार्यकुशलता, धार्मिक भावना, सम्मान, वाहन, व्यापार, ज्योतिष विद्या, संगीत गायन, आक्रामक वृत्ति, चित्रकला, आभूषण प्रेम।

क्रम सं.	नाम	संस्कृति में पर्याय	प्रतीक
7.	शनि	सूर्यपुत्र, तरिणतनय, कोणस्थ, पिंगली, वभ्रु, कृष्ण, रोद्रान्तकी यम, सौरि, पिंपला, मंद, आर्क, असति।	मानसिक चिन्ता, व्यवहार-कुशलता, चतुरता, व्यापार, आयु, सम्पत्ति, विपत्ति, रोग, स्पष्टवादिता, अस्वस्थता, मित्र विरोध, सगे-सम्बंधियों से प्रेम, यंत्र ज्ञान, नौकर-चाकर।

राहु से बाबा एवं केतु से नाना का फल विचार करना चाहिये।

ग्रहों के स्वरूप

1. **सूर्य**—चतुष्कोणीय देह, काला या लाल रंग, आंखें सिंगरफ रंग जैसी, प्रतापी एवं संतोषी।
2. **चन्द्र**—गोल आकार, सुन्दर एवं स्वस्थ, मधुर दृष्टि, मृदुवाणी, बुद्धिमान, चंचल तथा वात व कफ कारक।
3. **मंगल**—क्षीण कटि, लाल गोरा रंग, युवा, उदार, क्रूर, तमोगुणी, चंचल, प्रतापी और पित्त कारक।
4. **बुध**—दूधिया रंग, दुर्बल तन, हँसमुख, स्पष्टवादी, विद्वान, प्रतापी, हानि पहुंचाने वाला तथा कफ कारक।
5. **गुरु अर्थात् बृहस्पति**—अतिकाय, पीतरंग, पीली आंखें, पीले बाल, सुन्दर, सतोगुणी, बुद्धिमान एवं कफ कारक।
6. **शुक्र**—सुन्दर शरीर, आकर्षक नेत्र, घुंघराले केश, स्याम रंग, रजोगुणी, कामुक और कफ कारक।
7. **शनि**—क्षीणकाय, सुन्दर अंग, वाणी से कर्कश, पीले नेत्र, आलस्ययुक्त, तमोगुणी स्वभाव तथा कफ व वादी कारक।

ग्रहों के परस्पर सम्बंध

1. **सूर्य के मित्र**—मंगल, गुरु, चंद्र, बुध।
2. **सूर्य के शत्रु**—शनि, शुक्र, राहु, केतु।
3. **चंद्र के मित्र**—सूर्य, बुध, गुरु।
4. **चंद्र के शत्रु**—बुध, गुरु, शुक्र, मंगल, शनि समभाव हैं।
5. **मंगल के मित्र**—सूर्य, गुरु, चंद्र।

6. मंगल के शत्रु—कोई नहीं, बुध, शनि, शुक्र समभाव हैं।

7. बुध के मित्र—सूर्य, शुक्र।

8. बुध के शत्रु—चंद्र, मंगल, शुक्र, शनि समभाव हैं।

9. गुरु के मित्र—सूर्य, चन्द्र, मंगल।

10. गुरु के शत्रु—बुध, शुक्र, शनि समभाव हैं।

11. शुक्र के मित्र—बुध, शनि।

12. शुक्र के शत्रु—सूर्य, चन्द्र, मंगल समभाव हैं।

13. शनि के मित्र—बुध, शुक्र, राहु।

14. शनि के शत्रु—सूर्य, चन्द्र, मंगल।

शुभाशुभ ग्रह

1. शुभ ग्रह—बृहस्पति अर्थात् गुरु, पूर्ण चंद्र, बुध, शुक्र—ये सुखकारक हैं।

2. अशुभ या पापग्रह—क्षीण चंद्रमा, सूर्य, मंगल, शनि, केतु, बुध पापग्रह के साथ अशुभ फल देता है। शुभ कार्यों को शुरू करते समय इनको टालना चाहिये।

वे परिस्थितियां जब उच्च ग्रह अपना श्रेष्ठ प्रभाव नहीं देते—

कई बार व्यक्ति के जन्माङ्क में पड़े उच्च ग्रह अपना श्रेष्ठ प्रभाव नहीं देते। इसका कारण है व्यक्ति द्वारा अपने आप उस ग्रह के श्रेष्ठ प्रभाव को खराब कर लेना। जिन परिस्थितियों में उच्च ग्रह अपना श्रेष्ठ प्रभाव नहीं देते, वे हैं—

1. बृहस्पति—यदि गुरुजनों, ब्राह्मणों, अपने पिता, श्वसुर, दादा का अपमान करे या कष्ट पहुंचाए, तो उच्च का 'बृहस्पति' अपना श्रेष्ठ प्रभाव नहीं देता।

2. शनि—यदि अपने ताऊ, चाचा का अपमान करे, अपने नौकर (दास) का शोषण करे, शराब, मांस का सेवन करे, तो उच्च का 'शनि' अपना श्रेष्ठ प्रभाव नहीं देता।

3. सूर्य—यदि अपने कर्म (नौकरी, व्यवसाय जिसके द्वारा अपने परिवार का भरण-पोषण करता है) में बेईमानी करेगा तो उच्च का 'सूर्य' अपना श्रेष्ठ प्रभाव नहीं देगा।

4. बुध—यदि अपनी पुत्री, बहन, बुआ को अपमानित करे या उन्हें कष्ट

दे, तो उच्च का 'बुध' अपना श्रेष्ठ प्रभाव नहीं देता।

5. चंद्र—यदि अपनी माता, सास, दादी का अपमान करे या कष्ट पहुंचाए, तो उच्च का 'चंद्र' अपना श्रेष्ठ प्रभाव नहीं देता।

6. शुक्र—यदि अपनी धर्मपत्नी या स्त्री समाज का अपमान करे या उन्हें कष्ट दे, तो उच्च का 'शुक्र' अपना श्रेष्ठ प्रभाव नहीं देता।

7. मंगल—यदि अपने भाई या मित्र के साथ विश्वासघात करे या उन्हें अपमानित करे, तो उच्च का 'मंगल' अपना श्रेष्ठ प्रभाव नहीं देता।

8. राहु—यदि अपने ससुराल या ननिहाल पक्ष को कष्ट पहुंचाएगा, तो उच्च का 'राहु' अपना श्रेष्ठ प्रभाव नहीं देता।

9. केतू—यदि अपने पुत्र या शिष्य के साथ छल-कपट करे, तो उच्च का 'केतु' अपना श्रेष्ठ प्रभाव नहीं देता।

इसके विपरीत यदि कोई ग्रह नीच अथवा शत्रु राशि का होकर अथवा पितृ ऋण का होकर जीवन के किसी क्षेत्र में हानि पहुंचा रहा है, तो हम उस ग्रह से सम्बंधित परिवार के सदस्य (जैसा कि ऊपर बताया गया है) को अपने कार्य-कलापों द्वारा एवं संतुष्ट रखें, तो सम्बंधित अशुभ ग्रह के अशुभ परिणाम में कमी होती है। ये हमारे विवेक पर निर्भर है।

नवग्रहों के जपनीय तन्त्रोक्त बीज मन्त्र

सूर्य	:	ॐ	हां	ह्रीं	हौं	सः	सूर्याय नमः
चन्द्र	:	ॐ	श्रां	श्रीं	श्रौं	सः	चन्द्राय नमः
मंगल	:	ॐ	क्रां	क्रीं	क्रौं	सः	भौमाय नमः
बुध	:	ॐ	ब्रां	ब्रीं	ब्रौं	सः	बुधाय नमः
गुरु	:	ॐ	ग्रां	ग्रीं	ग्रौं	सः	गुरवे नमः
शुक्र	:	ॐ	द्रां	द्रीं	द्रौं	सः	शुक्राय नमः
शनि	:	ॐ	प्रां	प्रीं	प्रौं	सः	शनये नमः
राहु	:	ॐ	भ्रां	भ्रीं	भ्रौं	सः	राहवे नमः
केतु	:	ॐ	स्रां	स्रीं	स्रौं	सः	केतवे नमः

❑❑❑

अध्याय-12

रत्न ज्योतिष

रत्न वास्तव में खनिज पदार्थ हैं, जो भिन्न-भिन्न तत्वों के आपस में मिलने या क्रिया-प्रतिक्रिया के फलस्वरूप बनते हैं। रत्नों में मुख्यतः कार्बन, जस्ता, तांबा, गंधक, कैल्शियम, बेरियम, बोरोलियम, लोहा, अल्यूमीनियम, टिन, फास्फोरस, मैंगनीज, पोटेशियम, सोडियम, ज़िंकोनियम, हाइड्रोजन आदि तत्व उपस्थित होते हैं।

प्रकृति में खनिज तत्वों के अलावा जैविक और वानस्पतिक रत्न भी पाये जाते हैं; जैसे कि मोती एवं मूंगा जैविक रत्न हैं तथा तृणमणि एवं जेड वानस्पतिक रत्न हैं।

खनिज रत्न खानों से, जैविक समुद्रों से तथा वानस्पतिक रत्न पर्वतों से प्राप्त होते हैं।

रत्न बहुधा राशि के अनुसार धारण कराये जाते हैं परन्तु यह देखा गया है कि मनुष्य की राशि प्रायः इसलिये सही नहीं ज्ञात हो पाती क्योंकि जन्म का समय सही-सही नहीं मिल पाता। जन्म के समय बिल्कुल सही लग्न क्या थी, समय क्या था, यह जान पाना अत्यन्त कठिन होता है।

कुल राशि हैं बारह और विश्व की जनसंख्या लगभग सात अरब से अधिक अर्थात् लगभग साठ करोड़ व्यक्ति एक राशि पर हैं और यह असम्भव है कि साठ करोड़ व्यक्तियों का भाग्य एक-जैसा समान हो। कारण कि जन्म के समय ग्रहों, नक्षत्रों आदि की स्थिति की सही-सही गणना न होना।

उपरोक्त कारण और परिस्थितियों में अंगूठी में नग या रत्न प्रस्तावित करने में अंदाज से ही काम लिया जाता है। इस दुविधा से बचने के लिये हम प्रत्येक व्यक्ति के लिये, चाहे वह किसी भी राशि का हो, रत्नों की जानकारी दे रहे हैं, जिन्हें धारण करने से जीवन यात्रा के कष्टों से छुटकारा

मिल सकता है।

मुख्य रत्न हैं—माणिक (Ruby), मूंगा (Coral), मोती (Pearl), हीरा (Diamond), पुखराज (Topaz), पन्ना (Emerald), नीलम (Sapphire), गोमेद (Opat), फीरोजा (Turquoise).

यदि सही लग्नेश ज्ञात हो तो इनको उसके अनुसार उचित धातुओं और दिन को धारण करना चाहिये।

रत्नों का उपयोग

1. माणिक—इसका प्रतिनिधि ग्रह सूर्य है। माणिक का रंग गुलाबी होता है। यह मनुष्य की मानसिक अस्थिरता को दूर कर मस्तिष्क एवं शरीर की शक्तियों को बढ़ाता है। इसके धारण करने से यंत्र दोष, नेत्र रोग, पित्त रोग, मिरगी, हृदय रोग तथा हड्डियों की कमजोरी में लाभ होता है। सांस फूलना, घबराहट एवं विष के प्रभाव को दूर करता है। माणिक को अनामिका उंगली में सोने या तांबे की अंगूठी में मढवाकर रविवार को धारण करना चाहिये। अंगूठी धारण करने से पूर्व एक दिन केसर, गोरोचन के साथ किसी पवित्र नदी के पानी में डालकर रखना चाहिये। इसके पश्चात् सूर्य मंत्र **ॐ घृणि सूर्याय नमः** की पांच माला का जाप कर मुद्रिका का पूजन करना चाहिये।

2. मोती—इसका प्रतिनिधि ग्रह चन्द्रमा है। मोती जुकाम, प्रमेह, नेत्र रोग, मस्तिष्क की कमजोरी, रक्त विकार, क्रोध एवं छाती के दर्द को मिटाता है और बुद्धि को स्थिरता प्रदान करता है। मोती पहनने से मन में उमंग और उत्साह पैदा होता है। मोती को अनामिका या कनिष्ठिका उंगली में चांदी में जड़वाकर सोमवार के दिन धारण करना चाहिये। मोती की अंगूठी को धारण करने से पूर्व चौबीस घंटे तक सफेद गाय के कच्चे दूध में डालकर रखें, उसके बाद **ॐ सोमाय नमः** मंत्र की पांच माला जाप करें।

3. मूंगा—इसका प्रतिनिधि ग्रह मंगल है। इसका रंग लाल तथा सिंदूरी होता है। मूंगा सोने, चांदी, तांबे की अंगूठी में जड़वाकर मंगलवार को अनामिका में पहनना चाहिये। इसे पहनने से चर्म रोग, रक्तचाप, पुराना जुकाम तथा पुट्ठों की कमजोरी में लाभ होता है।

मंगली लोगों के लिये यह एक आवश्यक रत्न है। मूंगा मनुष्य की भावनाओं को इच्छाशक्ति प्रदान करता है। यह कैंसर रोग में भी लाभकारी है।

मुद्रिका धारण करने से पूर्व इसे गाय के दूध में डालकर रखें। उसके बाद **ॐ मंगलाय नमः** मंत्र की पांच माला जाप करें एवं मुद्रिका की पूजा करें।

4. पन्ना—इसका प्रतिनिधि ग्रह बुध है। यह बुध ग्रह के दोषों को दूर कर शरीर एवं मन को निरोगी बनाता है। पन्ना वाक्रदोष, तुतलाना, हकलाना, चर्मरोग, पीलिया, सर्दी–जुकाम, हार्निया, दमा, मिरगी, पाचन क्रिया, मधुमेह व मानसिक बीमारियों में लाभकारी होता है। पन्ना को सोने या चांदी की अंगूठी में जड़वाकर बुधवार को कनिष्ठिका उंगली में धारण करना चाहिये। इसे पहनने से पूर्व एक दिन केसर, गोरोचन एवं गाय के दूध में डालकर रखना चाहिये तथा **ॐ बुध बुधाय नमः** मंत्र की पांच माला जपकर अंगूठी की पूजा करें।

5. पुखराज—इसका प्रतिनिधि ग्रह बृहस्पति है। यह सफेद, बसंती और पीले रंगों में पाये जाने वाला पारदर्शी रत्न है। पुखराज पति–पत्नी के मतभेदों को दूर कर मधुर दाम्पत्य जीवन के लिये पहना जाता है। यह रत्न लेखकों तथा बुद्धिजीवियों की कीर्ति और पराक्रम को बढ़ाता है। इसे पहनने से तिल्ली के रोग, पीलिया, दमा, जिगर की सूजन, पाचन तंत्र की गड़बड़ी में लाभ होता है। पुखराज किसी भी विष की सम्भावना होने पर अपना रंग बदल देता है। यह अनिद्रा, रक्तस्राव तथा गठिया रोग में भी अत्यन्त लाभकारी है। जीवन में उच्च स्तर की उपलब्धि तथा शीघ्र विवाह के लिये पुखराज धारण करना फलदायी होता है। इसे सीने की अंगूठी में जड़वाकर तर्जनी उंगली में गुरुवार को धारण करना चाहिये। इसे धारण करने से पूर्व गाय के दूध में केसर डालकर रखें, फिर **ॐ बृं बृहस्पतये नमः** मंत्र की पांच माला जप कर मुद्रिका की पूजा कर लें।

6. हीरा—इसका प्रतिनिधि ग्रह शुक्र है। छः कोणीय रत्न हीरा रत्नों का राजा कहलाता है। यह शुक्र ग्रह के कुपित हो जाने के कारण हुई मानसिक दुर्बलता, शारीरिक शक्ति की कमी और पाण्डु रोगों में अत्यन्त लाभकारी है। हीरा दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाता है और मानसिक शांति प्रदान करता है। हीरे को सोने की अंगूठी में जड़वाकर शुक्रवार को अनामिका में धारण करना चाहिये। अंगूठी पहनने से पूर्व इसे गाय के दूध में गोरोचन एवं केसर डालकर एक दिन के लिये रख देना चाहिये और अगले दिन मंत्र **ॐ शुं शुक्राय नमः** की पांच माला जप करके तथा मुद्रिका की पूजा करनी चाहिये।

7. नीलम—इसका प्रतिनिधि ग्रह शनि है। नीलम हरे, सफेद और नीले

रंगों में मिलता है। यह उदर-विकार, वायुरोग, मधुमेह, जोड़ों का दर्द एवं नपुंसकता में बहुत लाभकारी है। नीलम को मध्यमा उंगली में चांदी की अंगूठी में लगवाकर शनिवार को धारण करना चाहिये। नीलम की अंगूठी पहनने से पूर्व एक दिन नदी के पानी एवं केसर में डालकर रखना चाहिये। दूसरे दिन मंत्र **ॐ शं शनैश्चराय नमः** की पांच माला जापकर अंगूठी की पूजा करनी चाहिये।

नीलम शराब के नशे से छुटकारा दिलाता है। यह हृदय रोगों में लाभकारी है। इसके धारण करने से व्यक्ति सही और उचित निर्णय लेने की क्षमता प्राप्त करता है।

8. गोमेद–इसका प्रतिनिधि ग्रह राहु है। यह गौमूत्र तथा सुनहरे दो रंगों में मिलता है। गोमेद पहनने से उदर रोग, मानसिक रोग, मन की चंचलता, चर्मरोग, मिरगी, पाण्डुरोग में लाभ होता है तथा व्यक्ति की कार्यकुशलता बढ़ती है। गोमेद मध्यमा उंगली में शनिवार को चांदी में मढ़वाकर पहनना चाहिये। धारण करने से एक दिन पूर्व केसर के साथ गोमूत्र में रखना चाहिये, दूसरे दिन **ॐ रां राहुवे नमः** मंत्र की पांच माला जाप करके अंगूठी की पूजा करके धारण करें।

9. लहसुनिया–इसका प्रतिनिधि ग्रह केतु है। यह बिल्ली की आंख जैसे रंग में मिलता है। यह रत्न एलर्जी, वायु रोग और गुप्त रोगों से मुक्ति दिलाता है। राहु, केतु या शनि की दशा में लहसुनिया धारण करने से लाभ मिलता है। भूत-प्रेत या नजर-टोने में भी यह अत्यन्त लाभकारी है। इसे चांदी में जड़वाकर शनिवार के दिन मध्यमा उंगली में धारण करना चाहिये। अंगूठी पहनने से पूर्व एक दिन पहले इसे गोमूत्र व नदी के जल में गोरोचन तथा केसर के साथ चौबीस घंटे रख देना चाहिये फिर दूसरे दिन **ॐ कें केतवे नमः** मंत्र का जाप पांच माला करके अंगूठी की पूजा करके पहनना चाहिये।

कुछ अन्य रत्न भी लाभदायक होते हैं–

(1) स्फटिक–इस पत्थर को लव स्टोन भी कहते हैं। यह व्यावहारिक पक्ष को मजबूती देता है तथा मानसिक तनाव भी कम करता है।

(2) रक्तमणि–यह संशयग्रस्त लोगों के लिये बहुत उपयोगी होता है, क्योंकि यह निर्णय लेने की क्षमता प्रदान करता है।

(3) जंबुमणि–यह जीवन में सहजता और शांति लाता है। मनुष्य एकाग्र चित्त से अपने भावी जीवन की योजनाओं को निर्धारित कर सकता है।

(4) बेरुज–इसको धारण करने से आने वाले संकटों का पूर्वाभास हो

जाता है और मनुष्य उनसे बचाव कर सकता है।

(5) **काला सुलेमानी**–यह खोटी आदतों से बचने की स्वप्रेरणा देता है।

(6) **फीरोजा**–रक्तचाप सामान्य करता है।

कुछ रोगों की भयंकरता में रत्न युग्म भी उपयोगी होते हैं–

1. पुखराज + मूंगा	सूखा रोग व मिरगी
2. मूंगा + मोती	अस्थमा
3. गोमेद + लहसुनिया	कैंसर
4. मूंगा + पन्ना	गुर्दों की बीमारी व लकवा
5. मोती + नीलम	मानसिक रोग
6. मूंगा + लहसुनिया	चर्म रोग
7. मोती + लहसुनिया	उदर रोग

रत्नों की आपसी शत्रुता

पन्ना एवं मोती	हीरा एवं माणिक्य
गोमेद एवं माणिक्य	हीरा एवं लहसुनिया
माणिक्य एवं नीलम	नीलम एवं मूंगा

इनको एकसाथ हाथ में नहीं पहनना चाहिये।

पुरुषों को 5½ से 7 रत्ती एवं स्त्रियों को 4¼ से 6 रत्ती वजन के रत्न धारण करने चाहियें।

राशि एवं ग्रह के अनुसार रत्न

क्रं.सं.	राशि	ग्रह	ग्रह कारक, कष्ट व रोग	रत्न	धातु
1.	धनु, मीन	बृहस्पति	श्राप, दंत रोग, हाथ-पैरों का कष्ट	पुखराज	स्वर्ण
2.	मकर, कुम्भ	शनि	निर्धनता, चिंता, शारीरिक पीड़ायें, कार्य-बाधायें।	नीलम	लोहा
3.	सिंह	सूर्य	ज्वर, अतिसार, क्षयरोग, अग्निरोग, पित्तदोष, कलह।	माणिक	ताम्र
4.	मिथुन, कन्या	बुध	उदर रोग, मन के विकार, गुदा रोग, दृष्टिदोष, कार्य-बाधा, भूत-प्रेत बाधा, भाइयों से हानि।	पन्ना	कास्य

क्रं.सं.	राशि	ग्रह	ग्रह कारक, कष्ट व रोग	रत्न	धातु
5.	वृष, तुला	शुक्र	प्रमेह, एड्स, स्त्री से प्राप्त रोग।	हीरा	चांदी
6.	कर्क	चन्द्र	दैवी प्रकोप, पीलिया, स्त्री से प्राप्त रोग, एड्स।	मोती	चांदी
7.	मेष, वृश्चिक	मंगल	कफ, दरिद्रता, गले के रोग, चर्म रोग, वीर्यदोष, भय।	मूंगा	ताम्र
8.		राहु	मिरगी, छींकें, नेत्र रोग, कुष्ठ, अरुचि, भूत-प्रेत, भय।	गोमेद	लोहा
9.		केतु	चर्मरोग शत्रु-भय, शारीरिक व मानसिक कष्ट व क्लेश, कीटाणुओं से फैले रोग।	लहसुनिया	लोहा

जन्माङ्क के अनुसार रत्न

जन्माङ्क	रत्न
1.	माणिक, पुखराज, हीरा
2.	मोती
3.	नीलम, पुखराज
4.	माणिक
5.	हीरा, पन्ना
6.	फीरोजा, पन्ना
7.	लहसुनिया, मोती
8.	नीलम, हीरा, पुखराज
9.	मूंगा

जन्म-माह के अनुसार रत्न

जन्म-माह	रत्न
जनवरी	माणिक
फरवरी	नीलम
मार्च	मूंगा
अप्रैल	लहसुनिया, हीरा

जन्म-माह	रत्न
मई	पन्ना
जून	मोती
जुलाई	माणिक
अगस्त	पुखराज
सितम्बर	पुखराज
अक्टूबर	मोती
नवम्बर	सुनैला
दिसम्बर	फीरोजा

❑❑❑

अध्याय-13

विविध ज्योतिषीय ज्ञान

1. स्वयं सिद्ध मुहूर्त (अनपूछ मुहूर्त)–

नीचे दिये गये साढ़े तीन मुहूर्त स्वयं सिद्ध माने जाते हैं, जिनमें पंचांग की शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है। 1. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, 2. वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय तृतीया) 3. आश्विन शुक्ल दशमी (विजय दशमी), 4. (आधा) दीपावली का प्रदोष काल।

भारतवर्ष में इनके अतिरिक्त लोकाचार और देशाचार के अनुसार निम्नलिखित तिथियों को भी स्वयंसिद्ध मुहूर्त माना जाता है–

1. भडुली नवमी (आषाढ़ शुक्ल नवमी), 2. देवोत्थानी एकादशी (कार्तिक शुक्ल एकादशी), 3. वसन्त पंचमी (माघ शुक्ल पंचमी), 4. फुलेरा दूज (फाल्गुन शुक्ल द्वितीया)।

इनमें किसी भी कार्य को करने के लिए पंचांग शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु विवाह आदि में तो पंचांग में दिये गये मुहूर्तों को ही स्वीकार करना श्रेयस्कर है।

2. अभिजित् मुहूर्त (अष्टमे दिवसस्यार्धेत्वभिजित् संज्ञकः क्षणः)–

प्रत्येक दिन का मध्याह्न भाग (अनुमानतः 12 बजे के लगभग) अभिजित् मुहूर्त कहलाता है, जो मध्याह्न से पहले और बाद में 2 घड़ी अर्थात् 48 मिनट का होता है। दिनमान के आधे समय को स्थानीय सूर्योदय के समय में जोड़ दें तो मध्याह्न काल स्पष्ट हो जाता है, जिसमें 24 मिनट घटाने और 24 मिनट जोड़ने पर अभिजित् का प्रारम्भ काल और समाप्ति काल निकल आता है।

इस अभिजित् काल में लगभग सभी दोषों के निवारण करने की अद्भुत शक्ति है। जब मुण्डनादि शुभ कार्यों के लिए शुद्ध लग्न न मिल रहा हो तो अभिजित् मुहूर्त काल में शुभ कार्य किये जा सकते हैं।

3. गोधूलि काल–

विवाह मुहूर्तों में क्रूर ग्रह, युति, वेध, मृत्युबाण आदि दोषों की शुद्धि होने पर भी यदि विवाह का शुद्ध लग्न (विवाह का समय) न निकलता हो तो गोधूलि लग्न (काल) में विवाह संस्कार सम्पन्न करने की आज्ञा शास्त्रों ने दी हैं।

गोधूलि काल–जब सूर्यास्त न हुआ हो (अर्थात् सूर्यास्त होने वाला हो) गाय आदि पशु अपने घरों को लौट रहे हों और उनके खुरों से उड़ी धूल उड़कर आकाश में छा रही हो, तो उस समय को मुहूर्तकारों ने **"गोधूलि काल"** कहा है। इसे विवाहादि मांगलिक कार्यों में प्रशस्त माना गया है। इस लग्न में लग्न सम्बन्धी दोषों को नष्ट करने की शक्ति है। **आचार्य नारद** के अनुसार–"सूर्योदय से सप्तम लग्न गोधूलि लग्न कहलाती है। पीयूष धारा के अनुसार सूर्य के आधे अस्त होने से 48 मिनट का समय गोधूलि कहलाता है।"

4. गुरु–शुक्रास्त में वर्जित कर्म–

गुरु और शुक्र के अस्त होने पर निम्नांकित शुभ कार्यों को शास्त्र वचनानुसार निषिद्ध एवं त्याज्य माना गया है–

गृहारम्भ, गृह प्रवेश, कुआं या तालाब का निर्माण, व्रतारम्भ, व्रतोद्यापन, नामकरण, मुण्डन, कर्णवेध, यज्ञोपवीत, सगाई–विवाह, वधूप्रवेश, गोदान, देवप्रतिष्ठा (मूर्ति स्थापना), चातुर्मास्य प्रयोग, अग्निहोत्र (यज्ञ) प्रारम्भ, सकाम अनुष्ठान, यात्रा, दीक्षा, संन्यास ग्रहण आदि कार्य।

5. राहु काल (शुभ कार्यों में विशेष रूप से त्याज्य है)

दिन विशेष में 1 घण्टा 30 मिनट के लिये राहुकाल का अनिष्टकारी समय होता है। किसी भी शुभ कार्य के प्रारम्भ में यथासम्भव इस समय को टाल देना चाहिये–

सोमवार प्रातः	7.30 से	9.00 बजे तक
मंगलवार दोपहरबाद	3.00 से	4.30 बजे तक
बुधवार दोपहर	12.00 से	1.30 बजे तक
गुरुवार दोपहर	1.30 से	3.00 बजे तक
शुक्रवार प्रातः	10.30 से	12.00 बजे तक
शनिवार प्रातः	9.00 से	10.30 बजे तक
रविवार प्रातः	4.30 से	6.00 बजे तक

दक्षिण भारत में राहु काल का विशेष विचार किया जाता है।

6. पंचकों में घास, लकड़ी का संग्रह एवं खाट आदि का बुनना, दक्षिण दिशा की यात्रा करना, मकान शुरू करना, दाह संस्कार करना आदि निषिद्ध हैं। दाह संस्कार के समय 5 पुतले बनाकर पंचक शान्ति करनी चाहिए।

7. पितृपक्ष (महालय)–

भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा से आश्विन कृष्ण अमावस्या तक सोलह दिनों को पितृ–पक्ष कहा जाता है। शास्त्रों में मनुष्यों के तीन ऋण बताये गये हैं–देवऋण, ऋषिऋण और पितृऋण। श्राद्ध के द्वारा पितृ–ऋण से निवृत्ति प्राप्त होती है। जिन माता–पिता ने हमारी आयु, आरोग्य और सुख–सौभाग्य आदि की वृद्धि के लिए अनेक प्रकार के प्रयत्न किये और कष्ट सहे, उनके ऋण से मुक्त न होने पर हमारा जन्म ग्रहण करना निरर्थक हो जाता है। अतः पितृ–पक्ष के सोलह दिनों में श्रद्धा-भक्तिपूर्वक तर्पण (पितरों को जल देना) करना चाहिए। आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में उनकी मृत्यु तिथि को (मृत्यु किसी भी मास या पक्ष में हुई हो) जल, तिल, चावल यव और कुश, पिण्ड बनाकर या केवल सांकल्पिक विधि से उनका श्राद्ध करना, गो ग्रास निकालना तथा उनके निमित्त ब्राह्मणों को भोजन करा देने से पितृ प्रसन्न होते हैं और उनकी प्रसन्नता ही पितृ ऋण से मुक्त करा देती है। इसे पार्वण श्राद्ध कहते हैं। पार्वण श्राद्ध के लिये अपराह्न व्यापिनी तिथि को लेना चाहिए। श्राद्ध में कुतुप बेला (मध्याह्न काल) ग्राह्य है। जिसकी मृत्यु की तिथि का ज्ञान न हो उनका श्राद्ध अमावस्या को करना चाहिए। मृतक का अग्नि संस्कार करने वाले दिन श्राद्ध नहीं किया जाता। मृत्यु होने वाले दिन श्राद्ध करना चाहिये।

8. गण्डमूल नक्षत्र (अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल, रेवती)–

ये 6 नक्षत्र गण्डमूल कहलाते हैं। इनमें जन्म लेने वाले जातक तथा उसके परिवार के कल्याण के लिए जन्म से 27वें दिन वही नक्षत्र आने पर मूल शान्ति अवश्य करवा लेनी चाहिए।

अभुक्त मूल–ज्येष्ठा नक्षत्र की अंतिम चार घड़ी और मूल नक्षत्र की प्रारम्भिक चार घड़ी अभुक्त–मूल कहलाती है। इनमें जन्मे जातक की अनिवार्य रूप से शान्ति करा लेनी चाहिए।

9. दिशाशूल

पूर्व दिशा सोमवार, शनिवार; दक्षिण दिशा गुरुवार
पश्चिम दिशा रविवार, शुक्रवार; उत्तर दिशा मंगलवार, बुधवार
दिशाओं के सामने दिये गये वारों में उक्त दिशा में दिशाशूल होता है।

अतः उक्त दिशा में यात्रा नहीं करनी चाहिए। रविवार, गुरुवार, शुक्रवार के दोष रात्रि में प्रभावी नहीं होते हैं। सोमवार, मंगलवार, शनिवार के दोष दिन में प्रभावी नहीं होते हैं; किन्तु बुधवार तो हर प्रकार से त्जाज्य है। अत्यावश्यक होने पर रविवार को पान या घी खाकर, सोमवार को दर्पण देखकर या दूध पीकर, मंगल को गुड़ खाकर, बुधवार को धनिया या तिल खाकर, गुरुवार को जीरा या दही खाकर, शुक्रवार को दही या दूध पीकर और यदि एक दिन में गंतव्य स्थान पर पहुंचना और फिर वापस आना निश्चित हो तो दिशाशूल विचार की आवश्यकता नहीं है।

देवपूजन में कुछ उपयोगी जानकारी

पुष्प अर्पण—लक्ष्मी की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को शिरस, धतूरा, मातुलुंगी, मालती, सेमल, और कनेर के फूलों तथा अक्षतों (चावल) के द्वारा **भगवान् विष्णु की पूजा नहीं करनी चाहिए।** केतकी (केवड़ा), चम्पा, चमेली, मालती, कुन्द, सिरस, जुही, पलास, मौलश्री, लाल अढहुल, मोतिया के पुष्प शंकर जी को नहीं चढ़ाने चाहिएं। तुलसी गणेशजी को नहीं चढ़ानी चाहिए। दूर्वा और आक (मदार) देवी जी को नहीं चढ़ाना चाहिए। पत्र पुष्प फल का मुख नीचे करके नहीं चढ़ाना चाहिए। ये जैसे पैदा होते हैं वैसे ही चढ़ाना चाहिए। विल्व पत्र उल्टा करके भगवान शिवजी को चढ़ाना चाहिए।

अर्घ्य दान विधि—शिवजी और सूर्य को शंख से अर्घ्य नहीं देना चाहिए। भगवान् विष्णु को शंख से अर्घ्य दें अथवा स्नान करायें। स्वर्ण, चांदी और ताम्र पत्र से सभी देवताओं को अर्घ्य दे सकते हैं।

पूजन निषेध—दो शिवलिंग, दो शालग्राम, दो चक्र, दो सूर्य, तीन शक्ति, तीन गणेश, दो शंख की साथ-साथ पूजा नहीं करनी चाहिए। दो के अतिरिक्त सम संख्या में शालग्रामों का पूजन विहित है। एक को छोड़कर विषम संख्या में शालग्रामों का पूजन नहीं करना चाहिए।

हवन सामग्री—तिल का आधा चावल, चावल का आधा जौ, जौ की आधी शक्कर और उसका आधा घी मिलाना चाहिए। मेवा और जड़ी-बूटियां (हवन के लिए विहित) यथा शक्ति मिला सकते हैं। विशिष्ट कार्यक्रमों के लिए हवन सामग्री भिन्न होती है।

पूजन की निष्फलता—बिना संकल्प और शास्त्र विधि के सकाम कर्म-पूजन निष्फल होता है। बिना तिल, कुश और तर्पण के पितृ कर्म (श्राद्ध

आदि) निष्फल होते हैं। बिना लाल फूल और चन्दन के दुर्गा पूजा निष्फल है। बिना मिष्ठान्न और दक्षिणा के ब्राह्मण भोजन निष्फल है। बिना पवित्री और चन्दन के संध्या निष्फल हैं। (कुश की पवित्री न मिलने पर सीने पर पवित्री धारण करें)।

चन्दन—पत्थर पर से उठाकर न तो चन्दन देवता पर चढ़ायें और न ही अपने मस्तक पर लगायें। चन्दन घिसकर किसी पात्र में रखें और देव पर चढ़ाने के बाद प्रसाद रूप में अपने मस्तक पर लगायें। सौभाग्यवती स्त्रियां इसी प्रकार रोली या कुमकुम (सिन्दूर) अपने मस्तक पर लगायें।

माला—जप के समय माला गोमुखी या वस्त्र में ढक कर रखें। जप करते समय हिलना, ऊंघना, बोलना नहीं चाहिए। माला यदि हाथ से गिर जाए तो आचमन कर दुबारा प्रारम्भ करना चाहिए। इसी प्रकार यदि बोलना आवश्यक हो जाए तो भी आचमन का जप दुबारा प्रारम्भ करना चाहिए। माला को अनामिका पर रखकर अंगूठे का ऊपर से सहारा देकर मध्यमा से आगे बढ़ायें। जप के बाद किये हुए जप को देवार्पण कर दें और आसन के नीचे एक चम्मच जल डालकर उस जल को अपने मस्तक पर लगा लें। अन्यथा जप का फल आधा रह जाता है।

❑❑❑

अध्याय–14
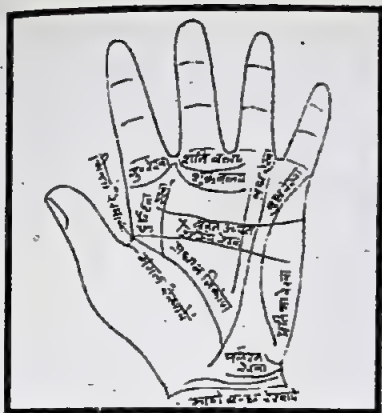
वास्तु का ज्योतिषीय प्रभाव

वास्तुशास्त्र के अनुसार स्थान एवं दिशाओं का निर्धारण

सर्वप्रथम भूखंड का एक पूरा नक्शा सही नाप के आधार पर कागज पर बना लें और इस पर स्थिति के अनुसार चारों दिशाओं अर्थात् पूर्व, पश्चिम, उत्तर व दक्षिण को अंकित कर दें। अब चित्र एक के अनुसार प्रत्येक दिशा के नौ बराबर भाग कर लें, और लाइनों से जोड़ दें इस प्रकार इस भूखंड के 9×9=81 भाग हो जायेंगे।

मध्य के भाग ब्रह्मस्थान माने जाते हैं। इसे आकार की ओर खुला छोड़ना सर्वश्रेष्ठ होता है परन्तु प्रायः यह असम्भव होने के कारण इस स्थान को हल्का रखना ही एक मात्र उत्तम विकल्प है। इस स्थान पर शौचालय, स्नानघर,
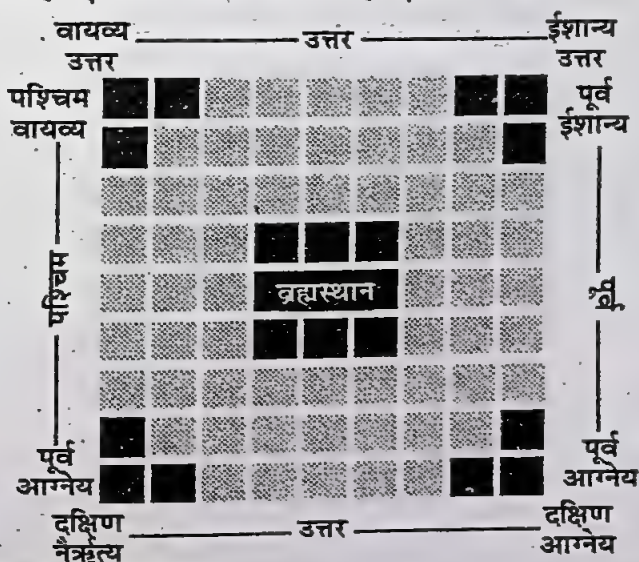
रसोई, कमरा भी नहीं बनाना चाहिये और न यहां कूड़ा-करकट, रद्दी सामान इत्यादि ही इकट्ठा करना चाहिये। इस ब्रह्मस्थान में सीढ़ियां अत्यन्त अशुभ और अमंगलकारी होती हैं।

उपदिशाओं को चित्र के अनुसार निर्धारित करें।

ईशान क्षेत्र, दो भाग उत्तर ईशान और दो भाग पूर्व ईशान, इस प्रकार चार भागों से मिलकर बनता है। यह क्षेत्र आवास एवं व्यवसाय दोनों उद्देश्यों और उपयोगों के लिये सबसे पवित्र स्थान है।

यदि भूखंड के सामने की सड़क उत्तर दिशा की ओर है तो सर्वाधिक शुभफलदायक होती है।
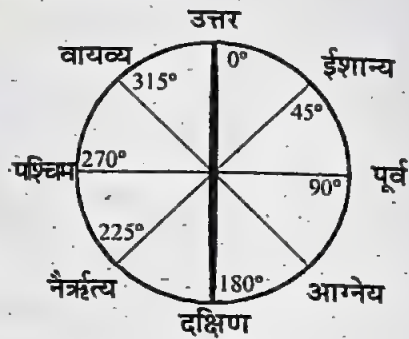
"प्रथम भाग"

वास्तुशास्त्र के उपयोगी सिद्धांत

वास्तुशास्त्र को चौंसठ विद्याओं में से एक माना गया है। ऋग्वेद एवं अथर्ववेद में वास्तु अथवा भवन विन्यास सम्बंधी इनके सूत्र समाहित हैं। चारों वेदों के साथ ही चार उपवेद भी हैं, गंधर्ववेद, धनुर्वेद, आयुर्वेद तथा स्थापत्य वेद।

वास्तु शद्ध का अर्थ है स्थापत्य। यह वस्तु शब्द से बना है। वस्तु को भूमि कहा गया है, अतः भूमि या पृथ्वी पर बनने वाली चीज या निर्माण वास्तु कहलाता है।

पृथ्वी के पंच तत्वों के समुचित अनुपातों के परस्पर सम्बंध को भी वास्तु कहते हैं।

यह प्रकृति के पंच महाभूतों से अधिकाधिक लाभ और सुविधा प्राप्त करने की कला है। वास्तु के नियम वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित हैं।

गृह-निर्माण के लिये वर्गाकार भूमि श्रेष्ठ होती है, आयताकार मंगलकारी, वृत्ताकार ज्ञानवर्धक एवं धनदायक तथा षटकोण आकार की भूमि उन्नतिदायक होती है। समकोण अथवा चतुष्कोण वाले स्थान पर गृह बनाना उत्तम माना गया है।

गृह-निर्माण हेतु नींव की खुदाई ईशान दिशा में होनी चाहिये।

उत्तर दिशा में ढलान हो या दक्षिण की ओर नीचा किया गया हो तो

उत्तम माना गया है।

गृह-निर्माण हेतु नींव की खुदाई ईशान दिशा में होनी चाहिये।

उत्तर दिशा में ढलान हो या दक्षिण की ओर नीचा किया गया हो तो मंगलकारी होता है।

पश्चिम दिशा की अपेक्षा पूर्व दिशा में भी नीचा निर्माण हो तो ऐश्वर्य, आयु और यश देने वाला होता है।

दक्षिण उच्च हो तो आर्थिक वृद्धि एवं स्वास्थ्य लाभकारी, नैर्ऋत उच्च हो तो धनवृद्धि तथा यश देने वाला, पश्चिम उच्च हो तो संतान और यश वृद्धि करने वाला तथा वायव्य, ईशान की अपेक्षा ऊंचा हो तो अदालती विजय और धन की प्राप्ति होती है।

दक्षिण की अपेक्षा उत्तर में अधिक जमीन खाली छोड़ना शुभ माना गया है। इसी प्रकार पश्चिम की अपेक्षा पूर्व में अधिक खाली जमीन छोड़ना शुभ माना जाता है। यह दोनों सुख, शांति और सम्पन्नता प्रदान करते हैं।

दक्षिण-पश्चिम दिशा मूलक अधिक क्षेत्रफल वाले कक्ष एवं उत्तर-पूर्वी दिशा वाले कम क्षेत्रफल वाले कक्ष शुभ परिणाम देते हैं।

उत्तर दिशा में खाली जगह न हो तो वह घर गृहिणी से वंचित होता है ऐसा मानना है।

भवन का मुख्य द्वार किस दिशा में हो, इसका निर्णय गृहस्वामी की राशि एवं विभिन्न ग्रहों के निवास के आधार पर किया जाता है। गृहस्वामी की राशि के अनुसार भवन के मुख्य द्वार का निर्धारण करते समय कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशि वालों को पूर्व में; तुला, कुंभ तथा वृष राशि वालों की पश्चिम में; कन्या, मकर तथा मिथुन राशि वालों को दक्षिण में और मेष, सिंह तथा धनु राशि वालों को उत्तर में मुख्य द्वार बनवाना शुभ होता है। किसी जातक को यदि एक ही मुख्य द्वार बनवाना हो, तो इसके लिए पूर्व दिशा ही उत्तम होती है।

भवन में यदि दो द्वार बनवाने हों, तो पूर्व दिशा में मुख्य द्वार के साथ पश्चिम में द्वार नहीं होना चाहिए।

इसी प्रकार यदि उत्तर में मुख्य द्वार हो तो दक्षिण में द्वार नहीं होना चाहिए। इसके ठीक उलट मुख्य द्वार यदि पश्चिम में हो, तो सहायक दरवाजा पूर्व में तथा दक्षिण में मुख्य द्वार हो तो सहायक दरवाजा उत्तर में हो सकता है। भवन-निर्माण के समय इस बात का ध्यान भी रखा जाना चाहिए कि यदि भवन के सभी दरवाजे एक पल्ले के हों, तो भवन का मुख्य दरवाजा

दो पल्ले का हो। इसकी लम्बाई भी इसकी चौड़ाई से दोगुनी होनी चाहिए। यदि संभव हो तो मुख्य द्वार की चौड़ाई चार फीट से कम न रखें। दिशा के आधार पर मुख्य द्वार का निर्णय इस प्रकार से किया जा सकता है–

उत्तर द्वारा बुध क्षेत्र–भूखण्ड की उत्तर दिशा बुध ग्रह का प्रतिनिधित्व करती है। इस दिशा में मुख्य द्वार बनाने से सुख–समृद्धि तथा ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

पश्चिम द्वार शनि क्षेत्र–भूखंड की पश्चिम दिशा शनि ग्रह का प्रतिनिधित्व करती है। इस दिशा में मुख्य द्वार के होने से आमतौर पर कष्टों में वृद्धि होती है।

पूर्व द्वार सूर्य क्षेत्र–भूखंड की पूर्व दिशा सूर्य का प्रतिनिधित्व करती है। इसी दिशा में मुख्य द्वार होना श्रेष्ठ माना जाता है। इससे धन एवं वंश वृद्धि होती है।

दक्षिण द्वार मंगल क्षेत्र–भूखंड की दक्षिण दिशा मंगल ग्रह का प्रतिनिधित्व करती है। इस दिशा में मुख्य द्वार होना शुभ नहीं माना जाता। इसे यम की दिशा भी कहा जाता है।

आग्नेय द्वार शुक्र क्षेत्र–भूखंड की दक्षिण–पूर्व (आग्नेय कोण) दिशा शुक्र ग्रह का प्रतिनिधित्व करती है। इस दिशा में मुख्य द्वार होने से अग्नि का भय हमेशा बना रहता है। वास्तुशास्त्र के अनुसार आग्नेय कोण का खुला होना ठीक नहीं माना जाता।

ईशान द्वार गुरु क्षेत्र–भूखंड की उत्तर–पूर्व (ईशान कोण) दिशा बृहस्पति ग्रह का प्रतिनिधित्व करती है। इस द्वार को वास्तुशास्त्र में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। इससे सुख, समृद्धि की प्राप्ति होती है तथा अच्छा स्वास्थ्य भी मिलता है।

नैर्ऋत्य द्वार राहु–केतु क्षेत्र–भूखंड की दक्षिण–पश्चिम (नैर्ऋत्य कोण) दिशा राहु–केतु का प्रतिनिधित्व करती है। इस दिशा में मुख्य द्वार होने से रोग, कष्ट एवं धन हानि होती है।

वायव्य द्वार चंद्र क्षेत्र–भूखंड की पश्चिम–उत्तर (वायव्य कोण) दिशा चंद्र ग्रह का क्षेत्र माना जाता है। इस दिशा में भवन का मुख्य द्वार होना भवन श्रेणी का माना जाता है।

घर का मुख्य दरवाजा मकान के आकार के समानुपात में होना ही शुभ होता है। मुख्य दरवाजा बड़ा और पीछे का दरवाजा छोटा होना चाहिये। बड़े मकान में मुख्य दरवाजे का मोटा होना अशुभकारी होता है। मुख्य दरवाजा

नैर्ऋत्य कोण में न रखें।

पूर्व दिशा में स्नानगृह और शौचालय कभी साथ-साथ नहीं बनवाना चाहिये।

स्नानगृह में एक्जिट फेन उत्तर या पूर्व दिशा की ओर की दीवार पर लगाना चाहिये। नहाने वाला नल पूर्व की दिशा में होना चाहिये।

पूजा कक्ष ईशान कोण में, रसोईघर आग्नेय कोण में, धन कक्ष वायव्य कोण में, भंडार कक्ष पच्छिम दिशा में, दूध, दही, घृत, तेल का कक्ष आग्नेय कोण और पूरब के मध्य में, शौचालय एवं सेप्टिक टैंक दक्षिण और नैर्ऋत्य कोण के मध्य में, अध्ययन कक्ष पच्छिम या नैर्ऋत्य व पश्चिम के मध्य में, दाम्पत्य कक्ष वायव्य कोण व उत्तर दिशा में एवं मनोरंजन कक्ष वायव्य कोण में बनाना उत्तम रहता है।

क्लीनिक या नर्सिंग होम उत्तर दिशा व ईशान कोण के मध्य में, प्रसूति कक्ष नैर्ऋत्य कोण में, भोजन कक्ष पश्चिम दिशा में, शयन कक्ष दक्षिण दिशा में, स्वागत कक्ष ईशान कोण व पूर्व दिशा के मध्य में, पशुशाला व धान्य कक्ष वायव्य कोण में, शस्त्रागार नैर्ऋत्य कोण में, गैरिज वायव्य या आग्नेय कोण में, कुआं-पानी के टैंक आदि पूरब, पश्चिम, उत्तर या ईशान कोण में शुभ रहते हैं।

ब्रह्मस्थान अर्थात् आंगन, मुख्य प्रवेश द्वार, भवन के आसपास पेड़-पौधे या आंतरिक साज-सज्जा भी मंगलकारी मानी जाती है।

बिजली के उपकरणों जैसे हीटर, कूलर, फ्रीज, टीवी०, टेलीफोन, मेन स्विच बोर्ड आदि को आग्नेय कोण तथा दक्षिण दिशा में लगाने को शुभ माना जाता है।

उत्तर-पूर्व, ईशान तथा वायव्य दिशाओं में अधिक भार होने से गृहस्थ जीवन का पतन हो जाता है।

अहाते की ईशान दिशा में यहां तक कि प्रत्येक कक्ष की ईशान दिशा में किसी प्रकार की वस्तु को नहीं रखना चाहिये, तभी गृह कल्याणकारी होगा।

दक्षिण-नैर्ऋत्य, पश्चिम-नैर्ऋत्य की दीवारों से सटाकर भारी सामान रखा जाये, तो शुभ रहेगा।

पूर्वी और आग्नेय दिशाओं का स्पर्श करते हुये किसी प्रकार की चीजों को नहीं रखना चाहिये। दीवार तथा सामान के बीच कुछ जगह छोड़कर रखें तो शुभ हो...।

दक्षिण दिशा में भार रखने से हमारे शरीर में विद्यमान लोह तत्व और चुम्बकीय धाराओं से वह भार अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करेगा।

भूखंड की चारदीवारी ऊंची नहीं होनी चाहिये।

घर का मुख्य प्रवेश द्वार सड़क पर से दृष्टिगोचर होना चाहिये, जो शुभ-कारी होता है।

घर, दुकान अथवा निजी कार्यालय में पूजा का स्थान इस प्रकार रखें कि जब आप पूजा-अर्चना करें तो आपका मुख पूर्व दिशा की ओर रहे।

चारदीवारी के प्रवेश द्वार के पश्चात् प्रथम द्वार और पीछे के द्वार घर के ऊपर अपने इष्टदेव की मूर्ति या टाइल लगावें यह अमंगलकारी माना जाता है।

पानी का बर्तन या घड़ा रखने का स्थान उत्तर-पूर्व में रखें।

रसोईघर, सीढ़ियां तथा शौचालय उत्तर-पूर्व दिशा में न बनवायें।

रसोई दक्षिण पूर्व में बनायें, उत्तर दिशा में कभी नहीं।

शौचालय दक्षिण की ओर बनायें अथवा दक्षिण की ओर बनायें परन्तु दक्षिण-पश्चिम में न बनायें।

स्नानघर पूर्व दिशा में शुभ है।

रसोईघर, शौचालय, स्नानघर एवं पूजास्थल एक-दूसरे से सटे हुये अथवा सीढ़ियों के नीचे न बनावें।

अतिथि कक्ष उत्तर-पश्चिम में रखें।

उत्तर-पूर्व दिशा खाली शुभकारी हैं। भंडारगृह पश्चिम दिशा में होना शुभ होता है।

बैडरूम इस प्रकार हो कि पलंग पर सोते समय सिर पूर्व अथवा दक्षिण एवं पैर पश्चिम अथवा उत्तर दिशा की ओर हों।

कमरों में अत्यधिक दर्पण, अथवा पारदर्शी वस्तुओं का प्रयुक्त होना वास्तु-दोष माना जाता है।

घर के मुख्य दरवाजे पर यदि गणेशजी की मूर्ति लगाई गयी हो तो उसके पीछे पीठ की ओर गणेशजी की तस्वीर अवश्य लगावें, क्योंकि गणेशजी की पीठ की ओर दरिद्रता निवास करती है। घर के अंदर गणेशजी की दो से अधिक मूर्तियां नहीं होनी चाहियें।

घर के ड्राइंमरूम में यथासम्भव नटराज की मूर्ति न लगावें।

घर में दो शिव लिंग, तीन गणेश, दो शंख, दो सूर्य, तीन दुर्गा मूर्ति, दो गोमती चक्र और दो शांतिग्राम की पूजा नहीं करनी चाहिये।

दक्षिण-पश्चिम कोने को छोड़कर अन्य किसी कोने को ढ़कना नकारात्मक प्रभाव डालता है।

बेसमेंट में ऊर्जा का स्तर चालीस प्रतिशत कम हो जाता है अत: बेसमेंट में महत्वपूर्ण कार्य नहीं करना चाहिये। जहां तक सम्भव हो बेसमेंट के निर्माण से बचें लेकिन यह जरूरी हो तो भूखंड के उत्तर-पूर्व हिस्से में ही बनायें।

"द्वितीय भाग"

रेमेडियल वास्तुशास्त्र

यदि मकान पहले से ही बना हुआ है और उसमें किसी न किसी प्रकार का वास्तुदोष है जैसा कि प्राय: होता है तो बिना किसी तोड़-फोड़ के वास्तु दोष दूर किये जा सकते हैं। इस विधि को रेमेडियल वास्तुशास्त्र कहा जाता है। इस विधि में यंत्रों का उपयोग किया जाता है।

1. हरे रंग के मकराने पत्थर से बने गणपति को प्रवेशद्वार के बीचो-बीच, आगे-पीछे की स्थिति में लगाया जाता है। इसके नीचे शुद्ध चांदी में बना श्रीयंत्र का अभिमंत्रित सिक्का लगाया जाता है। इस प्रकार भी गणेश जी के साथ श्री महालक्ष्मी जी की स्थाई प्रतिष्ठा हो जाती है। यह कार्यालयों और व्यावसायिक केन्द्रों पर लाभकारी है। घर में सिक्का भीतर वाले दरवाजे पर ही लगेगा।

2. वास्तु मंगलकारी तोरणा–बुरी आत्मायें और अशुभ हवायें घर में प्रवेश न कर सकें इसके लिये मुख्य द्वार के बाहर कौड़ियों, शंख सुक्तियों तथा मोतियों से स्वास्तिक, घंटी, शंख, कलश या ॐ की शुभ आकृति बनाकर लागई जाती है।

3. कैलून–चीन के पौराणिक पशु को द्वारपाल के रूप में मुख्य द्वार के दायें-बायें लगाया जाता है। फेंगशुई का यह उपकरण बुरी आत्माओं का प्रवेश रोकता है।

4. शुद्ध घुड़नाल–घर को बुरी नजरों से बचाने के लिये काले घोड़े की अभिमंत्रित लोहे की घुड़नाल मुख्य दरवाजे के बाहर लगाई जाती है।

5. विश्वकर्मा यंत्र–प्रवेश द्वार के भीतर लगाने से घर में अशुभ कलाकृति बन या लग जाने का दोष मिट जाता है।

6. सूर्य यंत्र–यह व्यावसायिक प्रतिष्ठानों को राज्यभय से सुरक्षा प्रदान करता है।

7. इंद्राणी यंत्र—यह फैक्ट्री या व्यापार में चल रही हानि तथा चोरी से रक्षा करता है।

8. दिशा दोष नाशक यंत्र—यदि भवन में कमरा, रसोई, पूजाकक्ष अथवा टॉयलेट गलत दिशा में बने हुये हैं तो इस यंत्र को उस कमरे की चौखट पर लगाने से दोष निवारण हो जाता है।

9. वरूण यंत्र—मकान में पानी का ओवर हैड टैंक यदि गलत दिशा में बन गया है तो इस यंत्र को टंकी के भीतर लगा दें। दोष नष्ट हो जायेगा।

10. काली यंत्र—फैक्ट्री या घर में भट्टी गलत दिशा में होने से यदि विद्युत खपत बढ़ी हुई हो तो इस यंत्र को भट्टी पर स्थापित करें।

11. मारुति यंत्र—यह वाहन स्वामी तथा वाहन चालक को दुर्घटना से बचाता है और जमीन बेचने में भी लाभ दिलवाता है।

12. कृत्या नाशक यंत्र—इस यंत्र को घर के पूजाकक्ष में स्थापित कर नित्य पूजा करने से परिवार के सदस्य टोने-टोटके, विनाशकारी तांत्रिक और व्यभिचार कर्मों से बचे रहते हैं। यदि घर अथवा घर के किसी सदस्य पर किसी ने तंत्र-मंत्र, जादू-गंडा कर दिया हो, घर में कलह रहती हो, वंश वृद्धि रुक गयी हो अथवा अकाल मृत्यु होती हो तो इस यंत्र को घर के बीचो-बीच ब्रह्म स्थान में गाड़ दिया जाता है।

13. कुबेर श्रीयंत्र कनक—कुबेर यंत्र-श्रीयंत्र-कनक धारा यंत्र को इसी क्रम में लाल मखमल पीछे लगाकर लकड़ी की सुनहरी फ्रेम में, बिना लोहे की कील लगाये, जड़वाकर तिजोरी या गल्ले के ऊपर रखने से धन की आवक बढ़ जाती है।

14. घड़ी पिरामिड यंत्र—निम्न और उच्च दोनों प्रकार के रक्तचाप नियंत्रण में रखने के लिये इस यंत्र को हाथ की कलाई पर बांधा जाता है।

15. शयन पिरामिड—मानसिक तनाव दूर करने तथा अच्छी और गहरी नींद के लिये इस यंत्र को तकिये के नीचे रखा जाता है।

16. पिरामिड टॉप—पूजाकक्ष के ऊपर गुम्बज की जगह इस यंत्र को लगाने से आध्यात्मिक शक्ति में भारी वृद्धि होती है।

17. मनोकामनापूर्ण पिरामिड यंत्र—यह यंत्र नौ पिरामिडों की शक्ति से मुक्त होता है। अपनी इच्छा कागज पर लिखकर इस पिरामिड में रख दी जावे तो एक माह की अवधि में पूर्ण हो जाती है।

18. टेबल पिरामिड यंत्र—इस यंत्र को अपने सामने मेज पर रखने से कार्यगति कई गुना बढ़ जाती है।

—सम्पूर्णम—

हस्तरेखा और भाग्यफल

मनुष्य के हाथों में अनेकों रेखायें एवं चिन्ह होते हैं। ये रेखायें व चिन्ह मनुष्य के भाग्य को रेखांकित करते हैं। एक नवजात शिशु के हाथ में बनी रेखायें उम्र के साथ-साथ बढ़ती जाती हैं। हाथों की इन रेखाओं के अध्ययन का कार्य हस्तरेखा विज्ञान के अंतर्गत किया जाता है। प्रस्तुत पुस्तक में अत्यन्त विस्तृत ढंग से प्रत्येक हस्तरेखा व चिन्हों के आकार-प्रकार के अतिरिक्त हाथ पर परिलक्षित विभिन्न योगों के लक्षण व फल को समाहित किया गया है। साथ ही कुण्डली मिलान, राशियों के ग्रहों से सामंजस्य एवं रत्नों के संसार का सरल, सहज किंतु विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। हस्त ज्योतिष का ज्ञान देने वाली यह पुस्तक सर्वजन के लिए हितकारी सिद्ध होगी।

राधा पॉकेट बुक्स